ज्योतिष जीवन–सूत्र

Name - Sample
Date - 10/08/1941
Time - 02:15:00
POB - New delhi (Delhi) India
Longitude - 077:12:00 E
Latitude - 028:36:00 N

Mindsutra Software Technologies
A-16, Ground Floor Uttam Nagar New Delhi - 110059
Phone: 011-49043166, 91 9818193410

© lalkitabnadi.com

श्री गणेशाय नमः

गणानां त्वां गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम् ।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम् ।।

नवग्रह स्तोत्र

जपाकुसुमसंकाशं काश्पेयं महाद्युतिम्। तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।
दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्। नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्।।
धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्। कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम्।।
प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।
देवानां च ऋषिणां च गुरुं कांचनसंनिभम्। बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्। सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।
नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्। सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्। रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।

फलश्रुति

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति।
नरनारीनृपाणां च भवेद्दुःस्वप्ननाशम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्।।
ग्रहनक्षत्रजाः पीडस्तस्कराग्रिसमुद्रवाः ।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः ।।

इति श्री व्यासविरचितं आदित्यादिनवग्रहस्तोत्रं संपूर्णम् ।।

जो जपापुष्प के समान अरुणिम आभावाले, महान तेज से संपन्न, अंधकार के विनाशक, सभी पापों को दूर करने वाले तथा महर्षि कश्यप के पुत्र हैं, उन सूर्य को मैं प्रणाम करता हूं। जो दधि, शंख तथा हिम के समान आभा वाले, क्षीर समुद्र से प्रादुर्भूत, भगवान शंकर के शिरोभूषण तथा अमृतस्वरुप हैं, उन चंद्रमा को मैं नमस्कार करता हूं। जो पृथ्वी देवी से उद्भूत, विद्युत् की कान्ति के समान प्रभावाले, कुमारावस्था वाले तथा हाथ में शक्ति लिए हुए हैं, उन मंगल को मैं प्रणाम करता हूं। जो प्रियंगु लता की कली के समान गहरे हरित वर्ण वाले, अतुलनीय सौन्दर्य वाले तथा सौम्य गुण से संपन्न हैं, उन चंद्रमा के पुत्र बुध को मैं प्रणाम करता हूं। जो देवताओं और ऋषियों के गुरु हैं, स्वर्णिम आभा वाले हैं, ज्ञान से संपन्न हैं तथा लोकों के स्वामी हैं, उन बृहस्पति जी को मैं नमस्कार करता हूं। जो हिम, कुन्दपुष्प तथा कमलनाल के तन्तु के समान श्वेत आभा वाले, दैत्यों के परम गुरु, सभी शास्त्रों के उपदेष्टा तथा महर्षि भृगु के पुत्र हैं, उन शुक्र को मैं प्रणाम करता हूं। जो नीले कज्जल के समान आभा वाले, सूर्य के पुत्र, यमराज के ज्येष्ठ भ्राता तथा सूर्य पत्नी छाया तथा मार्तण्ड से उत्पन्न हैं, उन शनैश्चर को मैं नमस्कार करता हूं। जो आधे शरीर वाले हैं, महान पराक्रम से संपन्न हैं, सूर्य तथा चंद्र को ग्रसने वाले हैं तथा सिंहिका के गर्भ से उत्पन्न हैं, उन राहु को मैं प्रणाम करता हूं। पलाश पुष्प के समान जिनकी आभा है, जो रुद्र स्वभाव वाले और रुद्र के पुत्र हैं, भयंकर हैं, तारकादि ग्रहों में प्रधान हैं, उन केतु को मैं प्रणाम करता हूं। भगवान वेदव्यास जी के मुख से प्रकट इस स्तुति का जो दिन में अथवा रात में एकाग्रचित्त होकर पाठ करता है, उसके समस्त विघ्न शान्त हो जाते हैं, स्त्री–पुरुष और राजाओं के दुःस्वप्नों का नाश हो जाता है। पाठ करने वालों को अतुलनीय ऐश्वर्य और आरोग्य प्राप्त होता है तथा उनके पुष्टि की वृद्धि होती है।

ज्योतिष सारिणी

मुख्य विवरण

लिंग	पुरूष
जन्म दिनांक	10:08:1941
जन्म समय	02:15:00
जन्म दिन	रविवार
जन्म स्थान	new delhi
राज्य	Delhi
देश	India
अक्षांश	028:36:00N
रेखांश	077:12:00E
स्थानीय समय संस्कार	-000:21:11
स्थानीय समय	001:53:48 hrs
समय क्षेत्र	05:30 E
समय संशोधन	-00:00
सांपातिक काल	023:05:35 hrs
इष्ट काल	51: 03: 50 Ghati

पंचांग विवरण

विक्रम संवत	१९९८
शक संवत	१८६३
संवत्सर	वृष
ऋतु	वर्षा
मास	भाद्र
पक्ष	कृष्ण
वार	
तिथि	तृतीया
नक्षत्र (पद)	पूर्वाभाद (2)
योग	अतिगण्ड
करन	विष्टी

अवकहड़ा चक्र

पाया	रजत
वर्ण	शुद्र
वश्य	जलचर
योनि	शेर (पु०)
गण	मनुष्य
नाड़ी	आदि
रज्जु	नाभि
तत्व	आकाश
तत्वाधिपति	बृहस्पति
विहग	मयूर
नाड़ी पद	मध्य
वेध	उत्तरफाल्गा
आद्याक्षर	सा
दशा बैलेंस	बृहस्पति–९.० व.१.० म.११ द.
वर्तमान दशा	चन्द्र–शनि–केतु
भयात	26: 58: 05 Ghati
भभोग	63: 13: 54 Ghati
सूर्य राशि (वैदिक)	कर्क
सूर्य राशि (पाश्चात्य)	सिहं
अयनांश	N.C.Lahiri
अयनांश मान	023:02:29
देकानेट	2
फेस	IV
सूर्योदय	05:50:28AM
सूर्यास्त	07:02:42PM
जन्मदिन का ग्रह	सूर्य
जन्मसमय का ग्रह	शनि

♊ लग्न मिथुन	♒ राशि कुम्भ	नक्षत्र – पद पूर्वाभाद – 2
☿ लग्नाधिपति बुध	♄ राशिपति शनि	♃ नक्षत्रपति बृहस्पति

घात चक्र

चैत्र अशुभ मास	वृहस्पतिवार अशुभ वार	3 अशुभ प्रहर
धनु अशुभ राशि	कन्या अशुभ लग्न	3, 8, 13 अशुभ तिथि
अरिद्रा अशुभ नक्षत्र	ब्याधात अशुभ योग	किम्सतुघ्न अशुभ करन

शुभ बिन्दु

1 मूलांक	6 भाग्यांक	3, 9 मित्रांक
1, 8 शत्रु अंक	18, 21, 24, 27, 30, 33, 36, 39 शुभ वर्ष	बुधवार, शुक्रवार, शनिवार शुभ दिन
बुध, शुक्र, शनि शुभ ग्रह	बृहस्पति अशुभ ग्रह	वृष, सिहं, तुला, धनु मित्र राशि
कन्या, धनु, कुम्भ, मेष मित्र लग्न	पन्ना शुभ रत्न	पन्नी, संगपन्ना, मरगज शुभ उपरत्न
नीलम भाग्य रत्न	गणेश अनुकूल देवता	कांसा शुभ धातु
हरित शुभ रंग	उत्तर दिशा	सूर्योदय के 2 घंटे बाद शुभ समय
शक्कर, हाथीदांत, कपूर, फल शुभ पदार्थ	मूंग (साबुत) शुभ अन्न	घी शुभ द्रब्य

ग्रह स्थिति (पराशरी)

ग्रह	राशि	अंश	नक्षत्र	स्थिति
सूर्य	कर्क	23:47:42	अश्लेषा (3)	मित्र राशि
चन्द्रमा	कुम्भ	25:44:26	पूर्वाभाद (2)	सम राशि
मंगल	मीन	25:32:30	रेवती (3)	मित्र राशि
बुध (अ.)	कर्क	14:00:17	पुष्य (4)	शत्रु राशि
बृहस्पति	वृष	22:48:58	रोहिणी (4)	शत्रु राशि
शुक्र	सिहं	23:31:29	पुर्वफाल्ग (4)	स्व नक्षत्र
शनि	वृष	04:37:01	कृतिका (3)	मित्र राशि
राहु	कन्या	01:26:07	उत्तरफाल्ग (2)	मित्र राशि
केतु	मीन	01:26:07	पूर्वाभाद (4)	सम राशि
हर्षल	वृष	07:00:34	कृतिका (4)	सम राशि
नेपच्यून	कन्या	02:55:44	उत्तरफाल्ग (2)	सम राशि
प्लूटो	कर्क	11:15:04	पुष्य (3)	सम राशि
लग्न	मिथुन	07:01:34	अरिद्रा (1)	....
10वां कस्प	मीन	22:11:00	पूर्वाभाद (1)	....

ग्रह स्थिति (पराशरी)

	ग्रह	व/अ		राशि	अंश	नक्षत्र	पद	कारक	विशेष
AC	लग्न		♊	मिथुन	07:01:34	अरिद्रा (6)	1		
☉	सूर्य		♋	कर्क	23:47:42	अश्लेषा (9)	3	भ्रात्रि	मित्र राशि
☽	चन्द्रमा		♒	कुम्भ	25:44:26	पूर्वाभाद (25)	2	आत्म	सम राशि
♂	मंगल		♓	मीन	25:32:30	रेवती (27)	3	अमात्य	मित्र राशि
☿	बुध	अ.	♋	कर्क	14:00:17	पुष्य (8)	4	ज्ञाति	शत्रु राशि
♃	बृहस्पति		♉	वृष	22:48:58	रोहिणी (4)	4	अपत्या	शत्रु राशि
♀	शुक्र		♌	सिहं	23:31:29	पुर्वफाल्ग (11)	4	मात्रि	स्व नक्षत्र
♄	शनि		♉	वृष	04:37:01	कृतिका (3)	3	दारा	मित्र राशि
☊	राहु		♍	कन्या	01:26:07	उत्तरफाल्ग (12)	2		मित्र राशि
☋	केतु		♓	मीन	01:26:07	पूर्वाभाद (25)	4		सम राशि
♅	हर्षल		♉	वृष	07:00:34	कृतिका (3)	4		सम राशि
♆	नेपच्यून		♍	कन्या	02:55:44	उत्तरफाल्ग (12)	2		सम राशि
♇	प्लूटो		♋	कर्क	11:15:04	पुष्य (8)	3		सम राशि

लग्न कुण्डली

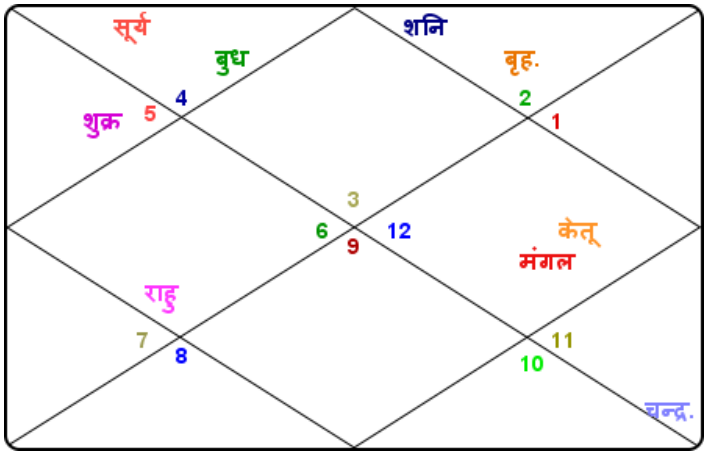

नवांश कुण्डली

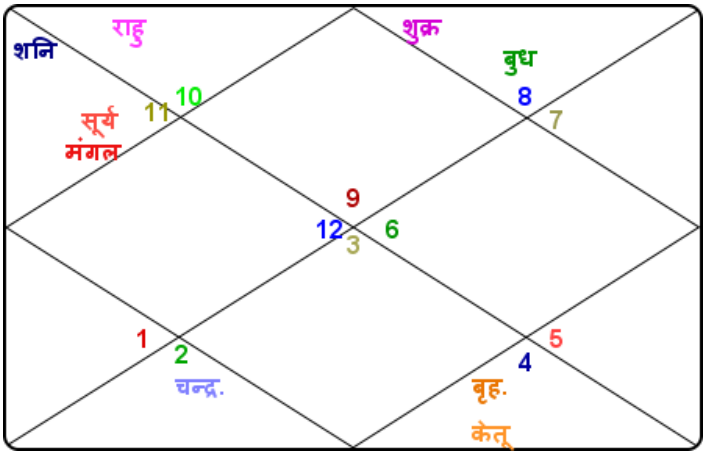

भाव स्फूट और कुण्डली

In Vedic astrology, the Bhava Chalit Chart is crucial as it reveals the exact position of planets in houses, providing deeper insights into one's life areas. While the Rashi chart determines planetary positions based on zodiac signs, the Bhava Chalit Chart focuses on house placements, allowing for a more precise understanding of a person's strengths, challenges, and life path. Through this, astrologers can make accurate predictions and offer tailored remedies.

भाव सख्या	भाव मध्य		भाव विस्तार (आरम्भ----अन्त)			
1	मिथुन	07:01:34	वृष	19:33:08	मिथुन	19:33:08
2	कर्क	02:04:42	मिथुन	19:33:08	कर्क	14:36:17
3	सिहं	27:07:51	कर्क	14:36:17	सिहं	09:39:25
4	कन्या	22:11:00	सिहं	09:39:25	कन्या	09:39:25
5	तुला	27:07:51	कन्या	09:39:25	तुला	14:36:17
6	वृश्चिक	02:04:42	तुला	14:36:17	वृश्चिक	19:33:08
7	धनु	07:01:34	वृश्चिक	19:33:08	धनु	19:33:08
8	मकर	02:04:42	धनु	19:33:08	मकर	14:36:17
9	कुम्भ	27:07:51	मकर	14:36:17	कुम्भ	09:39:25
10	मीन	22:11:00	कुम्भ	09:39:25	मीन	09:39:25
11	मेष	27:07:51	मीन	09:39:25	मेष	14:36:17
12	वृष	02:04:42	मेष	14:36:17	वृष	19:33:08

लग्न कुण्डली

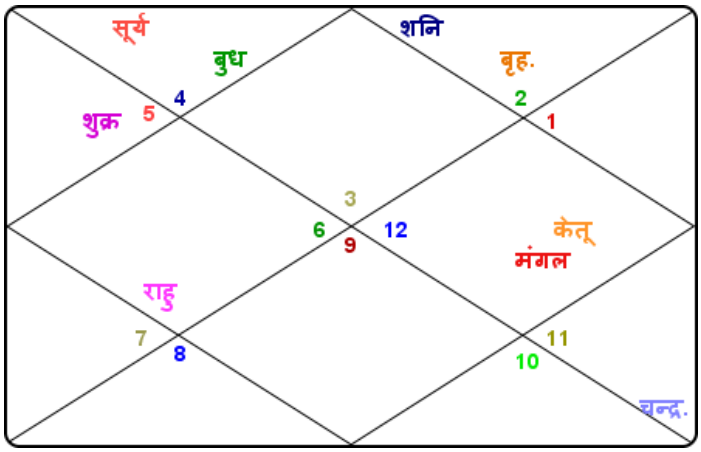

संसोधित कुण्डली

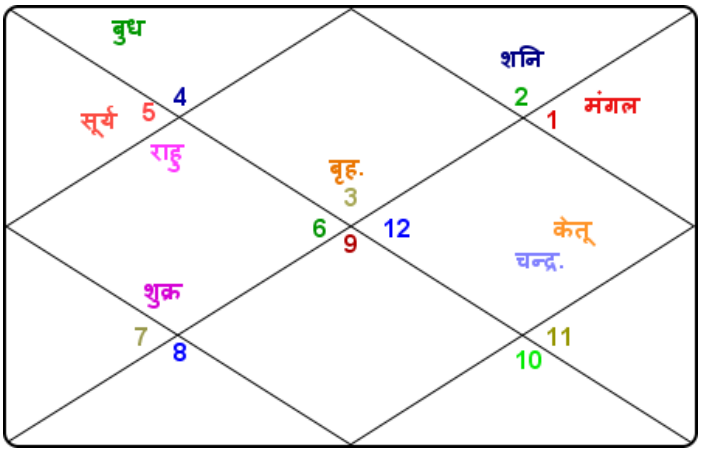

ग्रह मैत्री चक्र

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	-----	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चन्द्रमा	मित्र	-----	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	-----	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	-----	सम	मित्र	सम	सम	सम
बृहस्पति	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	-----	शत्रु	सम	मित्र	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	-----	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	-----	मित्र	मित्र
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	मित्र	-----	सम
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	मित्र	सम	-----

तत्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	-----	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
चन्द्रमा	शत्रु	-----	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र
मंगल	शत्रु	मित्र	-----	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु
बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	-----	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
बृहस्पति	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	-----	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
शुक्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	-----	मित्र	मित्र	शत्रु
शनि	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	-----	शत्रु	मित्र
राहु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	-----	शत्रु
केतु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	-----

पचंधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	....	सम	सम	शत्रु	अधिमित्र	सम	सम	सम	अधिशत्रु
चन्द्रमा	सम	....	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	अधिशत्रु	सम
मंगल	सम	अधिमित्र	....	अधिशत्रु	अधिमित्र	शत्रु	मित्र	अधिशत्रु	सम
बुध	सम	अधिशत्रु	शत्रु	....	मित्र	अधिमित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
बृहस्पति	अधिमित्र	अधिमित्र	अधिमित्र	सम	....	सम	शत्रु	सम	मित्र
शुक्र	सम	अधिशत्रु	शत्रु	अधिमित्र	मित्र	....	अधिमित्र	अधिमित्र	सम
शनि	सम	सम	सम	अधिमित्र	शत्रु	अधिमित्र	....	सम	अधिमित्र
राहु	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	मित्र	सम	अधिमित्र	सम	....	शत्रु
केतु	अधिशत्रु	सम	सम	शत्रु	मित्र	सम	अधिमित्र	शत्रु	....

D-16 षोडश वर्ग कुण्डली

जन्म/लग्न कुण्डली (डी 1)

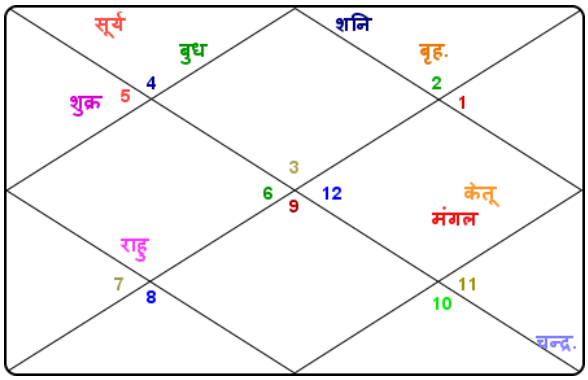

जन्मकुण्डली या लग्न कुण्डली एक व्यक्ति के जीवन की एक विस्तृत तस्वीर है। यह 12 घरों में विभाजित है जो जीवन के विभिन्न पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं, प्रत्येक घर एक अलग राशि और ग्रह द्वारा नियंत्रित होता है। विभिन्न घरों में ग्रहों और राशियों के स्थान और परस्पर क्रिया का मूल्यांकन करके, कुण्डली किसी के व्यक्तित्व, रिश्तों, नौकरी, धन और सामान्य जीवन पथ में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

होरा कुण्डली (डी 2)

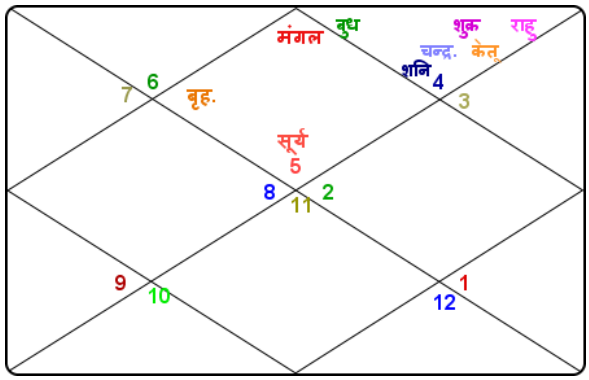

होरा कुण्डली मुख्य जन्म कुण्डली से निर्मित एक विभागीय कुण्डली है जिसका उपयोग समृद्धि और वित्तीय संभावनाओं को निर्धारित करने के लिए किया जाता है। यह जन्म कुंडली में प्रत्येक राशि को आधे में विभाजित करता है, जिसमें सूर्य पहले अर्द्ध भाग पर शासन करता है और चंद्रमा दूसरे पर शासन करता है। ज्योतिषी ग्रहों की स्थिति और होरा कुण्डली के भीतर उनके संबंध या संयोजन का मूल्यांकन करके जीवन भर धन और वित्तीय स्थिरता प्राप्त करने के लिए किसी व्यक्ति की क्षमता का अनुमान लगा सकते हैं।

द्रेष्काण कुण्डली (डी 3)

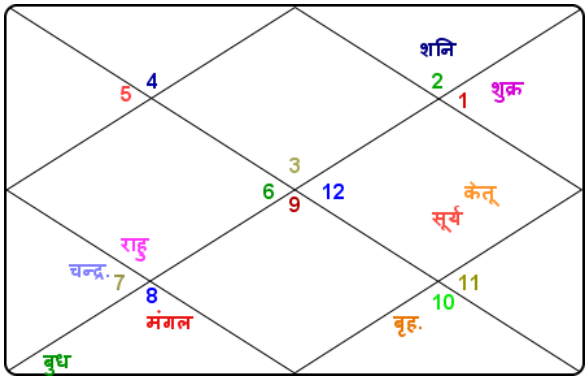

द्रेक्कन कुण्डली, प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 3 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक 10 डिग्री माप का होता है। इस कुण्डली का उपयोग किसी के जीवन पर उसके भाई--बहनों, चचेरे भाई--बहनों और अन्य करीबी रिश्तेदारों के प्रभाव का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति की संचार क्षमता, छोटी यात्रा और साहस पर अंतर्दृष्टि भी देता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन क्षेत्रों का अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करने में सहायता मिलती है।

चतुर्थांश कुण्डली (डी 4)

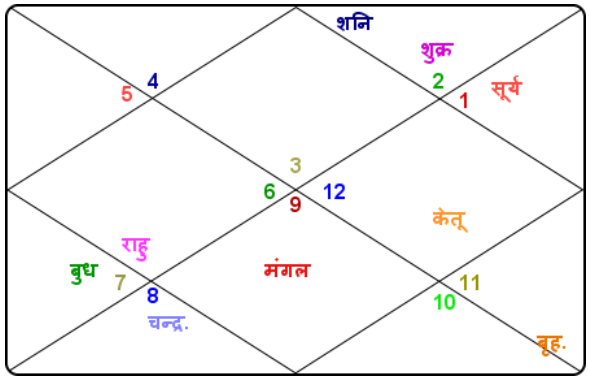

चतुर्थांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 4 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक 7.5 डिग्री तक फैला हुआ है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के घर, जमीन और अoटोमोबाइल के संबंध में उसकी खुशी, संपत्ति और भाग्य का मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति की सुरक्षा, भावनात्मक कल्याण, और उनकी मां या मातृभाषा के साथ संबंध में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन क्षेत्रों के बारे में बेहतर ज्ञान प्राप्त करने में सहायता करता है।

सप्तमांश कुण्डली (डी 7)

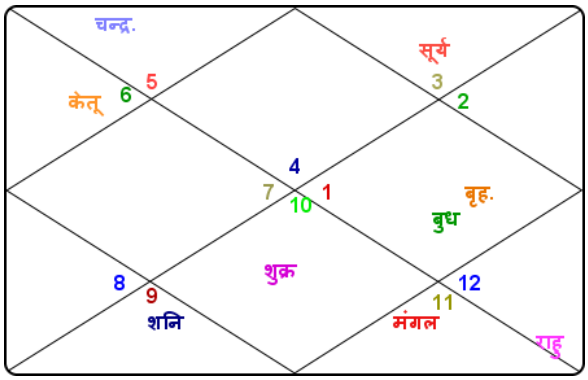

सप्तांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो मुख्य जन्म कुण्डली के प्रत्येक चिन्ह को 7 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप लगभग 4.29 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग सामान्यतः किसी व्यक्ति के जीवन में संतान, प्रजनन क्षमता और प्रसव से संबंधित मुद्दों का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के स्वास्थ्य, कल्याण और बच्चों से उत्पन्न होने वाले सामान्य आनंद के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है, साथ ही साथ किसी व्यक्ति के बच्चों की संख्या के बारे में अंतर्दृष्टि भी प्रदान करता है।

नवांश कुण्डली (डी 9)

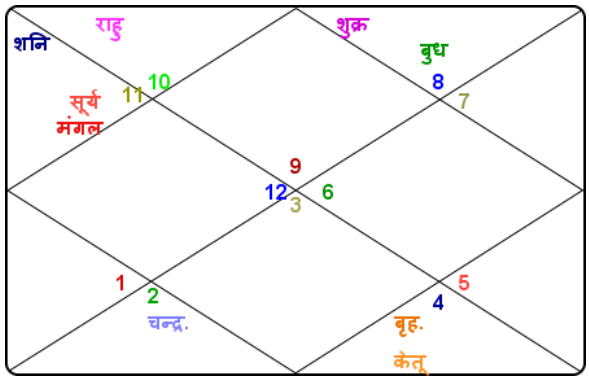

नवांश कुण्डली वैदिक ज्योतिष में एक महत्वपूर्ण संभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 9 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 3.20 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर ग्रहों की ताकत और कमजोरियों, वैवाहिक जीवन की गुणवत्ता और किसी के जीवनसाथी की प्रकृति का निर्धारण करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास और आकांक्षाओं की पूर्ति में गहरी अंतर्दृष्टि भी देता है, जिससे ज्योतिषियों के लिए व्यक्ति के जीवन के कई क्षेत्रों को समझने में यह एक महत्वपूर्ण उपकरण बन जाता है।

दशमांश कुण्डली (डी 10)

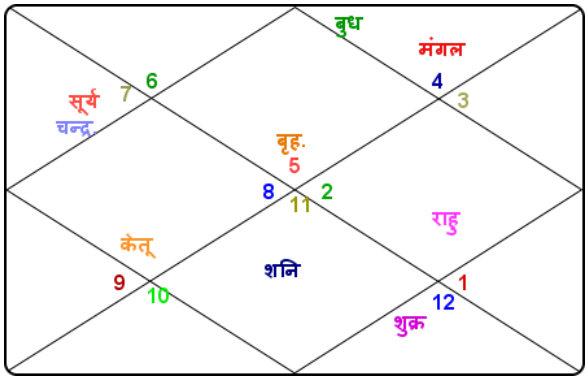

दशमांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 10 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 3 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग अधिकांशतः किसी व्यक्ति के करियर, पेशे और समग्र व्यावसायिक उपलब्धि का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को पेशेवर प्रगति और सफलता के लिए मार्गदर्शन प्रदान करने के साथ--साथ सर्वोत्तम कार्य मार्ग, संभावित उन्नति और कार्यस्थल की बाधाओं के बारे में जानकारी देता है।

द्वादशांश कुण्डली (डी 12)

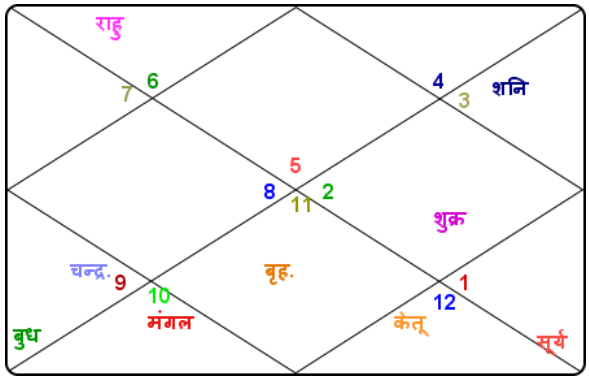

द्वादशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 12 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 2.5 डिग्री में मापता है। इस कुण्डली का उपयोग आम तौर पर किसी व्यक्ति के माता--पिता, पूर्वजों और पारिवारिक वंश के मुद्दों की जांच करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति के माता--पिता, विरासत और पारिवारिक कर्म के साथ एक व्यक्ति के संबंध को प्रकट करता है, ज्योतिषियों को एक व्यक्ति के जीवन के इन महत्वपूर्ण क्षेत्रों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है।

षोडशांश कुण्डली (डी 16)

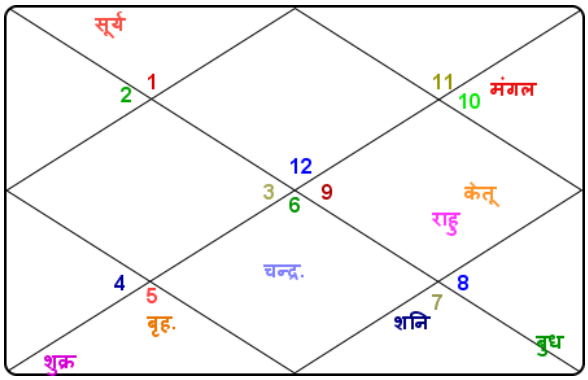

षोडशांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 16 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 1.875 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के अoटोमोबाइल, आराम और विलासिता की विशेषताओं की जांच करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति की वाहन, अचल संपत्ति, और अन्य वस्तुओं को हासिल करने और बनाए रखने की क्षमता को प्रकट करता है जो उनके जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के अस्तित्व के इन विशिष्ट पहलुओं को समझने में सहायता मिलती है।

विशांश कुण्डली (डी 20)

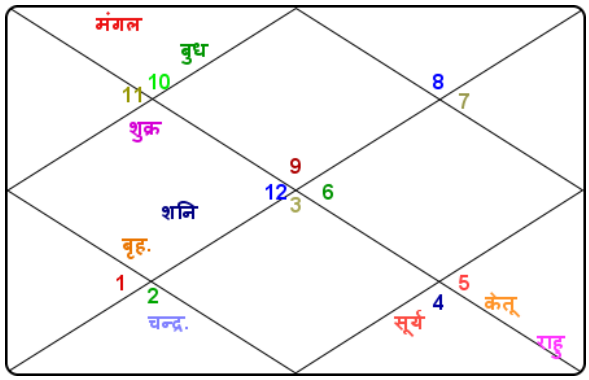

विशांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 20 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 1.5 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास, धार्मिक प्राथमिकताओं और अधिक ज्ञान की खोज का विश्लेषण करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के अंतर्रात्मा, आध्यात्मिक क्षमता और उनके जीवन में धर्म और आध्यात्मिकता के महत्व के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन तत्वों का पता लगाने में सहायता मिलती है।

चर्तुविंशांश कुण्डली (डी 24)

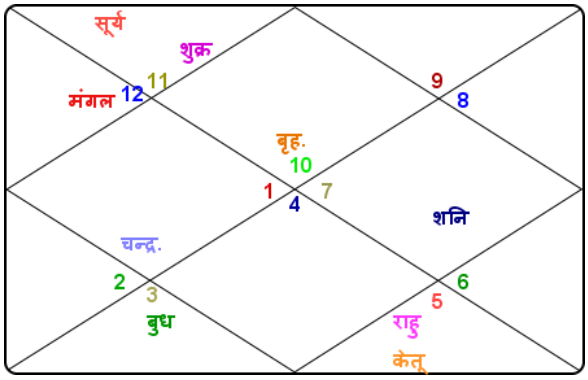

चर्तुविंशांश कुण्डली एक विभाजन कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 24 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक की माप 1.25 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग आमतौर पर किसी व्यक्ति की शिक्षा, प्रतिभा और सीखने की क्षमता का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह कुछ विषयों, विशेषज्ञता के क्षेत्रों और शैक्षिक उपलब्धि के लिए एक व्यक्ति की योग्यता को प्रकट करता है, ज्योतिषियों को अकादमिक उन्नति प्राप्त करने और बौद्धिक क्षमता तक पहुंचने के लिए मागदर्शन प्रदान करने की अनुमति देता है।

सप्तविंशांश कुण्डली (डी 27)

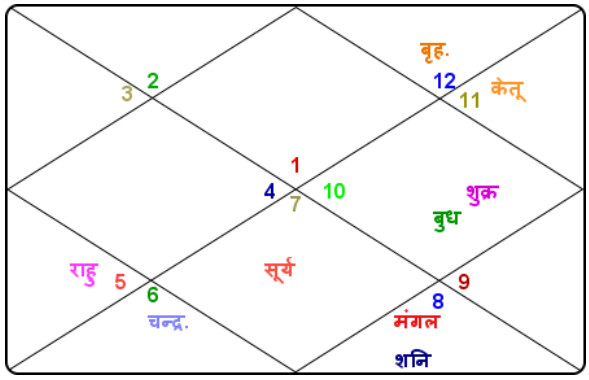

सप्तविंशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 27 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 1.11 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग मुख्य रूप से किसी व्यक्ति के नक्षत्रों या चंद्र राशियों की ताकत और उनके जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को व्यक्ति के स्वभाव, आचरण और अंतर्निहित नक्षत्रों से प्रभावित जीवन की घटनाओं के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करके व्यक्ति के भाग्य और आध्यात्मिक झुकाव के बारे में बेहतर ज्ञान देता है।

त्रिंशांश कुण्डली (डी 30)

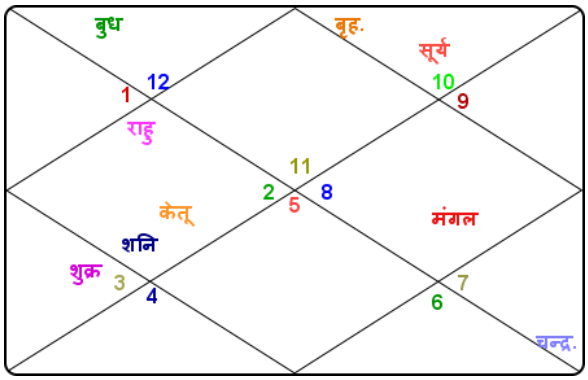

त्रिशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 30 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को एक डिग्री में मापता है। इस कुण्डली का उपयोग ज्यादातर उन कई कठिनाइयों और आपदाओं का आकलन करने के लिए किया जाता है जो एक व्यक्ति अपने जीवन के दौरान अनुभव कर सकता है। यह एक व्यक्ति की छिपी ताकत, कमजोरियों और उनकी कठिनाइयों के स्रोत को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को बाधाओं पर काबू पाने और जीवन के कई पहलुओं में कठिनाइयों का सामना करने हेतु मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

खवेदांश कुण्डली (डी 40)

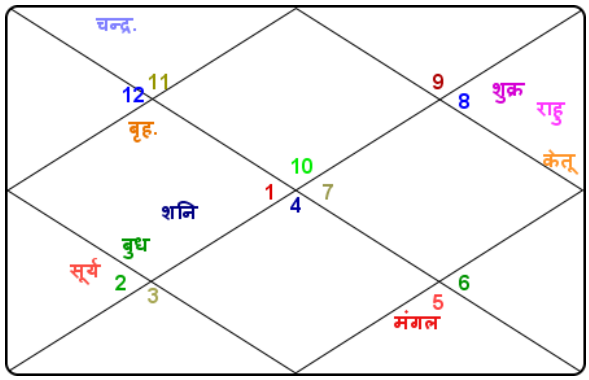

खवेदांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 40 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 0.75 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग आम तौर पर किसी व्यक्ति की समग्र भलाई और शुभता की गहरी समझ प्राप्त करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य के साथ--साथ उनके समग्र सुख और समृद्धि के बारे में जानकारी प्रदान करता है, जिससे ज्योतिषियों को जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने और एक सामंजस्यपूर्ण जीवन शैली प्राप्त करने के बारे में सलाह देने की अनुमति मिलती है।

अक्षवेदांश कुण्डली (डी 45)

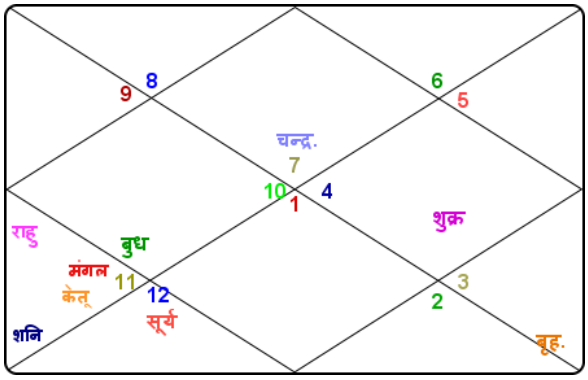

अक्षवेदांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 45 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 0.67 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग अधिकांशतः किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक और दिव्य गुणों का आकलन करने के लिए उपयोग किया जाता है। यह एक व्यक्ति की प्रा.तिक आध्यात्मिक क्षमता, दैवीय आशीर्वाद और आध्यात्मिक विकास स्तर को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को आध्यात्मिक विकास में उन्नति और जागरूकता के उच्च स्तर की प्राप्ति हेतु मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

षष्ठांश कुण्डली (डी 60)

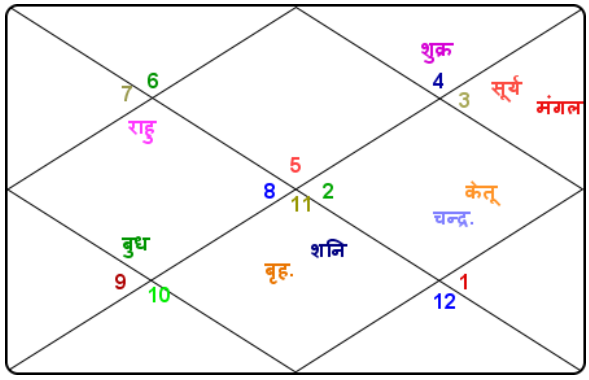

षष्ठांश कुण्डली, एक विभाजन कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 60 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 0.5 डिग्री मापता है। यह कुण्डली अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है और इसका उपयोग मुख्य रूप से किसी व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करने वाले सबसे गहरे कर्म प्रभावों को प्रकट करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति के पूर्व जीवन के कर्मों, अव्यक्त झुकावों और उनकी गतिविधियों के सूक्ष्म प्रभावों को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को कर्म असंतुलन को ठीक करने और अत्यधिक संतोषप्रद जीवन जीने का मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

षडबल और भावबल

षड्बल

बल का नाम	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
उच्च बल	25.4	37.58	40.82	39.67	45.94	11.16	4.87
सप्त वर्ग बल	86.25	78.75	135	45	86.25	91.88	131.25
युग्म अयुग्म बल	15	15	15	0	0	15	15
केन्द्रादी बल	30	15	60	30	15	15	15
द्रेक्कन बल	0	15	0	15	0	15	0
स्थान बल	**156.65**	**161.33**	**250.82**	**129.67**	**147.19**	**148.03**	**166.12**
वांछित स्थान बल	165	133	96	165	165	133	96
वांछित अंश	94.94	121.3	261.27	78.59	89.21	111.3	173.04
दिग बल	**9.46**	**1.19**	**48.88**	**47.67**	**55.26**	**59.55**	**10.8**
वांछित दिग बल	35	50	30	35	35	50	30
वांछित अंश	27.04	2.37	162.94	136.21	157.9	119.11	36.01
नतोन्नत बल	50.92	9	9	50.92	60	50.92	9
पक्ष बल	10.65	49.35	10.65	10.65	49.35	49.35	10.65
त्रिभाग बल	0	0	60	0	60	0	0
वर्ष बल	0	0	0	0	15	0	0
मास बल	0	0	0	0	0	0	30
दिन बल	45	0	0	0	0	0	0
होरा बल	0	0	0	0	0	0	60
अयन बल	49.31	35.07	38.71	52.63	58.04	36.17	4.9
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
काल बल	**155.88**	**93.42**	**118.36**	**114.19**	**242.39**	**136.44**	**114.54**
वांछित काल बल	112	100	67	112	112	100	67
वांछित अंश	139.18	93.42	176.66	101.96	216.42	136.44	170.96
चेष्टा बल	**49.31**	**49.35**	**15**	**0**	**30**	**45**	**30**
वांछित चेष्टा बल	50	30	40	50	50	30	40
वांछित अंश	98.62	164.51	37.5	0	60	150	75
नैसर्गिक बल	**60**	**51.43**	**17.14**	**25.71**	**34.29**	**42.86**	**8.57**
द्रिक बल	**-27.75**	**4.52**	**9.77**	**-30.32**	**-10.21**	**-10.93**	**-2.21**
कुल षड्बल	**403.55**	**361.24**	**459.98**	**286.92**	**498.91**	**420.95**	**327.83**
षड्बल (रूप में)	**6.73**	**6.02**	**7.67**	**4.78**	**8.32**	**7.02**	**5.46**
न्यूनतम वांछनिय	390	360	300	420	390	330	300
वांछित अंश	103.47	100.35	153.33	68.32	127.93	127.56	109.28
तुलनात्मक स्थिति	**4**	**5**	**2**	**7**	**1**	**3**	**6**
इष्ट फल	**33.58**	**43.07**	**24.74**	**0**	**37.12**	**22.41**	**12.09**
कष्ट फल	**26.42**	**16.93**	**35.26**	**60**	**22.88**	**37.59**	**47.91**
दिप्ति बल	**100**	**49.35**	**39.42**	**20.98**	**20.33**	**37.95**	**26.39**

भावबल

भाव सँख्या	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भाव राशि	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
भावाधिपति बल	286.92	361.24	361.24	403.55	286.92	459.98	498.91	327.83	327.83	327.83	498.91	420.95
भाव दिग्बल	60	40	10	30	20	50	0	40	20	0	50	40
भाव दृष्टिबल	-3.82	-14.87	-16.1	-3.5	10.83	-21.04	-16.76	-11.59	8.25	9.53	5.25	3.64
भावबल योग	343.1	386.37	355.14	430.05	317.75	488.94	482.16	356.24	356.08	337.36	554.16	464.59
भावबल (रूप में)	5.72	6.44	5.92	7.17	5.3	8.15	8.04	5.94	5.93	5.62	9.24	7.74
तुलनात्मक स्थिति	10	6	9	5	12	2	3	7	8	11	1	4

ग्रहों की दृष्टियाँ

In Vedic astrology, planetary aspects (drishti) are pivotal in analyzing a birth chart. Vedic aspects provide insights into the inherent influences planets exert on each other, Jaimini aspects focus on the sign-based interactions, and Tajika aspects, blend Persian techniques to reveal temporal influences. Together, they offer a comprehensive understanding of an individual's life patterns and potentialities.

ग्रह दृष्टि (पराशरी)

ग्रह		मुख्य दृष्टि	विशेष दृष्टि
☉	सूर्य	------	------
☽	चन्द्रमा	शुक्र	------
♂	मंगल	राहु	लग्न
☿	बुध	------	------
♃	बृहस्पति	------	राहु
♀	शुक्र	चन्द्रमा	------
♄	शनि	------	सूर्य, चन्द्रमा, बुध
☊	राहु	मंगल, केतु	------
☋	केतु	राहु	------

ग्रह दृष्टि (जैमिनी)

राशि (ग्रह)		सम्मुख दृष्टि	पृष्ठ दृष्टि
♈	मेष	वृश्चिक	सिहं(शुक्र), कुम्भ(चन्द्रमा)
♉	वृष(बृहस्पति, शनि)	तुला	कर्क(सूर्य, बुध), मकर
♊	मिथुन	कन्या(राहु)	धनु, मीन(मंगल, केतु)
♋	कर्क(सूर्य, बुध)	कुम्भ(चन्द्रमा)	वृष(बृहस्पति, शनि), वृश्चिक
♌	सिहं(शुक्र)	मकर	मेष, तुला
♍	कन्या(राहु)	मिथुन	धनु, मीन(मंगल, केतु)
♎	तुला	वृष(बृहस्पति, शनि)	सिहं(शुक्र), कुम्भ(चन्द्रमा)
♏	वृश्चिक	मेष	कर्क(सूर्य, बुध), मकर
♐	धनु	मीन(मंगल, केतु)	मिथुन, कन्या(राहु)
♑	मकर	सिहं(शुक्र)	वृष(बृहस्पति, शनि), वृश्चिक
♒	कुम्भ(चन्द्रमा)	कर्क(सूर्य, बुध)	मेष, तुला
♓	मीन(मंगल, केतु)	धनु	मिथुन, कन्या(राहु)

नोट – सम्मुख दृष्टि का प्रभाव पृष्ठ दृष्टि से अधिक होता है।

ग्रह दृष्टि (ताजिक)

ग्रह		लग्न	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	केतु
AC	लग्न	---									
☉	सूर्य	2/12(-)	---								
☽	चन्द्रमा	5/9(-)	6/8(+)	---							
♂	मंगल	4/10(-)	5/9(+)	2/12(+)	---						
☿	बुध	2/12(-)	1/1(+)	6/8(-)	5/9(-)	---					
♃	बृहस्पति	2/12(-)	3/11(+)	4/10(+)	3/11(+)	3/11(-)	---				
♀	शुक्र	3/11(-)	2/12(+)	7/7(+)	6/8(+)	2/12(-)	4/10(+)	---			
♄	शनि	2/12(+)	3/11(-)	4/10(-)	3/11(-)	3/11(-)	1/1(-)	4/10(-)	---		
☊	राहु	4/10(-)	3/11(-)	6/8(-)	7/7(-)	3/11(-)	5/9(-)	2/12(-)	5/9(+)	---	
☋	केतु	4/10(-)	5/9(-)	2/12(-)	1/1(-)	5/9(-)	3/11(-)	6/8(-)	3/11(+)	7/7 (+)	---

लिजेण्ड –

लिजेण्ड – 1/1 युति, 2/12 अर्द्ध सेक्सटाइल, 3/11 सेक्सटाइल, 4/10 स्कवायर, 5/9 ट्राइन, 6/8 क्वीन्कशं, 7/7 से अभिप्राय यह है कि इसमें ग्रह दृष्टि की सीमा का समावेश है। (+) से अभिप्राय यह है कि इसमें ग्रह दृष्टि की सीमा का समावेश नहीं है।

नोट – ग्रह दृष्टि के लिए ताजिक सिद्धान्त के अनुसार औसत ग्रह दृष्टि की सीमा का प्रयोग किया गया है। राहु और केतू के लिए ग्रह दृष्टि की सीमा 6 अंश है, परन्तु लग्न के लिए ग्रह दृष्टि की सीमा का प्रयोग नहीं किया गया है।

नक्षत्र दिग्दर्शिका

ग्रह अवस्था

	ग्रह	स्वप्नादि 3	बलादि 5	लज्जितादि 9	दिप्तादि 9	दिप्तादि 10
☉	सूर्य	स्वप्न	कुमार	क्षुदित	शान्त	....
☽	चन्द्रमा	सुप्त	मृत	क्षुदित	दुःखित	....
♂	मंगल	स्वप्न	बाल	क्षुदित	प्रमुदित	मुदित
☿	बुध	स्वप्न	युवा	तृषित	शान्त	खल
♃	बृहस्पति	स्वप्न	कुमार	लज्जित	दीन	मुदित
♀	शुक्र	सुप्त	वृद्ध	क्षुदित	दुःखित	....
♄	शनि	स्वप्न	मृत	मुदित	प्रमुदित	मुदित
☊	राहु	स्वप्न	बाल	क्षुदित	दीन	मुदित
☋	केतु	स्वप्न	बाल	लज्जित	दीन	मुदित

सन्नड़ि

जन्म	कर्म	संघातिक	समुदय	विनाश	मानस
पूर्वाभाद्र	पुनर्वसु	हस्ता	स्वाति	पूर्वाशाढ़	श्रवण

स्थुन

कंटक स्थुन	उत्तरभाद्र
कुज स्थुन	पुष्य
रक्त स्थुन	पूर्वाभाद्र

त्रि–नाड़ि

जाति	शतभिशा
देश	पूर्वाभाद्र
प्रतिष्ठा	उत्तरभाद्र

नव–तारा चक्र

जन्म	पूर्वाभाद्र	पुनर्वसु	विशाखा
सम्पत	उत्तरभाद्र	पुष्य	अनुराधा
विपत	रेवति	अश्लेशा	ज्येष्ठा
खेष्म	अश्विनी	मघा	मूला
प्रत्यरी	भरणी	पुर्वफाल्गुनी	पूर्वाशाढ़
साधक	कृतिका	उत्तरफाल्गुनी	उत्तराशाढ
निधन	रोहिणी	हस्ता	श्रवण
मित्र	मृगशिरा	चित्रा	धनिष्ठा
अति मित्र	अरिद्रा	स्वाति	शतभिशा

आक्रचतुष्टय

जन्म	रेवति
कर्म	पुष्य
आधान	अनुराधा
नैधव	उत्तराशाढ

नवशुभ अक्र

		दग्ध : अश्लेशा	क्षय : हस्ता
	शूल : विशाखा	सन्निपात : श्रवण	ध्वज : उत्तरभाद्र
उल्का : भरणी	भुकम्प : कृतिका	वज्रक : रोहिणी	निर्घात : मृगशिरा

आर्कचतुष्टय की गणना चन्द्रमा के नक्षत्र से की जाती है (28 नक्षत्रों के आधार पर)।
नवशुभ अर्क की गणना चन्द्रमा के नक्षत्र से की जाती है (27 नक्षत्रों के आधार पर)।

त्रि–पाप चक्र

प्रथम चक्र उम्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितिय चक्र उम्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतिय चक्र उम्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतू पताकी	शनि	बृहस्पति	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	शनि	बृहस्पति	राहु
केतू कुण्डली	शनि	सूर्य	सूर्य	सूर्य	केतु	बुध	बुध	बुध	मंगल	मंगल	मंगल	केतु
गुरू कुण्डली	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चन्द्रमा	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल

प्रथम चक्र उम्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितिय चक्र उम्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतिय चक्र उम्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतू पताकी	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	शनि	बृहस्पति	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य
केतू कुण्डली	बृहस्पति	बृहस्पति	बृहस्पति	चन्द्रमा	चन्द्रमा	चन्द्रमा	केतु	शुक्र	शुक्र	शुक्र	राहु	राहु
गुरू कुण्डली	केतु	चन्द्रमा	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चन्द्रमा	बुध

प्रथम चक्र उम्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितिय चक्र उम्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतिय चक्र उम्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतू पताकी	चन्द्रमा	मंगल	बुध	शनि	बृहस्पति	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध
केतू कुण्डली	केतु	शनि	शनि	शनि	सूर्य	सूर्य	सूर्य	केतु	बुध	बुध	बुध	मंगल
गुरू कुण्डली	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चन्द्रमा	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि

त्रि–आयुध चक्र से विश्लेषण

आपकी जन्म कुण्डली में सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनने पर रथ चक्र के अनुसार यह घोड़े के जुए पर स्थित है। आप की कुण्डली में यदि कोई संशोधित प्रभाव नहीं है तो, आपको अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है और आपको आपकी मेहनत के अनुसार फल प्राप्त करने में भी बाधा हो सकती है।

आपकी जन्म कुण्डली में सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनने पर घूर्ण चक्र के अनुसार यह छठ्हे भाग में स्थित है। आप की कुण्डली में यदि कोई संशोधित प्रभाव नहीं है तो, आपको अपने जीवन में कड़े विरोध का सामना करना पड़ सकता है। ऐसा होने पर आपको इस टकराव से बचना ही ठीक रहेगा।

आपकी जन्म कुण्डली में सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनने पर चाप चक्र के अनुसार यह धनुष के चाप पर स्थित है। आप की कुण्डली में यदि कोई संशोधित प्रभाव नहीं है तो, आप साहसी और शक्तिशाली रहेंगे। आप अपने गुणों के द्वारा वीरता पूर्वक कार्य करके आप अपनी एक अमिट छाप छोडेंगे।

विंशोत्तरी दशा (1)

बृहस्पति (9.0 व.1.0 म.11 द.)

दशा बैलेंश

N.C.Lahiri (023:02:29)

Ayanamsha

बृहस्पति (16 वर्ष)

10/08/1941 To 19/09/1950

बारहवें	वृष	शत्रु
भाव	राशि	संबंन्ध
	रोहिणी (4)	7 , 10
विशेष	नक्षत्र	भावपति
बृहस्पति	-------	-------
शनि	-------	-------
बुध	26-08-1941	00.00
केतु	02-08-1942	00.04
शुक्र	02-04-1945	00.98
सूर्य	19-01-1946	03.64
चन्द्रमा	21-05-1947	04.44
मंगल	26-04-1948	05.78
राहु	19-09-1950	06.71

शनि (19 वर्ष)

19/09/1950 To 19/09/1969

बारहवें	वृष	मित्र
भाव	राशि	संबंन्ध
	कृतिका (3)	8 , 9
विशेष	नक्षत्र	भावपति
शनि	22-09-1953	09.11
बुध	01-06-1956	12.12
केतु	11-07-1957	14.81
शुक्र	10-09-1960	15.92
सूर्य	23-08-1961	19.09
चन्द्रमा	24-03-1963	20.04
मंगल	02-05-1964	21.62
राहु	09-03-1967	22.73
बृहस्पति	19-09-1969	25.58

बुध (17 वर्ष)

19/09/1969 To 19/09/1986

दूसरे	कर्क	शत्रु
भाव	राशि	संबंन्ध
अस्त	पुष्य (4)	1 , 4
विशेष	नक्षत्र	भावपति
बुध	15-02-1972	28.11
केतु	12-02-1973	30.52
शुक्र	13-12-1975	31.51
सूर्य	19-10-1976	34.34
चन्द्रमा	21-03-1978	35.19
मंगल	18-03-1979	36.61
राहु	04-10-1981	37.60
बृहस्पति	10-01-1984	40.15
शनि	19-09-1986	42.42

केतु (7 वर्ष)

19/09/1986 To 19/09/1993

दसवें	मीन	सम
भाव	राशि	संबंन्ध
वक्री	पूर्वाभाद (4)	
विशेष	नक्षत्र	भावपति
केतु	15-02-1987	45.11
शुक्र	16-04-1988	45.52
सूर्य	22-08-1988	46.69
चन्द्रमा	24-03-1989	47.04
मंगल	20-08-1989	47.62
राहु	07-09-1990	48.03
बृहस्पति	14-08-1991	49.08
शनि	22-09-1992	50.01
बुध	19-09-1993	51.12

शुक्र (20 वर्ष)

19/09/1993 To 19/09/2013

तीसरे	सिहं	शत्रु
भाव	राशि	संबंन्ध
स्वनक्षत्र	पुर्वफाल्ग (4)	12 , 5
विशेष	नक्षत्र	भावपति
शुक्र	19-01-1997	52.11
सूर्य	19-01-1998	55.44
चन्द्रमा	19-09-1999	56.44
मंगल	19-11-2000	58.11
राहु	19-11-2003	59.28
बृहस्पति	20-07-2006	62.28
शनि	19-09-2009	64.94
बुध	20-07-2012	68.11
केतु	19-09-2013	70.94

सूर्य (6 वर्ष)

19/09/2013 To 19/09/2019

दूसरे	कर्क	मित्र
भाव	राशि	संबंन्ध
	अश्लेषा (3)	3
विशेष	नक्षत्र	भावपति
सूर्य	07-01-2014	72.11
चन्द्रमा	08-07-2014	72.41
मंगल	13-11-2014	72.91
राहु	07-10-2015	73.26
बृहस्पति	26-07-2016	74.16
शनि	08-07-2017	74.96
बुध	14-05-2018	75.91
केतु	19-09-2018	76.76
शुक्र	19-09-2019	77.11

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

विंशोत्तरी दशा (2)

चन्द्रमा (10 वर्ष)		
19/09/2019 To 19/09/2029		
नौवें	कुम्भ	सम
भाव	राशि	संबंन्ध
	पूर्वाभाद (2)	2
विशेष	नक्षत्र	भावपति
चन्द्रमा	20-07-2020	78.11
मंगल	18-02-2021	78.94
राहु	20-08-2022	79.53
बृहस्पति	19-12-2023	81.03
शनि	20-07-2025	82.36
बुध	19-12-2026	83.94
केतु	20-07-2027	85.36
शुक्र	21-03-2029	85.94
सूर्य	19-09-2029	87.61

मंगल (7 वर्ष)		
19/09/2029 To 19/09/2036		
दसवें	मीन	मित्र
भाव	राशि	संबंन्ध
	रेवती (3)	11 , 6
विशेष	नक्षत्र	भावपति
मंगल	15-02-2030	88.11
राहु	05-03-2031	88.52
बृहस्पति	09-02-2032	89.57
शनि	21-03-2033	90.50
बुध	18-03-2034	91.61
केतु	14-08-2034	92.60
शुक्र	14-10-2035	93.01
सूर्य	18-02-2036	94.18
चन्द्रमा	19-09-2036	94.53

राहु (18 वर्ष)		
19/09/2036 To 19/09/2054		
चौथे	कन्या	मित्र
भाव	राशि	संबंन्ध
वक्री	उत्तरफाल्ग (2)	
विशेष	नक्षत्र	भावपति
राहु	02-06-2039	95.11
बृहस्पति	26-10-2041	97.81
शनि	01-09-2044	100.21
बुध	21-03-2047	103.06
केतु	07-04-2048	105.61
शुक्र	08-04-2051	106.66
सूर्य	02-03-2052	109.66
चन्द्रमा	01-09-2053	110.56
मंगल	19-09-2054	112.06

वर्तमान दशा/अन्तर/प्रत्यन्तर/ सूक्ष्म/ प्राण दशा

दशा	ग्रह	आरम्भ	समाप्त
महादशा	चन्द्रमा	19:09:2019 (16:52:31)	19:09:2029 (16:52:31)
अन्तर्दशा	शनि	19:12:2023 (22:52:31)	20:07:2025 (20:52:31)
प्रत्यन्तर्दशा	केतु	10:06:2024 (18:32:56)	14:07:2024 (13:50:56)
सूक्ष्मदशा	सूर्य	18:06:2024 (09:05:29)	20:06:2024 (01:39:23)
प्राणदशा	शनि	19:06:2024 (04:21:36)	19:06:2024 (10:46:58)

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

विंशोत्तरी दशा ग्रहों की अवधि के निर्धारण के लिए वैदिक ज्योतिष में प्रयुक्त एक प्रणाली है, जिसे एक व्यक्ति के जीवन में दशा के रूप में भी जाना जाता है। 'विंशोत्तरी' शब्द का अर्थ संस्कृत में '120' है, जो सभी ग्रहों की अवधि के एक पूर्ण चक्र में वर्षों की कुल संख्या का प्रतिनिधित्व करता है।

यह दशा किसी व्यक्ति के जन्म के समय चंद्रमा की स्थिति पर आधारित है, और यह वैदिक ज्योतिष के नौ ग्रहों में से प्रत्येक को निश्चित अवधि प्रदान करती है। इस प्रणाली में स्थिति के आधार पर प्रत्येक ग्रह को 6 से 20 वर्ष तक की एक विशिष्ट संख्या दी जाती है।

प्रत्येक ग्रहों की अवधि के दौरान, विचाराधीन/संबंधित ग्रह का व्यक्ति के जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यह प्रभाव सकारात्मक या नकारात्मक हो सकता है, जो व्यक्ति के जन्मकुण्डली और उस समय के विशिष्ट ग्रहों की स्थिति पर निर्भर करता है।

विंशोत्तरी दशा को वैदिक ज्योतिष में एक महत्वपूर्ण उपकरण माना जाता है, क्योंकि यह किसी व्यक्ति के जीवन में प्रमुख घटनाओं और परिवर्तनों की भविष्यवाणी करने के लिए एक विस्तृत और सटीक प्रणाली प्रदान करता है। ज्योतिषियों द्वारा करियर, रिश्ते, स्वास्थ्य, और किसी व्यक्ति के जीवन के अन्य पहलूओं के बारे में भविष्यवाणी करने के लिए इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है और यह भविष्य में मार्गदर्शन या अंतर्दृष्टि की तलाश करने वालों के लिए एक मूल्यवान उपकरण हो सकता है।

बृहस्पति दशा

(10:08:1941 – 19:09:1950)

बृहस्पति अन्तर		
बृहस्पति	-------	--
शनि	-------	--
बुध	-------	--
केतु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
राहु	-------	--

शनि अन्तर		
शनि	-------	--
बुध	-------	--
केतु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
राहु	-------	--
बृहस्पति	-------	--

बुध अन्तर (10:08:1941 To 26:08:1941)		
बुध	-------	--
केतु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
राहु	-------	--
बृहस्पति	-------	--
शनि	26-08-1941	00.00

केतु अन्तर (26:08:1941 To 02:08:1942)		
केतु	15-09-1941	00.04
शुक्र	11-11-1941	00.10
सूर्य	28-11-1941	00.25
चन्द्रमा	26-12-1941	00.30
मंगल	15-01-1942	00.38
राहु	07-03-1942	00.43
बृहस्पति	21-04-1942	00.57
शनि	14-06-1942	00.70
बुध	02-08-1942	00.85

शुक्र अन्तर (02:08:1942 To 02:04:1945)		
शुक्र	11-01-1943	00.98
सूर्य	28-02-1943	01.42
चन्द्रमा	21-05-1943	01.56
मंगल	16-07-1943	01.78
राहु	09-12-1943	01.93
बृहस्पति	17-04-1944	02.33
शनि	19-09-1944	02.69
बुध	04-02-1945	03.11
केतु	02-04-1945	03.49

सूर्य अन्तर (02:04:1945 To 19:01:1946)		
सूर्य	16-04-1945	03.64
चन्द्रमा	11-05-1945	03.68
मंगल	28-05-1945	03.75
राहु	11-07-1945	03.80
बृहस्पति	19-08-1945	03.92
शनि	04-10-1945	04.02
बुध	14-11-1945	04.15
केतु	01-12-1945	04.26
शुक्र	19-01-1946	04.31

चन्द्रमा अन्तर (19:01:1946 To 21:05:1947)		
चन्द्रमा	28-02-1946	04.44
मंगल	29-03-1946	04.56
राहु	10-06-1946	04.63
बृहस्पति	14-08-1946	04.83
शनि	30-10-1946	05.01
बुध	07-01-1947	05.22
केतु	04-02-1947	05.41
शुक्र	26-04-1947	05.49
सूर्य	21-05-1947	05.71

मंगल अन्तर (21:05:1947 To 26:04:1948)		
मंगल	09-06-1947	05.78
राहु	31-07-1947	05.83
बृहस्पति	14-09-1947	05.97
शनि	07-11-1947	06.10
बुध	25-12-1947	06.24
केतु	14-01-1948	06.38
शुक्र	11-03-1948	06.43
सूर्य	28-03-1948	06.59
चन्द्रमा	26-04-1948	06.63

राहु अन्तर (26:04:1948 To 19:09:1950)		
राहु	04-09-1948	06.71
बृहस्पति	30-12-1948	07.07
शनि	18-05-1949	07.39
बुध	19-09-1949	07.77
केतु	09-11-1949	08.11
शुक्र	04-04-1950	08.25
सूर्य	18-05-1950	08.65
चन्द्रमा	30-07-1950	08.77
मंगल	19-09-1950	08.97

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

शनि दशा

(19:09:1950 – 19:09:1969)

शनि अन्तर		
(19:09:1950 To 22:09:1953)		
शनि	12-03-1951	09.11
बुध	15-08-1951	09.59
केतु	18-10-1951	10.01
शुक्र	18-04-1952	10.19
सूर्य	12-06-1952	10.69
चन्द्रमा	12-09-1952	10.84
मंगल	15-11-1952	11.09
राहु	29-04-1953	11.27
बृहस्पति	22-09-1953	11.72

बुध अन्तर		
(22:09:1953 To 01:06:1956)		
बुध	08-02-1954	12.12
केतु	07-04-1954	12.50
शुक्र	17-09-1954	12.66
सूर्य	06-11-1954	13.11
चन्द्रमा	26-01-1955	13.24
मंगल	25-03-1955	13.47
राहु	19-08-1955	13.62
बृहस्पति	28-12-1955	14.03
शनि	01-06-1956	14.39

केतु अन्तर		
(01:06:1956 To 11:07:1957)		
केतु	25-06-1956	14.81
शुक्र	31-08-1956	14.88
सूर्य	21-09-1956	15.06
चन्द्रमा	24-10-1956	15.12
मंगल	17-11-1956	15.21
राहु	17-01-1957	15.27
बृहस्पति	12-03-1957	15.44
शनि	15-05-1957	15.59
बुध	11-07-1957	15.76

शुक्र अन्तर		
(11:07:1957 To 10:09:1960)		
शुक्र	20-01-1958	15.92
सूर्य	19-03-1958	16.45
चन्द्रमा	23-06-1958	16.61
मंगल	29-08-1958	16.87
राहु	19-02-1959	17.05
बृहस्पति	23-07-1959	17.53
शनि	22-01-1960	17.95
बुध	04-07-1960	18.45
केतु	10-09-1960	18.90

सूर्य अन्तर		
(10:09:1960 To 23:08:1961)		
सूर्य	27-09-1960	19.09
चन्द्रमा	26-10-1960	19.13
मंगल	15-11-1960	19.21
राहु	07-01-1961	19.27
बृहस्पति	22-02-1961	19.41
शनि	18-04-1961	19.54
बुध	06-06-1961	19.69
केतु	26-06-1961	19.82
शुक्र	23-08-1961	19.88

चन्द्रमा अन्तर		
(23:08:1961 To 24:03:1963)		
चन्द्रमा	10-10-1961	20.04
मंगल	13-11-1961	20.17
राहु	07-02-1962	20.26
बृहस्पति	25-04-1962	20.50
शनि	26-07-1962	20.71
बुध	16-10-1962	20.96
केतु	19-11-1962	21.18
शुक्र	23-02-1963	21.28
सूर्य	24-03-1963	21.54

मंगल अन्तर		
(24:03:1963 To 02:05:1964)		
मंगल	16-04-1963	21.62
राहु	16-06-1963	21.68
बृहस्पति	09-08-1963	21.85
शनि	12-10-1963	22.00
बुध	08-12-1963	22.17
केतु	01-01-1964	22.33
शुक्र	09-03-1964	22.40
सूर्य	29-03-1964	22.58
चन्द्रमा	02-05-1964	22.64

राहु अन्तर		
(02:05:1964 To 09:03:1967)		
राहु	05-10-1964	22.73
बृहस्पति	21-02-1965	23.16
शनि	05-08-1965	23.54
बुध	30-12-1965	23.99
केतु	01-03-1966	24.39
शुक्र	21-08-1966	24.56
सूर्य	12-10-1966	25.03
चन्द्रमा	07-01-1967	25.17
मंगल	09-03-1967	25.41

बृहस्पति अन्तर		
(09:03:1967 To 19:09:1969)		
बृहस्पति	10-07-1967	25.58
शनि	03-12-1967	25.92
बुध	13-04-1968	26.32
केतु	06-06-1968	26.68
शुक्र	07-11-1968	26.82
सूर्य	23-12-1968	27.25
चन्द्रमा	11-03-1969	27.37
मंगल	04-05-1969	27.58
राहु	19-09-1969	27.73

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

बुध दशा

(19:09:1969 – 19:09:1986)

बुध अन्तर		
(19:09:1969 To 15:02:1972)		
बुध	22-01-1970	28.11
केतु	14-03-1970	28.45
शुक्र	08-08-1970	28.59
सूर्य	20-09-1970	28.99
चन्द्रमा	03-12-1970	29.11
मंगल	23-01-1971	29.32
राहु	04-06-1971	29.46
बृहस्पति	29-09-1971	29.82
शनि	15-02-1972	30.14

केतु अन्तर		
(15:02:1972 To 12:02:1973)		
केतु	08-03-1972	30.52
शुक्र	07-05-1972	30.58
सूर्य	25-05-1972	30.74
चन्द्रमा	24-06-1972	30.79
मंगल	16-07-1972	30.87
राहु	08-09-1972	30.93
बृहस्पति	26-10-1972	31.08
शनि	23-12-1972	31.21
बुध	12-02-1973	31.37

शुक्र अन्तर		
(12:02:1973 To 13:12:1975)		
शुक्र	04-08-1973	31.51
सूर्य	24-09-1973	31.98
चन्द्रमा	19-12-1973	32.13
मंगल	18-02-1974	32.36
राहु	23-07-1974	32.53
बृहस्पति	08-12-1974	32.95
शनि	21-05-1975	33.33
बुध	14-10-1975	33.78
केतु	13-12-1975	34.18

सूर्य अन्तर		
(13:12:1975 To 19:10:1976)		
सूर्य	29-12-1975	34.34
चन्द्रमा	24-01-1976	34.39
मंगल	11-02-1976	34.46
राहु	29-03-1976	34.51
बृहस्पति	09-05-1976	34.64
शनि	27-06-1976	34.75
बुध	10-08-1976	34.88
केतु	29-08-1976	35.00
शुक्र	19-10-1976	35.05

चन्द्रमा अन्तर		
(19:10:1976 To 21:03:1978)		
चन्द्रमा	02-12-1976	35.19
मंगल	01-01-1977	35.31
राहु	19-03-1977	35.40
बृहस्पति	27-05-1977	35.61
शनि	17-08-1977	35.80
बुध	30-10-1977	36.02
केतु	29-11-1977	36.22
शुक्र	23-02-1978	36.30
सूर्य	21-03-1978	36.54

मंगल अन्तर		
(21:03:1978 To 18:03:1979)		
मंगल	11-04-1978	36.61
राहु	04-06-1978	36.67
बृहस्पति	22-07-1978	36.82
शनि	18-09-1978	36.95
बुध	08-11-1978	37.11
केतु	29-11-1978	37.25
शुक्र	28-01-1979	37.31
सूर्य	15-02-1979	37.47
चन्द्रमा	18-03-1979	37.52

राहु अन्तर		
(18:03:1979 To 04:10:1981)		
राहु	04-08-1979	37.60
बृहस्पति	06-12-1979	37.99
शनि	02-05-1980	38.33
बुध	11-09-1980	38.73
केतु	05-11-1980	39.09
शुक्र	09-04-1981	39.24
सूर्य	26-05-1981	39.66
चन्द्रमा	11-08-1981	39.79
मंगल	04-10-1981	40.00

बृहस्पति अन्तर		
(04:10:1981 To 10:01:1984)		
बृहस्पति	23-01-1982	40.15
शनि	03-06-1982	40.46
बुध	28-09-1982	40.81
केतु	15-11-1982	41.14
शुक्र	02-04-1983	41.27
सूर्य	13-05-1983	41.65
चन्द्रमा	21-07-1983	41.76
मंगल	08-09-1983	41.95
राहु	10-01-1984	42.08

शनि अन्तर		
(10:01:1984 To 19:09:1986)		
शनि	14-06-1984	42.42
बुध	31-10-1984	42.85
केतु	28-12-1984	43.23
शुक्र	10-06-1985	43.38
सूर्य	29-07-1985	43.83
चन्द्रमा	19-10-1985	43.97
मंगल	15-12-1985	44.19
राहु	11-05-1986	44.35
बृहस्पति	19-09-1986	44.75

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

केतु दशा

(19:09:1986 – 19:09:1993)

केतु अन्तर		
(19:09:1986 To 15:02:1987)		
केतु	28-09-1986	45.11
शुक्र	23-10-1986	45.14
सूर्य	30-10-1986	45.20
चन्द्रमा	12-11-1986	45.22
मंगल	20-11-1986	45.26
राहु	13-12-1986	45.28
बृहस्पति	02-01-1987	45.34
शनि	25-01-1987	45.40
बुध	15-02-1987	45.46

शुक्र अन्तर		
(15:02:1987 To 16:04:1988)		
शुक्र	27-04-1987	45.52
सूर्य	19-05-1987	45.71
चन्द्रमा	23-06-1987	45.77
मंगल	18-07-1987	45.87
राहु	20-09-1987	45.94
बृहस्पति	15-11-1987	46.11
शनि	22-01-1988	46.27
बुध	22-03-1988	46.45
केतु	16-04-1988	46.62

सूर्य अन्तर		
(16:04:1988 To 22:08:1988)		
सूर्य	23-04-1988	46.69
चन्द्रमा	03-05-1988	46.70
मंगल	11-05-1988	46.73
राहु	30-05-1988	46.75
बृहस्पति	16-06-1988	46.81
शनि	07-07-1988	46.85
बुध	25-07-1988	46.91
केतु	01-08-1988	46.96
शुक्र	22-08-1988	46.98

चन्द्रमा अन्तर		
(22:08:1988 To 24:03:1989)		
चन्द्रमा	09-09-1988	47.04
मंगल	22-09-1988	47.08
राहु	24-10-1988	47.12
बृहस्पति	21-11-1988	47.21
शनि	25-12-1988	47.28
बुध	24-01-1989	47.38
केतु	06-02-1989	47.46
शुक्र	13-03-1989	47.49
सूर्य	24-03-1989	47.59

मंगल अन्तर		
(24:03:1989 To 20:08:1989)		
मंगल	01-04-1989	47.62
राहु	24-04-1989	47.64
बृहस्पति	14-05-1989	47.70
शनि	06-06-1989	47.76
बुध	27-06-1989	47.82
केतु	06-07-1989	47.88
शुक्र	31-07-1989	47.91
सूर्य	07-08-1989	47.97
चन्द्रमा	20-08-1989	47.99

राहु अन्तर		
(20:08:1989 To 07:09:1990)		
राहु	16-10-1989	48.03
बृहस्पति	06-12-1989	48.19
शनि	05-02-1990	48.33
बुध	31-03-1990	48.49
केतु	23-04-1990	48.64
शुक्र	26-06-1990	48.70
सूर्य	15-07-1990	48.88
चन्द्रमा	16-08-1990	48.93
मंगल	07-09-1990	49.02

बृहस्पति अन्तर		
(07:09:1990 To 14:08:1991)		
बृहस्पति	22-10-1990	49.08
शनि	15-12-1990	49.20
बुध	02-02-1991	49.35
केतु	22-02-1991	49.48
शुक्र	19-04-1991	49.54
सूर्य	06-05-1991	49.69
चन्द्रमा	04-06-1991	49.74
मंगल	24-06-1991	49.82
राहु	14-08-1991	49.87

शनि अन्तर		
(14:08:1991 To 22:09:1992)		
शनि	17-10-1991	50.01
बुध	13-12-1991	50.19
केतु	06-01-1992	50.34
शुक्र	13-03-1992	50.41
सूर्य	03-04-1992	50.59
चन्द्रमा	06-05-1992	50.65
मंगल	30-05-1992	50.74
राहु	30-07-1992	50.81
बृहस्पति	22-09-1992	50.97

बुध अन्तर		
(22:09:1992 To 19:09:1993)		
बुध	12-11-1992	51.12
केतु	04-12-1992	51.26
शुक्र	02-02-1993	51.32
सूर्य	20-02-1993	51.48
चन्द्रमा	22-03-1993	51.53
मंगल	12-04-1993	51.62
राहु	06-06-1993	51.67
बृहस्पति	24-07-1993	51.82
शनि	19-09-1993	51.95

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

शुक्र दशा

(19:09:1993 – 19:09:2013)

शुक्र अन्तर		
(19:09:1993 To 19:01:1997)		
शुक्र	10-04-1994	52.11
सूर्य	10-06-1994	52.67
चन्द्रमा	19-09-1994	52.83
मंगल	29-11-1994	53.11
राहु	31-05-1995	53.31
बृहस्पति	09-11-1995	53.81
शनि	20-05-1996	54.25
बुध	09-11-1996	54.78
केतु	19-01-1997	55.25

सूर्य अन्तर		
(19:01:1997 To 19:01:1998)		
सूर्य	06-02-1997	55.44
चन्द्रमा	09-03-1997	55.49
मंगल	30-03-1997	55.58
राहु	24-05-1997	55.64
बृहस्पति	11-07-1997	55.79
शनि	07-09-1997	55.92
बुध	29-10-1997	56.08
केतु	19-11-1997	56.22
शुक्र	19-01-1998	56.28

चन्द्रमा अन्तर		
(19:01:1998 To 19:09:1999)		
चन्द्रमा	11-03-1998	56.44
मंगल	15-04-1998	56.58
राहु	15-07-1998	56.68
बृहस्पति	04-10-1998	56.93
शनि	09-01-1999	57.15
बुध	05-04-1999	57.42
केतु	10-05-1999	57.65
शुक्र	20-08-1999	57.75
सूर्य	19-09-1999	58.03

मंगल अन्तर		
(19:09:1999 To 19:11:2000)		
मंगल	14-10-1999	58.11
राहु	17-12-1999	58.18
बृहस्पति	12-02-2000	58.35
शनि	19-04-2000	58.51
बुध	19-06-2000	58.69
केतु	14-07-2000	58.86
शुक्र	23-09-2000	58.93
सूर्य	14-10-2000	59.12
चन्द्रमा	19-11-2000	59.18

राहु अन्तर		
(19:11:2000 To 19:11:2003)		
राहु	02-05-2001	59.28
बृहस्पति	25-09-2001	59.73
शनि	18-03-2002	60.13
बुध	20-08-2002	60.60
केतु	23-10-2002	61.03
शुक्र	23-04-2003	61.20
सूर्य	17-06-2003	61.70
चन्द्रमा	16-09-2003	61.85
मंगल	19-11-2003	62.10

बृहस्पति अन्तर		
(19:11:2003 To 20:07:2006)		
बृहस्पति	28-03-2004	62.28
शनि	30-08-2004	62.63
बुध	15-01-2005	63.06
केतु	13-03-2005	63.43
शुक्र	22-08-2005	63.59
सूर्य	09-10-2005	64.03
चन्द्रमा	30-12-2005	64.17
मंगल	24-02-2006	64.39
राहु	20-07-2006	64.54

शनि अन्तर		
(20:07:2006 To 19:09:2009)		
शनि	19-01-2007	64.94
बुध	02-07-2007	65.45
केतु	08-09-2007	65.89
शुक्र	18-03-2008	66.08
सूर्य	15-05-2008	66.61
चन्द्रमा	20-08-2008	66.77
मंगल	27-10-2008	67.03
राहु	18-04-2009	67.21
बृहस्पति	19-09-2009	67.69

बुध अन्तर		
(19:09:2009 To 20:07:2012)		
बुध	13-02-2010	68.11
केतु	14-04-2010	68.51
शुक्र	03-10-2010	68.68
सूर्य	24-11-2010	69.15
चन्द्रमा	18-02-2011	69.29
मंगल	20-04-2011	69.53
राहु	22-09-2011	69.69
बृहस्पति	07-02-2012	70.12
शनि	20-07-2012	70.50

केतु अन्तर		
(20:07:2012 To 19:09:2013)		
केतु	14-08-2012	70.94
शुक्र	24-10-2012	71.01
सूर्य	14-11-2012	71.21
चन्द्रमा	20-12-2012	71.27
मंगल	14-01-2013	71.36
राहु	19-03-2013	71.43
बृहस्पति	14-05-2013	71.61
शनि	21-07-2013	71.76
बुध	19-09-2013	71.95

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

सूर्य दशा

(19:09:2013 – 19:09:2019)

सूर्य अन्तर		
(19:09:2013 To 07:01:2014)		
सूर्य	25-09-2013	72.11
चन्द्रमा	04-10-2013	72.13
मंगल	10-10-2013	72.15
राहु	27-10-2013	72.17
बृहस्पति	10-11-2013	72.21
शनि	28-11-2013	72.25
बुध	13-12-2013	72.30
केतु	19-12-2013	72.34
शुक्र	07-01-2014	72.36

चन्द्रमा अन्तर		
(07:01:2014 To 08:07:2014)		
चन्द्रमा	22-01-2014	72.41
मंगल	02-02-2014	72.45
राहु	01-03-2014	72.48
बृहस्पति	25-03-2014	72.56
शनि	23-04-2014	72.62
बुध	19-05-2014	72.70
केतु	30-05-2014	72.77
शुक्र	29-06-2014	72.80
सूर्य	08-07-2014	72.89

मंगल अन्तर		
(08:07:2014 To 13:11:2014)		
मंगल	16-07-2014	72.91
राहु	04-08-2014	72.93
बृहस्पति	21-08-2014	72.98
शनि	10-09-2014	73.03
बुध	28-09-2014	73.09
केतु	06-10-2014	73.14
शुक्र	27-10-2014	73.16
सूर्य	02-11-2014	73.21
चन्द्रमा	13-11-2014	73.23

राहु अन्तर		
(13:11:2014 To 07:10:2015)		
राहु	01-01-2015	73.26
बृहस्पति	14-02-2015	73.40
शनि	07-04-2015	73.52
बुध	24-05-2015	73.66
केतु	12-06-2015	73.79
शुक्र	05-08-2015	73.84
सूर्य	22-08-2015	73.99
चन्द्रमा	18-09-2015	74.03
मंगल	07-10-2015	74.11

बृहस्पति अन्तर		
(07:10:2015 To 26:07:2016)		
बृहस्पति	15-11-2015	74.16
शनि	01-01-2016	74.27
बुध	11-02-2016	74.39
केतु	28-02-2016	74.51
शुक्र	17-04-2016	74.55
सूर्य	02-05-2016	74.69
चन्द्रमा	26-05-2016	74.73
मंगल	12-06-2016	74.79
राहु	26-07-2016	74.84

शनि अन्तर		
(26:07:2016 To 08:07:2017)		
शनि	19-09-2016	74.96
बुध	07-11-2016	75.11
केतु	28-11-2016	75.25
शुक्र	24-01-2017	75.30
सूर्य	11-02-2017	75.46
चन्द्रमा	12-03-2017	75.51
मंगल	01-04-2017	75.59
राहु	23-05-2017	75.64
बृहस्पति	08-07-2017	75.78

बुध अन्तर		
(08:07:2017 To 14:05:2018)		
बुध	21-08-2017	75.91
केतु	08-09-2017	76.03
शुक्र	30-10-2017	76.08
सूर्य	14-11-2017	76.22
चन्द्रमा	10-12-2017	76.27
मंगल	28-12-2017	76.34
राहु	13-02-2018	76.39
बृहस्पति	26-03-2018	76.51
शनि	14-05-2018	76.63

केतु अन्तर		
(14:05:2018 To 19:09:2018)		
केतु	22-05-2018	76.76
शुक्र	12-06-2018	76.78
सूर्य	19-06-2018	76.84
चन्द्रमा	29-06-2018	76.86
मंगल	07-07-2018	76.89
राहु	26-07-2018	76.91
बृहस्पति	12-08-2018	76.96
शनि	01-09-2018	77.01
बुध	19-09-2018	77.06

शुक्र अन्तर		
(19:09:2018 To 19:09:2019)		
शुक्र	19-11-2018	77.11
सूर्य	07-12-2018	77.28
चन्द्रमा	07-01-2019	77.33
मंगल	28-01-2019	77.41
राहु	24-03-2019	77.47
बृहस्पति	11-05-2019	77.62
शनि	08-07-2019	77.75
बुध	29-08-2019	77.91
केतु	19-09-2019	78.05

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

चन्द्रमा दशा

(19:09:2019 – 19:09:2029)

चन्द्रमा अन्तर		
(19:09:2019 To 20:07:2020)		
चन्द्रमा	15-10-2019	78.11
मंगल	01-11-2019	78.18
राहु	17-12-2019	78.23
बृहस्पति	27-01-2020	78.35
शनि	15-03-2020	78.47
बुध	27-04-2020	78.60
केतु	15-05-2020	78.72
शुक्र	05-07-2020	78.76
सूर्य	20-07-2020	78.90

मंगल अन्तर		
(20:07:2020 To 18:02:2021)		
मंगल	01-08-2020	78.94
राहु	02-09-2020	78.98
बृहस्पति	01-10-2020	79.07
शनि	04-11-2020	79.14
बुध	04-12-2020	79.24
केतु	16-12-2020	79.32
शुक्र	21-01-2021	79.35
सूर्य	01-02-2021	79.45
चन्द्रमा	18-02-2021	79.48

राहु अन्तर		
(18:02:2021 To 20:08:2022)		
राहु	11-05-2021	79.53
बृहस्पति	23-07-2021	79.75
शनि	18-10-2021	79.95
बुध	04-01-2022	80.19
केतु	05-02-2022	80.40
शुक्र	07-05-2022	80.49
सूर्य	03-06-2022	80.74
चन्द्रमा	19-07-2022	80.82
मंगल	20-08-2022	80.94

बृहस्पति अन्तर		
(20:08:2022 To 19:12:2023)		
बृहस्पति	24-10-2022	81.03
शनि	09-01-2023	81.21
बुध	19-03-2023	81.42
केतु	16-04-2023	81.61
शुक्र	06-07-2023	81.68
सूर्य	31-07-2023	81.91
चन्द्रमा	09-09-2023	81.97
मंगल	07-10-2023	82.08
राहु	19-12-2023	82.16

शनि अन्तर		
(19:12:2023 To 20:07:2025)		
शनि	20-03-2024	82.36
बुध	10-06-2024	82.61
केतु	14-07-2024	82.84
शुक्र	19-10-2024	82.93
सूर्य	17-11-2024	83.19
चन्द्रमा	04-01-2025	83.27
मंगल	07-02-2025	83.40
राहु	04-05-2025	83.50
बृहस्पति	20-07-2025	83.73

बुध अन्तर		
(20:07:2025 To 19:12:2026)		
बुध	02-10-2025	83.94
केतु	01-11-2025	84.15
शुक्र	26-01-2026	84.23
सूर्य	21-02-2026	84.46
चन्द्रमा	05-04-2026	84.53
मंगल	05-05-2026	84.65
राहु	22-07-2026	84.74
बृहस्पति	29-09-2026	84.95
शनि	19-12-2026	85.14

केतु अन्तर		
(19:12:2026 To 20:07:2027)		
केतु	01-01-2027	85.36
शुक्र	05-02-2027	85.40
सूर्य	16-02-2027	85.49
चन्द्रमा	06-03-2027	85.52
मंगल	18-03-2027	85.57
राहु	19-04-2027	85.60
बृहस्पति	17-05-2027	85.69
शनि	20-06-2027	85.77
बुध	20-07-2027	85.86

शुक्र अन्तर		
(20:07:2027 To 21:03:2029)		
शुक्र	30-10-2027	85.94
सूर्य	29-11-2027	86.22
चन्द्रमा	19-01-2028	86.31
मंगल	24-02-2028	86.44
राहु	25-05-2028	86.54
बृहस्पति	14-08-2028	86.79
शनि	19-11-2028	87.01
बुध	13-02-2029	87.28
केतु	21-03-2029	87.51

सूर्य अन्तर		
(21:03:2029 To 19:09:2029)		
सूर्य	30-03-2029	87.61
चन्द्रमा	14-04-2029	87.64
मंगल	25-04-2029	87.68
राहु	22-05-2029	87.71
बृहस्पति	15-06-2029	87.78
शनि	14-07-2029	87.85
बुध	09-08-2029	87.93
केतु	20-08-2029	88.00
शुक्र	19-09-2029	88.03

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

मंगल दशा

(19:09:2029 – 19:09:2036)

मंगल अन्तर		
(19:09:2029 To 15:02:2030)		
मंगल	28-09-2029	88.11
राहु	20-10-2029	88.14
बृहस्पति	09-11-2029	88.20
शनि	03-12-2029	88.25
बुध	24-12-2029	88.32
केतु	02-01-2030	88.37
शुक्र	26-01-2030	88.40
सूर्य	03-02-2030	88.47
चन्द्रमा	15-02-2030	88.49

राहु अन्तर		
(15:02:2030 To 05:03:2031)		
राहु	14-04-2030	88.52
बृहस्पति	04-06-2030	88.68
शनि	04-08-2030	88.82
बुध	27-09-2030	88.98
केतु	19-10-2030	89.13
शुक्र	22-12-2030	89.19
सूर्य	10-01-2031	89.37
चन्द्रमा	11-02-2031	89.42
मंगल	05-03-2031	89.51

बृहस्पति अन्तर		
(05:03:2031 To 09:02:2032)		
बृहस्पति	20-04-2031	89.57
शनि	13-06-2031	89.69
बुध	31-07-2031	89.84
केतु	20-08-2031	89.97
शुक्र	16-10-2031	90.03
सूर्य	02-11-2031	90.18
चन्द्रमा	30-11-2031	90.23
मंगल	20-12-2031	90.31
राहु	09-02-2032	90.36

शनि अन्तर		
(09:02:2032 To 21:03:2033)		
शनि	14-04-2032	90.50
बुध	10-06-2032	90.68
केतु	04-07-2032	90.84
शुक्र	09-09-2032	90.90
सूर्य	30-09-2032	91.08
चन्द्रमा	02-11-2032	91.14
मंगल	26-11-2032	91.23
राहु	26-01-2033	91.30
बृहस्पति	21-03-2033	91.46

बुध अन्तर		
(21:03:2033 To 18:03:2034)		
बुध	11-05-2033	91.61
केतु	01-06-2033	91.75
शुक्र	31-07-2033	91.81
सूर्य	19-08-2033	91.97
चन्द्रमा	18-09-2033	92.02
मंगल	09-10-2033	92.11
राहु	02-12-2033	92.16
बृहस्पति	19-01-2034	92.31
शनि	18-03-2034	92.45

केतु अन्तर		
(18:03:2034 To 14:08:2034)		
केतु	26-03-2034	92.60
शुक्र	20-04-2034	92.63
सूर्य	28-04-2034	92.69
चन्द्रमा	10-05-2034	92.72
मंगल	19-05-2034	92.75
राहु	10-06-2034	92.77
बृहस्पति	30-06-2034	92.83
शनि	24-07-2034	92.89
बुध	14-08-2034	92.95

शुक्र अन्तर		
(14:08:2034 To 14:10:2035)		
शुक्र	24-10-2034	93.01
सूर्य	14-11-2034	93.21
चन्द्रमा	19-12-2034	93.26
मंगल	13-01-2035	93.36
राहु	18-03-2035	93.43
बृहस्पति	14-05-2035	93.60
शनि	20-07-2035	93.76
बुध	19-09-2035	93.94
केतु	14-10-2035	94.11

सूर्य अन्तर		
(14:10:2035 To 18:02:2036)		
सूर्य	20-10-2035	94.18
चन्द्रमा	31-10-2035	94.20
मंगल	07-11-2035	94.22
राहु	26-11-2035	94.25
बृहस्पति	13-12-2035	94.30
शनि	02-01-2036	94.34
बुध	21-01-2036	94.40
केतु	28-01-2036	94.45
शुक्र	18-02-2036	94.47

चन्द्रमा अन्तर		
(18:02:2036 To 19:09:2036)		
चन्द्रमा	07-03-2036	94.53
मंगल	20-03-2036	94.58
राहु	21-04-2036	94.61
बृहस्पति	19-05-2036	94.70
शनि	22-06-2036	94.78
बुध	22-07-2036	94.87
केतु	04-08-2036	94.95
शुक्र	08-09-2036	94.98
सूर्य	19-09-2036	95.08

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

राहु दशा

(19:09:2036 – 19:09:2054)

राहु अन्तर		
(19:09:2036 To 02:06:2039)		
राहु	14-02-2037	95.11
बृहस्पति	25-06-2037	95.52
शनि	28-11-2037	95.88
बुध	17-04-2038	96.30
केतु	14-06-2038	96.69
शुक्र	25-11-2038	96.84
सूर्य	13-01-2039	97.29
चन्द्रमा	05-04-2039	97.43
मंगल	02-06-2039	97.65

बृहस्पति अन्तर		
(02:06:2039 To 26:10:2041)		
बृहस्पति	27-09-2039	97.81
शनि	12-02-2040	98.13
बुध	16-06-2040	98.51
केतु	06-08-2040	98.85
शुक्र	30-12-2040	98.99
सूर्य	12-02-2041	99.39
चन्द्रमा	26-04-2041	99.51
मंगल	16-06-2041	99.71
राहु	26-10-2041	99.85

शनि अन्तर		
(26:10:2041 To 01:09:2044)		
शनि	08-04-2042	100.21
बुध	03-09-2042	100.66
केतु	02-11-2042	101.07
शुक्र	25-04-2043	101.23
सूर्य	16-06-2043	101.71
चन्द्रमा	11-09-2043	101.85
मंगल	10-11-2043	102.09
राहु	15-04-2044	102.25
बृहस्पति	01-09-2044	102.68

बुध अन्तर		
(01:09:2044 To 21:03:2047)		
बुध	11-01-2045	103.06
केतु	06-03-2045	103.42
शुक्र	08-08-2045	103.57
सूर्य	24-09-2045	104.00
चन्द्रमा	10-12-2045	104.12
मंगल	03-02-2046	104.34
राहु	22-06-2046	104.49
बृहस्पति	24-10-2046	104.87
शनि	21-03-2047	105.21

केतु अन्तर		
(21:03:2047 To 07:04:2048)		
केतु	12-04-2047	105.61
शुक्र	15-06-2047	105.67
सूर्य	04-07-2047	105.85
चन्द्रमा	05-08-2047	105.90
मंगल	27-08-2047	105.99
राहु	24-10-2047	106.05
बृहस्पति	14-12-2047	106.21
शनि	13-02-2048	106.35
बुध	07-04-2048	106.51

शुक्र अन्तर		
(07:04:2048 To 08:04:2051)		
शुक्र	07-10-2048	106.66
सूर्य	01-12-2048	107.16
चन्द्रमा	02-03-2049	107.31
मंगल	05-05-2049	107.56
राहु	17-10-2049	107.74
बृहस्पति	12-03-2050	108.19
शनि	01-09-2050	108.59
बुध	03-02-2051	109.06
केतु	08-04-2051	109.49

सूर्य अन्तर		
(08:04:2051 To 02:03:2052)		
सूर्य	24-04-2051	109.66
चन्द्रमा	22-05-2051	109.71
मंगल	10-06-2051	109.78
राहु	29-07-2051	109.83
बृहस्पति	11-09-2051	109.97
शनि	02-11-2051	110.09
बुध	19-12-2051	110.23
केतु	07-01-2052	110.36
शुक्र	02-03-2052	110.41

चन्द्रमा अन्तर		
(02:03:2052 To 01:09:2053)		
चन्द्रमा	16-04-2052	110.56
मंगल	18-05-2052	110.69
राहु	09-08-2052	110.77
बृहस्पति	21-10-2052	111.00
शनि	16-01-2053	111.20
बुध	03-04-2053	111.44
केतु	05-05-2053	111.65
शुक्र	05-08-2053	111.74
सूर्य	01-09-2053	111.99

मंगल अन्तर		
(01:09:2053 To 19:09:2054)		
मंगल	23-09-2053	112.06
राहु	20-11-2053	112.12
बृहस्पति	10-01-2054	112.28
शनि	12-03-2054	112.42
बुध	05-05-2054	112.59
केतु	27-05-2054	112.74
शुक्र	30-07-2054	112.80
सूर्य	18-08-2054	112.97
चन्द्रमा	19-09-2054	113.02

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

अष्टोत्तरी दशा

जन्म के समय अष्टोत्तरी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:02:29) : गुरु : 3 व. 7 मा. 8 दि.

आपकी कुण्डली में अष्टोत्तरी दशा का कितिकादी सिद्धान्त प्रभावी हो रहा है।
राहु लग्न में स्थित नहीं है, और लग्नाधिपति से केन्द्र या त्रिकोन में स्थित है। अष्टोत्तरी दशा के कुण्डली में प्रभावी होने की यह स्थिति आपकी कुण्डली में अनुपस्थित है।
कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म या शुक्ल पक्ष में रात का जन्म। अष्टोत्तरी दशा के कुण्डली में प्रभावी होने की यह स्थिति आपकी कुण्डली में अनुपस्थित है।

बृहस्पति (19 वर्ष)

10/08/1941 To 19/03/1945

बारहवें	वृष	शत्रु
भाव	राशि	संबंन्ध
	रोहिणी (4)	7 , 10
विशेष	नक्षत्र	भावपति

बृहस्पति	-------	-------
राहु	-------	-------
शुक्र	-------	-------
सूर्य	-------	-------
चन्द्रमा	-------	-------
मंगल	-------	-------
बुध	15-06-1943	00.00
शनि	19-03-1945	01.85

राहु (12 वर्ष)

19/03/1945 To 19/03/1957

चौथे	कन्या	मित्र
भाव	राशि	संबंन्ध
वक्री	उत्तरफाल्गु (2)	
विशेष	नक्षत्र	भावपति

राहु	19-07-1946	03.61
शुक्र	17-11-1948	04.94
सूर्य	19-07-1949	07.27
चन्द्रमा	19-03-1951	07.94
मंगल	07-02-1952	09.61
बुध	28-12-1953	10.50
शनि	06-02-1955	12.38
बृहस्पति	19-03-1957	13.50

शुक्र (21 वर्ष)

19/03/1957 To 19/03/1978

तीसरे	सिहं	शत्रु
भाव	राशि	संबंन्ध
स्वनक्षत्र	पुर्वफाल्गु (4)	12 , 5
विशेष	नक्षत्र	भावपति

शुक्र	18-04-1961	15.61
सूर्य	18-06-1962	19.69
चन्द्रमा	19-05-1965	20.86
मंगल	08-12-1966	23.77
बुध	29-03-1970	25.33
शनि	08-03-1972	28.63
बृहस्पति	17-11-1975	30.58
राहु	19-03-1978	34.27

सूर्य (6 वर्ष)

19/03/1978 To 18/03/1984

दूसरे	कर्क	मित्र
भाव	राशि	संबंन्ध
	अश्लेषा (3)	3
विशेष	नक्षत्र	भावपति

सूर्य	19-07-1978	36.61
चन्द्रमा	19-05-1979	36.94
मंगल	28-10-1979	37.77
बुध	08-10-1980	38.22
शनि	29-04-1981	39.16
बृहस्पति	19-05-1982	39.72
राहु	17-01-1983	40.77
शुक्र	18-03-1984	41.44

चन्द्रमा (15 वर्ष)

18/03/1984 To 19/03/1999

नौवें	कुम्भ	सम
भाव	राशि	संबंन्ध
	पूर्वाभाद (2)	2
विशेष	नक्षत्र	भावपति

चन्द्रमा	18-04-1986	42.61
मंगल	29-05-1987	44.69
बुध	08-10-1989	45.80
शनि	27-02-1991	48.16
बृहस्पति	18-10-1993	49.55
राहु	18-06-1995	52.19
शुक्र	19-05-1998	53.86
सूर्य	19-03-1999	56.77

मंगल (8 वर्ष)

19/03/1999 To 19/03/2007

दसवें	मीन	मित्र
भाव	राशि	संबंन्ध
	रेवती (3)	11 , 6
विशेष	नक्षत्र	भावपति

मंगल	21-10-1999	57.61
बुध	24-01-2001	58.20
शनि	21-10-2001	59.46
बृहस्पति	19-03-2003	60.20
राहु	07-02-2004	61.61
शुक्र	28-08-2005	62.50
सूर्य	06-02-2006	64.05
चन्द्रमा	19-03-2007	64.50

बुध (17 वर्ष)

19/03/2007 To 18/03/2024

दूसरे	कर्क	शत्रु
भाव	राशि	संबंन्ध
अस्त	पुष्य (4)	1 , 4
विशेष	नक्षत्र	भावपति

बुध	21-11-2009	65.61
शनि	18-06-2011	68.28
बृहस्पति	15-06-2014	69.86
राहु	05-05-2016	72.85
शुक्र	25-08-2019	74.74
सूर्य	04-08-2020	78.04
चन्द्रमा	14-12-2022	78.99
मंगल	18-03-2024	81.35

शनि (10 वर्ष)

18/03/2024 To 19/03/2034

बारहवें	वृष	मित्र
भाव	राशि	संबंन्ध
	कृतिका (3)	8 , 9
विशेष	नक्षत्र	भावपति

शनि	20-02-2025	82.61
बृहस्पति	24-11-2026	83.53
राहु	04-01-2028	85.29
शुक्र	14-12-2029	86.40
सूर्य	05-07-2030	88.35
चन्द्रमा	24-11-2031	88.90
मंगल	21-08-2032	90.29
बुध	19-03-2034	91.03

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

बृहस्पति दशा

(10:08:1941 – 19:03:1945)

बृहस्पति अन्तर		
बृहस्पति	-------	--
राहु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
बुध	-------	--
शनि	-------	--

राहु अन्तर		
राहु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
बुध	-------	--
शनि	-------	--
बृहस्पति	-------	--

शुक्र अन्तर		
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
बुध	-------	--
शनि	-------	--
बृहस्पति	-------	--
राहु	-------	--

सूर्य अन्तर		
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
बुध	-------	--
शनि	-------	--
बृहस्पति	-------	--
राहु	-------	--
शुक्र	-------	--

चन्द्रमा अन्तर		
चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
बुध	-------	--
शनि	-------	--
बृहस्पति	-------	--
राहु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--

मंगल अन्तर		
मंगल	-------	--
बुध	-------	--
शनि	-------	--
बृहस्पति	-------	--
राहु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--

बुध अन्तर (10:08:1941 To 15:06:1943)		
बुध	-------	--
शनि	-------	--
बृहस्पति	26-09-1941	00.00
राहु	25-01-1942	00.13
शुक्र	26-08-1942	00.46
सूर्य	25-10-1942	01.04
चन्द्रमा	26-03-1943	01.21
मंगल	15-06-1943	01.63

शनि अन्तर (15:06:1943 To 19:03:1945)		
शनि	13-08-1943	01.85
बृहस्पति	04-12-1943	02.01
राहु	14-02-1944	02.32
शुक्र	18-06-1944	02.52
सूर्य	24-07-1944	02.86
चन्द्रमा	21-10-1944	02.95
मंगल	08-12-1944	03.20
बुध	19-03-1945	03.33

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

राहु दशा

(19:03:1945 – 19:03:1957)

राहु अन्तर		
(19:03:1945 To 19:07:1946)		
राहु	12-05-1945	03.61
शुक्र	15-08-1945	03.75
सूर्य	11-09-1945	04.01
चन्द्रमा	17-11-1945	04.09
मंगल	23-12-1945	04.27
बुध	10-03-1946	04.37
शनि	24-04-1946	04.58
बृहस्पति	19-07-1946	04.71

शुक्र अन्तर		
(19:07:1946 To 17:11:1948)		
शुक्र	31-12-1946	04.94
सूर्य	17-02-1947	05.39
चन्द्रमा	15-06-1947	05.52
मंगल	17-08-1947	05.85
बुध	29-12-1947	06.02
शनि	17-03-1948	06.39
बृहस्पति	14-08-1948	06.60
राहु	17-11-1948	07.01

सूर्य अन्तर		
(17:11:1948 To 19:07:1949)		
सूर्य	01-12-1948	07.27
चन्द्रमा	04-01-1949	07.31
मंगल	22-01-1949	07.40
बुध	01-03-1949	07.45
शनि	23-03-1949	07.56
बृहस्पति	05-05-1949	07.62
राहु	01-06-1949	07.74
शुक्र	19-07-1949	07.81

चन्द्रमा अन्तर		
(19:07:1949 To 19:03:1951)		
चन्द्रमा	11-10-1949	07.94
मंगल	25-11-1949	08.17
बुध	01-03-1950	08.29
शनि	26-04-1950	08.56
बृहस्पति	11-08-1950	08.71
राहु	18-10-1950	09.00
शुक्र	13-02-1951	09.19
सूर्य	19-03-1951	09.51

मंगल अन्तर		
(19:03:1951 To 07:02:1952)		
मंगल	12-04-1951	09.61
बुध	02-06-1951	09.67
शनि	02-07-1951	09.81
बृहस्पति	28-08-1951	09.89
राहु	03-10-1951	10.05
शुक्र	05-12-1951	10.15
सूर्य	23-12-1951	10.32
चन्द्रमा	07-02-1952	10.37

बुध अन्तर		
(07:02:1952 To 28:12:1953)		
बुध	25-05-1952	10.50
शनि	28-07-1952	10.79
बृहस्पति	27-11-1952	10.97
राहु	12-02-1953	11.30
शुक्र	26-06-1953	11.51
सूर्य	03-08-1953	11.88
चन्द्रमा	07-11-1953	11.98
मंगल	28-12-1953	12.24

शनि अन्तर		
(28:12:1953 To 06:02:1955)		
शनि	03-02-1954	12.38
बृहस्पति	16-04-1954	12.49
राहु	31-05-1954	12.68
शुक्र	18-08-1954	12.81
सूर्य	09-09-1954	13.02
चन्द्रमा	05-11-1954	13.08
मंगल	05-12-1954	13.24
बुध	06-02-1955	13.32

बृहस्पति अन्तर		
(06:02:1955 To 19:03:1957)		
बृहस्पति	22-06-1955	13.50
राहु	16-09-1955	13.87
शुक्र	13-02-1956	14.10
सूर्य	26-03-1956	14.51
चन्द्रमा	12-07-1956	14.63
मंगल	07-09-1956	14.92
बुध	07-01-1957	15.08
शनि	19-03-1957	15.41

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

शुक्र दशा

(19:03:1957 – 19:03:1978)

शुक्र अन्तर

(19:03:1957 To 18:04:1961)

शुक्र	03-01-1958	15.61
सूर्य	27-03-1958	16.40
चन्द्रमा	20-10-1958	16.63
मंगल	07-02-1959	17.19
बुध	30-09-1959	17.50
शनि	15-02-1960	18.14
बृहस्पति	04-11-1960	18.52
राहु	18-04-1961	19.24

सूर्य अन्तर

(18:04:1961 To 18:06:1962)

सूर्य	12-05-1961	19.69
चन्द्रमा	10-07-1961	19.75
मंगल	11-08-1961	19.92
बुध	17-10-1961	20.00
शनि	25-11-1961	20.19
बृहस्पति	08-02-1962	20.29
राहु	27-03-1962	20.50
शुक्र	18-06-1962	20.63

चन्द्रमा अन्तर

(18:06:1962 To 19:05:1965)

चन्द्रमा	13-11-1962	20.86
मंगल	31-01-1963	21.26
बुध	18-07-1963	21.48
शनि	24-10-1963	21.94
बृहस्पति	29-04-1964	22.21
राहु	25-08-1964	22.72
शुक्र	21-03-1965	23.04
सूर्य	19-05-1965	23.61

मंगल अन्तर

(19:05:1965 To 08:12:1966)

मंगल	30-06-1965	23.77
बुध	27-09-1965	23.89
शनि	19-11-1965	24.13
बृहस्पति	27-02-1966	24.28
राहु	01-05-1966	24.55
शुक्र	19-08-1966	24.72
सूर्य	20-09-1966	25.03
चन्द्रमा	08-12-1966	25.11

बुध अन्तर

(08:12:1966 To 29:03:1970)

बुध	16-06-1967	25.33
शनि	05-10-1967	25.85
बृहस्पति	05-05-1968	26.16
राहु	16-09-1968	26.74
शुक्र	09-05-1969	27.10
सूर्य	15-07-1969	27.75
चन्द्रमा	30-12-1969	27.93
मंगल	29-03-1970	28.39

शनि अन्तर

(29:03:1970 To 08:03:1972)

शनि	03-06-1970	28.63
बृहस्पति	06-10-1970	28.81
राहु	24-12-1970	29.16
शुक्र	11-05-1971	29.37
सूर्य	19-06-1971	29.75
चन्द्रमा	26-09-1971	29.86
मंगल	17-11-1971	30.13
बुध	08-03-1972	30.27

बृहस्पति अन्तर

(08:03:1972 To 17:11:1975)

बृहस्पति	01-11-1972	30.58
राहु	31-03-1973	31.23
शुक्र	18-12-1973	31.64
सूर्य	03-03-1974	32.36
चन्द्रमा	06-09-1974	32.56
मंगल	15-12-1974	33.08
बुध	15-07-1975	33.35
शनि	17-11-1975	33.93

राहु अन्तर

(17:11:1975 To 19:03:1978)

राहु	20-02-1976	34.27
शुक्र	04-08-1976	34.53
सूर्य	21-09-1976	34.99
चन्द्रमा	17-01-1977	35.12
मंगल	21-03-1977	35.44
बुध	02-08-1977	35.61
शनि	20-10-1977	35.98
बृहस्पति	19-03-1978	36.20

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

सूर्य दशा

(19:03:1978 – 18:03:1984)

सूर्य अन्तर

(19:03:1978 To 19:07:1978)

सूर्य	26-03-1978	36.61
चन्द्रमा	12-04-1978	36.63
मंगल	21-04-1978	36.67
बुध	10-05-1978	36.70
शनि	21-05-1978	36.75
बृहस्पति	11-06-1978	36.78
राहु	25-06-1978	36.84
शुक्र	19-07-1978	36.88

चन्द्रमा अन्तर

(19:07:1978 To 19:05:1979)

चन्द्रमा	30-08-1978	36.94
मंगल	21-09-1978	37.06
बुध	08-11-1978	37.12
शनि	06-12-1978	37.25
बृहस्पति	29-01-1979	37.33
राहु	04-03-1979	37.47
शुक्र	02-05-1979	37.56
सूर्य	19-05-1979	37.73

मंगल अन्तर

(19:05:1979 To 28:10:1979)

मंगल	31-05-1979	37.77
बुध	25-06-1979	37.81
शनि	10-07-1979	37.88
बृहस्पति	08-08-1979	37.92
राहु	26-08-1979	38.00
शुक्र	26-09-1979	38.04
सूर्य	06-10-1979	38.13
चन्द्रमा	28-10-1979	38.16

बुध अन्तर

(28:10:1979 To 08:10:1980)

बुध	21-12-1979	38.22
शनि	22-01-1980	38.37
बृहस्पति	23-03-1980	38.45
राहु	30-04-1980	38.62
शुक्र	07-07-1980	38.72
सूर्य	26-07-1980	38.91
चन्द्रमा	12-09-1980	38.96
मंगल	08-10-1980	39.09

शनि अन्तर

(08:10:1980 To 29:04:1981)

शनि	26-10-1980	39.16
बृहस्पति	01-12-1980	39.21
राहु	24-12-1980	39.31
शुक्र	01-02-1981	39.37
सूर्य	12-02-1981	39.48
चन्द्रमा	13-03-1981	39.51
मंगल	28-03-1981	39.59
बुध	29-04-1981	39.63

बृहस्पति अन्तर

(29:04:1981 To 19:05:1982)

बृहस्पति	05-07-1981	39.72
राहु	17-08-1981	39.90
शुक्र	31-10-1981	40.02
सूर्य	21-11-1981	40.23
चन्द्रमा	14-01-1982	40.28
मंगल	11-02-1982	40.43
बुध	13-04-1982	40.51
शनि	19-05-1982	40.68

राहु अन्तर

(19:05:1982 To 17:01:1983)

राहु	15-06-1982	40.77
शुक्र	01-08-1982	40.85
सूर्य	15-08-1982	40.98
चन्द्रमा	17-09-1982	41.01
मंगल	06-10-1982	41.11
बुध	13-11-1982	41.16
शनि	05-12-1982	41.26
बृहस्पति	17-01-1983	41.32

शुक्र अन्तर

(17:01:1983 To 18:03:1984)

शुक्र	10-04-1983	41.44
सूर्य	04-05-1983	41.67
चन्द्रमा	02-07-1983	41.73
मंगल	02-08-1983	41.89
बुध	08-10-1983	41.98
शनि	17-11-1983	42.16
बृहस्पति	31-01-1984	42.27
राहु	18-03-1984	42.48

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

चन्द्रमा दशा

(18:03:1984 – 19:03:1999)

चन्द्रमा अन्तर		
(18:03:1984 To 18:04:1986)		
चन्द्रमा	02-07-1984	42.61
मंगल	28-08-1984	42.90
बुध	26-12-1984	43.05
शनि	06-03-1985	43.38
बृहस्पति	18-07-1985	43.57
राहु	10-10-1985	43.94
शुक्र	07-03-1986	44.17
सूर्य	18-04-1986	44.57

मंगल अन्तर		
(18:04:1986 To 29:05:1987)		
मंगल	18-05-1986	44.69
बुध	21-07-1986	44.77
शनि	28-08-1986	44.95
बृहस्पति	07-11-1986	45.05
राहु	22-12-1986	45.25
शुक्र	11-03-1987	45.37
सूर्य	03-04-1987	45.58
चन्द्रमा	29-05-1987	45.65

बुध अन्तर		
(29:05:1987 To 08:10:1989)		
बुध	12-10-1987	45.80
शनि	30-12-1987	46.17
बृहस्पति	30-05-1988	46.39
राहु	03-09-1988	46.81
शुक्र	18-02-1989	47.07
सूर्य	07-04-1989	47.53
चन्द्रमा	05-08-1989	47.66
मंगल	08-10-1989	47.99

शनि अन्तर		
(08:10:1989 To 27:02:1991)		
शनि	24-11-1989	48.16
बृहस्पति	21-02-1990	48.29
राहु	18-04-1990	48.54
शुक्र	26-07-1990	48.69
सूर्य	23-08-1990	48.96
चन्द्रमा	01-11-1990	49.04
मंगल	09-12-1990	49.23
बुध	27-02-1991	49.33

बृहस्पति अन्तर		
(27:02:1991 To 18:10:1993)		
बृहस्पति	15-08-1991	49.55
राहु	30-11-1991	50.02
शुक्र	05-06-1992	50.31
सूर्य	29-07-1992	50.82
चन्द्रमा	10-12-1992	50.97
मंगल	19-02-1993	51.33
बुध	21-07-1993	51.53
शनि	18-10-1993	51.95

राहु अन्तर		
(18:10:1993 To 18:06:1995)		
राहु	24-12-1993	52.19
शुक्र	22-04-1994	52.38
सूर्य	26-05-1994	52.70
चन्द्रमा	18-08-1994	52.79
मंगल	02-10-1994	53.02
बुध	06-01-1995	53.15
शनि	03-03-1995	53.41
बृहस्पति	18-06-1995	53.56

शुक्र अन्तर		
(18:06:1995 To 19:05:1998)		
शुक्र	11-01-1996	53.86
सूर्य	11-03-1996	54.42
चन्द्रमा	06-08-1996	54.59
मंगल	24-10-1996	54.99
बुध	10-04-1997	55.21
शनि	17-07-1997	55.67
बृहस्पति	21-01-1998	55.94
राहु	19-05-1998	56.45

सूर्य अन्तर		
(19:05:1998 To 19:03:1999)		
सूर्य	05-06-1998	56.77
चन्द्रमा	17-07-1998	56.82
मंगल	08-08-1998	56.94
बुध	25-09-1998	57.00
शनि	24-10-1998	57.13
बृहस्पति	16-12-1998	57.21
राहु	19-01-1999	57.35
शुक्र	19-03-1999	57.44

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

मंगल दशा

(19:03:1999 – 19:03:2007)

मंगल अन्तर		
(19:03:1999 To 21:10:1999)		
मंगल	04-04-1999	57.61
बुध	08-05-1999	57.65
शनि	28-05-1999	57.74
बृहस्पति	05-07-1999	57.80
राहु	29-07-1999	57.90
शुक्र	09-09-1999	57.97
सूर्य	21-09-1999	58.08
चन्द्रमा	21-10-1999	58.12

बुध अन्तर		
(21:10:1999 To 24:01:2001)		
बुध	02-01-2000	58.20
शनि	13-02-2000	58.40
बृहस्पति	04-05-2000	58.51
राहु	25-06-2000	58.74
शुक्र	22-09-2000	58.88
सूर्य	18-10-2000	59.12
चन्द्रमा	21-12-2000	59.19
मंगल	24-01-2001	59.37

शनि अन्तर		
(24:01:2001 To 21:10:2001)		
शनि	18-02-2001	59.46
बृहस्पति	07-04-2001	59.53
राहु	07-05-2001	59.66
शुक्र	28-06-2001	59.74
सूर्य	13-07-2001	59.88
चन्द्रमा	20-08-2001	59.92
मंगल	09-09-2001	60.03
बुध	21-10-2001	60.08

बृहस्पति अन्तर		
(21:10:2001 To 19:03:2003)		
बृहस्पति	20-01-2002	60.20
राहु	18-03-2002	60.45
शुक्र	26-06-2002	60.60
सूर्य	24-07-2002	60.88
चन्द्रमा	04-10-2002	60.95
मंगल	11-11-2002	61.15
बुध	30-01-2003	61.25
शनि	19-03-2003	61.48

राहु अन्तर		
(19:03:2003 To 07:02:2004)		
राहु	24-04-2003	61.61
शुक्र	26-06-2003	61.71
सूर्य	14-07-2003	61.88
चन्द्रमा	28-08-2003	61.93
मंगल	21-09-2003	62.05
बुध	11-11-2003	62.12
शनि	11-12-2003	62.26
बृहस्पति	07-02-2004	62.34

शुक्र अन्तर		
(07:02:2004 To 28:08:2005)		
शुक्र	27-05-2004	62.50
सूर्य	28-06-2004	62.80
चन्द्रमा	15-09-2004	62.88
मंगल	27-10-2004	63.10
बुध	25-01-2005	63.22
शनि	18-03-2005	63.46
बृहस्पति	26-06-2005	63.60
राहु	28-08-2005	63.88

सूर्य अन्तर		
(28:08:2005 To 06:02:2006)		
सूर्य	06-09-2005	64.05
चन्द्रमा	29-09-2005	64.08
मंगल	11-10-2005	64.14
बुध	05-11-2005	64.17
शनि	20-11-2005	64.24
बृहस्पति	19-12-2005	64.28
राहु	06-01-2006	64.36
शुक्र	06-02-2006	64.41

चन्द्रमा अन्तर		
(06:02:2006 To 19:03:2007)		
चन्द्रमा	04-04-2006	64.50
मंगल	04-05-2006	64.65
बुध	07-07-2006	64.73
शनि	13-08-2006	64.91
बृहस्पति	24-10-2006	65.01
राहु	08-12-2006	65.21
शुक्र	24-02-2007	65.33
सूर्य	19-03-2007	65.54

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

बुध दशा

(19:03:2007 – 18:03:2024)

बुध अन्तर		
(19:03:2007 To 21:11:2009)		
बुध	20-08-2007	65.61
शनि	18-11-2007	66.03
बृहस्पति	08-05-2008	66.28
राहु	25-08-2008	66.75
शुक्र	03-03-2009	67.04
सूर्य	27-04-2009	67.56
चन्द्रमा	09-09-2009	67.71
मंगल	21-11-2009	68.08

शनि अन्तर		
(21:11:2009 To 18:06:2011)		
शनि	13-01-2010	68.28
बृहस्पति	24-04-2010	68.43
राहु	27-06-2010	68.71
शुक्र	17-10-2010	68.88
सूर्य	17-11-2010	69.19
चन्द्रमा	05-02-2011	69.27
मंगल	20-03-2011	69.49
बुध	18-06-2011	69.61

बृहस्पति अन्तर		
(18:06:2011 To 15:06:2014)		
बृहस्पति	27-12-2011	69.86
राहु	27-04-2012	70.38
शुक्र	26-11-2012	70.71
सूर्य	25-01-2013	71.30
चन्द्रमा	26-06-2013	71.46
मंगल	15-09-2013	71.88
बुध	06-03-2014	72.10
शनि	15-06-2014	72.57

राहु अन्तर		
(15:06:2014 To 05:05:2016)		
राहु	30-08-2014	72.85
शुक्र	12-01-2015	73.06
सूर्य	19-02-2015	73.42
चन्द्रमा	26-05-2015	73.53
मंगल	16-07-2015	73.79
बुध	01-11-2015	73.93
शनि	04-01-2016	74.23
बृहस्पति	05-05-2016	74.40

शुक्र अन्तर		
(05:05:2016 To 25:08:2019)		
शुक्र	26-12-2016	74.74
सूर्य	03-03-2017	75.38
चन्द्रमा	18-08-2017	75.56
मंगल	15-11-2017	76.02
बुध	24-05-2018	76.27
शनि	13-09-2018	76.79
बृहस्पति	13-04-2019	77.09
राहु	25-08-2019	77.67

सूर्य अन्तर		
(25:08:2019 To 04:08:2020)		
सूर्य	13-09-2019	78.04
चन्द्रमा	31-10-2019	78.09
मंगल	25-11-2019	78.23
बुध	19-01-2020	78.30
शनि	20-02-2020	78.44
बृहस्पति	21-04-2020	78.53
राहु	29-05-2020	78.70
शुक्र	04-08-2020	78.80

चन्द्रमा अन्तर		
(04:08:2020 To 14:12:2022)		
चन्द्रमा	02-12-2020	78.99
मंगल	04-02-2021	79.31
बुध	20-06-2021	79.49
शनि	08-09-2021	79.86
बृहस्पति	06-02-2022	80.08
राहु	13-05-2022	80.49
शुक्र	27-10-2022	80.76
सूर्य	14-12-2022	81.22

मंगल अन्तर		
(14:12:2022 To 18:03:2024)		
मंगल	17-01-2023	81.35
बुध	31-03-2023	81.44
शनि	12-05-2023	81.64
बृहस्पति	01-08-2023	81.76
राहु	21-09-2023	81.98
शुक्र	20-12-2023	82.12
सूर्य	14-01-2024	82.36
चन्द्रमा	18-03-2024	82.43

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

शनि दशा

(18:03:2024 – 19:03:2034)

शनि अन्तर

(18:03:2024 To 20:02:2025)

शनि	19-04-2024	82.61
बृहस्पति	17-06-2024	82.69
राहु	25-07-2024	82.86
शुक्र	29-09-2024	82.96
सूर्य	18-10-2024	83.14
चन्द्रमा	04-12-2024	83.19
मंगल	29-12-2024	83.32
बुध	20-02-2025	83.39

बृहस्पति अन्तर

(20:02:2025 To 24:11:2026)

बृहस्पति	13-06-2025	83.53
राहु	23-08-2025	83.84
शुक्र	26-12-2025	84.04
सूर्य	31-01-2026	84.38
चन्द्रमा	30-04-2026	84.48
मंगल	17-06-2026	84.72
बुध	26-09-2026	84.85
शनि	24-11-2026	85.13

राहु अन्तर

(24:11:2026 To 04:01:2028)

राहु	08-01-2027	85.29
शुक्र	28-03-2027	85.42
सूर्य	20-04-2027	85.63
चन्द्रमा	15-06-2027	85.69
मंगल	15-07-2027	85.85
बुध	17-09-2027	85.93
शनि	24-10-2027	86.10
बृहस्पति	04-01-2028	86.21

शुक्र अन्तर

(04:01:2028 To 14:12:2029)

शुक्र	21-05-2028	86.40
सूर्य	30-06-2028	86.78
चन्द्रमा	06-10-2028	86.89
मंगल	28-11-2028	87.16
बुध	20-03-2029	87.30
शनि	25-05-2029	87.61
बृहस्पति	26-09-2029	87.79
राहु	14-12-2029	88.13

सूर्य अन्तर

(14:12:2029 To 05:07:2030)

सूर्य	26-12-2029	88.35
चन्द्रमा	23-01-2030	88.38
मंगल	07-02-2030	88.46
बुध	11-03-2030	88.50
शनि	29-03-2030	88.58
बृहस्पति	04-05-2030	88.64
राहु	27-05-2030	88.73
शुक्र	05-07-2030	88.79

चन्द्रमा अन्तर

(05:07:2030 To 24:11:2031)

चन्द्रमा	14-09-2030	88.90
मंगल	21-10-2030	89.10
बुध	09-01-2031	89.20
शनि	25-02-2031	89.42
बृहस्पति	25-05-2031	89.55
राहु	20-07-2031	89.79
शुक्र	27-10-2031	89.94
सूर्य	24-11-2031	90.21

मंगल अन्तर

(24:11:2031 To 21:08:2032)

मंगल	14-12-2031	90.29
बुध	26-01-2032	90.35
शनि	20-02-2032	90.46
बृहस्पति	08-04-2032	90.53
राहु	08-05-2032	90.66
शुक्र	29-06-2032	90.74
सूर्य	14-07-2032	90.89
चन्द्रमा	21-08-2032	90.93

बुध अन्तर

(21:08:2032 To 19:03:2034)

बुध	20-11-2032	91.03
शनि	12-01-2033	91.28
बृहस्पति	23-04-2033	91.43
राहु	26-06-2033	91.70
शुक्र	16-10-2033	91.88
सूर्य	17-11-2033	92.18
चन्द्रमा	04-02-2034	92.27
मंगल	19-03-2034	92.49

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

योगिनी दशा – 1

जन्म के समय योगिनी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:02:29) : भ्रमरी (मंगल) : 2 व. 3 मा. 10 दि.

भ्रमरी (मंगल) (पूर्वाभाद्र) दशा	
10:08:1941 To 19:11:1943	
भ्रमरी (मंगल)	19:11:1939
भद्रिका (बुध)	30:04:1940
उल्का (शनि)	19:11:1940
सिद्धा (शुक्र)	20:07:1941
संकटा (राहु)	30:04:1942
मंगला (चन्द्रमा)	21:03:1943
पिंगला (सुर्य)	30:04:1943
धन्या (बृहस्पति)	20:07:1943

भद्रिका (बुध) (उत्तरभाद्र) दशा	
19:11:1943 To 19:11:1948	
भद्रिका (बुध)	19:11:1943
उल्का (शनि)	30:07:1944
सिद्धा (शुक्र)	31:05:1945
संकटा (राहु)	21:05:1946
मंगला (चन्द्रमा)	30:06:1947
पिंगला (सुर्य)	20:08:1947
धन्या (बृहस्पति)	29:11:1947
भ्रमरी (मंगल)	30:04:1948

उल्का (शनि) (रेवाति) दशा	
19:11:1948 To 19:11:1954	
उल्का (शनि)	19:11:1948
सिद्धा (शुक्र)	19:11:1949
संकटा (राहु)	19:01:1951
मंगला (चन्द्रमा)	20:05:1952
पिंगला (सुर्य)	20:07:1952
धन्या (बृहस्पति)	19:11:1952
भ्रमरी (मंगल)	21:05:1953
भद्रिका (बुध)	19:01:1954

सिद्धा (शुक्र) (अश्विनी) दशा	
19:11:1954 To 19:11:1961	
सिद्धा (शुक्र)	19:11:1954
संकटा (राहु)	30:03:1956
मंगला (चन्द्रमा)	20:10:1957
पिंगला (सुर्य)	30:12:1957
धन्या (बृहस्पति)	21:05:1958
भ्रमरी (मंगल)	19:12:1958
भद्रिका (बुध)	29:09:1959
उल्का (शनि)	19:09:1960

संकटा (राहु) (भरणी) दशा	
19:11:1961 To 19:11:1969	
संकटा (राहु)	19:11:1961
मंगला (चन्द्रमा)	30:08:1963
पिंगला (सुर्य)	19:11:1963
धन्या (बृहस्पति)	30:04:1964
भ्रमरी (मंगल)	30:12:1964
भद्रिका (बुध)	19:11:1965
उल्का (शनि)	30:12:1966
सिद्धा (शुक्र)	30:04:1968

मंगला (चन्द्रमा) (कृतिका) दशा	
19:11:1969 To 19:11:1970	
मंगला (चन्द्रमा)	19:11:1969
पिंगला (सुर्य)	29:11:1969
धन्या (बृहस्पति)	19:12:1969
भ्रमरी (मंगल)	19:01:1970
भद्रिका (बुध)	28:02:1970
उल्का (शनि)	20:04:1970
सिद्धा (शुक्र)	20:06:1970
संकटा (राहु)	30:08:1970

पिंगला (सुर्य) (रोहिणी) दशा	
19:11:1970 To 19:11:1972	
पिंगला (सुर्य)	19:11:1970
धन्या (बृहस्पति)	30:12:1970
भ्रमरी (मंगल)	28:02:1971
भद्रिका (बुध)	21:05:1971
उल्का (शनि)	30:08:1971
सिद्धा (शुक्र)	30:12:1971
संकटा (राहु)	20:05:1972
मंगला (चन्द्रमा)	30:10:1972

धन्या (बृहस्पति) (मृगशिरा) दशा	
19:11:1972 To 19:11:1975	
धन्या (बृहस्पति)	19:11:1972
भ्रमरी (मंगल)	18:02:1973
भद्रिका (बुध)	20:06:1973
उल्का (शनि)	19:11:1973
सिद्धा (शुक्र)	21:05:1974
संकटा (राहु)	19:12:1974
मंगला (चन्द्रमा)	20:08:1975
पिंगला (सुर्य)	19:09:1975

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

योगिनी दशा – 2

जन्म के समय योगिनी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:02:29) : भ्रमरी (मंगल) : 2 व. 3 मा. 10 दि.

भ्रमरी (मंगल) (अद्रिा) दशा	
19:11:1975 To 19:11:1979	
भ्रमरी (मंगल)	19:11:1975
भद्रिका (बुध)	30:04:1976
उल्का (शनि)	19:11:1976
सिद्धा (शुक्र)	20:07:1977
संकटा (राहु)	30:04:1978
मंगला (चन्द्रमा)	21:03:1979
पिंगला (सुर्य)	30:04:1979
धन्या (बृहस्पति)	20:07:1979

भद्रिका (बुध) (पुनर्वसु) दशा	
19:11:1979 To 19:11:1984	
भद्रिका (बुध)	19:11:1979
उल्का (शनि)	30:07:1980
सिद्धा (शुक्र)	31:05:1981
संकटा (राहु)	21:05:1982
मंगला (चन्द्रमा)	30:06:1983
पिंगला (सुर्य)	20:08:1983
धन्या (बृहस्पति)	29:11:1983
भ्रमरी (मंगल)	30:04:1984

उल्का (शनि) (पु) दशा	
19:11:1984 To 19:11:1990	
उल्का (शनि)	19:11:1984
सिद्धा (शुक्र)	19:11:1985
संकटा (राहु)	19:01:1987
मंगला (चन्द्रमा)	20:05:1988
पिंगला (सुर्य)	20:07:1988
धन्या (बृहस्पति)	19:11:1988
भ्रमरी (मंगल)	21:05:1989
भद्रिका (बुध)	19:01:1990

सिद्धा (शुक्र) (अश्लेा) दशा	
19:11:1990 To 19:11:1997	
सिद्धा (शुक्र)	19:11:1990
संकटा (राहु)	30:03:1992
मंगला (चन्द्रमा)	20:10:1993
पिंगला (सुर्य)	30:12:1993
धन्या (बृहस्पति)	21:05:1994
भ्रमरी (मंगल)	19:12:1994
भद्रिका (बुध)	29:09:1995
उल्का (शनि)	19:09:1996

संकटा (राहु) (मघा) दशा	
19:11:1997 To 19:11:2005	
संकटा (राहु)	19:11:1997
मंगला (चन्द्रमा)	30:08:1999
पिंगला (सुर्य)	19:11:1999
धन्या (बृहस्पति)	30:04:2000
भ्रमरी (मंगल)	30:12:2000
भद्रिका (बुध)	19:11:2001
उल्का (शनि)	30:12:2002
सिद्धा (शुक्र)	30:04:2004

मंगला (चन्द्रमा) (पुर्वफाल्गुनी) दशा	
19:11:2005 To 19:11:2006	
मंगला (चन्द्रमा)	19:11:2005
पिंगला (सुर्य)	29:11:2005
धन्या (बृहस्पति)	19:12:2005
भ्रमरी (मंगल)	19:01:2006
भद्रिका (बुध)	28:02:2006
उल्का (शनि)	20:04:2006
सिद्धा (शुक्र)	20:06:2006
संकटा (राहु)	30:08:2006

पिंगला (सुर्य) (उत्तरफाल्गुनी) दशा	
19:11:2006 To 19:11:2008	
पिंगला (सुर्य)	19:11:2006
धन्या (बृहस्पति)	30:12:2006
भ्रमरी (मंगल)	28:02:2007
भद्रिका (बुध)	21:05:2007
उल्का (शनि)	30:08:2007
सिद्धा (शुक्र)	30:12:2007
संकटा (राहु)	20:05:2008
मंगला (चन्द्रमा)	30:10:2008

धन्या (बृहस्पति) (हस्ता) दशा	
19:11:2008 To 19:11:2011	
धन्या (बृहस्पति)	19:11:2008
भ्रमरी (मंगल)	18:02:2009
भद्रिका (बुध)	20:06:2009
उल्का (शनि)	19:11:2009
सिद्धा (शुक्र)	21:05:2010
संकटा (राहु)	19:12:2010
मंगला (चन्द्रमा)	20:08:2011
पिंगला (सुर्य)	19:09:2011

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

योगिनी दशा – 3

जन्म के समय योगिनी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:02:29) : भ्रमरी (मंगल) : 2 व. 3 मा. 10 दि.

भ्रमरी (मंगल) (चित्रा) दशा	
19:11:2011 To 19:11:2015	
भ्रमरी (मंगल)	19:11:2011
भद्रिका (बुध)	30:04:2012
उल्का (शनि)	19:11:2012
सिद्धा (शुक्र)	20:07:2013
संकटा (राहु)	30:04:2014
मंगला (चन्द्रमा)	21:03:2015
पिंगला (सुर्य)	30:04:2015
धन्या (बृहस्पति)	20:07:2015

भद्रिका (बुध) (स्वाति) दशा	
19:11:2015 To 19:11:2020	
भद्रिका (बुध)	19:11:2015
उल्का (शनि)	30:07:2016
सिद्धा (शुक्र)	31:05:2017
संकटा (राहु)	21:05:2018
मंगला (चन्द्रमा)	30:06:2019
पिंगला (सुर्य)	20:08:2019
धन्या (बृहस्पति)	29:11:2019
भ्रमरी (मंगल)	30:04:2020

उल्का (शनि) (विशाखा) दशा	
19:11:2020 To 19:11:2026	
उल्का (शनि)	19:11:2020
सिद्धा (शुक्र)	19:11:2021
संकटा (राहु)	19:01:2023
मंगला (चन्द्रमा)	20:05:2024
पिंगला (सुर्य)	20:07:2024
धन्या (बृहस्पति)	19:11:2024
भ्रमरी (मंगल)	21:05:2025
भद्रिका (बुध)	19:01:2026

सिद्धा (शुक्र) (अनुराधा) दशा	
19:11:2026 To 19:11:2033	
सिद्धा (शुक्र)	19:11:2026
संकटा (राहु)	30:03:2028
मंगला (चन्द्रमा)	20:10:2029
पिंगला (सुर्य)	30:12:2029
धन्या (बृहस्पति)	21:05:2030
भ्रमरी (मंगल)	19:12:2030
भद्रिका (बुध)	29:09:2031
उल्का (शनि)	19:09:2032

संकटा (राहु) (ज्येश्ठा) दशा	
19:11:2033 To 19:11:2041	
संकटा (राहु)	19:11:2033
मंगला (चन्द्रमा)	30:08:2035
पिंगला (सुर्य)	19:11:2035
धन्या (बृहस्पति)	30:04:2036
भ्रमरी (मंगल)	30:12:2036
भद्रिका (बुध)	19:11:2037
उल्का (शनि)	30:12:2038
सिद्धा (शुक्र)	30:04:2040

मंगला (चन्द्रमा) (मूला) दशा	
19:11:2041 To 19:11:2042	
मंगला (चन्द्रमा)	19:11:2041
पिंगला (सुर्य)	29:11:2041
धन्या (बृहस्पति)	19:12:2041
भ्रमरी (मंगल)	19:01:2042
भद्रिका (बुध)	28:02:2042
उल्का (शनि)	20:04:2042
सिद्धा (शुक्र)	20:06:2042
संकटा (राहु)	30:08:2042

पिंगला (सुर्य) (पूर्वाशाढ़) दशा	
19:11:2042 To 19:11:2044	
पिंगला (सुर्य)	19:11:2042
धन्या (बृहस्पति)	30:12:2042
भ्रमरी (मंगल)	28:02:2043
भद्रिका (बुध)	21:05:2043
उल्का (शनि)	30:08:2043
सिद्धा (शुक्र)	30:12:2043
संकटा (राहु)	20:05:2044
मंगला (चन्द्रमा)	30:10:2044

धन्या (बृहस्पति) (उत्तराशाढ़) दशा	
19:11:2044 To 19:11:2047	
धन्या (बृहस्पति)	19:11:2044
भ्रमरी (मंगल)	18:02:2045
भद्रिका (बुध)	20:06:2045
उल्का (शनि)	19:11:2045
सिद्धा (शुक्र)	21:05:2046
संकटा (राहु)	19:12:2046
मंगला (चन्द्रमा)	20:08:2047
पिंगला (सुर्य)	19:09:2047

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

जैमिनी चर दशा

जैमिनी चर दशा, जैसा कि ईरानगति रंगाचार्य द्वारा समझाया गया है, वैदिक ज्योतिष में एक सम्मानित प्रगति प्रणाली है जो महत्वपूर्ण जीवन की घटनाओं की भविष्यवाणी के लिए एक रूपरेखा प्रदान करती है। यह गतिशील कारकों पर जोर देता है और ग्रहों की स्थिति के बजाय संकेतों के स्थान पर निर्भर करता है, जो इसे अद्वितीय बनाता है। रंगाचार्य की व्याख्या सूक्ष्म बारीकियों को सामने लाती है, जिससे सटीक और प्रासंगिक रूप से सुसंगत भविष्यवाणियां प्रदान करने में प्रणाली की प्रभावशीलता बढ़ जाती है।

मिथुन दशा		
(10:08:1941 - 10:08:1943)		
कर्क	10-08-1942	00.00
मिथुन	10-08-1943	01.00

तुला दशा		
(10:08:1943 - 10:08:1946)		
सिहं	10-08-1944	02.00
कन्या	10-08-1945	03.00
तुला	10-08-1946	04.00

कुम्भ दशा		
(10:08:1946 - 10:08:1950)		
वृष	10-08-1947	05.00
मेष	10-08-1948	06.00
मीन	10-08-1949	07.00
कुम्भ	10-08-1950	08.00

कर्क दशा		
(10:08:1950 - 09:08:1956)		
कुम्भ	10-08-1951	09.00
मीन	10-08-1952	10.00
मेष	10-08-1953	11.00
वृष	10-08-1954	12.00
मिथुन	10-08-1955	13.00
कर्क	10-08-1956	14.00

वृश्चिक दशा		
(09:08:1956 - 10:08:1961)		
मीन	10-08-1957	15.00
कुम्भ	10-08-1958	16.00
मकर	10-08-1959	17.00
धनु	10-08-1960	18.00
वृश्चिक	10-08-1961	19.00

मीन दशा		
(10:08:1961 - 09:08:1964)		
वृष	10-08-1962	20.00
मेष	10-08-1963	21.00
मीन	10-08-1964	22.00

सिहं दशा

(09:08:1964 - 09:08:1976)

कर्क	10-08-1965	23.00
मिथुन	10-08-1966	24.00
वृष	10-08-1967	25.00
मेष	10-08-1968	26.00
मीन	10-08-1969	27.00
कुम्भ	10-08-1970	28.00
मकर	10-08-1971	29.00
धनु	10-08-1972	30.00
वृश्चिक	10-08-1973	31.00
तुला	10-08-1974	32.00
कन्या	10-08-1975	33.00
सिहं	10-08-1976	34.00

धनु दशा

(09:08:1976 - 10:08:1982)

वृष	10-08-1977	35.00
मेष	10-08-1978	36.00
मीन	10-08-1979	37.00
कुम्भ	10-08-1980	38.00
मकर	10-08-1981	39.00
धनु	10-08-1982	40.00

मेष दशा

(10:08:1982 - 10:08:1994)

मीन	10-08-1983	41.00
कुम्भ	10-08-1984	42.00
मकर	10-08-1985	43.00
धनु	10-08-1986	44.00
वृश्चिक	10-08-1987	45.00
तुला	10-08-1988	46.00
कन्या	10-08-1989	47.00
सिहं	10-08-1990	48.00
कर्क	10-08-1991	49.00
मिथुन	10-08-1992	50.00
वृष	10-08-1993	51.00
मेष	10-08-1994	52.00

कन्या दशा

(10:08:1994 - 10:08:2005)

कर्क	10-08-1995	53.00
मिथुन	10-08-1996	54.00
वृष	10-08-1997	55.00
मेष	10-08-1998	56.00
मीन	10-08-1999	57.00
कुम्भ	10-08-2000	58.00
मकर	10-08-2001	59.00
धनु	10-08-2002	60.00
वृश्चिक	10-08-2003	61.00
तुला	10-08-2004	62.00
कन्या	10-08-2005	63.00

मकर दशा

(10:08:2005 - 10:08:2010)

वृष	10-08-2006	64.00
मेष	10-08-2007	65.00
मीन	10-08-2008	66.00
कुम्भ	10-08-2009	67.00
मकर	10-08-2010	68.00

वृष दशा

(10:08:2010 - 09:08:2020)

सिहं	10-08-2011	69.00
कन्या	10-08-2012	70.00
तुला	10-08-2013	71.00
वृश्चिक	10-08-2014	72.00
धनु	10-08-2015	73.00
मकर	10-08-2016	74.00
कुम्भ	10-08-2017	75.00
मीन	10-08-2018	76.00
मेष	10-08-2019	77.00
वृष	10-08-2020	78.00

जैमिनी चर दशा

मिथुन दशा

(10:08:1941 TO 10:08:1943)

कर्क भुक्ति		
(10:08:1941 - 10:08:1942)		
कुम्भ	09:09:1941	00.00
मीन	09:10:1941	00.08
मेष	09:11:1941	00.17
वृष	09:12:1941	00.25
मिथुन	09:01:1942	00.33
कर्क	08:02:1942	00.42
सिहं	11:03:1942	00.50
कन्या	10:04:1942	00.58
तुला	10:05:1942	00.67
वृश्चिक	10:06:1942	00.75
धनु	10:07:1942	00.83
मकर	10:08:1942	00.92

मिथुन भुक्ति		
(10:08:1942 - 10:08:1943)		
कर्क	09:09:1942	01.00
मिथुन	09:10:1942	01.08
वृष	09:11:1942	01.17
मेष	09:12:1942	01.25
मीन	09:01:1943	01.33
कुम्भ	08:02:1943	01.42
मकर	11:03:1943	01.50
धनु	10:04:1943	01.58
वृश्चिक	10:05:1943	01.67
तुला	10:06:1943	01.75
कन्या	10:07:1943	01.83
सिहं	10:08:1943	01.92

जैमिनी चर दशा

तुला दशा

(10:08:1943 TO 10:08:1946)

सिहं भुक्ति		
(10:08:1943 - 10:08:1944)		
कर्क	09:09:1943	02.00
मिथुन	10:10:1943	02.08
वृष	09:11:1943	02.17
मेष	10:12:1943	02.25
मीन	09:01:1944	02.33
कुम्भ	09:02:1944	02.42
मकर	10:03:1944	02.50
धनु	10:04:1944	02.58
वृश्चिक	10:05:1944	02.67
तुला	10:06:1944	02.75
कन्या	10:07:1944	02.83
सिहं	10:08:1944	02.92

कन्या भुक्ति		
(10:08:1944 - 10:08:1945)		
कर्क	09:09:1944	03.00
मिथुन	10:10:1944	03.08
वृष	09:11:1944	03.17
मेष	10:12:1944	03.25
मीन	09:01:1945	03.33
कुम्भ	08:02:1945	03.42
मकर	11:03:1945	03.50
धनु	10:04:1945	03.58
वृश्चिक	11:05:1945	03.67
तुला	10:06:1945	03.75
कन्या	11:07:1945	03.83
सिहं	10:08:1945	03.92

तुला भुक्ति		
(10:08:1945 - 10:08:1946)		
सिहं	09:09:1945	04.00
कन्या	10:10:1945	04.08
तुला	09:11:1945	04.17
वृश्चिक	10:12:1945	04.25
धनु	09:01:1946	04.33
मकर	08:02:1946	04.42
कुम्भ	11:03:1946	04.50
मीन	10:04:1946	04.58
मेष	11:05:1946	04.67
वृष	10:06:1946	04.75
मिथुन	11:07:1946	04.83
कर्क	10:08:1946	04.92

जैमिनी चर दशा

कुम्भ दशा

(10:08:1946 TO 10:08:1950)

वृष भुक्ति		
(10:08:1946 - 10:08:1947)		
सिहं	09:09:1946	05.00
कन्या	10:10:1946	05.08
तुला	09:11:1946	05.17
वृश्चिक	10:12:1946	05.25
धनु	09:01:1947	05.33
मकर	08:02:1947	05.42
कुम्भ	11:03:1947	05.50
मीन	10:04:1947	05.58
मेष	11:05:1947	05.67
वृष	10:06:1947	05.75
मिथुन	11:07:1947	05.83
कर्क	10:08:1947	05.92

मेष भुक्ति		
(10:08:1947 - 10:08:1948)		
मीन	09:09:1947	06.00
कुम्भ	10:10:1947	06.08
मकर	09:11:1947	06.17
धनु	10:12:1947	06.25
वृश्चिक	09:01:1948	06.33
तुला	09:02:1948	06.42
कन्या	10:03:1948	06.50
सिहं	10:04:1948	06.58
कर्क	10:05:1948	06.67
मिथुन	10:06:1948	06.75
वृष	10:07:1948	06.83
मेष	10:08:1948	06.92

मीन भुक्ति		
(10:08:1948 - 10:08:1949)		
वृष	09:09:1948	07.00
मेष	10:10:1948	07.08
मीन	09:11:1948	07.17
कुम्भ	10:12:1948	07.25
मकर	09:01:1949	07.33
धनु	08:02:1949	07.42
वृश्चिक	11:03:1949	07.50
तुला	10:04:1949	07.58
कन्या	11:05:1949	07.67
सिहं	10:06:1949	07.75
कर्क	11:07:1949	07.83
मिथुन	10:08:1949	07.92

कुम्भ भुक्ति		
(10:08:1949 - 10:08:1950)		
वृष	09:09:1949	08.00
मेष	10:10:1949	08.08
मीन	09:11:1949	08.17
कुम्भ	10:12:1949	08.25
मकर	09:01:1950	08.33
धनु	08:02:1950	08.42
वृश्चिक	11:03:1950	08.50
तुला	10:04:1950	08.58
कन्या	11:05:1950	08.67
सिहं	10:06:1950	08.75
कर्क	11:07:1950	08.83
मिथुन	10:08:1950	08.92

जैमिनी चर दशा

कर्क दशा

(10:08:1950 TO 09:08:1956)

कुम्भ भुक्ति		
(10:08:1950 - 10:08:1951)		
वृष	09:09:1950	09.00
मेष	10:10:1950	09.08
मीन	09:11:1950	09.17
कुम्भ	10:12:1950	09.25
मकर	09:01:1951	09.33
धनु	08:02:1951	09.42
वृश्चिक	11:03:1951	09.50
तुला	10:04:1951	09.58
कन्या	11:05:1951	09.67
सिहं	10:06:1951	09.75
कर्क	11:07:1951	09.83
मिथुन	10:08:1951	09.92

मीन भुक्ति		
(10:08:1951 - 10:08:1952)		
वृष	09:09:1951	10.00
मेष	10:10:1951	10.08
मीन	09:11:1951	10.17
कुम्भ	10:12:1951	10.25
मकर	09:01:1952	10.33
धनु	09:02:1952	10.42
वृश्चिक	10:03:1952	10.50
तुला	10:04:1952	10.58
कन्या	10:05:1952	10.67
सिहं	10:06:1952	10.75
कर्क	10:07:1952	10.83
मिथुन	10:08:1952	10.92

मेष भुक्ति		
(10:08:1952 - 10:08:1953)		
मीन	09:09:1952	11.00
कुम्भ	10:10:1952	11.08
मकर	09:11:1952	11.17
धनु	10:12:1952	11.25
वृश्चिक	09:01:1953	11.33
तुला	08:02:1953	11.42
कन्या	11:03:1953	11.50
सिहं	10:04:1953	11.58
कर्क	11:05:1953	11.67
मिथुन	10:06:1953	11.75
वृष	11:07:1953	11.83
मेष	10:08:1953	11.92

वृष भुक्ति		
(10:08:1953 - 10:08:1954)		
सिहं	09:09:1953	12.00
कन्या	10:10:1953	12.08
तुला	09:11:1953	12.17
वृश्चिक	10:12:1953	12.25
धनु	09:01:1954	12.33
मकर	08:02:1954	12.42
कुम्भ	11:03:1954	12.50
मीन	10:04:1954	12.58
मेष	11:05:1954	12.67
वृष	10:06:1954	12.75
मिथुन	11:07:1954	12.83
कर्क	10:08:1954	12.92

मिथुन भुक्ति		
(10:08:1954 - 10:08:1955)		
कर्क	09:09:1954	13.00
मिथुन	10:10:1954	13.08
वृष	09:11:1954	13.17
मेष	10:12:1954	13.25
मीन	09:01:1955	13.33
कुम्भ	08:02:1955	13.42
मकर	11:03:1955	13.50
धनु	10:04:1955	13.58
वृश्चिक	11:05:1955	13.67
तुला	10:06:1955	13.75
कन्या	11:07:1955	13.83
सिहं	10:08:1955	13.92

कर्क भुक्ति		
(10:08:1955 - 10:08:1956)		
कुम्भ	09:09:1955	14.00
मीन	10:10:1955	14.08
मेष	09:11:1955	14.17
वृष	10:12:1955	14.25
मिथुन	09:01:1956	14.33
कर्क	09:02:1956	14.42
सिहं	10:03:1956	14.50
कन्या	10:04:1956	14.58
तुला	10:05:1956	14.67
वृश्चिक	10:06:1956	14.75
धनु	10:07:1956	14.83
मकर	10:08:1956	14.92

जैमिनी चर दशा

वृश्चिक दशा

(09:08:1956 TO 10:08:1961)

मीन भुक्ति		
(10:08:1956 - 10:08:1957)		
वृष	09:09:1956	15.00
मेष	10:10:1956	15.08
मीन	09:11:1956	15.17
कुम्भ	10:12:1956	15.25
मकर	09:01:1957	15.33
धनु	08:02:1957	15.42
वृश्चिक	11:03:1957	15.50
तुला	10:04:1957	15.58
कन्या	11:05:1957	15.67
सिहं	10:06:1957	15.75
कर्क	11:07:1957	15.83
मिथुन	10:08:1957	15.92

कुम्भ भुक्ति		
(10:08:1957 - 10:08:1958)		
वृष	09:09:1957	16.00
मेष	10:10:1957	16.08
मीन	09:11:1957	16.17
कुम्भ	10:12:1957	16.25
मकर	09:01:1958	16.33
धनु	08:02:1958	16.42
वृश्चिक	11:03:1958	16.50
तुला	10:04:1958	16.58
कन्या	11:05:1958	16.67
सिहं	10:06:1958	16.75
कर्क	11:07:1958	16.83
मिथुन	10:08:1958	16.92

मकर भुक्ति		
(10:08:1958 - 10:08:1959)		
वृष	09:09:1958	17.00
मेष	10:10:1958	17.08
मीन	09:11:1958	17.17
कुम्भ	10:12:1958	17.25
मकर	09:01:1959	17.33
धनु	08:02:1959	17.42
वृश्चिक	11:03:1959	17.50
तुला	10:04:1959	17.58
कन्या	11:05:1959	17.67
सिहं	10:06:1959	17.75
कर्क	11:07:1959	17.83
मिथुन	10:08:1959	17.92

धनु भुक्ति		
(10:08:1959 - 10:08:1960)		
वृष	09:09:1959	18.00
मेष	10:10:1959	18.08
मीन	09:11:1959	18.17
कुम्भ	10:12:1959	18.25
मकर	09:01:1960	18.33
धनु	09:02:1960	18.42
वृश्चिक	10:03:1960	18.50
तुला	10:04:1960	18.58
कन्या	10:05:1960	18.67
सिहं	10:06:1960	18.75
कर्क	10:07:1960	18.83
मिथुन	10:08:1960	18.92

वृश्चिक भुक्ति		
(10:08:1960 - 10:08:1961)		
मीन	09:09:1960	19.00
कुम्भ	10:10:1960	19.08
मकर	09:11:1960	19.17
धनु	10:12:1960	19.25
वृश्चिक	09:01:1961	19.33
तुला	08:02:1961	19.42
कन्या	11:03:1961	19.50
सिहं	10:04:1961	19.58
कर्क	11:05:1961	19.67
मिथुन	10:06:1961	19.75
वृष	11:07:1961	19.83
मेष	10:08:1961	19.92

जैमिनी चर दशा

मीन दशा

(10:08:1961 TO 09:08:1964)

वृष भुक्ति		
(10:08:1961 - 10:08:1962)		
सिहं	09:09:1961	20.00
कन्या	10:10:1961	20.08
तुला	09:11:1961	20.17
वृश्चिक	10:12:1961	20.25
धनु	09:01:1962	20.33
मकर	08:02:1962	20.42
कुम्भ	11:03:1962	20.50
मीन	10:04:1962	20.58
मेष	11:05:1962	20.67
वृष	10:06:1962	20.75
मिथुन	11:07:1962	20.83
कर्क	10:08:1962	20.92

मेष भुक्ति		
(10:08:1962 - 10:08:1963)		
मीन	09:09:1962	21.00
कुम्भ	10:10:1962	21.08
मकर	09:11:1962	21.17
धनु	10:12:1962	21.25
वृश्चिक	09:01:1963	21.33
तुला	08:02:1963	21.42
कन्या	11:03:1963	21.50
सिहं	10:04:1963	21.58
कर्क	11:05:1963	21.67
मिथुन	10:06:1963	21.75
वृष	11:07:1963	21.83
मेष	10:08:1963	21.92

मीन भुक्ति		
(10:08:1963 - 10:08:1964)		
वृष	09:09:1963	22.00
मेष	10:10:1963	22.08
मीन	09:11:1963	22.17
कुम्भ	10:12:1963	22.25
मकर	09:01:1964	22.33
धनु	09:02:1964	22.42
वृश्चिक	10:03:1964	22.50
तुला	10:04:1964	22.58
कन्या	10:05:1964	22.67
सिहं	10:06:1964	22.75
कर्क	10:07:1964	22.83
मिथुन	10:08:1964	22.92

जैमिनी चर दशा

सिहं दशा

(09:08:1964 TO 09:08:1976)

कर्क भुक्ति		
(10:08:1964 - 10:08:1965)		
कुम्भ	09:09:1964	23.00
मीन	10:10:1964	23.08
मेष	09:11:1964	23.17
वृष	10:12:1964	23.25
मिथुन	09:01:1965	23.33
कर्क	08:02:1965	23.42
सिहं	11:03:1965	23.50
कन्या	10:04:1965	23.58
तुला	11:05:1965	23.67
वृश्चिक	10:06:1965	23.75
धनु	11:07:1965	23.83
मकर	10:08:1965	23.92

मिथुन भुक्ति		
(10:08:1965 - 10:08:1966)		
कर्क	09:09:1965	24.00
मिथुन	10:10:1965	24.08
वृष	09:11:1965	24.17
मेष	10:12:1965	24.25
मीन	09:01:1966	24.33
कुम्भ	08:02:1966	24.42
मकर	11:03:1966	24.50
धनु	10:04:1966	24.58
वृश्चिक	11:05:1966	24.67
तुला	10:06:1966	24.75
कन्या	11:07:1966	24.83
सिहं	10:08:1966	24.92

वृष भुक्ति		
(10:08:1966 - 10:08:1967)		
सिहं	09:09:1966	25.00
कन्या	10:10:1966	25.08
तुला	09:11:1966	25.17
वृश्चिक	10:12:1966	25.25
धनु	09:01:1967	25.33
मकर	08:02:1967	25.42
कुम्भ	11:03:1967	25.50
मीन	10:04:1967	25.58
मेष	11:05:1967	25.67
वृष	10:06:1967	25.75
मिथुन	11:07:1967	25.83
कर्क	10:08:1967	25.92

मेष भुक्ति		
(10:08:1967 - 10:08:1968)		
मीन	09:09:1967	26.00
कुम्भ	10:10:1967	26.08
मकर	09:11:1967	26.17
धनु	10:12:1967	26.25
वृश्चिक	09:01:1968	26.33
तुला	09:02:1968	26.42
कन्या	10:03:1968	26.50
सिहं	10:04:1968	26.58
कर्क	10:05:1968	26.67
मिथुन	10:06:1968	26.75
वृष	10:07:1968	26.83
मेष	10:08:1968	26.92

मीन भुक्ति		
(10:08:1968 - 10:08:1969)		
वृष	09:09:1968	27.00
मेष	10:10:1968	27.08
मीन	09:11:1968	27.17
कुम्भ	10:12:1968	27.25
मकर	09:01:1969	27.33
धनु	08:02:1969	27.42
वृश्चिक	11:03:1969	27.50
तुला	10:04:1969	27.58
कन्या	11:05:1969	27.67
सिहं	10:06:1969	27.75
कर्क	11:07:1969	27.83
मिथुन	10:08:1969	27.92

कुम्भ भुक्ति		
(10:08:1969 - 10:08:1970)		
वृष	09:09:1969	28.00
मेष	10:10:1969	28.08
मीन	09:11:1969	28.17
कुम्भ	10:12:1969	28.25
मकर	09:01:1970	28.33
धनु	08:02:1970	28.42
वृश्चिक	11:03:1970	28.50
तुला	10:04:1970	28.58
कन्या	11:05:1970	28.67
सिहं	10:06:1970	28.75
कर्क	11:07:1970	28.83
मिथुन	10:08:1970	28.92

मकर भुक्ति		
(10:08:1970 - 10:08:1971)		
वृष	09:09:1970	29.00
मेष	10:10:1970	29.08
मीन	09:11:1970	29.17
कुम्भ	10:12:1970	29.25
मकर	09:01:1971	29.33
धनु	08:02:1971	29.42
वृश्चिक	11:03:1971	29.50
तुला	10:04:1971	29.58
कन्या	11:05:1971	29.67
सिहं	10:06:1971	29.75
कर्क	11:07:1971	29.83
मिथुन	10:08:1971	29.92

धनु भुक्ति		
(10:08:1971 - 10:08:1972)		
वृष	09:09:1971	30.00
मेष	10:10:1971	30.08
मीन	09:11:1971	30.17
कुम्भ	10:12:1971	30.25
मकर	09:01:1972	30.33
धनु	09:02:1972	30.42
वृश्चिक	10:03:1972	30.50
तुला	10:04:1972	30.58
कन्या	10:05:1972	30.67
सिहं	10:06:1972	30.75
कर्क	10:07:1972	30.83
मिथुन	10:08:1972	30.92

वृश्चिक भुक्ति		
(10:08:1972 - 10:08:1973)		
मीन	09:09:1972	31.00
कुम्भ	10:10:1972	31.08
मकर	09:11:1972	31.17
धनु	10:12:1972	31.25
वृश्चिक	09:01:1973	31.33
तुला	08:02:1973	31.42
कन्या	11:03:1973	31.50
सिहं	10:04:1973	31.58
कर्क	11:05:1973	31.67
मिथुन	10:06:1973	31.75
वृष	11:07:1973	31.83
मेष	10:08:1973	31.92

तुला भुक्ति		
(10:08:1973 - 10:08:1974)		
सिहं	09:09:1973	32.00
कन्या	10:10:1973	32.08
तुला	09:11:1973	32.17
वृश्चिक	10:12:1973	32.25
धनु	09:01:1974	32.33
मकर	08:02:1974	32.42
कुम्भ	11:03:1974	32.50
मीन	10:04:1974	32.58
मेष	11:05:1974	32.67
वृष	10:06:1974	32.75
मिथुन	11:07:1974	32.83
कर्क	10:08:1974	32.92

कन्या भुक्ति		
(10:08:1974 - 10:08:1975)		
कर्क	09:09:1974	33.00
मिथुन	10:10:1974	33.08
वृष	09:11:1974	33.17
मेष	10:12:1974	33.25
मीन	09:01:1975	33.33
कुम्भ	08:02:1975	33.42
मकर	11:03:1975	33.50
धनु	10:04:1975	33.58
वृश्चिक	11:05:1975	33.67
तुला	10:06:1975	33.75
कन्या	11:07:1975	33.83
सिहं	10:08:1975	33.92

सिहं भुक्ति		
(10:08:1975 - 10:08:1976)		
कर्क	09:09:1975	34.00
मिथुन	10:10:1975	34.08
वृष	09:11:1975	34.17
मेष	10:12:1975	34.25
मीन	09:01:1976	34.33
कुम्भ	09:02:1976	34.42
मकर	10:03:1976	34.50
धनु	10:04:1976	34.58
वृश्चिक	10:05:1976	34.67
तुला	10:06:1976	34.75
कन्या	10:07:1976	34.83
सिहं	10:08:1976	34.92

जैमिनी चर दशा

धनु दशा

(09:08:1976 TO 10:08:1982)

वृष भुक्ति		
(10:08:1976 - 10:08:1977)		
सिहं	09:09:1976	35.00
कन्या	10:10:1976	35.08
तुला	09:11:1976	35.17
वृश्चिक	10:12:1976	35.25
धनु	09:01:1977	35.33
मकर	08:02:1977	35.42
कुम्भ	11:03:1977	35.50
मीन	10:04:1977	35.58
मेष	11:05:1977	35.67
वृष	10:06:1977	35.75
मिथुन	11:07:1977	35.83
कर्क	10:08:1977	35.92

मेष भुक्ति		
(10:08:1977 - 10:08:1978)		
मीन	09:09:1977	36.00
कुम्भ	10:10:1977	36.08
मकर	09:11:1977	36.17
धनु	10:12:1977	36.25
वृश्चिक	09:01:1978	36.33
तुला	08:02:1978	36.42
कन्या	11:03:1978	36.50
सिहं	10:04:1978	36.58
कर्क	11:05:1978	36.67
मिथुन	10:06:1978	36.75
वृष	11:07:1978	36.83
मेष	10:08:1978	36.92

मीन भुक्ति		
(10:08:1978 - 10:08:1979)		
वृष	09:09:1978	37.00
मेष	10:10:1978	37.08
मीन	09:11:1978	37.17
कुम्भ	10:12:1978	37.25
मकर	09:01:1979	37.33
धनु	08:02:1979	37.42
वृश्चिक	11:03:1979	37.50
तुला	10:04:1979	37.58
कन्या	11:05:1979	37.67
सिहं	10:06:1979	37.75
कर्क	11:07:1979	37.83
मिथुन	10:08:1979	37.92

कुम्भ भुक्ति		
(10:08:1979 - 10:08:1980)		
वृष	09:09:1979	38.00
मेष	10:10:1979	38.08
मीन	09:11:1979	38.17
कुम्भ	10:12:1979	38.25
मकर	09:01:1980	38.33
धनु	09:02:1980	38.42
वृश्चिक	10:03:1980	38.50
तुला	10:04:1980	38.58
कन्या	10:05:1980	38.67
सिहं	10:06:1980	38.75
कर्क	10:07:1980	38.83
मिथुन	10:08:1980	38.92

मकर भुक्ति		
(10:08:1980 - 10:08:1981)		
वृष	09:09:1980	39.00
मेष	10:10:1980	39.08
मीन	09:11:1980	39.17
कुम्भ	10:12:1980	39.25
मकर	09:01:1981	39.33
धनु	08:02:1981	39.42
वृश्चिक	11:03:1981	39.50
तुला	10:04:1981	39.58
कन्या	11:05:1981	39.67
सिहं	10:06:1981	39.75
कर्क	11:07:1981	39.83
मिथुन	10:08:1981	39.92

धनु भुक्ति		
(10:08:1981 - 10:08:1982)		
वृष	09:09:1981	40.00
मेष	10:10:1981	40.08
मीन	09:11:1981	40.17
कुम्भ	10:12:1981	40.25
मकर	09:01:1982	40.33
धनु	08:02:1982	40.42
वृश्चिक	11:03:1982	40.50
तुला	10:04:1982	40.58
कन्या	11:05:1982	40.67
सिहं	10:06:1982	40.75
कर्क	11:07:1982	40.83
मिथुन	10:08:1982	40.92

जैमिनी चर दशा

मेष दशा

(10:08:1982 TO 10:08:1994)

मीन भुक्ति		
(10:08:1982 - 10:08:1983)		
वृष	09:09:1982	41.00
मेष	10:10:1982	41.08
मीन	09:11:1982	41.17
कुम्भ	10:12:1982	41.25
मकर	09:01:1983	41.33
धनु	08:02:1983	41.42
वृश्चिक	11:03:1983	41.50
तुला	10:04:1983	41.58
कन्या	11:05:1983	41.67
सिहं	10:06:1983	41.75
कर्क	11:07:1983	41.83
मिथुन	10:08:1983	41.92

कुम्भ भुक्ति		
(10:08:1983 - 10:08:1984)		
वृष	09:09:1983	42.00
मेष	10:10:1983	42.08
मीन	09:11:1983	42.17
कुम्भ	10:12:1983	42.25
मकर	09:01:1984	42.33
धनु	09:02:1984	42.42
वृश्चिक	10:03:1984	42.50
तुला	10:04:1984	42.58
कन्या	10:05:1984	42.67
सिहं	10:06:1984	42.75
कर्क	10:07:1984	42.83
मिथुन	10:08:1984	42.92

मकर भुक्ति		
(10:08:1984 - 10:08:1985)		
वृष	09:09:1984	43.00
मेष	10:10:1984	43.08
मीन	09:11:1984	43.17
कुम्भ	10:12:1984	43.25
मकर	09:01:1985	43.33
धनु	08:02:1985	43.42
वृश्चिक	11:03:1985	43.50
तुला	10:04:1985	43.58
कन्या	11:05:1985	43.67
सिहं	10:06:1985	43.75
कर्क	11:07:1985	43.83
मिथुन	10:08:1985	43.92

धनु भुक्ति		
(10:08:1985 - 10:08:1986)		
वृष	09:09:1985	44.00
मेष	10:10:1985	44.08
मीन	09:11:1985	44.17
कुम्भ	10:12:1985	44.25
मकर	09:01:1986	44.33
धनु	08:02:1986	44.42
वृश्चिक	11:03:1986	44.50
तुला	10:04:1986	44.58
कन्या	11:05:1986	44.67
सिहं	10:06:1986	44.75
कर्क	11:07:1986	44.83
मिथुन	10:08:1986	44.92

वृश्चिक भुक्ति		
(10:08:1986 - 10:08:1987)		
मीन	09:09:1986	45.00
कुम्भ	10:10:1986	45.08
मकर	09:11:1986	45.17
धनु	10:12:1986	45.25
वृश्चिक	09:01:1987	45.33
तुला	08:02:1987	45.42
कन्या	11:03:1987	45.50
सिहं	10:04:1987	45.58
कर्क	11:05:1987	45.67
मिथुन	10:06:1987	45.75
वृष	11:07:1987	45.83
मेष	10:08:1987	45.92

तुला भुक्ति		
(10:08:1987 - 10:08:1988)		
सिहं	09:09:1987	46.00
कन्या	10:10:1987	46.08
तुला	09:11:1987	46.17
वृश्चिक	10:12:1987	46.25
धनु	09:01:1988	46.33
मकर	09:02:1988	46.42
कुम्भ	10:03:1988	46.50
मीन	10:04:1988	46.58
मेष	10:05:1988	46.67
वृष	10:06:1988	46.75
मिथुन	10:07:1988	46.83
कर्क	10:08:1988	46.92

कन्या भुक्ति		
(10:08:1988 - 10:08:1989)		
कर्क	09:09:1988	47.00
मिथुन	10:10:1988	47.08
वृष	09:11:1988	47.17
मेष	10:12:1988	47.25
मीन	09:01:1989	47.33
कुम्भ	08:02:1989	47.42
मकर	11:03:1989	47.50
धनु	10:04:1989	47.58
वृश्चिक	11:05:1989	47.67
तुला	10:06:1989	47.75
कन्या	11:07:1989	47.83
सिहं	10:08:1989	47.92

सिहं भुक्ति		
(10:08:1989 - 10:08:1990)		
कर्क	09:09:1989	48.00
मिथुन	10:10:1989	48.08
वृष	09:11:1989	48.17
मेष	10:12:1989	48.25
मीन	09:01:1990	48.33
कुम्भ	08:02:1990	48.42
मकर	11:03:1990	48.50
धनु	10:04:1990	48.58
वृश्चिक	11:05:1990	48.67
तुला	10:06:1990	48.75
कन्या	11:07:1990	48.83
सिहं	10:08:1990	48.92

कर्क भुक्ति		
(10:08:1990 - 10:08:1991)		
कुम्भ	09:09:1990	49.00
मीन	10:10:1990	49.08
मेष	09:11:1990	49.17
वृष	10:12:1990	49.25
मिथुन	09:01:1991	49.33
कर्क	08:02:1991	49.42
सिहं	11:03:1991	49.50
कन्या	10:04:1991	49.58
तुला	11:05:1991	49.67
वृश्चिक	10:06:1991	49.75
धनु	11:07:1991	49.83
मकर	10:08:1991	49.92

मिथुन भुक्ति		
(10:08:1991 - 10:08:1992)		
कर्क	09:09:1991	50.00
मिथुन	10:10:1991	50.08
वृष	09:11:1991	50.17
मेष	10:12:1991	50.25
मीन	09:01:1992	50.33
कुम्भ	09:02:1992	50.42
मकर	10:03:1992	50.50
धनु	10:04:1992	50.58
वृश्चिक	10:05:1992	50.67
तुला	10:06:1992	50.75
कन्या	10:07:1992	50.83
सिहं	10:08:1992	50.92

वृष भुक्ति		
(10:08:1992 - 10:08:1993)		
सिहं	09:09:1992	51.00
कन्या	10:10:1992	51.08
तुला	09:11:1992	51.17
वृश्चिक	10:12:1992	51.25
धनु	09:01:1993	51.33
मकर	08:02:1993	51.42
कुम्भ	11:03:1993	51.50
मीन	10:04:1993	51.58
मेष	11:05:1993	51.67
वृष	10:06:1993	51.75
मिथुन	11:07:1993	51.83
कर्क	10:08:1993	51.92

मेष भुक्ति		
(10:08:1993 - 10:08:1994)		
मीन	09:09:1993	52.00
कुम्भ	10:10:1993	52.08
मकर	09:11:1993	52.17
धनु	10:12:1993	52.25
वृश्चिक	09:01:1994	52.33
तुला	08:02:1994	52.42
कन्या	11:03:1994	52.50
सिहं	10:04:1994	52.58
कर्क	11:05:1994	52.67
मिथुन	10:06:1994	52.75
वृष	11:07:1994	52.83
मेष	10:08:1994	52.92

जैमिनी चर दशा

कन्या दशा

(10:08:1994 TO 10:08:2005)

कर्क भुक्ति		
(10:08:1994 - 10:08:1995)		
कुम्भ	09:09:1994	53.00
मीन	10:10:1994	53.08
मेष	09:11:1994	53.17
वृष	10:12:1994	53.25
मिथुन	09:01:1995	53.33
कर्क	08:02:1995	53.42
सिहं	11:03:1995	53.50
कन्या	10:04:1995	53.58
तुला	11:05:1995	53.67
वृश्चिक	10:06:1995	53.75
धनु	11:07:1995	53.83
मकर	10:08:1995	53.92

मिथुन भुक्ति		
(10:08:1995 - 10:08:1996)		
कर्क	09:09:1995	54.00
मिथुन	10:10:1995	54.08
वृष	09:11:1995	54.17
मेष	10:12:1995	54.25
मीन	09:01:1996	54.33
कुम्भ	09:02:1996	54.42
मकर	10:03:1996	54.50
धनु	10:04:1996	54.58
वृश्चिक	10:05:1996	54.67
तुला	10:06:1996	54.75
कन्या	10:07:1996	54.83
सिहं	10:08:1996	54.92

वृष भुक्ति		
(10:08:1996 - 10:08:1997)		
सिहं	09:09:1996	55.00
कन्या	10:10:1996	55.08
तुला	09:11:1996	55.17
वृश्चिक	10:12:1996	55.25
धनु	09:01:1997	55.33
मकर	08:02:1997	55.42
कुम्भ	11:03:1997	55.50
मीन	10:04:1997	55.58
मेष	11:05:1997	55.67
वृष	10:06:1997	55.75
मिथुन	11:07:1997	55.83
कर्क	10:08:1997	55.92

मेष भुक्ति		
(10:08:1997 - 10:08:1998)		
मीन	09:09:1997	56.00
कुम्भ	10:10:1997	56.08
मकर	09:11:1997	56.17
धनु	10:12:1997	56.25
वृश्चिक	09:01:1998	56.33
तुला	08:02:1998	56.42
कन्या	11:03:1998	56.50
सिहं	10:04:1998	56.58
कर्क	11:05:1998	56.67
मिथुन	10:06:1998	56.75
वृष	11:07:1998	56.83
मेष	10:08:1998	56.92

मीन भुक्ति		
(10:08:1998 - 10:08:1999)		
वृष	09:09:1998	57.00
मेष	10:10:1998	57.08
मीन	09:11:1998	57.17
कुम्भ	10:12:1998	57.25
मकर	09:01:1999	57.33
धनु	08:02:1999	57.42
वृश्चिक	11:03:1999	57.50
तुला	10:04:1999	57.58
कन्या	11:05:1999	57.67
सिहं	10:06:1999	57.75
कर्क	11:07:1999	57.83
मिथुन	10:08:1999	57.92

कुम्भ भुक्ति		
(10:08:1999 - 10:08:2000)		
वृष	09:09:1999	58.00
मेष	10:10:1999	58.08
मीन	09:11:1999	58.17
कुम्भ	10:12:1999	58.25
मकर	09:01:2000	58.33
धनु	09:02:2000	58.42
वृश्चिक	10:03:2000	58.50
तुला	10:04:2000	58.58
कन्या	10:05:2000	58.67
सिहं	10:06:2000	58.75
कर्क	10:07:2000	58.83
मिथुन	10:08:2000	58.92

मकर भुक्ति		
(10:08:2000 - 10:08:2001)		
वृष	09:09:2000	59.00
मेष	10:10:2000	59.08
मीन	09:11:2000	59.17
कुम्भ	10:12:2000	59.25
मकर	09:01:2001	59.33
धनु	08:02:2001	59.42
वृश्चिक	11:03:2001	59.50
तुला	10:04:2001	59.58
कन्या	11:05:2001	59.67
सिहं	10:06:2001	59.75
कर्क	11:07:2001	59.83
मिथुन	10:08:2001	59.92

धनु भुक्ति		
(10:08:2001 - 10:08:2002)		
वृष	09:09:2001	60.00
मेष	10:10:2001	60.08
मीन	09:11:2001	60.17
कुम्भ	10:12:2001	60.25
मकर	09:01:2002	60.33
धनु	08:02:2002	60.42
वृश्चिक	11:03:2002	60.50
तुला	10:04:2002	60.58
कन्या	11:05:2002	60.67
सिहं	10:06:2002	60.75
कर्क	11:07:2002	60.83
मिथुन	10:08:2002	60.92

वृश्चिक भुक्ति		
(10:08:2002 - 10:08:2003)		
मीन	09:09:2002	61.00
कुम्भ	10:10:2002	61.08
मकर	09:11:2002	61.17
धनु	10:12:2002	61.25
वृश्चिक	09:01:2003	61.33
तुला	08:02:2003	61.42
कन्या	11:03:2003	61.50
सिहं	10:04:2003	61.58
कर्क	11:05:2003	61.67
मिथुन	10:06:2003	61.75
वृष	11:07:2003	61.83
मेष	10:08:2003	61.92

तुला भुक्ति		
(10:08:2003 - 10:08:2004)		
सिहं	09:09:2003	62.00
कन्या	10:10:2003	62.08
तुला	09:11:2003	62.17
वृश्चिक	10:12:2003	62.25
धनु	09:01:2004	62.33
मकर	09:02:2004	62.42
कुम्भ	10:03:2004	62.50
मीन	10:04:2004	62.58
मेष	10:05:2004	62.67
वृष	10:06:2004	62.75
मिथुन	10:07:2004	62.83
कर्क	10:08:2004	62.92

कन्या भुक्ति		
(10:08:2004 - 10:08:2005)		
कर्क	09:09:2004	63.00
मिथुन	10:10:2004	63.08
वृष	09:11:2004	63.17
मेष	10:12:2004	63.25
मीन	09:01:2005	63.33
कुम्भ	08:02:2005	63.42
मकर	11:03:2005	63.50
धनु	10:04:2005	63.58
वृश्चिक	11:05:2005	63.67
तुला	10:06:2005	63.75
कन्या	11:07:2005	63.83
सिहं	10:08:2005	63.92

जैमिनी चर दशा

मकर दशा

(10:08:2005 TO 10:08:2010)

वृष भुक्ति		
(10:08:2005 - 10:08:2006)		
सिहं	09:09:2005	64.00
कन्या	10:10:2005	64.08
तुला	09:11:2005	64.17
वृश्चिक	10:12:2005	64.25
धनु	09:01:2006	64.33
मकर	08:02:2006	64.42
कुम्भ	11:03:2006	64.50
मीन	10:04:2006	64.58
मेष	11:05:2006	64.67
वृष	10:06:2006	64.75
मिथुन	11:07:2006	64.83
कर्क	10:08:2006	64.92

मेष भुक्ति		
(10:08:2006 - 10:08:2007)		
मीन	09:09:2006	65.00
कुम्भ	10:10:2006	65.08
मकर	09:11:2006	65.17
धनु	10:12:2006	65.25
वृश्चिक	09:01:2007	65.33
तुला	08:02:2007	65.42
कन्या	11:03:2007	65.50
सिहं	10:04:2007	65.58
कर्क	11:05:2007	65.67
मिथुन	10:06:2007	65.75
वृष	11:07:2007	65.83
मेष	10:08:2007	65.92

मीन भुक्ति		
(10:08:2007 - 10:08:2008)		
वृष	09:09:2007	66.00
मेष	10:10:2007	66.08
मीन	09:11:2007	66.17
कुम्भ	10:12:2007	66.25
मकर	09:01:2008	66.33
धनु	09:02:2008	66.42
वृश्चिक	10:03:2008	66.50
तुला	10:04:2008	66.58
कन्या	10:05:2008	66.67
सिहं	10:06:2008	66.75
कर्क	10:07:2008	66.83
मिथुन	10:08:2008	66.92

कुम्भ भुक्ति		
(10:08:2008 - 10:08:2009)		
वृष	09:09:2008	67.00
मेष	10:10:2008	67.08
मीन	09:11:2008	67.17
कुम्भ	10:12:2008	67.25
मकर	09:01:2009	67.33
धनु	08:02:2009	67.42
वृश्चिक	11:03:2009	67.50
तुला	10:04:2009	67.58
कन्या	11:05:2009	67.67
सिहं	10:06:2009	67.75
कर्क	11:07:2009	67.83
मिथुन	10:08:2009	67.92

मकर भुक्ति		
(10:08:2009 - 10:08:2010)		
वृष	09:09:2009	68.00
मेष	10:10:2009	68.08
मीन	09:11:2009	68.17
कुम्भ	10:12:2009	68.25
मकर	09:01:2010	68.33
धनु	08:02:2010	68.42
वृश्चिक	11:03:2010	68.50
तुला	10:04:2010	68.58
कन्या	11:05:2010	68.67
सिहं	10:06:2010	68.75
कर्क	11:07:2010	68.83
मिथुन	10:08:2010	68.92

जैमिनी चर दशा

वृष दशा

(10:08:2010 TO 09:08:2020)

सिहं भुक्ति		
(10:08:2010 - 10:08:2011)		
कर्क	09:09:2010	69.00
मिथुन	10:10:2010	69.08
वृष	09:11:2010	69.17
मेष	10:12:2010	69.25
मीन	09:01:2011	69.33
कुम्भ	08:02:2011	69.42
मकर	11:03:2011	69.50
धनु	10:04:2011	69.58
वृश्चिक	11:05:2011	69.67
तुला	10:06:2011	69.75
कन्या	11:07:2011	69.83
सिहं	10:08:2011	69.92

कन्या भुक्ति		
(10:08:2011 - 10:08:2012)		
कर्क	09:09:2011	70.00
मिथुन	10:10:2011	70.08
वृष	09:11:2011	70.17
मेष	10:12:2011	70.25
मीन	09:01:2012	70.33
कुम्भ	09:02:2012	70.42
मकर	10:03:2012	70.50
धनु	10:04:2012	70.58
वृश्चिक	10:05:2012	70.67
तुला	10:06:2012	70.75
कन्या	10:07:2012	70.83
सिहं	10:08:2012	70.92

तुला भुक्ति		
(10:08:2012 - 10:08:2013)		
सिहं	09:09:2012	71.00
कन्या	10:10:2012	71.08
तुला	09:11:2012	71.17
वृश्चिक	10:12:2012	71.25
धनु	09:01:2013	71.33
मकर	08:02:2013	71.42
कुम्भ	11:03:2013	71.50
मीन	10:04:2013	71.58
मेष	11:05:2013	71.67
वृष	10:06:2013	71.75
मिथुन	11:07:2013	71.83
कर्क	10:08:2013	71.92

वृश्चिक भुक्ति		
(10:08:2013 - 10:08:2014)		
मीन	09:09:2013	72.00
कुम्भ	10:10:2013	72.08
मकर	09:11:2013	72.17
धनु	10:12:2013	72.25
वृश्चिक	09:01:2014	72.33
तुला	08:02:2014	72.42
कन्या	11:03:2014	72.50
सिहं	10:04:2014	72.58
कर्क	11:05:2014	72.67
मिथुन	10:06:2014	72.75
वृष	11:07:2014	72.83
मेष	10:08:2014	72.92

धनु भुक्ति		
(10:08:2014 - 10:08:2015)		
वृष	09:09:2014	73.00
मेष	10:10:2014	73.08
मीन	09:11:2014	73.17
कुम्भ	10:12:2014	73.25
मकर	09:01:2015	73.33
धनु	08:02:2015	73.42
वृश्चिक	11:03:2015	73.50
तुला	10:04:2015	73.58
कन्या	11:05:2015	73.67
सिहं	10:06:2015	73.75
कर्क	11:07:2015	73.83
मिथुन	10:08:2015	73.92

मकर भुक्ति		
(10:08:2015 - 10:08:2016)		
वृष	09:09:2015	74.00
मेष	10:10:2015	74.08
मीन	09:11:2015	74.17
कुम्भ	10:12:2015	74.25
मकर	09:01:2016	74.33
धनु	09:02:2016	74.42
वृश्चिक	10:03:2016	74.50
तुला	10:04:2016	74.58
कन्या	10:05:2016	74.67
सिहं	10:06:2016	74.75
कर्क	10:07:2016	74.83
मिथुन	10:08:2016	74.92

कुम्भ भुक्ति		
(10:08:2016 - 10:08:2017)		
वृष	09:09:2016	75.00
मेष	10:10:2016	75.08
मीन	09:11:2016	75.17
कुम्भ	10:12:2016	75.25
मकर	09:01:2017	75.33
धनु	08:02:2017	75.42
वृश्चिक	11:03:2017	75.50
तुला	10:04:2017	75.58
कन्या	11:05:2017	75.67
सिहं	10:06:2017	75.75
कर्क	11:07:2017	75.83
मिथुन	10:08:2017	75.92

मीन भुक्ति		
(10:08:2017 - 10:08:2018)		
वृष	09:09:2017	76.00
मेष	10:10:2017	76.08
मीन	09:11:2017	76.17
कुम्भ	10:12:2017	76.25
मकर	09:01:2018	76.33
धनु	08:02:2018	76.42
वृश्चिक	11:03:2018	76.50
तुला	10:04:2018	76.58
कन्या	11:05:2018	76.67
सिहं	10:06:2018	76.75
कर्क	11:07:2018	76.83
मिथुन	10:08:2018	76.92

मेष भुक्ति		
(10:08:2018 - 10:08:2019)		
मीन	09:09:2018	77.00
कुम्भ	10:10:2018	77.08
मकर	09:11:2018	77.17
धनु	10:12:2018	77.25
वृश्चिक	09:01:2019	77.33
तुला	08:02:2019	77.42
कन्या	11:03:2019	77.50
सिहं	10:04:2019	77.58
कर्क	11:05:2019	77.67
मिथुन	10:06:2019	77.75
वृष	11:07:2019	77.83
मेष	10:08:2019	77.92

वृष भुक्ति		
(10:08:2019 - 10:08:2020)		
सिहं	09:09:2019	78.00
कन्या	10:10:2019	78.08
तुला	09:11:2019	78.17
वृश्चिक	10:12:2019	78.25
धनु	09:01:2020	78.33
मकर	09:02:2020	78.42
कुम्भ	10:03:2020	78.50
मीन	10:04:2020	78.58
मेष	10:05:2020	78.67
वृष	10:06:2020	78.75
मिथुन	10:07:2020	78.83
कर्क	10:08:2020	78.92

वैदिक ज्योतिष से आपकी जीवन यात्रा

आपकी लग्न राशि मिथुन है, जिसे दो बच्चों के चित्र के द्वारा प्रदर्शित किया गया है– दोहरेपन/द्वैध–अवस्था का प्रतीक। यह राशि वायुतत्व, साधारण या लचीली राशि के रूप में वर्गीकृत की जाती है। कई अन्य प्राकृतिक गुणात्मक विशेषताएं भी इसमें निहित हैं। यह मानव, दोहरा–शरीर या द्वि–शारीरिक संबंधी, बंजर और हिंसक प्रकृति की राशि है। यह वाणी की भी राशि है।

आपकी कुण्डली के प्रथम भाव का विश्लेषण

सामान्य जानकारी, मानसिक शांति, ब्यक्तित्व, अवसर और जीवन की दिशा

लग्न में मिथुन राशि होना बहुत सुखदायक होता है तथा आपको आकर्षक स्वरुप देता है। आमतौर पर आप लंबे, बड़े हाथ एवं पैर वाले, दुबले–पतले, खूबसूरत आंखों वाले तथा तेज नाक वाले हो सकते हैं। आपकी बुद्धि एवं मनभावन चाल आपके चेहरे की रौनक को बढ़ा देंगे। आपके पास राजनीतिक बातचीत करने का विशेष कौशल हो सकता है तथा आप व्यापार में कुशल हो सकते हैं। आपके पास नाटकीय प्रदर्शन करने की प्रतिभा होगी तथा आपके अंदर अपनी भावनाओं को छुपाने की बड़ी क्षमता होगी। आपके अंदर उभय स्वभाव का विशेष गुण होगा।

आप आधारभूत रूप से एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे– संभवतः आपमें कुछ कलात्मक झुकाव होगा और जब यह बौद्धिक शौक के रूप में आएगा तब आप मेहनती बनेंगे। अनोखे प्रकार की प्रतिभा, द्वैतवादी प्रकृति तथा कुछ हद तक उत्तेजक प्रवृत्ति आपकी कुछ विशिष्ट विशेषताएं होंगी। आप अत्यंत बुद्धिमान और बहुत दयालु, दूसरों के प्रति सुहृदय, वास्तव में न्यायी और निष्पक्ष होंगे। आप बहुत विनम्र, मैत्रीपूर्ण, कौशलपूर्ण और एक विशिष्ट वक्ता होंगे। विभिन्न प्रकार के ज्ञान एवं सूचना के लिए आपमें एक अतृप्त प्यास होगी और आधुनिक तकनीकी विकास आपको पूर्णतः आकर्षित करेंगे। आप खोजी प्रकृति के होंगे और संबंधित विषयों के प्रत्येक पहलु का अन्वेषण करने का प्रयास करेंगे।

आप संकोची एवं अपनी भाषण में सोच–समझकर बोलने वाले होंगे। आपको दूसरे लोगों से मिलना, यात्रायें करना और कहीं से भी ज्ञान प्राप्त करना बहुत पसंद होगा। आप दूसरों को प्रभावित करने में कुशल होंगे तथा विपरीत लिंगी व्यक्तियों के साथ समय बिताना अच्छा लग सकता है। आमतौर पर आप दोहरे व्यक्तित्व वाले हो सकते हैं। आपका स्वभाव लचीला तथा समय के अनुरुप ढ़लने वाला हो सकता है। आपकी मनोदशा एवं परिस्थितियों के अनुसार कभी गंभीरता आ जाती है, कभी आप तुच्छ हरकतें करने लग सकते हैं। आपके जीवन में सफलता दूसरे लोगों के विचारों एवं भावनाओं पर निर्भर कर सकती है। दूसरों की भावनाओं के अनुसार ही उन्हें प्रभावित करता है। दूसरों के भावनाओं को समझने के कारण आप एक सफल लेखक या उपन्यासकार बन सकते हैं।

आपकी शिक्षा, ज्ञान और बुद्धि आपके पेशे के साथ–साथ आपके जीवन में भी प्रगति करने में आपकी सहायता करेंगे। आप तार्किक और खुले विचारों वाले होंगे। आपकी बुद्धिमत्ता और कूटनीतिक योग्यता आपको आपके विरोधियों को पराजित करने या नष्ट करने में आपकी मदद करेगी। आप अनुशासनप्रिय और सिद्धान्तवादी व्यक्ति होंगे। किन्तु इतने सारे वांछित गुण होने के बावजूद आपमें धैर्य की कमी हो सकती है। आप निरन्तर परिवर्तनशील विचारों एवं बदलते उद्देश्यों वाले हो सकते हैं। आज आप जो कहेंगे या जिसमें विश्वास करेंगे, उसके अगले दिन आपके विचार उसके ठीक विपरीत हो सकते हैं। कई बार आपको देखने वाले लोग काफी भ्रमित या उलझन में हो सकते हैं। तब भी वे आपको हमेशा एक रुचिकर व्यक्ति समझेंगे। आप सभी को प्यार करेंगे।

आप लम्बे, दुबले–पतले और सुन्दर शारीरिक संरचना वाले होंगे। आपका चेहरा आकर्षक होगा और आँखें भावबोधक होंगी, माथा चौड़ा, घुंघराले बाल, भुजाएं और उंगलियां लम्बी होंगी।

सकारात्मक गुण

आप रचनात्मक, कलात्मक और कल्पनाशील होंगे। आपमें परिस्थितियों के अनुसार समायोजन करने की योग्यता विद्यमान होगी। अपने हास्यकर प्रकृति और आकर्षक व्यक्तित्व के कारण आप महफिलों की शान होंगे। आप सहानुभूतिपूर्ण होंगे एवं लोगों की हमेशा सहायता करेंगे। आप बुद्धिजीवी और बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न होंगे। आपकी बोलने की क्षमता अद्वितीय होगी।

नकारात्मक गुण

आप चीजों को जानने में अपना समय व्यर्थ में गवां सकते हैं। मित्रों के चुनाव में आपकी पसन्द गलत हो सकती है– जैसाकि वे आपको धोखा दे सकते हैं। आप धोखेबाज हो सकते हैं।

विशिष्ट गुण

1– आप बुद्धिमान, कौशलपूर्ण और मौलिक होंगे।
2– आप प्रतिभाशाली और अनेक क्षेत्रों का ज्ञान रखने वाले होंगे।
3– आप मजाकिया, चतुर और उर्जा से परिपूर्ण होंगे।
4– आपको पढ़ने–लिखने का अत्यधिक शौक होगा।

खान–पान, स्वास्थ्य और ब्यायाम

आप अपने शरीर और तन्दुरूस्ती के प्रति बहुत जागरूक होंगे। आप व्यायामशाला में मेहनत करेंगे अथवा अत्यंत उर्जावान व्यायाम करेंगे। आपको विभिन्न प्रकार का भोजन करना पसन्द होगा। पेय पदार्थों के साथ तीन प्रकार का भोजन आपका आदर्श भोजन होगा। आप अपने सहकर्मियों या संबंधियों के साथ भोजन करना पसन्द करेंगे। आप बहुत शीघ्र तनावग्रस्त हो सकते हैं। स्वयं को मजबूत रखने के लिए निरंतर चुनौतियां आपकी जरूरत हो सकती हैं। आपमें उपस्थित उच्च चयापचय दर के कारण, आपको बार–बार भोजन और पर्याप्त जल ग्रहण करने की आवश्यकता होगी। सामान्यतः आप बहुत शीघ्रता से भोजन करेंगे। आपमें पित्त की अधिकता होगी।

आप अपने भोजन में और अधिक कार्बोहाइड्रेट या आग पर भूनी हुई सब्जियां या मीट शामिल कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त आप संतरा, कीवी, अवोकाडु, स्ट्रॉबेरी आदि जैसे फल शामील कर सकते हैं। आपके लिए ठंडा जूस और सलाद भी फायदेमंद होगा। आपके शरीर में पित्त या गर्मी की अधिकता है, इसलिए आपको अपने शरीर प्रणाली को संतुलित रखने और इन तत्वों को शांत करने के लिए क्षारीय भोजन की मात्रा अधिक रखनी चाहिए, जो कि आपके पेट में उपस्थित अम्लीय स्तर का प्रतिरोध कर सके।

आपको तला हुआ और अधिक मसालेदार भोजन नहीं करना चाहिए। आपको पौधों से प्राप्त तेल से अपना भोजन तैयार करना चाहिए, ना कि पशुओं से प्राप्त घी, मक्खन आदि से अर्थात आपके लिए जैतून का तेल, सूर्यमुखी का तेल, बादाम का तेल आदि से भोजन पकाना स्वास्थ्यवर्द्धक होगा। आप हृदय संबंधी विकारों से ग्रसित हो सकते हैं, इसलिए आपको लाल माँस, मक्खन या घी का सेवन नहीं करना चाहिए। आपको हृदय को शक्ति प्रदान करने वाले व्यायाम करना चाहिए। आप अपने शरीर पर अत्यधिक काम का बोझ डाल सकते हैं। इसलिए आपको व्यायाम, भोजन, काम और नींद सबका अनुसरण करना चाहिए।

आपकी कुण्डली के द्वितीय भाव का विश्लेषण

धन–सम्पदा, परिवार, मान–सम्मान, भाषण कला और समाज में स्थान और सामाजिक संबंध

आपके भाषण या बोलने का तरीका बहुत भावुक होगा तथा आपके परिवार एवं संबंधियों के बीच संबंधों एवं आर्थिक स्थिति में उतार–चढ़ाव आते रह सकता है। आपके परिवार में महिलाओं की संख्या अत्यधिक हो सकती है। आपकी आर्थिक स्थिति में अस्थिरता रह सकती है अर्थात आपके पास धन की मात्रा घटती–बढ़ती रह सकती है। आप तरल पदार्थों, पानी अथवा इमारती लकड़ी से जुड़े कार्य से धनोपार्जन कर सकते हैं। आपको एवं आपकी पत्नी को पानी से खतरा हो सकता है, अतः आपको सावधानी बरतना चाहिए एवं पानी वाले स्थानों से दूर रहने का प्रयत्न करना चाहिए। आपके पिता को छाती या वक्षस्थल से संबंधित रोग से पीड़ित रहना पड़ सकता है। आपकी पहली संतान के पेशे का संबंध लोगों की देखभाल से जुड़ा हो सकता है अथवा वह चिकित्सा या नर्स के पेशे में संलग्न हो सकती है। संभवतः आपकी पहली संतान की रूचि ऐतिहासिक विषयों के अध्ययन में भी हो सकती है अथवा वह रेस्टोरेन्ट या कला संग्रह या आक्रिटेक्चर के पेशे में संलग्न हो सकती है। आप बहुत जल्दी–जल्दी, किन्तु रूचिकर वक्ता हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली के दूसरे भाव में सूर्य स्थित है। आपका पारिवारिक कलह बहुत ज्यादा बढ़ सकती है।

आपकी कुण्डली में दूसरे भाव में बुध स्थित है। आप स्वभाव से घमंडी, विपरीत लिंग वाले व्यक्तियों के प्रति अधिक आकर्षित, बुद्धिजीवियों द्वारा सम्मानित तथा अच्छी–खासी संपत्ति के मालिक होंगे। आपको अपने स्वास्थ्य के प्रति अधिक सचेत रहना चाहिए।

आपकी कुण्डली के तृतीय भाव का विश्लेषण

साहस और पराक्रम, शौक और रूचियाँ, भाई–बहन और पड़ोसी

आप तेज मिजाज वाले तथा बहुत शीघ्र उत्तेजित होने वाले व्यक्ति हो सकते हैं। आप साहसी, अहंकारी एवं खुलकर बोलने वाले हो सकते हैं। आप बहुत बुद्धिमान होंगे तथा अपने रोजगार के क्षेत्र में अच्छी स्थिति में होंगे। आमतौर पर आप उच्च महात्वाकांक्षा वाले होंगे तथा अपने प्रयासों के माध्यम से धन अर्जित करेंगे। दूसरों के प्रति लगाव एक सीमा तक ही रख सकते हैं। जब आपको लगता है कि कोई व्यक्ति विशेष आपके काम का नहीं है, आप रिश्तों को खत्म कर सकते हैं। आपकी रूचि यात्राओं में नहीं हो सकती है। आप आत्मनिर्भर होंगे तथा अपने स्वयं के प्रयासों से अधिकार व शक्ति प्राप्त कर सकते हैं। आपके पिता अपने साथियों या साझेदारों के साथ मिल–जुलकर नहीं रह सकते हैं तथा उनके मध्य विवाद या मुकदमे भी उत्पन्न हो सकते हैं। आपके छोटे सहोदर उदारचरित, सरल हृदय व खुले विचारों वाले हो सकते हैं। वे प्रभावी प्रकृत्ति के हो सकते हैं। आपके ससुर एक उच्च पद पर आसीन हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली के तीसरे भाव में शुक्र स्थित है, आप कामुक/मिलनसार हो सकते हैं तथा मौज–मस्ती के लिए गलत लोगों की संगति पकड़ सकते हैं। आपको शिक्षा के प्रति दिलचस्पी नहीं हो सकती है तथा आपकी बुद्धिमत्ता एवं भाग्य साथ नहीं दे सकती है। आपकी संतान प्रेरणा के श्रोत होंगे तथा आप स्वयं एक आकर्षक एवं बातूनी हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली के चतुर्थ भाव का विश्लेषण

माता, भूमि–भवन–वाहन, शिक्षा और स्वयं का परिवार और सुःख

आपकी माता एक शिक्षिका या लेखिका हो सकती हैं। आपके घर में किताबों की संख्या बहुत अधिक हो सकती है। आप बौद्धिक जीवन व्यतीत कर सकते हैं तथा आपके मित्र या बहुत करीबी मित्र नहीं हो सकते हैं। आप अपने अध्ययन क्षेत्र में उत्तम कार्य कर सकते हैं एवं एक लेखक बन सकते हैं। गूढ़ एवं कम विख्यात विषयों की ओर आपमें तीव्र व अनवरत रूचि हो सकती है। आप एक व्यापारी के रूप में अच्छा कार्य कर सकते हैं। संभवतः आप जीवन पर्यन्त अपना घर बदलते रह सकते हैं। आप ऐसे घर में निवास कर सकते हैं, जिसका संबंध किसी प्रकार से आपके पेशे से हो सकता है। आप अधिक से अधिक धन जमा करने में लगे रहेंगे, हालांकि उस संपत्ति को बचाये रखने में आप असमर्थ हो सकते हैं। आमतौर पर आप बहुत बुद्धिमान होंगे एवं तुरंत से संपत्ति जमा करने में सक्षम होंगे। आप प्रभावशाली लोगों के संपक्र में आयेंगे, लेकिन आपका खुलापन एवं सहानुभूति का स्वभाव कुछ अनैतिक लोगों को संपर्क में लेकर आ सकता है, जो कि आपको बदनाम एवं दुःखी कर सकते हैं। हालांकि आप अपनी स्थिति को पुनः प्राप्त करने एवं बदनामी को साफ करने में सक्षम होंगे।

आपकी कुण्डली के चौथे भाव में राहु स्थित है, आपके मन में असंतोष बढ़ सकता है। आपका वैवाहिक जीवन बहुत जटिल हो सकता है एवं भावनात्मक असंतोष बढ़ सकता है। आप शारीरिक रुप से कमजोर या मानसिक रुप से असंतुलित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली के पंचम् भाव का विश्लेषण

सन्तान, विद्वता और बुद्धि, पूर्वपुण्य, लेखन, मानसिक स्थिति और ज्ञान

आपको खुशहाल पारिवारिक जीवन तथा योग्य संतानों की प्राप्ति होगी। आप शिक्षा एवं बौद्धिक विकास से संबंधित कार्यों में दिलचस्पी नहीं ले सकते हैं। आपकी दिलचस्पी जीवनसाथी, बच्चे एवं पैसे में हो सकती है। आपको जीवन के उंच्च मूल्यों में दिलचस्पी केवल सतही तौर पर हो सकती है। आप अपने परिवार एवं समाज के लिए नायक की तरह होंगे जो कि सफलता एवं व्यक्तिगत उपलब्धि प्राप्त करना चाहता है। आपके पिता धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा भक्ति मार्ग द्वारा धर्म का पालन करेंगे। उनका जीवन सुखमय व्यतीत हो सकता है। आपकी माता धनी, किन्तु रोगी प्रकृति की हो सकती हैं। आपके बड़े सहोदर अथवा मामा/मौसा को खतरा हो सकता है। आप मानसिक रूप से बहुत चिन्तित व विचलित रह सकते हैं। आपकी पत्नी प्रतियोगिता या प्रतिस्पर्द्धाओं में सफलता अर्जित करेंगी तथा उनको स्वयं की आय भी प्राप्त होगी। आपकी संतान सुन्दर व व्यवहार कुशल होगी तथा अपने कार्य क्षेत्र में भी उत्तम कार्य करेगी। आपकी सबसे बड़ी संतान प्रेम विवाह कर सकती है। उसको अपने जीवनसाथी के माध्यम से धन की प्राप्ति हो सकती है तथा वह धनी व संपन्न हो सकती है।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा कुम्भ राशि में स्थित है। यह एक सकारात्मक, स्थिर और वायुतत्व की राशि है, जो शनि द्वारा शासित है और घड़े का पानी खाली करते हुए एक परिपक्व मनुष्य की आकृति द्वारा चिन्हित है। सामान्यतः चंद्रमा के साथ इस राशि में जन्म लेने वाला व्यक्ति अपनी गंभीर प्रकृति और चारित्रिक बल के लिए जाना जाता है। अन्वेषी दिमाग, विचारों में अथाह गहराई, आत्मसातीकरण की शक्ति और अपार धैर्य आपकी विशिष्ट विशेषताएं होंगी। चंद्रमा पर पड़ने वाले अन्य ग्रहों के संशोधनकारी प्रभावों के आधार पर, कुछ विशिष्ट परिवर्तन होने की भी प्रबल संभावना है। एक सीमा तक, यह आपको विषादपूर्ण स्वभाव, एकान्तप्रिय और रात्रि में काम करने वाला व्यक्ति बना सकता है। फिर भी आप दार्शनिक दृष्टिकोण वाले होंगे और उपयोगी कार्यों में संलग्न रहेंगे– जो कि वैज्ञानिक या शिल्प–विज्ञानीय अथवा अन्य उच्च तकनीकी से संबंधित हो सकता है।

आप कुछ हद तक सुस्त हो सकते हैं, किन्तु आप निश्चिन्त होंगे, प्रबल संभावना है कि आप कुछ ऐसा नया व अनूठा लेकर आएंगे– जिसके लिए आपका नाम व यश दूर–दूर तक फैलेगा। आप शान्ति व धैर्य के साथ मूल्य व महत्व जोड़ेंगे एवं ज्ञानी, बुद्धिमान व पवित्र लोगों की संगति की खोज करेंगे। जबकि दूसरी ओर, आप दयालु प्रवृति और कलात्मक झुकाव लिए हुए तीव्र बुद्धि व हंसमुख प्रकृति वाले व्यक्ति होंगे। आप गंभीर व शांत स्वभाव वाले होंगे– पूर्णतः उपद्रवी भावनाओं से रहित। किसी महत्वपूर्ण सभा और सम्मेलन में सम्मिलित होना आप एक नैतिक कर्तव्य व जिम्मेदारी समझेंगे। भौतिक विज्ञान, इंजीनियरिंग, तकनीकी, कृषि और सजावटी–कला जैसे विषय आपको अत्यधिक आकर्षित कर सकते हैं। आप अपने भाग्य के निर्माता स्वयं हो सकते हैं और यह आपके लिए किसी दूरस्थ अतंर्देशीय स्थान अथवा विदेश में भी संभव हो सकता है।

आप ऐसे विषयों की ओर भी अत्यंत आकर्षित हो सकते हैं, जो मूलभूत रूप से असाधारण होंगे, तो भी वास्तविक व अनुठे होंगे। ज्योतिष, हस्तरेखाशास्त्र, अंकज्योतिष, स्वप्न–फल आदि जैसे तंत्र–मंत्र व रहस्यमयी विषयों में गहन रूचि होने के कारण, आप जहां भी रहेंगे आकर्षण का केन्द्र बने रहेंगे। इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे लोग भी हो सकते हैं, जो आपके झुकाव को पक्षपातपूर्ण समझ सकते हैं और आपको सनकी की संज्ञा दे सकते हैं। किन्तु सामान्य लोग आपको विकसित दिमाग, आशावादी प्रकृति, दार्शनिक दृष्टिकोण, सहानुभूतिपूर्ण और लोकोपकारी प्रवृत्ति से परिपूर्ण एक सुयोग्य व्यक्ति मानेंगे।

आप अपने को मात्र एक परिवार में जन्मे या उससे संबंधित, सीमित अधिकार व जिम्मेदारी युक्त व्यक्ति समझने की बजाय, अपने जीवन को किसी प्रकार के उद्देश्य की पूर्ति के रूप में देखेंगे और दूसरों के लिए किए गए अच्छे कार्यों के द्वारा अपने जीवन के उद्देश्य की पूर्ति में सक्षम होने के आधार अपनी सफलता का आकलन करेंगे। आप किसी विशिष्ट कार्य के लिए अपना जीवन समर्पित कर सकते हैं– इसके लिए आप सक्रियता से किसी धर्मार्थ संस्था या मानवतावादी संगठन के लिए कार्य कर सकते हैं।

आपकी कुण्डली के षष्ट भाव का विश्लेषण

रोग और कष्ट, शत्रु, दुर्घटना, ननिहाल, नौकर और चोट

आपके जीवन में किसी तरह के स्वास्थ्य संबंधित समस्यायें उत्पन्न हो सकते हैं। आप लंबे समय तक अपने निवास स्थान से दूर रह सकते हैं। कुछ ऐसी बीमारियां एवं अपमानजनक स्थितियां सामने आ सकती हैं, जिसके बारे में खुले तौर पर चर्चा भी नहीं की जा सकती। आप दोहरे चरित्र वाले हो सकते हैं। इसकी वजह से आपके व्यक्तित्व में कमी आ सकती है। आप धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे, किन्तु धार्मिक क्षेत्र में किए गए आपके प्रयासों को सफलता नहीं मिल सकती है। आप कुछ नई अवधारणाओं व तथ्यों का पता लगाने के लिए अनवरत प्रयास कर सकते हैं। आपको अपने प्रयासों में सफलता बहुत कठिनाई से प्राप्त हो सकती है। आप सामान्यतः मलाशय व उत्सर्जन प्रणाली से संबंधित रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। आपको पाचन क्रिया से संबंधित रोग भी हो सकता है। संभवतः आपके दीर्घायु पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। आप पर्याप्तता व प्रचूरता के मध्य भी दुखी महसूस कर सकते हैं। आप वित्तिय मामलों के कारण परेशान रह सकते हैं। आप संकोची व एकांतप्रिय होंगे, जिसके कारण आपके शत्रु आपकी कमजोरियों का पता लगाने में सक्षम नहीं हो सकते हैं। आपके शत्रु हिंसक प्रवृत्ति के हो सकते हैं, जो दुराचारी एवं तेज रफतार से जीने वाले हो सकते हैं। आपको चोर, पीठ पीछे धोखा देने वाले लोगों तथा सरीसृपों से खतरा हो सकता है। आप दूराचारी प्रवृत्ति के लोगों से दूरी बनाकर रह सकते हैं। आपके पिता कई बार अपनी नौकरी गवां सकते हैं। आपकी पत्नी बहुत खर्चीली प्रकृत्ति की हो सकती हैं। आपकी संतान अपने शिक्षा के माध्यम से धनोपार्जन कर सकती है। आपके बड़े भाई/बहन किसी कार्य में संलग्न नहीं हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली के सप्तम् भाव का विश्लेषण

जीवनसाथी, साझेदारी, वैवाहिक सुख, प्रतिष्ठा और जीवन के प्रति उत्साह

आप व्यापार प्रबंधन के कार्य में संलग्न हो सकते हैं तथा धन–संपदा से संपन्न हो सकते हैं। आपकी पत्नी बहुत धार्मिक प्रवृत्ति व स्वतंत्र विचारों की एवं भाग्यशाली महिला होंगी, वह शांतिप्रिय व प्रसन्नचित्त हो सकती है, किन्तु बुद्धिमान नहीं हो सकती है। आपकी पत्नी परिष्कृत, शिक्षित, संस्कारी, ईमानदार तथा उदारचित्त होगी। आपकी पत्नी को केवल कारण व तर्क से ही संतुष्ट किया जा सकता है। आपको अपने पारिवारिक जीवन में दुःखों का सामना करना पड़ सकता है। आपके जीवनसाथी सम्मानित होंगी लेकिन आपसी रिश्ते में गर्माहट की कमी हो सकती है। कोई जरुरी नहीं है कि रिश्तों में गर्माहट की कमी यौन संबंधों के कारण हो। ज्यादा संभावना है कि शारीरिक बीमारी या मनोवैज्ञानिक विषमता के कारण भी ऐसा हो सकता है। आपके जीवनसाथी को गैर पारंपरिक मौज–मस्ती की भी इच्छा हो सकती है। कारण जो भी हो, आपका वैवाहिक जीवन खुशहाल नहीं हो सकता।

आपकी कुण्डली के अष्टम् भाव का विश्लेषण

आयु, असाध्य रोग, मानसिक कष्ट, अप्रत्यासित लाभ–हानि, अड़चनें और छुपी हुई प्रतिभा

आप शिक्षित एवं धार्मिक होंगे। आप प्रकृति के उन शक्तियों के प्रति आवेगी हो सकते हैं, जो व्यक्तिगत विचारों के स्तर को सामाजिक चिंता का विषय बनाने में सक्षम हो सकता है। आप संकीर्ण मानसिकता वाले हो सकते हैं। आप किसी भी विषय का अध्ययन बहुत गहराई के साथ कर सकते हैं। आपको अपने जीवन काल में एक बार अपने व्यवसाय में आघात लग सकता है। आपको रोगादि से ग्रसित होने के कारण शल्य चिकित्सा से गुजरना पड़ सकता है अथवा गंभीर चोट लगने के कारण आपको कष्ट हो सकता है। आप विदेश यात्रा पर जा सकते हैं, जहां आपको कष्ट हो सकता है।

आपकी कुण्डली के नवम् भाव का विश्लेषण

पिता, गुरू, धार्मिक रूचि, तीर्थ यात्रा, दानशीलता और भाग्य

आप आध्यात्मिक रुप से अधिक रमे हुए हैं तो आपकी अधिक उन्नति होगी। आपको अधिक आध्यात्मिक होने के लिए बल प्राप्त होगा, जिससे कि आप बड़े पैमाने पर मानवता के जरुरतों के प्रति संवेदनशील होंगे। काफी समृद्ध स्थिति एवं सुख प्राप्ति के बाद आप उन शक्तियों से प्रभावित होंगे, जो कि मानवता एवं संसार की उन्नति का मार्गदर्शन करती है। आप आध्यात्मिकता के पथ पर काफी तेजी से प्रगति करेंगे। आपके पिता सामाजिक गतिविधियों में अधिक संलग्न हो सकते हैं तथा सामाजिक अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाने का प्रयास कर सकते हैं। आपके पिता को अपने जीवन में असफलता, आघात व निराशा का सामना करना पड़ सकता है। आप स्वतन्त्र विचारधारा के व्यक्ति हो सकते हैं तथा धर्म व दर्शन के संबंध में आपके अपने विचार हो सकते हैं। धर्म के प्रति आपका रवैया बहुत रुढ़िवादी व अनुशासित हो सकता है। आपको अपने धार्मिक भावनाओं की अभिव्यक्ति के माध्यम से सामाजिक उपकार का कार्य करने के लिए मिल सकता है। आपके पेशे का कोई संबंध कानून से हो सकता है तथा संभवतः आपको अपने जीवन में कानूनी मामलों में भी उलझना पड़ सकता है।

आपकी कुण्डली के नौवें भाव में चन्द्रमा स्थित है। आपको विलासिता के सारे सुख–साधन प्राप्त होंगे, लेकिन आप हर सुख का आनंद प्राप्त करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं। आप दूसरों के लिए काम कर सकते हैं एवं जरुरतमंदों को अपने धन का कुछ हिस्सा दे सकते हैं।

आपकी कुण्डली के दशम् भाव का विश्लेषण

ब्यवसाय, कर्म, आजिविका के साधन, ब्यापार और धार्मिक कार्य

आप बहुत धार्मिक होंगे तथा परंपरागत मूल्यों एवं नैतिकता की वकालत करने वाले होंगे। आपकी किसी उद्देश्य के लिए कार्य करना चाहेंगे तथा जब तक आपको सर्वोतम फल प्राप्त नहीं होगा, तब तक आप संतुष्ट नहीं हो सकते। मीन राशि धार्मिक साहित्य, समुद्र, मछली, जहाज, पारम्परिक रीति–रिवाज आदि का कारक है तथा आप इन्हीं में से किसी कारक को अपने पेशे के रुप में अपना सकते हैं। आप अपने वास्तविक इरादे को अंधेरे में रख सकते हैं तथा सबसे अधिक धार्मिकता का प्रदर्शन कर सकते हैं।

आपकी कुण्डली के दसवें भाव में मंगल मीन राशि में स्थित है। आप किसी आदर्शवादी कार्य को आगे बढ़ाने में संलग्न होंगे, जिसके लिए आपको अपनी संपत्ति का बड़ा हिस्सा त्याग करना पड़ सकता है तथा समाज के भी क्रोध का सामना करना पड़ सकता है।

आपकी कुण्डली के दसवें भाव में केतु मीन राशि में स्थित है। आपके चारों तरफ आपके कार्यों, जीवन एवं जीवन के अंत से संबंधित एक रहस्यमयी प्रभामंडल होगी। आपके बारे में सब कुछ असामान्य हो सकता है। हालांकि आपको अपने जीवन में किसी चीज की कमी नहीं हो सकती है, लेकिन इसके साथ ही आपके पास ऐसा कुछ भी नहीं हो सकता है, जिसे आप अपनी उपलब्धि के रुप में पेश कर सकें। इस तरह की विरोधाभाषी स्थिति एक रहस्य के रुप में आपके साथ जुड़ी रह सकती है।

आपकी कुण्डली के एकादश भाव का विश्लेषण

लाभ, भौतिक सुख की प्राप्ति, लोभ, पुरस्कार और दण्ड और स्वास्थ्य लाभ

आपको धनोपार्जन में कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। धन अर्जित करने के लिए आपको काफी संघर्ष करना पड़ सकता है तथा किसी संस्था में कर्मचारी के रुप में काम करना पड़ सकता है। आमतौर पर आप किसी सरकारी विभाग में कार्यरत हो सकते हैं, जहां पर रोजाना एक ही काम करना पड़ सकता है। ऐसा करते हुए आप बहुत दुःखी महसूस कर सकते हैं। जब तक आप अपने करियर में सक्रिय भूमिका नहीं निभायेंगे, तब तक आपको मनोवैज्ञानिक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आप मुख्य रुप से सामाजिक जीवन, कामुक सुख तथा अपना व्यक्तित्व एवं आकर्षण प्रदर्शित करने में रुचि रख सकते हैं। जब तक आपकी ये इच्छायें पूरी नहीं होंगी, तब तक आपको ऐसा महसूस होगा कि आप जीवन के आखरी दौर से गुजर रहे हैं। आपको सरकार या विदेश से लाभ प्राप्त हो सकता है तथा आपको चौपायों के माध्यम से भी धन–लाभ प्राप्त हो सकता है। आप प्रतियोगिता या प्रतिस्पर्द्धा में सफलता अर्जित कर सकते हैं।

आपकी कुण्डली के द्वादश भाव का विश्लेषण

ब्यय, अलगाव, हानि, सुख, निद्रा, विदेश यात्रा और मानसिक संतुलन

आप अपने प्रभाव को बढ़ाने के लिए व्यय करना पसन्द कर सकते हैं। आपका कोई प्रेम–प्रसंग नहीं हो सकता है। आपकी पत्नी उत्तम भोजन व उत्तम रहन–सहन पर खर्च करना पसन्द कर सकती हैं। आपकी संतान किसी नए स्थान पर जाकर निवास कर सकती है तथा आपको अपनी संतान से अधिक खुशी व सुख प्राप्त नहीं हो सकता है। आप भौतिक गतिविधियों में अधिक संलग्न रह सकते हैं। अपनी मौजूदा परिस्थितियों से आप असंतुष्ट रहेंगे। आप अपनी परेशानियों को कम करने के लिए हमेशा कुछ न कुछ करते रहेंगे, लेकिन आप सही दिशा में नहीं जा सकते हैं। आप भौतिक सुख–साधनों की इच्छा को पूरा करने के लिए अपने–आप को पेशानियों में भी डाल सकते हैं।

आपकी कुण्डली के बारहवें भाव में बृहस्पति स्थित है। अपनी बेकार की आदतों के कारण आपके पारिवारिक जीवन में बहुत सारी कठिनाइयां उत्पन्न हो सकती हैं। हालांकि आप सम्मानित होंगे तथा दूर के किसी स्थान पर प्रसिद्ध भी होंगे। आपकी बौद्धिक क्षमता की वजह से आपको अपने जीवन में कोई स्थायी सहयोग प्राप्त नहीं होगा। हालांकि आपको अपने संपर्कों से आर्थिक मदद प्राप्त हो सकती है। आप कई तरह के गंभीर रोगों से पीड़ित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली के बारहवें भाव में शनि स्थित है। आप कई देशों की यात्रा करने में सक्षम होंगे और इसकी वजह से आपकी चल एवं अचल संपत्ति बर्बाद हो सकती है। समाज में आपके सम्मान में कमी हो सकती है, लेकिन आप किसी भी तरह की सार्वजनिक प्रक्रिया से नहीं डरेंगे। आपके अंदर नैतिकता की भी कमी हो सकती है।

शुभ और अशुभ ग्रह

1– बुध, पहले व चौथे भाव का स्वामी, सर्वाधिक शुभ है।
2– चंद्रमा तटस्थ है।
3– शुक्र, पांचवें भाव का स्वामी शुभ है।
4– सूर्य, मंगल और शनि अशुभ हैं।
5– बृहस्पति मारकेश है।

कुण्डली में लागू होने वाले ग्रह योग (ग्रह–युति)

कुण्डली में लागू होने वाले महत्वपूर्ण योग

बन्धुभिसत्याक्त योग

आपकी जन्मकुण्डली में, चतुर्थेश नीच का है या एक शत्रु की राशि में स्थित है अथवा एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ संबद्ध है या एक बुरे षष्ठीआंश में स्थित है। यह योग काफी प्रतिकूल है, इसे बन्धुभिसत्याक्त योग कहा जाता है। यदि आपकी कुण्डली में कुंछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो इस योग के होने के कारण आपके संबंधियों और मित्रों द्वारा जीवन में कभी आपका परित्याग किया जा सकता है– भले ही आपकी कोई छोटी गलती हो या वास्तव में कोई गलती ना हो।

देह–कष्ट योग

आपकी जन्मकुण्डली में, लग्नेश की एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ युति है, तथा इसके साथ कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह ना तो संबद्ध है और ना ही इस पर दृष्टि है। इसके अतिरिक्त, लग्न में कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह ना तो स्थित है और ना ही लग्न पर उसकी दृष्टि है। यह समग्र योग अपेक्षाकृत प्रतिकूल योग है, जिसे देह–कष्ट योग कहा जाता है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं है, तो आप आर्थिक रूप से सम्पन्न नहीं हो सकते हैं और/या परिस्थितिवश शारीरिक सुख–सुविधाओं से वंचित हो सकते हैं।

देह स्थूल योग

आपकी जन्मकुण्डली में, लग्नेश जलीय राशि (कर्क या वृश्चिक या मीन) में स्थित है और लग्नेश का नवांश–राशिपति भी ऐसी ही राशि में स्थित है। इस योग को देह स्थूल योग कहा जाता है। इस योग के उपस्थित होने के कारण, यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव मौजूद नहीं हैं, तो आपका स्वास्थ्य सुदृढ़ और शरीर पुष्ट होगा।

दुर्मुख योग

आपकी जन्मकुण्डली में, एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह– जो कि उच्चस्थ या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में नहीं है– आपके दूसरे भाव में स्थित है। द्वितीयेश या इसका नवांश–राशिपति एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह है अथवा नीच या अस्त या ग्रसित होने के कारण कमजोर है अथवा लग्न कुण्डली या नवांश कुण्डली में एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ संबद्ध है। इस प्रतिकूल योग को दुर्मुख योग कहा जाता है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आपका व्यक्तित्व आकर्षक नहीं हो सकता है। या फिर अथवा साथ ही, आपका स्वभाव चिड़चिड़ा हो सकता है, बहुत जल्दी क्रोधित होने की प्रवृति हो सकती है और कठोर व अपशब्दों का प्रयोग कर सकते हैं– जिसके लिए आपके अपने लोग तक आपको बहुत नापसन्द कर सकते हैं।

मातृ शत्रुत्व योग

आपकी जन्मकुण्डली में, लग्न मिथुन है और बुध आपका लग्नेश तथा चतुर्थेश भी है। कुण्डली में बुध की नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ युति (या बुध पर उसकी दृष्टि) है। यह एक अनुकूल योग नहीं है, इसे मातृ शत्रुत्व योग कहा जाता है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो प्रबल संभावना है, कि किसी कारणवश (या बिना किसी प्रत्यक्ष कारण के) आप अपनी माता (या इसी प्रकार के अन्य किसी रिश्ते) के प्रति शत्रुतापूर्ण भाव रख सकते हैं और/या वह भी आपसे समान रूप से शत्रुता का भाव रख सकती हैं।

पितृ मूलत धन योग

आपकी जन्मकुण्डली में, द्वितीयेश की नवमेश के साथ युति है या उसपर इसकी दृष्टि है, जबकि इन दोनों ग्रहों में से कोई भी ग्रह अस्त या ग्रसित नहीं है। यह एक अनुकूल योग है, इसे पितृ मूलत धन योग कहा जाता है। इस योग के होने के कारण, आपको अपनी पिता से आर्थिक लाभ प्राप्त होगा।

रण प्रवीण योग

आपकी जन्मकुण्डली में, तृतीयेश का नवांश–राशिपति वर्गोत्तम स्थिति में है। यह एक अत्यंत अनुकूल योग है, इसे रण प्रवीण योग कहा जाता है। आप एक सक्षम रणनीतिकार हो सकते हैं तथा युद्ध और/या सक्रिय सेवा में जीत की श्रृंखला हासिल कर सकते हैं।

कुण्डली में लागू होने वाले धन योग

आपकी जन्मकुण्डली में, एक अत्यंत शुभ योग मौजूद है। अपने स्वयं के प्रयत्नों को निर्देशित करके तथा अपनी इच्छाशक्ति के वास्तविक शक्ति के आधार पर आप अपने समकालीनों से बहुत आगे निकल जाएंगे। आपकी सभी महात्वाकांक्षाएं फलीभूत होंगी और आपकी अभिलाषित इच्छाएं पूर्ण होंगी। आपके आस–पास के लोग आपको एक अनुकरणीय व्यक्ति तथा एक प्रेरणादायक स्रोत के रूप में मानेंगे। आप अपने जीवनसाथी, संतानों, संबंधियों और मित्रों के साथ समृद्धिपूर्ण और खुशहाल जीवन व्यतीत करेंगे।

जैसाकि आपके ग्यारहवें भाव में एक अग्नि तत्व की राशि स्थित है। आपको अपने पैतृक/जन्म स्थान से पूर्व दिशा में स्थित स्थानों पर/से उत्तम लाभ प्राप्त हो सकता है।

कुण्डली में लागू होने वाले नभष योग

पाश योग

आपकी कुण्डली में पाश योग नामक एक नभश योग मौजूद है। यह एक बहुत अनुकूल योग नहीं है, तथा आपके जीवन में किसी समय के दौरान, आपको प्रतिकूलताओं और बाधाओं के विरूद्ध संघर्ष करना पड़ सकता है। आप दयनीय स्थिति में औसत पारिश्रमिक पर दूसरों की सेवा में रह सकते हैं तथा आपको उचित सम्मान भी नहीं मिल सकता है। यद्यपि आप कार्य में कुशल होंगे, फिर भी आपका स्वभाव कुछ हद तक विद्वेषपूर्ण हो सकता है। कई बार आप शिष्टाचार भूल सकते हैं तथा औचित्य की भावना खो सकते हैं। परिस्थितिजन्य अनिवार्यता के कारण आपको अपनी इच्छा के विरूद्ध किसी स्थान पर रहने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है।

कुण्डली में लागू होने वाले अरिष्ट योग

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति और शनि आपके बारहवें भाव में स्थित हैं– जबकि इनमें से कोई भी उच्चस्थ या अपने भाव में स्थित नहीं है। यह एक प्रतिकूल योग है– इसे अरिष्ट योग कहते हैं। आपके किसी एक संतान को अपने जीवनकाल में किसी समय कष्ट सहन करना पड़ सकता है तथा उसका स्वास्थ्य व सुख आपके पारिवारिक सदस्यों के लिए गंभीर चिन्ता का कारण बन सकता है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आपके किसी एक संतान की मानसिक स्थिति उसके जीवनकाल में किसी समय कुछ–कुछ बिगड़ सकती है।

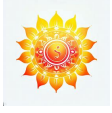

कुण्डली में लागू होने वाले रवि योग

शुभ–वेशि योग

जैसाकि आपकी जन्मकुण्डली में एक ग्रह (चंद्रमा के अलावा) सूर्य से दूसरे भाव में उपस्थित है। यह वेशि योग नामक ग्रह स्थिति उत्पन्न कर रहा है। जैसा कि संबंधित ग्रह एक नैसर्गिक शुभ ग्रह है, अतः यह एक शुभ योग है। इस समग्र योग को शुभ–वेशि योग कहा जाता है। आपकी कुण्डली में इस योग की उपस्थिति के कारण, आप लम्बे कद और सम दृष्टि वाले होंगे। इसके अतिरिक्त, आप सत्यनिष्ठ और आशावादी दृष्टिकोण वाले होंगे। हालांकि, आप बहुत उर्जावान प्रवृत्ति के नहीं हो सकते हैं। यद्यपि आप बहुत धनी नहीं हो सकते हैं, फिर भी, आप अपने भाग्य से खुश रहेंगे तथा चिन्ताओं से मुक्त रहेंगे।

कुण्डली में लागू होने वाले चन्द्र योग

गज केसरी योग

आपकी जन्मकुण्डली में अनुकूल गज केसरी योग उपस्थित है। आपका जन्म काफी सम्पन्न परिवार में हुआ है, आपका पालन–पोषण बहुत उत्तम होगा, अपने वरिष्ठों से समर्थन व लाभ प्राप्त करेंगे, काफी स्थायी पद प्राप्त करेंगे तथा आपके भाग्य में धीरे–धीरे वृद्धि होगी।

अमला योग

आपकी जन्मकुण्डली में अनुकूल अमला योग उपस्थित है। आपका जन्म काफी सम्पन्न परिवार में हुआ है, आपका पालन–पोषण बहुत उत्तम होगा, अपने वरिष्ठों से समर्थन व लाभ प्राप्त करेंगे, काफी स्थायी पद प्राप्त करेंगे तथा आपके भाग्य में धीरे–धीरे वृद्धि होगी।

सुनफा

जैसाकि एक ग्रह (सूर्य के अलावा) चंद्रमा से दूसरे भाव में उपस्थित है। यह सुनफा नामक ग्रह योग का निर्माण करता है। इस योग की उपस्थिति के कारण, आप अत्यंत बुद्धिमान होंगे, आपकी आय बहुत उत्तम होगी तथा बहुत धनवान होंगे। अपने संबंधियों और मित्रों के साथ आप आरामपूर्ण और आधुनिक जीवन का आनन्द लेंगे।

शरीर के विभिन्न अंगो का ज्योतिषीय विश्लेषण

बाहरी व्यक्तित्व, शारीरिक बनावट, कद–काठी व त्वचा का रंग

इनमें से प्रत्येक तत्व अनेक कारकों पर निर्भर हैं, जहां प्रत्येक कारक अनेक संशोधनकारी प्रभाव उत्पन्न कर सकता है, जैसे– लग्न–राशि, लग्न में उपस्थित ग्रह (यदि कोई है तो), लग्न पर दृष्टि डालने वाले ग्रह (यदि कोई है तो), चंद्र–राशि में उपस्थित ग्रह(यदि कोई है तो), चंद्र–राशि पर दृष्टि डालने वाले ग्रह, लग्न का क्रिशांश, ग्रहों की राशिगत स्थिति, लग्नेश की भावगत स्थिति इत्यादि।

संभावित कद (लंम्बाई) का अनुमान (वयस्क होने पर)

आपकी लग्न राशि मिथुन है। यदि आपकी जन्मकुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपकी शारीरिक संरचना लम्बी होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में लग्न का स्वामी लग्न से पनफर भाव में स्थित है। यदि आपकी जन्मकुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपकी शारीरिक संरचना सामान्य होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में लग्न की शायन डिग्री राशि के पहले चतुर्थांश में है। यदि आपकी जन्मकुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपकी शारीरिक संरचना काफी लम्बी होगी।

संभावित त्वचा के रंग का अनुमान

आपकी जन्मकुण्डली ना तो मेष लग्न की है और ना ही वृश्चिक लग्न की है तथा मंगल की आपके लग्न पर दृष्टि पड़ रही है। अतः आप गौर वर्ण के हो सकते हैं।

त्वचा के रंग पर ग्रहों का संयुक्त प्रभाव

सूर्य से लेकर शनि तक के सभी ग्रहों के संचित प्रभाव को ध्यान में रखते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि आप गहरे वर्ण के हो सकते हैं।

शरीर के स्थूलकाय (मोटे) होने का अनुमान

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो शनि के साथ स्थित हैं या शनि की इस पर दृष्टि पड़ रही है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो इसके प्रतिकूल प्रभाव के कारण आपका शरीर अत्यधिक मांसल या स्थूल या भारी नहीं हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो शनि के साथ स्थित हैं या शनि की इस पर दृष्टि पड़ रही है तथा चंद्र–राशि का स्वामी भी इसी प्रकार से व्यवस्थित है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो इसके प्रतिकूल प्रभाव के कारण संभवतः आपका शरीर अत्यधिक मांसल या स्थूल या भारी नहीं हो सकता है। बल्कि आप शारीरिक रूप से कुछ कमजोर या रोगी प्रकृति के हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में आपकी देह राशि, बुध एवं बृहस्पति के युति अथवा दृष्टि के संयुक्त प्रभाव में स्थित है। ऐसी ग्रह स्थिति आपके लिए बहुत अनुकूल है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो ऐसे ग्रह योग के प्रभाव के कारण किशोरावस्था के उत्तरार्द्ध से अथवा उसके बाद के आयु से आपका शरीर बलिष्ठ होना शुरू हो सकता है तथा संभवतः बाद में आप स्थूल व भारी शरीर के होते जाएंगे।

आँखे और आँखो की रोशनी का अनुमान

आपकी जन्मकुण्डली में शनि स्थिर नक्षत्र प्लेडस अलक्योन(इटौरी) की स्थिति के काफी नजदीक

स्थित है। जो कि दृष्टि के लिए काफी संवेदनशील है। इसके अतिरिक्त शनि चंद्रमा पर भी दृष्टि डाल रहा है। ऐसी ग्रह स्थिति आपके लिए अत्यधिक प्रतिकूल साबित हो सकती है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपको अपनी आँखों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। ऐसी कुछ संभावना है कि आपके जीवन काल में कभी किसी आंतरिक रोग अथवा किसी बाह्य कारण से आपकी दृष्टि विशेष रूप से प्रभावित हो सकती है।

जीभ, दांत और बोलने की क्षमता का अनुमान

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र आपका लग्न–स्वामी नहीं है। यह चंद्रमा से विपरीत में स्थित है एवं इसकी दृष्टि काफी नजदीक (3 डिग्री 20 मिनट के अन्दर) है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो, जैसा कि शुक्र का प्रभाव चल रहा है, इसलिए संभवतः आपके दांत एक दूसरे से आंशिक रूप से ढके हो सकते हैं–विशेषकर ऊपरी पंक्ति में तथा संभवतः सिर्फ एक तरफ।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र आपका लग्न–स्वामी नहीं है। यह चंद्रमा से स्क्वायर/वर्ग में स्थित है एवं इसकी दृष्टि काफी नजदीक (3 डिग्री 20 मिनट के अन्दर) है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो, जैसा कि शुक्र का प्रभाव चल रहा है, इसलिए संभवतः आपके दांत एक दूसरे से आंशिक रूप से ढके हो सकते हैं–विशेषकर ऊपरी पंक्ति में तथा संभवतः सिर्फ एक तरफ।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र आपका लग्न–स्वामी नहीं है। यह चंद्रमा से त्रिक में स्थित है एवं इसकी दृष्टि काफी नजदीक (3 डिग्री 20 मिनट के अन्दर) है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो, जैसा कि शुक्र का प्रभाव चल रहा है, इसलिए संभवतः आपके दांत एक दूसरे से आंशिक रूप से ढके हो सकते हैं–विशेषकर ऊपरी पंक्ति में तथा संभवतः सिर्फ एक तरफ।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र आपका लग्न–स्वामी नहीं है। यह लग्न से सेक्सटाइल में स्थित है तथा इसकी दृष्टि काफी नजदीक (3 डिग्री 20 मिनट के अन्दर) है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो, जैसा कि शुक्र का प्रभाव चल रहा है, इसलिए संभवतः आपके दांत एक दूसरे से आंशिक रूप से ढके हो सकते हैं–विशेषकर ऊपरी पंक्ति में तथा संभवतः सिर्फ एक तरफ।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र आपका लग्न–स्वामी नहीं है। यह चंद्रमा से सेक्सटाइल में स्थित है एवं इसकी दृष्टि काफी नजदीक (3 डिग्री 20 मिनट के अन्दर) है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो, जैसा कि शुक्र का प्रभाव चल रहा है, इसलिए संभवतः आपके दांत एक दूसरे से आंशिक रूप से ढके हो सकते हैं–विशेषकर ऊपरी पंक्ति में तथा संभवतः सिर्फ एक तरफ।

आपकी जन्मकुण्डली में दूसरे भाव का स्वामी किसी अन्य ग्रह के साथ नक्षत्र परिवर्तन कर रहा है। इसके प्रभाव से आप अत्यंत बातुनी किस्म के व्यक्ति के हो सकते हैं और इस हद तक बातुनी हो सकते हैं कि संभवतः आपके अपने लोग आपके होंठों पर टेप चिपकाना चाहेंगे। यद्यपि आपका यह प्राकृतिक गुण या क्षमता आपके लिए आपके रोजगार में काफी लाभदायक हो सकता है तथा अयोग्यता की बजाय वांछित गुण साबित हो सकता है। आपमें दूसरे लोगों से अपनी बात मनवाने की अद्भुत क्षमता भी हो सकती है। आप स्वयं का कोई व्यवसाय कर सकते हैं, जिसे आप तेजी से चलाने में सक्षम होंगे।

कान और सुनने की शक्ति

आपकी जन्मकुण्डली में तीसरे भाव में एक नैसर्गिक शुभ ग्रह उपस्थित है। यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आप एक पुरुष हैं इसलिए आपके दाएं कान/श्रवण शक्ति से संबंधित किसी प्रकार की समस्या होने की संभावना अत्यंत कम है।

बाँह, हाथ और कन्धे की संरचना का अनुमान

आपकी जन्मकुण्डली में तीसरे भाव में एक या एक से अधिक शुभ ग्रह उपस्थित हैं, जिसका आधिपत्य बांह एवं कंधे पर होता है। यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर के ये अंग भली–भांति विकसित होंगे। जैसा कि तीसरा भाव आहार–नली, हवा–नली, तंत्रिका प्रणाली व श्वसन प्रणाली को भी संचालित करता है, अतः आपके शरीर के ये अंग भी बिल्कुल सही स्थिति में रहेंगे।

हृदय और पीठ की स्थिति का अनुमान

आपकी जन्मकुण्डली में पांचवें भाव का स्वामी शक्तिशाली स्थिति में है जैसा कि यह उच्चस्थ है या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित है। पांचवें भाव का स्वामी हृदय एवं पीठ को शासित करता है। यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी जन्मकुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर के ये भाग सही ढंग से काम करेंगे।

उदर (पेट) और पाचन क्रिया का अनुमान

कर्क राशि एवं इसके स्वामी चंद्रमा का आधिपत्य शरीर के महत्वपूर्ण आंतरिक अंग 'पेट' पर होता है। आपकी जन्मकुण्डली में कर्क राशि का स्वामी चंद्रमा किसी नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ राशि–परिवर्तन या नक्षत्र–परिवर्तन करने के कारण शक्तिशाली हो गया है। अतः यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके पेट की कार्य–प्रणाली समस्यारहित होगी और आपकी पाचन शक्ति अच्छी रहेगी।

कर्क राशि का आधिपत्य शरीर के महत्वपूर्ण आंतरिक अंग 'पेट' पर होता है। आपकी जन्मकुण्डली में एक या एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रह की इस राशि पर दृष्टि पड़ रही है, जबकि इस पर किसी नैसर्गिक शुभ ग्रह की दृष्टि नहीं है। अतः यह एक अनुकूल योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके पेट की कार्य–प्रणाली छोटी–मोटी समस्याओं से मुक्त नहीं होगी और आपकी पाचन शक्ति भी अच्छी नहीं रहेगी।

चौथे भाव का आधिपत्य शरीर के महत्वपूर्ण आंतरिक अंग 'पेट' पर होता है। आपकी जन्मकुण्डली में एक या एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रह इस भाव में स्थित हैं, जबकि इसमें कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह उपस्थित नहीं है। अतः यह एक अनुकूल योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके पेट की कार्य–प्रणाली छोटी–मोटी समस्याओं से मुक्त नहीं रह सकती है और आपकी पाचन शक्ति भी अच्छी रहने की संभावना कम है।

कन्या राशि का आधिपत्य शरीर के बहुत महत्वपूर्ण आंतरिक क्रिया 'पाचन तंत्र' पर होता है। आपकी जन्मकुण्डली में एक या एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रह इस राशि में स्थित हैं, जबकि कोई भी नैसर्गिक शुभ ग्रह इस राशि में स्थित नहीं है। अतः यह ग्रह स्थिति अनुकूल नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर की पाचन–प्रणाली समस्यारहित नहीं हो सकती है, जिससे कि आप स्वस्थ्य नहीं रह पाएंगे।

छठवें भाव के स्वामी का आधिपत्य शरीर के बहुत महत्वपूर्ण आंतरिक क्रिया 'पाचन तंत्र' पर होता है। आपकी जन्मकुण्डली में एक या एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रह की छठवें भाव के स्वामी के साथ युति है, जबकि कोई भी नैसर्गिक शुभ ग्रह इसके साथ स्थित नहीं है। अतः यह ग्रह स्थिति अनुकूल नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपको अपने पाचन–प्रणाली को प्रभावित करने वाली कुछ समस्याओं से गुजरना पड़ सकता है, जिसका प्रभाव आपके स्वास्थ्य पर भी पड़ सकता है।

शरीर के ग्राही, अवशोषी और उत्सर्जी अंगो का अनुमान

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा एक या एक से अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रहों के साथ संबंधित है या उनकी इस पर दृष्टि पड़ रही है। अतः यह एक अनुकूल संकेत है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर की तरल प्रसारण प्रणाली एवं ग्रंथि प्रणाली बिना किसी समस्या के काम करती रहेगी।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा एक या एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रहों के साथ संबंधित है या उनकी इस पर दृष्टि पड़ने के कारण दूषित हो रहा है। अतः यह अनुकूल संकेत नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपको अक्सर अपने शरीर के तरल प्रसारण प्रणाली एवं ग्रंथि प्रणाली से संबंधित कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा एक या एक से अधिक कार्यात्मक अशुभ ग्रहों के साथ संबंधित होने या उनकी इस पर दृष्टि पड़ने के कारण दूषित हो रहा है। अतः यह अनुकूल संकेत नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपको अक्सर अपने शरीर के तरल प्रसारण प्रणाली एवं ग्रंथि प्रणाली से संबंधित कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा एक या एक से अधिक कार्यात्मक अशुभ ग्रहों के साथ जुड़ा है या उनकी इसपर दृष्टि पड़ रही है। अतः ये अधिक अनुकूल संकेत नहीं हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो संभवतः आप कई बार जैविक अव्यवस्था के कारण अतिसंवेदनशील हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र शक्तिशाली स्थिति में है, जैसा कि यह उच्च राशि या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित है। अतः ये अनुकूल संकेत हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो संभवतः आपको अपने आंतरिक जननेन्द्रिय से संबंधित किसी प्रकार की समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में मंगल शक्तिशाली स्थिति में नहीं है, जैसा कि यह उच्च राशि या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित नहीं है। इसके अतिरिक्त यह दो या दो से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रहों के साथ जुड़े होने अथवा उनकी दृष्टि पड़ने से दूषित है। अतः ये संकेत आपके लिए अनुकूल नहीं हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपको अपने बाहरी जननेन्द्रिय और उत्सर्जन प्रणाली से संबंधित किसी प्रकार की गंभीर समस्या का सामना करना पड़ सकता है।

जाँघ, घुटना, टांगो और पंजो का अनुमान

प्राकृतिक राशि–चक्र की नौवीं राशि का स्वामी गुरु है, जो कि आपकी कुण्डली में एक या एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रहों के साथ युत है, जबकि किसी नैसर्गिक शुभ ग्रह की ना तो इसके साथ युति है और ना ही दृष्टि पड़ रही है। अतः ऐसी ग्रह स्थिति आपके लिए अनुकूल नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर के नितंब वाले भाग एवं जांघ अधिक विकसित नहीं होंगे। या फिर आप अपने शरीर के इन भागों के आस–पास जन्मजात कष्ट महसूस कर सकते हैं।

प्राकृतिक राशि–चक्र की दसवीं राशि का स्वामी शनि है, जो कि एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह है तथा आपकी कुण्डली में यह एक कार्यात्मक अशुभ ग्रह भी है। इसके अतिरिक्त आपकी कुण्डली में इसकी एक या एक से अधिक कार्यात्मक अशुभ ग्रह के साथ युति है अथवा इस पर ऐसे किसी ग्रह की दृष्टि पड़ रही है। अतः यह एक अनुकूल योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर के घुटनों के आस–पास वाले भाग उचित रूप से विकसित नहीं होंगे। या फिर आपको अपने शरीर के इस भाग के आस–पास जन्मजात कष्ट महसूस हो सकता है।

प्राकृतिक राशि–चक्र की ग्यारहवीं राशि का स्वामी शनि है, जो कि एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह है तथा आपकी कुण्डली में यह एक कार्यात्मक अशुभ ग्रह भी है। इसके अतिरिक्त आपकी कुण्डली में इसकी एक या एक से अधिक कार्यात्मक अशुभ ग्रह के साथ युति है अथवा इस पर ऐसे किसी ग्रह की दृष्टि पड़ रही है। अतः यह एक अनुकूल योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर के टांग के आस–पास के भाग, 'घुटने से नीचे एवं टखने से ऊपर वाले भाग', उचित रूप से विकसित नहीं होंगे। या फिर आपको अपने शरीर के इस भाग के आस–पास जन्मजात कष्ट महसूस हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में एक या एक से अधिक शुभ ग्रह बारहवें भाव में उपस्थित है, जो कि पैर एवं पैर की उंगलियों को संचालित करता है। अतः यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर के ये भाग मजबूत एवं अच्छे आकार या स्थिति में होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में बारहवें भाव का स्वामी शक्तिशाली स्थिति में है, क्योंकि यह उच्च राशि में या अपनी राशि में या अपने नक्षत्र में उपस्थित है। बारहवें भाव का स्वामी पैर एवं पैर की उंगलियों का सूचक है। अतः यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर के ये भाग मजबूत एवं अच्छे आकार या स्थिति में होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में दो या दो से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रह मीन राशि में स्थित है, जबकि कोई भी शुभ ग्रह इस राशि में स्थित नहीं है। राशि–चक्र की बारहवीं राशि पैर एवं पैर की उंगलियों को संचालित करता है। अतः यह एक अनुकूल योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो संभवतः आपके शरीर के ये भाग मजबूत स्थिति एवं अच्छे आकार में नहीं होंगे। या फिर आपको अपने शरीर के इस भाग के आस–पास जन्मजात कष्ट महसूस हो सकता है।

प्राकृतिक राशि–चक्र की बारहवीं राशि का स्वामी बृहस्पति है, जो कि आपकी कुण्डली में एक या एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रहों के साथ युत है, जबकि कोई भी नैसर्गिक शुभ ग्रह ना तो इसके साथ स्थित है और ना ही ऐसे किसी ग्रह की इस पर दृष्टि पड़ रही है। अतः यह एक अनुकूल योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर के पैर व पैर की उंगलियां मजबूत स्थिति एवं अच्छे आकार में नहीं होंगे। या फिर आपको अपने शरीर के इस भाग में कुछ जन्मजात कष्ट महसूस हो सकता है।

शिक्षा की संभावना और संबंधित तथ्यों की जाँच

शिक्षा में रूझान और निपुणता (दुसरे भाव से)

आपकी जन्मकुण्डली में, एक अथवा एक से अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रह दूसरे भाव में विराजमान हैं। ऐसी ग्रह स्थिति आपके लिए शिक्षा के दृष्टिकोण से अधिक अनुकूल है। आपका शिक्षा के प्रति अत्यधिक रूझान होगा तथा आप में शैक्षिणिक योग्यता भी उत्तम होगी– विशेषकर आपकी प्रारम्भिक आयु के दौरान।

आपकी जन्मकुण्डली में, पहले भाव का स्वामी दूसरे भाव में उपस्थित है। ऐसी ग्रह स्थिति आपके लिए शैक्षिणिक दृष्टिकोण से अनुकूल है। आपका शिक्षा के प्रति अधिक रूझान होगा तथा आप में शैक्षिणिक योग्यता विद्यमान होगी– विशेषकर आपकी प्रारम्भिक आयु के दौरान।

अनौपचारिक शिक्षा (तीसरे भाव से)

आपकी जन्मकुण्डली में, एक या एक से अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रहों की तीसरे भाव पर दृष्टि पड़ रही है। यह दर्शाता है कि आप अत्यंत धैर्यवान होंगे तथा आप अपनी रूचि के विभिन्न विषयों का कई वर्षों तक अनौपचारिक शिक्षा प्राप्त करेंगे।

सामान्य शिक्षा (चौथे भाव से)

आपकी जन्मकुण्डली में, एक या एक से अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रहों की चौथे भाव पर दृष्टि पड़ रही है। उत्तम शिक्षा प्राप्त करने की दृष्टि से यह एक अनुकूल संकेत है। आप ना केवल सफलतापूर्वक अपनी स्नातक की शिक्षा पूर्ण करेंगे, बल्कि आगे की भी शिक्षा जारी रखेंगे। आप अपनी योग्यता बढ़ाने के लिए किसी प्रतिष्ठित संस्थान से कोई व्यावसायिक शिक्षा या शिक्षा के उपरांत प्रशिक्षण भी ग्रहण कर सकते हैं।

बुद्धि, मेधा और योग्यता (पाँचवे भाव से)

आपकी जन्मकुण्डली में, पांचवें भाव का स्वामी उच्चस्थ या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित होने के कारण शक्तिशाली स्थिति में है। उत्तम शिक्षा प्राप्त करने हेतु यह अनुकूल संकेत दे रहा है। आप कुशाग्र बुद्धि तथा अवधारक स्मरणशक्ति वाले होंगे। आप विशिष्ट गुणों से सम्पन्न भी हो सकते हैं। आप ना केवल सुगमतापूर्वक अपनी स्नातक की शिक्षा ग्रहण करेंगे, बल्कि आगे की भी शिक्षा जारी रखेंगे। आप सामान्य क्षेत्रों में उच्च शिक्षा जारी रख सकते हैं अथवा अपनी प्रतिष्ठा अथवा अपने व्यासायिक स्तर में वृद्धि करने के लिए किसी प्रतिष्ठित संस्था से कोई व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

वस्तु–परक शिक्षा (केन्द्र और त्रिकोन के बीच का सह संबंध)

आपकी जन्मकुण्डली में, सातवें एवं नौवें भाव के स्वामी की एक साथ युति है। तकनीकि या इंजीनीयरिंग जैसे व्यवहारपरक क्षेत्र में उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु यह एक अनुकूल योग है। आप कुशाग्र बुद्धि तथा अवधारक स्मरण शक्ति से परिपूर्ण होंगे। आप अपनी रूचि के अनुसार कोई भी व्यावसायिक कोर्स अत्यंत कम प्रयासों में ही आसानी से प्राप्त करने में सक्षम होंगे। आपको व्यापार प्रबंधन तथा विधि जैसे विषय अत्यधिक आकर्षित कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त आपको आयात–निर्यात अथवा विदेशी मामलों में भी काफी रूचि हो सकती है।

आपकी जन्मकुण्डली में, नौवें एवं दसवें भाव के स्वामी की युति है। तकनीकि या इंजीनियरिंग जैसी व्यवहारपरक शिक्षा प्राप्त करने के लिए यह बहुत अनुकूल योग है। आप कुशाग्र बुद्धि, अवधारक स्मरण शक्ति, उत्तम प्रकृति तथा दैवीय ज्ञान से परिपूर्ण होंगे। आप अपनी रूचि के अनुसार किसी भी व्यावसायिक पाठ्यक्रम को अत्यंत कम प्रयासों में ही आसानी से पूर्ण करने में सक्षम होंगे। आपको कुटनीतिक कार्यों, विदेशी मामले अथवा आयात–निर्यात में अधिक रूचि हो सकती है। इसके अतिरिक्त आप धर्म, दर्शन आदि में भी काफी रूचि ले सकते हैं। आप किसी धार्मिक या सांस्कृतिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए किसी दूरस्थ स्थान पर अथवा विदेश भी जा सकते हैं।

गुप्त और रहस्यमय विद्याओं का अध्ययन और शोध

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि बारहवें भाव में स्थित है अथवा इस पर अपनी दृष्टि डाल रहा है। नौवें भाव का स्वामी भी बारहवें भाव में स्थित है अथवा इस पर अपनी दृष्टि डाल रहा है। ऐसी ग्रह स्थिति लम्बे समय तक अनौपचारिक शिक्षा जारी रखने के लिए अनुकूल है। संभवतः आप स्वयं की कुछ नई खोज या विशेष निष्कर्षों का पता लगा सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, नौवें भाव का स्वामी बारहवें भाव में उपस्थित है। जैसाकि बारहवां भाव चौथे भाव से नौवां भाव है (या नौवें भाव से चौथा भाव है)। अतः आप अपनी उच्च शिक्षा के लिए किसी दूरस्थ स्थान पर अथवा विदेश भी जा सकते हैं तथा वहां काफी लम्बे समय तक रह सकते हैं। यद्यपि आप किसी दूरस्थ स्थान पर नहीं जाते हैं तो ऐसी संभावना है कि आपको स्कूल या कॉलेज या विश्वविद्यालय के छात्रावास में रहना पड़ सकता है।

शिक्षा की संभावना और रुझान के क्षेत्र

आपकी जन्मकुण्डली में, बुध के भिन्नाष्टक–वर्ग में, छठवें भाव में शुभ बिन्दु काफी संख्या (7 या 8) में हैं। यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी रूचि होगी तो आप रोगों और उनके उपचार के बारे में औपचारिक या अनौपचारिक अध्ययन के द्वारा काफी ज्ञान व जानकारी प्राप्त करेंगे। यदि आप एक निपुण चिकित्सक नहीं भी होते हैं तो भी आपके व्यवसाय का अथवा शौक भी का संबंध आधुनिक या वैकल्पिक दवाओं से हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, बुध के भिन्नाष्टक–वर्ग में, सातवें भाव में शुभ बिन्दु काफी संख्या (7 या 8) में हैं। यह एक अनुकूल योग है। आप कुशाग्र बुद्धि, हाजिरजवाबी तथा हंसमुख स्वभाव के होंगे। आपमें व्यवसाय की समझ बहुत विकसित होगी तथा आप सार्वजनिक व्यवहारों में बहुत सफल होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, बुध के भिन्नाष्टक–वर्ग में, दसवें भाव में शुभ बिन्दु काफी संख्या (7 या 8) में हैं। यह एक अनुकूल योग है। संभवतः आप अत्याधुनिक तकनीकि विकास आदि के बारे में उत्कृष्ट ज्ञान व उपयोगी जानकारी एकत्र कर सकते हैं, जिसका उपयोग आप अपने व्यावसायिक क्षेत्र में प्रभावशाली ढंग से करेंगे।

शिक्षा की गुणवत्ता और विस्तार (चर्तुविशांश से)

आपके चतुर्विशांश कुण्डली (जिसका उपयोग विशेष रूप से शिक्षा को विचारने के लिए किया जाता है) में, एक त्रिकोण भाव का स्वामी एक केन्द्र भाव में स्थित है। यह दर्शाता है कि आप व्यवहारपरक क्षेत्र में शिक्षा जारी रख सकते हैं, जिसका संबंध तकनीकि या इंजीनियरिंग से हो सकता है।

भिन्नाष्टक वर्ग से शिक्षा की संभावना का आकलन

आपकी जन्मकुण्डली में, चौथे भाव में शुभ बिन्दुओं (शिक्षा के लिए अनुकूल ग्रहों के द्वारा दिये गए योगदान से प्राप्त) की कुल संख्या बहुत ही उत्तम है। यह एक अनुकूल योग है। आप अच्छे स्तर की शिक्षा प्राप्त करने के मामले में भाग्यशाली होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, छठवें भाव में शुभ बिन्दुओं (शिक्षा के लिए अनुकूल ग्रहों के द्वारा दिये गए योगदान से प्राप्त) की कुल संख्या बहुत ही उत्तम है। यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी रूचि होगी तो आप रोगों और उनके उपचार के बारे में औपचारिक या अनौपचारिक अध्ययन के द्वारा काफी ज्ञान व जानकारी प्राप्त करेंगे। यदि आप एक निपुण चिकित्सक नहीं भी होते हैं तो भी आपके व्यवसाय का अथवा शौक भी का संबंध आधुनिक या वैकल्पिक दवाओं से हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, सातवें भाव में शुभ बिन्दुओं (शिक्षा के लिए अनुकूल ग्रहों के द्वारा दिये गए योगदान से प्राप्त) की कुल संख्या बहुत ही उत्तम है। यह एक अनुकूल योग है। आप कुशाग्र बुद्धि, हाजिरजवाबी तथा हंसमुख स्वभाव के होंगे। आपमें व्यवसाय की समझ बहुत विकसित होगी तथा आप सार्वजनिक व्यवहारों में बहुत सफल होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, दसवें भाव में शुभ बिन्दुओं (शिक्षा के लिए अनुकूल ग्रहों के द्वारा दिये गए योगदान से प्राप्त) की कुल संख्या बहुत ही उत्तम है। यह एक अनुकूल योग है। संभवतः आप अत्याधुनिक तकनीकि विकास आदि के बारे में उत्कृष्ट ज्ञान व उपयोगी जानकारी एकत्र कर सकते हैं, जिसका उपयोग आप अपने व्यावसायिक क्षेत्र में प्रभावशाली ढंग से करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, ग्यारहवें भाव में शुभ बिन्दुओं (शिक्षा के लिए अनुकूल ग्रहों के द्वारा दिये गए योगदान से प्राप्त) की कुल संख्या बहुत ही उत्तम है। यह एक अनुकूल योग है। आपका विभिन्न विषयों में गहन रूझान होगा, जिसके बारे में आप ज्ञान व जानकारी एकत्र करेंगे। जो कि आपको अपने मित्रों व परिचितों के मध्य आकर्षण का केन्द्र बनाने में मदद करेगा। वे लोग आपके विचारों को महत्व देंगे तथा आवश्यकता पड़ने पर कुछ मसलों पर आपसे सूझाव भी लेंगे।

ब्यवसाय की संभावनाओं का ज्यातिषिय विश्लेषण

आपकी जन्मकुण्डली में मंगल लग्न से दसवें भाव में उपस्थित है। अतः आप बहुत बहादुर व्यक्ति होंगे। यदि आप पुलिस या सुरक्षा या इसी प्रकार की किसी दूसरी सक्रिय नौकरी में हैं तो आप काफी अच्छा कार्य करेंगे तथा अधिकार व शक्ति वाले पद प्राप्त करेंगे। आपमें स्वतन्त्रता की उच्च भावना होगी तथा विजय की अभिलाषा होगी। यदि मंगल उच्चस्थ या अपने भाव में नहीं है तो आप छिद्रान्वेषी तथा झगड़ालू स्वभाव के हो सकते हैं। आप दूसरों के प्रति निर्दयी होकर खुशी महसूस कर सकते हैं। यदि मंगल किसी नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ संबंधित है या मंगल पर उसकी दृष्टि पड़ रही है तो आप बदनामी और झूठी निन्दा के शिकार हो सकते हैं तथा आपका जीवन संघर्ष और अशांति से भरा हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में बृहस्पति चंद्र–राशि से दसवें भाव पर दृष्टि डाल रहा है। अतः आप अत्यंत भाग्यशाली होंगे क्योंकि यह जीवन में समृद्धि, खुशहाली और स्पर्द्धा के लिए सर्वोत्तम योग है। आप विभिन्न स्रोतों से आय का उपार्जन करेंगे, मानसिक कार्यों से धन अर्जित करेंगे, सरकारी अधिकारियों से सम्मान व संरक्षण प्राप्त करेंगे। आप अपने जीवन में बहुत उन्नति करेंगे, विश्वास और ख्याति अर्जित करेंगे। आपका यश चिर स्थायी होंगा। आपमें नेतृत्व का गुण विद्यमान होगा, आप एक गुणवान व्यक्ति होंगे तथा धर्मों के प्रति आपकी गहरी आस्था होगी। आप कानून को मानने वाले जिम्मेदार नागरिक होंगे तथा समाज में लोग आपका बहुत सम्मान करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि चंद्र–राशि से दसवें भाव पर दृष्टि डाल रहा है। अतः आप धैर्य एवं उद्यमशीलता के प्रतिरूप होंगे। आप अनुशासन का सख्ती से पालन करने वाले, कठोरता से काम लेने वाले तथा उद्देश्यों के प्रति दृढ़ता आपके जीवन का प्रतीक होगा। यदि शनि उच्चस्थ या अपने भाव में स्थित है तो आप निश्चित रूप से जीवन में उच्च पद की प्राप्ति करेंगे। किन्तु यदि शनि वक्री या नीचस्थ या किसी नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ जुड़ा हुआ है या किसी नैसर्गिक अशुभ ग्रह की शनि पर दृष्टि पड़ रही है तो आपको असफलता और अपमान का सामना करना पड़ेगा तथा अचानक नीचे गिरने का भी खतरा हो सकता है। आपके सार्वजनिक कार्य असफल हो सकते हैं और भारी नुकसान के साथ–साथ आपका मान भी घट सकता है। अतः आपको अत्यंत सावधान व सचेत रहना चाहिए।

आपकी जन्मकुण्डली में दशमेश शनि के साथ जुड़ा हुआ है। अतः आप आप अपने व्यवसाय के संदर्भ में अधिक भाग्यशाली नहीं होंगे। यदि शनि उच्चस्थ या अपने भाव में स्थित नहीं है तो संभवतः आपको अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है तथा कठिन संघर्ष भी करना पड़ सकता है। आपका पेशा जिम्मेदारी और अधीनस्थता से भरा हो सकता है। आपके कार्यस्थल का परिवेश अधिक अनुकूल नहीं हो सकता है तथा आपका कार्य–समय भी सुविधाजनक नहीं हो सकता है। आपका पारिश्रमिक आपके कार्य के अनुकूल नहीं हो सकता है तथा आप काफी हताश महसूस कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में लग्न से दशमेश लग्न से अष्टमेश के साथ जुड़ा हुआ है। अतः आपको कई बार अपनी नौकरी बदलनी पड़ सकती है अथवा आपका तबादला हो सकता है। ऐसा परिस्थितियों में परिवर्तन के कारण, आकस्मिक या अप्रत्याशित रूप से हो सकता है। आप निराश अथवा परेशान हो सकते हैं, क्योंकि आपको तैयारी के लिए पर्याप्त समय नहीं मिल सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में मंगल आजीविका का प्राथमिक कारक है, इसलिए आप रक्षा विभाग, पुलिस अथवा अग्निशामक सेवाओं में संलग्न हो सकते हैं। आपका कुछ संबंध आपराधिक जांच/खुफिया विभाग व फोरेन्सिक प्रयोगशाला से हो सकता है। आपका संबंध इंजीनियरिंग, वास्तु कला, अचल संपत्ति व जायदाद, खनिज पदार्थ, अयस्क/कच्चा धातु, धातु, रसायन, प्लास्टिक, हथियार, विस्फोटक, विद्युत, ब्लड बैंक, शल्य चिकित्सा आदि से हो सकता है। आपका कुछ संबंध एल पी जी, रसोई के सामान व यहां तक कि होटल से भी हो सकता है। आपको विरासत से काफी लाभ प्राप्त हो सकता है तथा आपका अपने छोटे भाई के साथ सांझा व्यापार हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में मंगल बुरी तरह दूषित है तो आपका संबंध वधशाला और/या आपराधिक गतिविधियों से हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि आजीविका का गौण कारक है, इसलिए आपके पेशे का कुछ संबंध परिश्रम व मजदूर वर्ग के लोगों के साथ हो सकता है। आप उद्योग, खान, खनिज पदार्थ, रोजगार एजेन्सी, वायु–मार्ग या अंतरिक्ष से संबंधित कार्य, लोकतंत्रात्मक कार्य आदि से जुड़े हो सकते हैं। या फिर, आप दंत चिकित्सक या विकलांग/हड्डियों के सर्जन हो सकते हैं। यदि शनि उच्चस्थ है या अपने भाव में स्थित है तो आप कोई वरिष्ठ पद प्राप्त करेंगे तथा आपका पारिश्रमिक उत्तम होगा। किन्तु यदि शनि नीचस्थ, अस्त/ज्वलित या ग्रसित है तो आप नीचले स्तर का अधिक परिश्रम वाला कार्य कर सकते हैं। लौह व इस्पात, ईंट का भट्ठा, कुम्भकारी, धोबीखाना, सैलून, सफाई व आरोग्य से संबंधित वस्तुएं, पाइपलाईन जोड़ना, बर्फ, खाद्य तेल आदि जैसे क्षेत्र आपके लिए अनुकूल होंगे।

कालचक्र दशा अंश और जीव राशि से ब्यवसाय का विश्लेषण

आपकी कालचक्र दशा अंश राशि – मिथुन

आपकी कालचक्र दशा जीव राशि – मिथुन

आपकी जन्मकुण्डली में मंगल की आपके जीव–राशि (जीवन) पर दृष्टि पड़ रही है, अतः अपने बारे में आपके विचार बहुत उंचे होंगे और उम्मीद करेंगे कि आपके दायरे के लोग आपके साथ उचित सम्मान से व्यवहार करें। संभवतः आप बहुत जल्दी रूठ सकते है और चाहेंगे कि अपराधी को पर्याप्त रूप से सजा मिले। यदि मंगल के साथ कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह स्थित है या उसकी मंगल पर दृष्टि पड़ रही है तो आपकी स्थिति में सुधार होता रहेगा। किन्तु यदि मंगल के साथ कोई नैसर्गिक अशुभ ग्रह स्थित है या उसकी मंगल पर दृष्टि पड़ रही है तो आपकी स्थिति और खराब हो सकती है।

विवाह/प्रेम संबंधों से संबंधित संभावनाओं का आकलन

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र के भिन्नाष्टक वर्ग में, शुक्र से सातवें भाव में शुभ बिन्दुओं की संख्या 5 (या अधिक) है। शुक्र के नैसर्गिक कारक– विवाह व विवाहित जीवन के सुखों के संदर्भ में यह अत्यंत ही भाग्यशाली योग है। आप अपने जीवनसाथी के संदर्भ में बहुत ही भाग्यशाली रहेंगे। वह बहुत आकर्षक, सुसंस्कारी, व्यवहारकुशल व परिष्कृत रूचियों वाली होंगी तथा अत्यंत प्रतिष्ठित परिवार से संबंधित होंगी। जैसाकि आप दोनों एक दूसरे से अपने जीवन से भी अधिक प्रेम करेंगे, इसलिए आपका दाम्पत्य जीवन बहुत ही खुशहाल और आनन्दपूर्ण व्यतीत होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि के भिन्नाष्टक वर्ग में, शुक्र से सातवें भाव में शुभ बिन्दुओं की संख्या 3 (या कम) है। शुक्र के नैसर्गिक कारकों– विवाह व विवाहित जीवन की खुशियों के संदर्भ में यह भाग्यशाली योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ सौम्य संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आप अपने जीवनसाथी के संदर्भ में अधिक भाग्यशाली नहीं हो सकते हैं। वह बहुत आकर्षक नहीं होंगी और ना ही किसी प्रतिष्ठित परिवार से होंगी। इसके अतिरिक्त उनमें व्यवहारकुशलता, सुसंस्कारीता व परिष्कृत रूचियों का अभाव हो सकता है। यद्यपि वह उद्यमशील हो सकती हैं, फिर भी आपका दाम्पत्य जीवन सुखमय नहीं हो सकता है, जैसाकि वह विवादप्रिय तथा हठी प्रकृति की हो सकती हैं तथा यथार्थ से बिल्कुल विपरीत वृथा–अभिमानी स्वभाव की हो सकती हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र के भिन्नाष्टक वर्ग में, शुक्र से सातवें भाव में शुभ बिन्दुओं की संख्या 6 (या अधिक) है। यह अत्यंत भाग्यशाली योग है। आपकी जीवनसंगिनी बहुत ही आकर्षक व सुन्दर होंगी। इसके अतिरिक्त वह सुसंस्कारी, व्यवहारकुशल तथा परिष्कृत अभिरूचियों वाली होंगी। आपका दाम्पत्य जीवन निश्चित रूप से बहुत खुशहाल व सुखी होगा– जैसाकि आपकी पत्नी आपको अपने जीवन से भी अधिक प्रेम करेंगी।

आप एक पुरुष हैं। आपकी नवांश कुण्डली में बुध आत्मकारक ग्रह से सातवें अंश में उपस्थित हैं। अतः यह अत्यंत अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कोई प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आप अपने जीवनसाथी के संदर्भ में बहुत भाग्यशाली होंगे। वह सुन्दर, बहुत आकर्षक तथा अच्छे आचरण वाली महिला होंगी। इसके अतिरिक्त वह ललित कलाओं की किसी विधा में दक्ष भी हो सकती हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, सातवें भाव का स्वामी नैसर्गिक शुभ ग्रह बृहस्पति के साथ स्थित है। जबकि बृहस्पति किसी त्रिक भाव (छठें या आठवें या बारहवें) का स्वामी नहीं है। अतः यह अत्यंत अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आप अपने जीवनसाथी के संदर्भ में बहुत भाग्यशाली होंगे। वह आपके प्रति बहुत विश्वसनीय तथा वफादार होंगी और सामान्यतः सभी मामलों में आपका उनसे बहुत घनिष्ठ लगाव होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र से गणना करने पर तीन महत्वपूर्ण राशियों (चौथे, आठवें व बारहवें) में से केवल एक राशि एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह से अधिग्रहित है, जबकि उस राशि में कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह स्थित नहीं है। यह काफी प्रतिकूल योग है जिसे अरिष्ट–योग कहा जाता है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल सौम्य प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो यह योग आपके दाम्पत्य जीवन की खुशियों को बिगाड़ने तथा कलह पैदा करने की संभावना व क्षमता रखता है।

स्वास्थ्य और स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याएं

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य पीड़ित है, अतः आप किसी प्रकार के जैविक विकार से ग्रसित हो सकते हैं। आपकी मौलिक संरचना अधिक उत्तम नहीं हो सकती है एवं आपमें आनुवांशिक रूप से कोई रोग प्रवेश कर सकता है– संभवतः अपने पिता से।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा पीड़ित है, अतः आपको कुछ क्रियात्मक अनियमितता से पीड़ित होना पड़ सकता है। आपका स्वास्थ्य अधिक समय तक अच्छा नहीं रह सकता है तथा आपको बाह्य कारणों जैसे जलवायु व वातावरणीय स्थितियों में परिवर्तन के कारण रोग हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में लग्न पीड़ित नहीं है। अतः आपमें रोगों के प्रति एक मजबूत प्रतिरोधक क्षमता विद्यमान होगी। आप किसी भी रोग से अधिक लम्बे समय तक पीड़ित नहीं रहेंगे।

आपकी कुण्डली में छठवें भाव के स्वामी (छठा भाव – रोग) की दृष्टि लग्न पर पड़ रही है। अतः आप किसी रोग से लम्बे समय तक ग्रसित हो सकते हैं। संभवतः आप अपने बचपन में या प्रारम्भिक युवावस्था में किसी रोग से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में आठवें भाव के स्वामी (आठवां भाव – गंभीर समस्या) की चंद्रमा पर दृष्टि पड़ रही है। आप अधिक स्वस्थ्य नहीं हो सकते हैं तथा आप कभी–कभी किसी मामूली रोग से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में आठवें भाव के स्वामी (आठवां भाव – गंभीर समस्या) की सूर्य पर दृष्टि पड़ रही है। अतः आप अधिक स्वस्थ्य नहीं हो सकते हैं तथा आप अपने जीवन में कभी किसी गंभीर रोग से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में बारहवें भाव के स्वामी (बारहवां भाव– बिस्तर पर रहने या अस्पताल में भर्ती होने की दशा) की चंद्रमा पर दृष्टि पड़ रही है। अतः आप अधिक स्वस्थ्य नहीं हो सकते हैं और आप कभी–कभी किसी मामूली रोग से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य कर्क राशि में स्थित है तथा चन्द्रमा उससे पीड़ित है। अतः आप खसरा, पेट की गड़बड़ी, ड्राप्सी, कर्कश वाणी, पैरों में सूजन से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा कुम्भ राशि में स्थित है तथा सूर्य उससे पीड़ित है। अतः आप ड्राप्सी, मिर्गी, पैरों और/या गुप्तांगों में दर्द और सूजन आदि जैसे रोगों से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में दो या दो से अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रहों की दृष्टि आठवें भाव पर पड़ रही है। अतः आपको अपने जीवन में किसी गंभीर दुर्घटना का सामना नहीं करना पड़ेगा। आपको कोई बड़ी शल्य चिकित्सा भी नहीं करवानी पड़ेगी।

यात्रा, भ्रमण और विदेश यात्रा

आपकी जन्मकुण्डली में, चंद्रमा नौवें भाव में उपस्थित है। आपके भाग्य में दूरस्थ स्थानों की अनेक यात्राएं करने का योग है। या फिर आपको अपने व्यवसाय के कारण दूरस्थ स्थानों की यात्राएं करनी पड़ सकती हैं, भले ही वह समय के अनुसार कभी-कभी ही हो।

आपकी जन्मकुण्डली में, बहुत सारे ग्रह (पांच या अधिक) चर-राशि और उभय-राशि में स्थित हैं। अतः यह दर्शाता है कि आप अत्यधिक यात्राएं करेंगे, जिनमे अनेक कम दूरी वाली व अनेक लम्बी दूरी वाली यात्राएं होंगी। यदि कई सारे ग्रह चरार्द्ध या चर राशियों के आधे समीप में स्थित हैं तो यह प्रवृति और भी अधिक निश्चित हो जाएगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, तृतीयेश चर-राशि में स्थित है। यह दर्शाता है कि आप अनेक परिवर्तन करेंगे एवं प्रायः समीपस्थ स्थानों की यात्राएं करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, अष्टमेश चतुर्थेश के साथ उपस्थित है अथवा उसकी इस पर दृष्टि पड़ रही है और अष्टमेश ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपने भाव या अपने नक्षत्र में स्थित है। अतः यह एक प्रतिकूल योग है जो कि आकस्मिक स्थानान्तरण की संभावना को दर्शाता है। यदि आपकी कुण्डली में प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपको कई बार अपना निवास स्थान बदलना पड़ सकता है और आप लम्बे समय तक एक स्थान पर नहीं रह सकते हैं। या फिर, ऐसी भी संभावना है कि आपका व्यवसाय/नौकरी स्थानन्तरणीय हो अथवा कई बार आप अपने व्यवसाय/नौकरी में परिवर्तन कर सकते हैं, जिसके परिणामस्वरूप आपको अपना निवासस्थान बदलना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, एकादशेश चौथे भाव में उपस्थित है अथवा उसकी इस पर दृष्टि पड़ रही है और एकादशेश ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपने भाव या अपने नक्षत्र में स्थित है। अतः यह एक प्रतिकूल योग है जो कि आकस्मिक स्थानान्तरण की संभावना को दर्शाता है। यदि आपकी कुण्डली में प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपको कई बार अपना निवास स्थान बदलना पड़ सकता है और आप लम्बे समय तक एक स्थान पर नहीं रह सकते हैं। या फिर, ऐसी भी संभावना है कि आपका व्यवसाय/नौकरी स्थानन्तरणीय हो अथवा कई बार आप अपने व्यवसाय/नौकरी में परिवर्तन कर सकते हैं, जिसके परिणामस्वरूप आपको अपना निवासस्थान बदलना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, नवमेश बारहवें भाव में स्थित है एवं यह उच्चस्थ या अपने भाव या अपने नक्षत्र में स्थित नहीं है। आपको अपनी उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए किसी दूरस्थ स्थान पर या यहां तक कि विदेश भी जाना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, सप्तमेश बारहवें भाव में स्थित है एवं यह उच्चस्थ या अपने भाव या अपने नक्षत्र में स्थित नहीं है। आपको अपने विवाह के संबंध में या अपना नया व्यवसाय, जो कि किसी संभावित पक्ष के साथ साझेदारी में या सहयोग में हो सकता है, स्थापित करने के लिए किसीदूरस्थ स्थान पर या यहां तक कि विदेश भी जाना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, तीव्र गति से चलने वाला ग्रह (जो वक्री नहीं है) एक दूसरे मंद चलने वाले ग्रह के साथ, जिस पर दृष्टि निर्माण के लिए आवश्यक स्थिति की यथार्थ डिग्री को इसने अभी प्राप्त नहीं किया है, 60 डिग्री की दृष्टि में शामिल है। यह आपके किसी निकट स्थान (आपके जन्म स्थान या मूल-निवास स्थान से) पर स्थानान्तरित होने की संभावना को व्यक्त करता है, जहां आप समृद्ध होंगे एवं काफी लम्बे समय तक रहेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, तीव्र गति से चलने वाला ग्रह (जो वक्री नहीं है) एक दूसरे मंद चलने वाले ग्रह के साथ, जिस पर दृष्टि निर्माण के लिए आवश्यक स्थिति की यथार्थ डिग्री को इसने अभी प्राप्त नहीं किया है, 120 डिग्री की दृष्टि में शामिल है। यह आपके किसी दूरस्थ स्थान (आपके जन्म स्थान या मूल-निवास स्थान से) पर स्थानान्तरित होने की संभावना को व्यक्त करता है, जहां आप समृद्ध होंगे एवं काफी लम्बे समय तक रहेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, तीव्र गति से चलने वाला ग्रह (जो वक्री नहीं है) एक दूसरे मंद चलने वाले ग्रह के साथ, जिस पर दृष्टि निर्माण के लिए आवश्यक स्थिति की यथार्थ डिग्री को इसने अभी प्राप्त नहीं किया है, 90 डिग्री की दृष्टि में शामिल है। यह किसी आकस्मिक और अप्रत्याशित घटनाक्रम के कारण आपके किसी दूरस्थ स्थान (आपके जन्म स्थान या मूल-निवास स्थान से) पर स्थानान्तरित होने की संभावना को व्यक्त करता है, जहां आप काफी लम्बे समय तक रह सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रतिकारी योग उपस्थित नहीं हैं तो आपके व्यवसाय में किसी संभावित कारण से आघात लग सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, तीव्र गति से चलने वाला ग्रह (जो वक्री नहीं है) एक दूसरे मंद चलने वाले ग्रह के साथ, जिस पर दृष्टि निर्माण के लिए आवश्यक स्थिति की यथार्थ डिग्री को इसने अभी प्राप्त नहीं किया है, 150 डिग्री की दृष्टि में शामिल है। यह किसी आकस्मिक व अप्रत्याशित घटनाक्रम के कारण आपके किसी दूरस्थ स्थान (आपके जन्म स्थान या मूल–निवास स्थान से) पर स्थानान्तरित होने की संभावना को व्यक्त करता है, जहां आप काफी लम्बे समय तक रह सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रतिकारी योग उपस्थित नहीं हैं तो संभावित कारण परिस्थितियों में आकस्मिक परिवर्तन, दुर्घटना या अशुभ घटनाएं आदि हो सकती है।

आपकी जन्मकुण्डली में, तीव्र गति से चलने वाला ग्रह (जो वक्री नहीं है) एक दूसरे मंद चलने वाले ग्रह के साथ, जिस पर दृष्टि निर्माण के लिए आवश्यक स्थिति की यथार्थ डिग्री को इसने अभी प्राप्त नहीं किया है, विपरीत दृष्टि में शामिल है। यह परिस्थितियों में कुछ परिवर्तन होने के कारण आपके किसी दूरस्थ स्थान (आपके जन्म स्थान या मूल–निवास स्थान से) पर स्थानान्तरित होने की संभावना को व्यक्त करता है, जहां आप काफी लम्बे समय तक रह सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रतिकारी योग उपस्थित नहीं हैं तो ऐसा आपके विवाह का निश्चित निर्णय हो जाने के कारण, साझेदारी या सहयोग में अपना नया व्यवसाय स्थापित करने के कारण अथवा किसी दूरस्थ स्थान (या विदेश) में किसी महत्वपूर्ण दूतकार्य/उद्देश्य के कारण हो सकता है।

शुभ दिशा का चुनाव ? यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रतिकारी योग उपस्थित नहीं हैं तो आपके लिए अनुकूल दिशा उत्तर होगी।

विंशोत्तरी दशाफल

विंशोत्तरी दशा ग्रहों की अवधि के निर्धारण के लिए वैदिक ज्योतिष में प्रयुक्त एक प्रणाली है, जिसे एक व्यक्ति के जीवन में दशा के रूप में भी जाना जाता है। 'विंशोत्तरी' शब्द का अर्थ संस्कृत में '120' है, जो सभी ग्रहों की अवधि के एक पूर्ण चक्र में वर्षों की कुल संख्या का प्रतिनिधित्व करता है।

यह दशा किसी व्यक्ति के जन्म के समय चंद्रमा की स्थिति पर आधारित है, और यह वैदिक ज्योतिष के नौ ग्रहों में से प्रत्येक को निश्चित अवधि प्रदान करती है। इस प्रणाली में स्थिति के आधार पर प्रत्येक ग्रह को 6 से 20 वर्ष तक की एक विशिष्ट संख्या दी जाती है।

प्रत्येक ग्रहों की अवधि के दौरान, विचाराधीन/संबंधित ग्रह का व्यक्ति के जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यह प्रभाव सकारात्मक या नकारात्मक हो सकता है, जो व्यक्ति के जन्मकुण्डली और उस समय के विशिष्ट ग्रहों की स्थिति पर निर्भर करता है।

विंशोत्तरी दशा को वैदिक ज्योतिष में एक महत्वपूर्ण उपकरण माना जाता है, क्योंकि यह किसी व्यक्ति के जीवन में प्रमुख घटनाओं और परिवर्तनों की भविष्यवाणी करने के लिए एक विस्तृत और सटीक प्रणाली प्रदान करता है। ज्योतिषियों द्वारा करियर, रिश्ते, स्वास्थ्य, और किसी व्यक्ति के जीवन के अन्य पहलूओं के बारे में भविष्यवाणी करने के लिए इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है और यह भविष्य में मार्गदर्शन या अंतर्दृष्टि की तलाश करने वालों के लिए एक मूल्यवान उपकरण हो सकता है।

चन्द्रमा दशा (19:09:2019 -- 19:09:2029)

वर्तमान समय में आपकी चंद्रमा की महादशा चल रही है और चंद्रमा आपकी कुण्डली में नौवें भाव में स्थित है। आपको संतानों की प्राप्ति हो सकती है। आप गुणी होंगे और चंद्रमा की दशा के दौरान अपने सभी उपक्रम में आपको सफलता मिलेगी।

वर्तमान समय में आपकी चंद्रमा की महादशा चल रही है और चंद्रमा आपकी कुण्डली में कुम्भ राशि में स्थित है। चंद्रमा की अपनी दशा के दौरान, आप दवा से आय प्राप्त करेंगे। आप पहले जीवनसाथी के रहते दूसरा विवाह कर सकते हैं। यदि चंद्रमा की दशा 28वें वर्ष की आयु में पड़ती है, तो आप एक हठी एवं दुस्साहसी व्यक्ति हो सकते हैं। आपको वाहनों से सावधान रहना चाहिए, जैसाकि आपको या तो वाहनों या फिर शत्रुओं या चोरों से चोट लगने का भय हो सकता है। आपको जुए से दूर रहना चाहिए, क्योंकि इससे आपको भारी हानि का खतरा है। आप अपनी आय का एक बड़ा भाग नशे और दूसरे सुखों के लिए खर्च कर सकते हैं।

दशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं, या धन–संपत्ति, रोग आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– चाँदी की अंगूठी में मोती धारण करें।
2– चाँदी का कमल दान करें।
3– महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।

चन्द्रमा अर्न्तदशा (19:09:2019 से 20:07:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा चल रही है। यदि यह अन्तर्दशा विवाह की अवस्था के दौरान चलती है, और आप अविवाहित हैं, तो आपके विवाह की संभावना है। यदि पहले से विवाहित हैं, तो एक पुत्री का जन्म हो सकता है। आप किसी प्रियजन के विवाह समारोह में शामिल हो सकते हैं। दूसरे शब्दों में आपके भाई–बहनों का विवाह हो सकता है– यदि वे विवाह योग्य हैं। आपको नये परिधान प्राप्त होंगे। आपको बहुत ज्ञानी और संस्कारित लोगों के सम्पर्क में आने के बहुत सारे अवसर मिलेंगे। आपको जीवनसाथी और संतानों का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। आप अपनी माता की अभिलाषाओं को पूरा करेंगे तथा साथ ही उनका पूर्ण प्रेम, स्नेह और ध्यान आपको मिलेगा। आपको संबंधियों और मित्रों से अवसरीय मदद मिलेगी। आपको चहुंमुखी संपन्नता तथा उत्तम नींद प्राप्त होगी।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में चंद्रमा की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या नौकरी, धन–सम्पत्ति, माता, भाई–बन्धु, जीवनसाथी आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– चंद्रमा के बीज मंत्र का पाठ करें।
2– सफेद गाय या चाँदी की गाय का दान करें।
3– महामृत्युंजय मंत्र का जप एवं हवन करें।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (19:09:2019 से 15:10:2019)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह एक उत्तम दशा होगी। यदि आपकी आर्थिक स्थिति पहले से उत्तम है, तो आपको भूमि और सम्पत्ति प्राप्त होगी। आप एक आरामदायक और खुशहाल जीवन का आनन्द प्राप्त करेंगे। आपको सरकार का समर्थन प्राप्त होगा और स्वादिष्ट भोजन मिलेगा। यदि आप साधारण परिवार में जन्में हैं, तो भी आप बिना किसी अधिक प्रयास के अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम होंगे।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (15:10:2019 से 01:11:2019)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अपने आस–पास के लोगों से उत्तम सम्मान मिलेगा। आपकी आर्थिक स्थिति संतोषजनक होगी। सामान्यतः यह एक साधारण दशा होगी। जीवन में बहुत अशांति नहीं होगी। हालाँकि आपको अपने शत्रुओं से सावधान रहना चाहिए।

राहु प्रत्यंतर्दशा (01:11:2019 से 17:12:2019)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक मिली–जुली दशा होगी। आपको सुख और दुख का समान रूप से अनुभव होगा और प्रायः उसमें बदलाव होता रहेगा। घर पर वैवाहिक समारोह आयोजित होंगे। आप तीर्थयात्रा पर जा सकते हैं। कई सारे लोग आपसे मिलने आयेंगे और आपका साथ देंगे।

बृहस्पति प्रत्यंतर्दशा (17:12:2019 से 27:01:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। आपको नौकरी में पदोन्नति प्राप्त होगी। यदि आप व्यापार कर रहे हैं, तो आपको बहुत उत्तम लाभ प्राप्त होंगे। घर पर वैवाहिक समारोह आयोजित होंगे। सामान्यतः आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। आपके जीवनसाथी और संतान की आपको अति सुखद संगति मिलेगी। विशिष्टों से आपको सहयोग मिलेगा।

शनि प्रत्यंतर्दशा (27:01:2020 से 15:03:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यद्यपि आपकी आर्थिक स्थिति बेहतर होगी, फिर भी अप्रत्याशित रूप से आपके व्यय बढ़ सकते हैं। आपका अपने जीवनसाथी के साथ झगड़ा हो सकता है और वह बीमार हो सकती है। संतान भी आपके लिए परेशानियां पैदा कर सकते हैं। आपको बुखार, पेचिश और सिर दर्द की शिकायत हो सकती है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (15:03:2020 से 27:04:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपका रूझान नयी चीजों को सीखने की तरफ होगा। इस दशा के दौरान आप अपने काल्पनिक विचारों को व्यावहारिक रूप में प्रयोग कर सकते हैं। आपको लेखन के क्षेत्र में नाम और यश प्राप्त होगा। रोजगार में बदलाव के लिए यह एक

उत्तम समय है। शैक्षिणिक क्षेत्रों में आपकी संतानों की सफलता आपको खुशी प्रदान करेगी। जीवनसाथी का भी आपको सुन्दर सहयोग मिलेगा। हालाँकि, आपके गुप्त शत्रु आपके खिलाफ साजिश कर सकते हैं।

केतु प्रत्यंतर्दशा (27:04:2020 से 15:05:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी माता के लिए यह दशा उत्तम नहीं हो सकती है। आपको अपने परिवार से दूर रहने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। एक समय पर दो प्रतिष्ठान होंगे। आपको निरन्तर धन की प्राप्ति होगी, लेकिन आय से अधिक व्यय भी हो सकता है। आपको धन उधार लेने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है और आप उसे वापस करने में असमर्थ हो सकते हैं। आपको अपनी कुछ वस्तुओं को बेचना पड़ सकता है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (15:05:2020 से 05:07:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह एक उत्तम दशा होगी। आपका या आपकी बहन का विवाह हो सकता है। ससुराल से आपको विरासत में कोई सम्पत्ति प्राप्त हो सकती है। शुक्र की वस्तुओं से आपको लाभ होगा। अज्ञात महिलाओं के साथ आप शारीरिक सुख प्राप्त करेंगे, जिससे आपको बदनामी का सामना करना पड़ सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (05:07:2020 से 20:07:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके पिता का स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है। उनके साथ आपके संबंध भी आत्मीय नहीं हो सकते हैं। आपके पुत्र का स्वास्थ्य भी उत्तम नहीं हो सकता है। आपको बहुत गंभीर स्थिति का सामना करना पड़ सकता है।

मंगल अर्न्तदशा (20:07:2020 से 18:02:2021)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा चल रही है। आपको पैतृक सम्पत्ति और धन की हानि हो सकती है। रक्त की अशुद्धता, व्यग्रता, कफ, आग, विद्युत और अन्य गर्म चीजों के कारण होने वाले विकारों से आप ग्रस्त हो सकते हैं। आप चोरों और शत्रुओं के कारण अपना धन गवाँ सकते हैं। आपमें धैर्य की कमी हो सकती है और आप हर स्तर पर चिड़चिड़े हो सकते हैं। एक समय पर आप सबसे संतुष्ट व्यक्ति होंगे, जिसे सांसारिक सुखों की आवश्यकता नहीं होगी, लेकिन अचानक आपका दिमाग पलट सकता है और आप अपने कार्य क्षेत्र में असफल हो सकते हैं। आपक स्थानान्तराण हो सकता है या दंड अथवा गबन के आरोप के कारण आप पूर्व प्राप्त पद से हाथ धो सकते हैं।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में मंगल की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन हानि, मकान, मुकदमा आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– मंगल के बीज मंत्र का दस हजार जप करें।
2– ब्रह्मचर्य बनकर हनुमान बाहुक का पाठ करें।
3– मूंगा धारण करें।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (20:07:2020 से 01:08:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप कफ या तपेदिक से ग्रस्त हो सकते हैं। आपको आग से भय हो सकता है। आपको धन हानि हो सकती है। जनता से आपको अनादर मिल सकता है। शत्रु आपको भयभीत करने की कोशिश कर सकते हैं। भाइयों से आपका विवाद हो सकता है। आपका एक नजदीकी संबंधी आपके जीवन को कष्टकारी बना सकता है। महिलाओं से आपको विरोध का सामना करना पड़ सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (01:08:2020 से 02:09:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली दशा के दौरान पैदा हुए रोगों का प्रभाव और बढ़ सकता है। आप अस्पताल में भर्ती हो सकते हैं। उपचार में आपका भारी धन व्यय हो सकता है। अधीनस्थ और विशिष्ट लोग आपके लिए समस्यायें पैदा कर सकते हैं। बेतुकी बातों पर आपका अपने जीवनसाथी से झगड़ा हो सकता है और आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है।

बृहस्पति प्रत्यंतर्दशा (02:09:2020 से 01:10:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप एक राजा की तरह आनन्द प्राप्त करेंगे। आप हर प्रकार के रोगों से मुक्त रहेंगे। आपको अप्रत्याशित क्षेत्रों से धन प्राप्त होगा। बहने आपकी प्रसन्नता का कारण होंगी। यदि अब तक कोई संपत्ति विवाद अनसुलझा है, तो उसका निर्णय आपके पक्ष में हो जायेगा। आप तनावरहित जीवन व्यतीत करेंगे, समय पर भोजन और अपनी मूलभूत जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त धन प्राप्त करेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (01:10:2020 से 04:11:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। धन को छोड़कर पिछली दशा में आपको प्राप्त अन्य सभी सुख गायब हो सकते हैं। आपका व्यय आय से अधिक हो सकता है। चूंकि, आपने पिछली दशा में पर्याप्त धन संग्रह कर लिया था, अतः इस दशा में आपको उसकी कमी महसूस नहीं होगी। आपको अपने विरोधियों से सावधान रहना चाहिए। बिना किसी कारण के विवाद हो सकते हैं। ऐसा 7 दिनों तक हो सकता है। उसके बाद स्थिति सामान्य हो जायेगी।

बुध प्रत्यंतर्दशा (04:11:2020 से 04:12:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके घुटने में चोट लगने या आप्रेशन होने की संभावना है। आप गठिया रोग से ग्रस्त हो सकते हैं। आपको सट्टों और विशिष्ट व्यक्तियों से लाभ मिलेगा। आपका मिजाज प्रायः अन्तरालों पर बदलता रहेगा। आपमें एकाग्रता का अभाव हो सकता है। आपके किसी एक संतान का स्वास्थ्य आपकी चिन्ता का कारण बन सकता है। इस दशा के दौरान वास्तव में आपके जीवनसाथी को परेशानी होगी– जैसाकि उसे आप और आपके संतान की देखभाल करनी पड़ेगी।

केतु प्रत्यंतर्दशा (04:12:2020 से 16:12:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक उत्तम दशा नहीं होगी। परिवार में विवाह या धार्मिक कार्यों जैसे समारोहों में भारी व्यय होगा। आपका एक नजदीकी मित्र आपको धोखा सकता है और आपका धन तथा आभूषण लेकर भाग सकता है। आपके भाइयों के लिए यह एक खराब दशा हो सकती है। आपके किसी नजदीकी संबंधी से आपका अप्रत्याशित रूप से वियोग हो सकता है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (16:12:2020 से 21:01:2021)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सम्पत्ति और सट्टों में निवेश करने के लिए यह शुभ समय है। आपके किसी नजदीकी की मृत्यु के कारण आपको अप्रत्याशित रूप से कोई विरासतीय उपहार मिल सकता है। आपको महिलाओं से आनन्द और लाभ मिलेगा। आप किसी महिला के धन दौलत की देखभाल कर सकते हैं और साथ ही उससे लाभ प्राप्त कर सकते हैं। महिलाओं के कारण झगड़े और लड़ाईयां हो सकती हैं। मित्र आपके शत्रु बन सकते हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (21:01:2021 से 01:02:2021)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप अपने सगे भाई बहनों से लाभ प्राप्त करेंगे। आपको

नेत्र रोग, बुखार और जोड़ों में दर्द की शिकायत हो सकती है। आप ऋण ले सकते हैं और उसे वापस करने में असक्षम हो सकते हैं। आप कहीं छिप सकते हैं और कुछ मानसिक शांति पाने के लिए नशे का सहारा ले सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (01:02:2021 से 18:02:2021)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक उत्तम दशा होगी। आपको सरकार का समर्थन मिलेगा। आपको जलीय उत्पादों और दवाओं के व्यापर में लाभ होगा। आपको अति उत्तम शैक्षिणिक परिणाम प्राप्त होंगे। यदि आपका कोई प्रेम प्रसंग चल रहा है, तो वह शादी में परिणित हो सकता है। आप किसी दूर स्थान की यात्रा कर सकते हैं और एक नया घरेलू उपयोग का सामान खरीद सकते हैं।

राहु अर्न्तदशा (18:02:2021 से 20:08:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में राहु की अन्तर्दशा चल रही है। आप अनजाने में कई बुरे और गलत काम कर सकते हैं तथा बाद में उसके लिये पछतावा होगा। लेकिन तब तक बहुत देर हो सकती है और सबको अपना शत्रु बना सकते हैं। हालांकि, चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा जो आगे आने वाली है, के दौरान विभिन्न चीजों के लिए आपके रवैये और व्यवहार में वास्तविक बदलाव आयेगा। आपके संबंधियों को समस्यायें हो सकती हैं और आपको उन पर धन खर्च करने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। आपको जलीय पदार्थों से विषाक्तता होने की संभावना हो सकती है। आप बुखार, अपच या गठिया रोग से ग्रसित हो सकते हैं। आपको आंधी, तूफान और तड़ित से खतरा हो सकता है। आपको मदिरा से सर्वथा दूर रहना चाहिए– जैसाकि यह एक जलीय पदार्थ है। चूंकि आपकी आय से व्यय अधिक हो सकता है, अतः आपको धन व्यय करते समय सावधानी बरतनी चाहिए।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में राहु की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या नौकरी, संतान, कर्ज, धन हानि आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– मंगल का व्रत रखें एवं हनुमान जी के चरणों में सिंदूर अर्पित करें।
2– दुर्गासुक्त का पाठ करें।
3– चाँदी का हाथी दान करें।

राहु प्रत्यंतर्दशा (18:02:2021 से 11:05:2021)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह दशा बहुत खराब हो सकती है। आप चर्म रोगों, सिर में चोट का सामना कर सकते हैं। आपको धन की हानि हो सकती है। आपके व्यापार में अपने भागीदार या अपने किसी एक अधीनस्थ से धोखा मिल सकता है।

बृहस्पति प्रत्यंतर्दशा (11:05:2021 से 23:07:2021)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप धार्मिक क्षेत्र में थका देने वाली गतिविधियों में शामिल रहेंगे। समय पर आप भोजन नहीं कर पायेंगे। आपके पुत्र पढ़ाई में विशेष योग्यता प्राप्त करेंगे। घरेलू वातावरण खुशहाल होगा। आध्यात्मिक क्षेत्र में आपके ज्ञान मे बृद्धि होगी। संबंधियों का आपको साथ मिलेगा और आप उनसे लाभ प्राप्त करेंगे। परिवार की महिलाओं का स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (23:07:2021 से 18:10:2021)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको सभी संभव विपदाओं का सामना करना पड़ सकता है। आपके जीवनसाथी को तत्काल चिकित्सकीय उपचार की आवश्यकता हो सकती है। आपकी या आपके जीवनसाथी की शल्य चिकित्सा हो सकती है। आप लकवे का शिकार हो सकते हैं।

इस दशा के दौरान आपको लॉटरी और सट्टों से दूर रहना चाहिए।

बुध प्रत्यंतर्दशा (18:10:2021 से 04:01:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अपने क्षेत्र में विशेष ज्ञान प्राप्त होगा। आपका एक चचेरा भाई आपके परिवार के लिए समस्यायें पैदा कर सकता है। आपकी बहन का विवाह हो सकता है। प्रायः परेशानियां हो सकती हैं, किसी बड़े व्यक्ति को मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है– संभवतः दादा या दादी को, जिससे आपका अपने सहोदरों से अलगाव हो सकता है। आपको जीवनसाथी से लाभ मिल सकता है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (04:01:2022 से 05:02:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा निराशापूर्ण हो सकती है। परिवार से अलगाव के कारण आप अकेला महसूस कर सकते हैं और आपमें असुरक्षा की भावना आ सकती है। यदि आप परिवार से अलग नहीं होते हैं, तो भी संयुक्त परिवार मे रहते हुए आप एकाकी जीवन व्यतीत कर सकते हैं। आपकी बौद्धिक क्षमता का ह्रास हो सकता है और आपको धन हानि हो सकती है। नये शत्रुओं से आपको खतरा हो सकता है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (05:02:2022 से 07:05:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। घरेलू घटनाओं के कारण आप निराश हो सकते हैं। आपके जीवनसाथी आपके मित्रों का साथ दे सकती है। बुरी आत्माओं से आपको खतरा हो सकता है। आपका वाहन खो सकता है या दुर्घटना हो सकती है। आपको रति जन्य रोग हो सकते हैं। आपके गुप्तांगों और गुदा में खुजली हो सकती है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (07:05:2022 से 03:06:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको ससुराल से सम्पत्ति मिलेगी, लेकिन मानसिक शांति का अभाव हो सकता है। आपके जीवनसाथी और संतान के लिए यह दशा बहुत खराब हो सकती है। आप उनकी आवश्यक देखभाल नहीं कर पायेंगे।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (03:06:2022 से 19:07:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। कोई भी बुरा परिणाम देने में राहु अप्रभावी रहेगा। आप ईश्वर की आराधना में पूरी तरह से रत रहेंगे। आपको गंभीर सर्दी और खांसी हो सकती है। सम्मान की हानि हो सकती है। नजदीकी और प्रियजनों से झगड़ा हो सकता है। आप अपने से बड़ी महिलाओं के साथ मौज–मस्ती करेंगे और उन पर धन बर्बाद करेंगे।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (19:07:2022 से 20:08:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा उत्तम नहीं हो सकती है। यदि एक या तीनों ग्रह भी उत्तम स्थिति में हैं, तो भी आपको बहुत कष्ट हो सकते हैं। एक समस्या हल होगी, तो दूसरी समस्या खड़ी हो जायेगी। आपको धन और सम्पत्ति की हानि हो सकती है। आपके गुदा में फोड़े या बवासीर हो सकता है। रक्त में खराबी के कारण रोग हो सकते हैं। यदि राहु और मंगल अशुभ भाव या राशि में स्थित हैं, तो आपको रक्त चढ़वाना पड़ सकता है।

बृहस्पति अर्न्तदशा (20:08:2022 से 19:12:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा शुभ और उत्कृष्ट होगी। यदि बृहस्पति आपकी कुण्डली में शुभ नहीं भी है, तो भी आपको विषम परिणाम नहीं प्राप्त होंगे। आपमें राहु की अन्तर्दशा– जो पहले आयेगी– के दौरान सहिष्णुता की भावना का विकास होगा और आपको प्राप्त सीख

बृहस्पति की अन्तर्दशा के दौरान पूरी तरह से आपको एक नया इंसान बनायेगी। आप धार्मिक सिद्धान्तों का पालन करेंगे और भिक्षा देंगे। आपकी सोच में परिपक्वता होगी और गलत–सही की पहचान करने की क्षमता होगी।

आपको उत्तम कपड़ों और आभूषड़ों को पहनने में अधिक रूचि होगी। आप उत्तम मित्रों की संगति का आनन्द प्राप्त करेंगे। अधिकतर लोग आपको पसन्द करेंगे। आपको सरकार से समर्थन मिलेगा। विभिन्न स्रोतों से आप आय प्राप्त करेंगे और संतानों के मामले में आप बहुत सुखी होंगे। आपकी संतानें भी आपको खुशियां प्रदान करेंगी। आपमें वाहन प्राप्त करने की चाह होगी, जो इस अन्तर्दशा के अन्त तक पूरी होगी।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन–सम्पत्ति, दुर्घटना आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– नीलम या इसका उपरत्न धारण करें।
2– काली गाय या भैंस का दान करें।
3– शनिस्तोत्र का पाठ करें।

बृहस्पति प्रत्यंतर्दशा (20:08:2022 से 24:10:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह एक उत्तम दशा होगी। आपको सभी कामों में सफलता मिलेगी। आप प्रायः तीर्थस्थानों की यात्रा करेंगे। धन अर्जित करने में आप बहुत व्यस्त रहेंगे। अतः आप उत्तम और समयबद्ध भोजन प्राप्त नहीं कर सकेंगे। आपका विवाह हो सकता है और आपको पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। आप एक ऊँचे पद को प्राप्त करेंगे। आपके घर पर शुभ समारोह आयोजित होंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (24:10:2022 से 09:01:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप भूमि और सम्पत्ति खरीदेंगे। आपको वाहन का लाभ होगा। सभी से आपको स्नेह मिलेगा। इस दशा के दौरान आप कई लोगों को भोजन करायेंगे। महिलाओं से आपको अपमान मिल सकता है। नौकरानी और अन्य निचले स्तर के लोगों के साथ आप मौज–मस्ती प्राप्त कर सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (09:01:2023 से 19:03:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक बहुत उत्तम दशा होगी। आप वाहन और आभूषण खरीदेंगे। आप शास्त्रों और वेदों को सीखने में रूचि लेंगे। निवेश के लिए यह एक अति उत्तम दशा होगी। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको पदोन्नति मिलेगी और यदि व्यापार कर रहे हैं, तो आपको व्यापार में लाभ मिलेगा। आपका विवाह हो सकता है। अपने जीवनसाथी और संतान के साथ आप आनन्दभ्रमण पर जायेंगे।

केतु प्रत्यंतर्दशा (19:03:2023 से 16:04:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक असहज दशा हो सकती है। परिवार के किसी बड़े व्यक्ति को मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है। शत्रु परिवार में कलह उत्पन्न करने की कोशिश कर सकते हैं। आपकी बहन के विवाह में परेशानियां आ सकती हैं। आपके आभूषण खो सकते हैं। सरकारी और विशिष्ट अधिकारियों से आपको परेशानियां हो सकती हैं। आपको पीलिया या जिगर की अन्य समस्यायें हो सकती हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (16:04:2023 से 06:07:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक कष्ट रहित दशा होगी। आपको वस्त्र, रत्न

और आभूषण प्राप्त होंगे। आप अपने जीवनसाथी सहित महिलाओं को खुश करने में व्यस्त रहेंगे। आपको एक पुत्री की प्राप्ति हो सकती है। आप कई प्रकार की चीजें सीखेंगे। आप समारोहों और अन्य मौज-मस्ती के कामों में पूरी तरह से रत रहेंगे।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (06:07:2023 से 31:07:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको सरकार से लाभ होगा। आप रोजगार में बदलाव कर सकते हैं। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको पदोन्नति मिलेगी और यदि आप व्यापार कर रहे हैं, तो आपको व्यापार में लाभ मिलेगा। आप धार्मिक कार्यों में संलग्न रहेंगे। यदि आप राजनीति से जुड़े हैं, तो चुनाव लड़ने के लिए यह एक उत्तम समय है। आपको पैतृक सम्पत्ति प्राप्त हो सकती है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (31:07:2023 से 09:09:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप अपनी अधिकतर कामनाओं को पूरा करने में सक्षम होंगे। निवेश के लिए यह उपयुक्त समय है। आपका विवाह हो सकता है। आपको एक पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। विभिन्न स्रोतों से आपको धन का लाभ होगा। आपके घर पर कई शुभ समारोह आयोजित हो सकते हैं। हालाँकि, इस दशा के अन्तिम दो दिन आपके पूरे परिवार के लिए बहुत खराब हो सकते हैं। किसी दूर स्थान से कोई अशुभ समाचार मिल सकता है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (09:09:2023 से 07:10:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके पेट में अल्सर, तीव्र जलन, अपचन, बवासीर या गुदा में दर्द की शिकायत हो सकती है। आपको हथियारों से खतरा हो सकता है। अपने जीवनसाथी और संतान से आपका अलगाव हो सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (07:10:2023 से 19:12:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। परिणाम लगभग पिछली दशा के समान ही होंगे। आपको अचानक धन का लाभ हो सकता है। अब तक अनसुलझे सम्पत्ति विवाद सुलझ जायेंगे। आपके सहोदरों को कष्ट हो सकता है।

शनि अर्न्तदशा (19:12:2023 से 20:07:2025)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए बहुत उत्तम नहीं हो सकती है। आपको अकथित परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आप संबंधियों के कारण दुख और खतरों का सामना कर सकते हैं। आप, आपका जीवनसाथी, संतानें, माता-पिता एक साथ कई रोगों से ग्रसित हो सकते हैं। आपका चिकित्सकीय खर्चा बढ़ सकता है। आप उपचार के विभिन्न तरीके अपना सकते हैं और धन बर्बाद कर सकते हैं। हालांकि, अन्तर्दशा के अन्त में आपको कोई ऐसा व्यक्ति मिल सकता है जो कुछ उपचार के तरीके बतायेगा और आप उनका प्रयोग आखिरी उपाय के रूप में करके परिणाम प्राप्त करेंगे।

बिना उपायों के प्रयोग के अगली बुध की अन्तर्दशा में सुधार होना तय है- जो कि सबसे उत्तम दशा होगी। परिस्थितियों के कारण आपको खुशियां प्राप्त होने में कठिनाई आ सकती है। आपको अपनी माता के स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए- जैसाकि यह अन्तर्दशा माता के लिए संकटकरी हो सकती है। आपको अपने परिवार के बड़ों या पारिवारिक देवता का शाप लग सकता है। आपका शरीर कमजोर हो सकता है और आपको अपने स्वास्थ्य में सुधार करने में बहुत परेशानी हो सकती है। डॉक्टर रोग का पता लगाने में असफल हो सकते हैं। अन्ततः आपको पता चल सकता है कि कोई अदृश्य ताकत आपके शरीर के अन्दर है। आपको सरकारी अधिकारी के क्रोध का सामना करना पड़ सकता है।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में शनि की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या शत्रु, माता, संबंधी, भाई–बन्धु, कर्ज आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– रोज शनि स्तोत्र का पाठ करें।
2– महामृत्युंजय मंत्र का जप एवं हवन करें।
3– सोने की गाय या भैंस का दान करें।

शनि प्रत्यंतर्दशा (19:12:2023 से 20:03:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप दूसरों की सलाह मानकर अदृश्य जाल में फंस सकते हैं। शत्रु आपको केवल हताश करने के लिए गलत सलाह दे सकते हैं। आपके सगे भाई बहन आपके द्वारा दिये गये गलत उपचार के कारण परेशान हो सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (20:03:2024 से 10:06:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली दशा में जीवन के अति कटु अनुभवों का अहसास इस दशा में धीरे–धीरे बदल जायेगा। आपमें एक ऐसा अहसास विकसित होगा, कि आपके आस–पास की हर चीज वास्तविक रूप से आपके अनुकूल हो रही है। हालाँकि आपको पूर्णिमा और कृष्ण पक्ष के दौरान बहुत सावधान रहना चाहिए। आपको इन दिनों में लम्बी यात्रायें नहीं करना चाहिए– जैसाकि कुछ दुर्घटनायें हो सकती हैं।

केतु प्रत्यंतर्दशा (10:06:2024 से 14:07:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान अनिश्चितता की स्थिति बनी रहेगी। एक के बाद एक समस्यायें पैदा हो सकती हैं। परिवार के सदस्यों का स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है। परिवार में वैवाहिक संबंध टूट सकते हैं। सम्पत्ति के बंटवारे में विवाद हो सकता है, आप तीर्थयात्रा पर जायेंगे और बाहरी लोगों से आपका झगड़ा हो सकता है। जीवनसाथी और संतान आपके लिए समस्यायें पैदा कर सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (14:07:2024 से 19:10:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके प्रेमपूर्ण जीवन में उतार–चढ़ाव आ सकते हैं। आप और आपके जीवनसाथी के बीच परस्पर प्रेम एक समय पर शिखर पर होगा और थोड़े ही समय में वह धरातल पर आ सकता है। आप दोनों को अतिरिक्त वैवाहिक संबंध बनाने के अवसर मिलेंगे, जिससे आप दोनों के बीच प्रायः कटुता आ सकती है। इस दशा के दौरान संतानों को कष्ट हो सकता है। रक्त संबंधी रोग हो सकते हैं। आपकी माता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (19:10:2024 से 17:11:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक बहुत खराब दशा हो सकती है। आपके पिता का स्वास्थ्य गंभीर हो सकता है। आपके अपने पिता के इलाज में भारी धन व्यय करना पड़ सकता है। साथ ही आपकी माता को लकवा हो सकता है। आपको अपने रोजगार या व्यापार से दूर होने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (17:11:2024 से 04:01:2025)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक सामान्य दशा होगी। बहुत अधिक गतिविधियां नहीं होंगी। हालाँकि, आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है। आपकी आय भी कुछ हद तक बेहतर होगी। आप समय–समय पर मौज मस्ती करेंगे और तीर्थयात्रा पर जायेंगे।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (04:01:2025 से 07:02:2025)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको अपने शरीर के सुरक्षा की अधिक देखभाल करनी चाहिए। प्रायः आपको छोटी दुर्घटनाओं का सामना करना पड़ सकता है। ये दुर्घटनायें सिर्फ वाहन से ही नहीं, बल्कि स्नानागार में फिसलने, सब्जी आदि काटते समय चाकू से कटने से भी हो सकती है। आपका अपने जीवनसाथी से प्रायः विवाद हो सकता है। आप मंगल से संबंधित वस्तुओं से उत्तम लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

राहु प्रत्यंतर्दशा (07:02:2025 से 04:05:2025)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपने पिछली दशा में कामों की शुरूआत कर दी थी, लेकिन आपका उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता है और आपने जो कुछ निवेश किया था, उसका आपको नुकसान हो सकता है। अतः आपके लिए यह बेहतर होगा, कि आप अपनी पूंजी तैयार रखें, जिसकी किसी भी समय आवयकता पड़ सकती है। आपके जीवनसाथी से आपके प्रायः झगड़े हो सकते हैं। आप समय पर भोजन नहीं कर पायेंगे। यदि मंगल बली है, तो आप मंगल से संबंधित वस्तुओं से उत्तम लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

बृहस्पति प्रत्यंतर्दशा (04:05:2025 से 20:07:2025)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपने पिछली कुछ दशाओं में जो खोया है, वह इस दशा में वापस मिल जायेगा। आपकी प्रगति धीरे–धीरे शुरू हो जायेगी। इस प्रत्यंतर्दशा के मध्य में आपको सारभूत आय होगी। आपके अपनी संतान और जीवनसाथी से आत्मीय संबंध होंगे।

बुध अर्न्तदशा (20:07:2025 से 19:12:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः धन प्राप्त करने के लिए यह सबसे उत्तम दशा है। आपको निरन्तर धन प्राप्त होगा। हालांकि, मात्रा आपके परिवार की पृष्ठभूमि और आपको प्राप्त पद के स्तर के अनुसार होगी। आपको सुन्दर परिधान, आभूषण तथा नये मवेशी प्राप्त होंगे। आप अपने सभी उपक्रमों में सफलता और विभिन्न तरीकों से लाभ की आशा कर सकते हैं। आपके नाम और यश में वृद्धि होगी तथा आपको समाज में उचित स्थान प्राप्त होगा। नये प्राप्त ज्ञान और शिक्षा से आप संपन्नता प्राप्त करेंगे। यदि आपकी कुण्डली में बुध कमजोर भी है, तो भी इस अन्तर्दशा के दौरान आपको बहुत परेशानी नहीं होगी।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में बुध की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, संतान, व्यापार, प्रतिष्ठा, धन–संपत्ति आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– दुर्गा की पूजा करें एवं छोटी कन्याओं की सेवा करें।
2– विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ करें।
3– बकरी का दान करें।

बुध प्रत्यंतर्दशा (20:07:2025 से 02:10:2025)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। आप अपनी अधिकतर चिन्ताओं से मुक्त रहेंगे। धन का सहज आगमन होगा। आप भूमि, सम्पत्ति और आभूषण खरीदेंगे। आपको जीवनसाथी और संतान को सुख प्राप्त होगा। व्यापार में सम्पन्नता आएगी। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको पदोन्नति मिलेगी। यदि अब तक कोई सम्पत्ति विवाद अनसुलझा है, तो इस दशा के दौरान उसका निर्णय आपके पक्ष में हो जायेगा।

केतु प्रत्यंतर्दशा (02:10:2025 से 01:11:2025)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आर्थिक मामलों के लिए यह दशा उत्तम होगी। लेकिन आपको अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। आप बुखार, पीलिया और चर्म रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। आपकी संतानें शैक्षिणिक और व्यावसायिक दोनों क्षेत्रों में अपनी दक्षता प्रदर्शित करेंगी। आपको पदोन्नति मिल सकती है। हालाँकि, शत्रु आपसे ईर्ष्या करेंगे और आपके लिए परेशानियां पैदा करने की कोशिश करेंगे।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (01:11:2025 से 26:01:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप अपना अधिकतर समय धार्मिक कार्यों में लगायेंगे। आप सरकारी अधिकारियों की मदद से अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करेंगे। आपको कृषि उत्पादों से लाभ हो सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (26:01:2026 से 21:02:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप सरकार की मदद से धन अर्जित करेंगे। यदि सूर्य पर मंगल की दृष्टि है, तो आपको भूमि, भोजन और वस्त्र प्राप्त होंगे।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (21:02:2026 से 05:04:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यदि चंद्रमा केन्द्र या त्रिकोण या अपने भाव या उच्चस्थ भाव में स्थित है, तो आप एक राजा की तरह अति उत्तम परिणामों का आनन्द प्राप्त करेंगे। यदि चंद्रमा पर बृहस्पति की दृष्टि है, तो आपका विवाह हो सकता है, आपको एक पुत्र और नये वस्त्रों तथा आभूषणों की प्राप्ति हो सकती है। आप अपने घर का निर्माण कर सकते हैं। आप शास्त्रों का अध्ययन करेंगे और अपने देश के दक्षिणी स्थानों की यात्रा करेंगे।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (05:04:2026 से 05:05:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको एक पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। आपको मवेशियों और कृषि योग्य भूमि की प्राप्ति होगी। आपको अपनी खोई हुई स्थिति पुनः प्राप्त होगी। संबंधी आपसे स्नेह करेंगे और आपको धन का लाभ होगा।

राहु प्रत्यंतर्दशा (05:05:2026 से 22:07:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको धन का लाभ होगा। आप धार्मिक स्थानों की यात्रा और धार्मिक कार्यों का निर्वहन करेंगे, आपको सरकार से समर्थन प्राप्त होगा। आपको इस दशा के आरम्भ में कुछ समस्यायें हो सकती हैं, जो बाद में समाप्त हो जायेंगी और आपको लाभ प्राप्त होंगे।

बृहस्पति प्रत्यंतर्दशा (22:07:2026 से 29:09:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। आपकी अधिकतर कामनायें पूरी होंगी। आप धन संग्रह करेंगे, भूमि खरीदेंगे और घर पर शुभ समारोहों का आयोजन करेंगे। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको पदोन्नति मिलेगी और यदि आप व्यापार कर रहे हैं, तो आपको व्यापार में लाभ मिलेगा। अपने वर्तमान व्यापार का विस्तार करने के लिए यह एक अति उत्तम दशा है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (29:09:2026 से 19:12:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली दशा में प्राप्त लाभों से आप इस दशा के दौरान और फायदा उठायेंगे। आपकी सारी गतिविधियों का आगे और विस्तार होगा और आपके धन कोष में बढ़ोत्तरी होगी। इस समय आप अपनी आर्थिक स्थिति को और सुदृढ़ बना सकते हैं। आय में वृद्धि को देखकर आपमें अधिक से अधिक आनन्द प्राप्त करने की प्रवृत्ति आयेगी। लेकिन आपने जो इस और पिछली दशा के दौरान अर्जित किया है, उसे आपको बचाकर रखना चाहिए– जैसाकि आगे आपको अति अशुभ दशा का सामना करना पड़ सकता है।

केतु अर्न्तदशा (19:12:2026 से 20:07:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा चल रही है। आप मानसिक तनाव से गुजर सकते हैं। आपके प्रियजनों को निराशा का सामना करना पड़ सकता है। आपको धन हानि हो सकती है। प्रतिकूल परिस्थितियों और वातावरण के साथ आपमें दूसरों को धोखा देने की प्रवृत्ति हो सकती है। पानी और जलीय चीजों से आपको खतरा हो सकता है। अतः आपको पानी से संबंधित गतिविधियों जैसे तैराकी, नदी, सागर या तालाब में स्नान आदि से दूर रहना चाहिए। द्रव रसायनों से संबंधित किसी व्यापार में आपको संलग्न नहीं होना चाहिए। हालांकि, आपको इसमें लाभ हो सकता है, लेकिन विस्फोट होने या जहर फैलने का इसमें खतरा हो सकता है।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में केतु की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या पिता, रोग, कार्य (नौकरी या व्यवसाय) आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– केतु के बीज मंत्र का 21 दिनों में सतरह हजार जप करें।
2– सर्वसम्पत्प्रदायक मृत्युंजय मंत्र का पाठ करें।
3– गणपति के 108 नामों का जप करें।

केतु प्रत्यंतर्दशा (19:12:2026 से 01:01:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको जीवनसाथी और संतान से खुशियां प्राप्त होगी। आप भूमि खरीदेंगे। आप अपना समय धार्मिक कार्यों में लगायेंगे। आपकी मंत्र जाप और भगवान शिव की आराधना में रूचि होगी। आप अपने निवास स्थान से दक्षिण की दिशा में यात्रा करेंगे। आपके नाना को खतरा हो सकता है। आप बुखार, नेत्र विकार, लिवर की शिकायतों, खांसी, सर्दी और आंतों में दर्द से पीड़ित हो सकते हैं। आपका विवाह हो सकता है। आपको दवाओं और ज्योतिषशास्त्र से आय प्राप्त होगी।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (01:01:2027 से 05:02:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपका भाग्य उत्तम होगा। आपको खोई हुई सम्पत्ति प्राप्त होगी। आपको वाहन सुख प्राप्त होगा और आप पवित्र स्थानों की यात्रा करेंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (05:02:2027 से 16:02:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपमें भगवान शिव के प्रति आस्था विकसित होगी। राजनीति में आपको सफलता मिलेगी। सरकार से आपको समर्थन प्राप्त होगा। आप तीर्थयात्रा पर जायेंगे। पिता के साथ आपका झगड़ा हो सकता है। आपको जलीय उत्पादों से आय प्राप्त होगी। आप उदर और आंत के रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। आपको एक पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। आपकी माता को लकवा हो सकता है। आप ईर्ष्यालु लोगों की संगति कर सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (16:02:2027 से 06:03:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत

चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप बेहतर पारिवारिक जीवन का आनन्द प्राप्त करेंगे। आप जलीय उत्पादों से आय प्राप्त करेंगे।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (06:03:2027 से 18:03:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप परिवहन से आय प्राप्त करेंगे। आपकी माता और जीवनसाथी को विभिन्न रोग हो सकते हैं। आपकी रूचि रोजगार या व्यापार में परिवर्तन करने में हो सकती है। आपको मानसिक हताशा हो सकती है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (18:03:2027 से 19:04:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। भवन निर्माण, सीमेंट, संगमरमर और अन्य पत्थर की चीजों के व्यापार के लिए यह अति उत्तम दशा है। यदि आप पहले से इस क्षेत्र में व्यापार कर रहे हैं, तो आपको भारी लाभ होगा।

बृहस्पति प्रत्यंतर्दशा (19:04:2027 से 17:05:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप अपने गुरु को अप्रसन्न कर सकते हैं, जिससे आपको उनके शाप का भाजन बनना पड़ सकता है। अध्यापन के द्वारा आप अतिरिक्त आय प्राप्त करेंगे। आपको सर्दी, खांसी, दमा, हार्निया की शिकायत हो सकती है। आपके दार्शनिक और धार्मिक ज्ञान में बढ़ोत्तरी होगी। यद्यपि आपकी संतान का स्वास्थ्य खराब हो सकता है, लेकिन उनके शैक्षिणिक कामों में विशिष्टता आपको खुशी प्रदान करेगी।

शनि प्रत्यंतर्दशा (17:05:2027 से 20:06:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक विरोधपूर्ण दशा होगी। नौकर आपके लिए एक समस्या बन सकते हैं। आपके घर में चोरी हो सकती है। संबंधी समस्यायें पैदा करने की कोशिश कर सकते हैं। मित्र शत्रु बन सकते हैं। आपको व्यवसाय से अवसरीय लाभ मिलेंगे। आप सिरदर्द, जोड़ों में दर्द, पेचिश और भारी हताशा का सामना कर सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (20:06:2027 से 20:07:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पूर्ण रूप से संशयग्रस्त और विभ्रमित दिमाग के कारण आप अशांत हो सकते हैं। आपको एक दास की तरह जीवन यापन करना पड़ सकता है। आप मिर्गी और पागलपन का शिकार हो सकते हैं। आप जुए में रत रह सकते हैं और धन गवाँ सकते हैं। आपको अपनी भूमि और अन्य सम्पत्ति बेचने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। आपके प्रायः सभी से विवाद और बहस हो सकती है। आपको ग्रहों के क्रोध को शांत करने के लिए भगवान शिव और देवी पार्वती की आराधना करनी चाहिए।

शुक्र अर्न्तदशा (20:07:2027 से 21:03:2029)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा चल रही है। आप नावों या जहाजों से यात्रायें करेंगे और सोना, पानी, रत्नों, महिलाओं और कृषि से संबंधित सामानों के व्यापार में संलग्न रहेंगे। आप महिलाओं के साथ घनिष्ठ संबंध बनाने में गहरी रूचि लेंगे। संतान, मित्र और मवेशी प्राप्त करने के लिए यह अनुकूल दशा है। यदि आपकी कुण्डली में शुक्र बहुत बली नहीं है, तो भी विषम परिणाम नहीं मिलेंगे।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन–सम्पत्ति, सरकारी कार्य, मित्र, परिवारजन आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– शुक्रवार को एक गड्ढा खोदकर दो सौ ग्राम दही रखकर सफेद कपड़ा से ढक कर राख डालें।
2– दुर्गासूक्त का पाठ करें।
3– चाँदी की दुर्गा–मूर्ति दान करें।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (20:07:2027 से 30:10:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको प्रचुर धन प्राप्त होगा, लेकिन वह खर्च हो जायेगा और आप कर्जदार हो सकते हैं। आपके विवाहेत्तर संबंध हो सकते हैं और उसमें आप धन बर्बाद कर सकते हैं। आपमें ईश्वर के प्रति तीव्र आस्था होगी। आपको पीलिया और नाखूनों में समस्यायें हो सकती है। आपको किसी जानवर के काटने का भय है। यदि आप दवा के व्यापारी या एक कलाकार हैं, तो आपको लाभ प्राप्त होंगे।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (30:10:2027 से 29:11:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के पहले अर्धभाग में आपको अति उत्तम परिणाम प्राप्त होंगे। आपको धन, भूमि और सम्पत्ति का अप्रत्याशित लाभ प्राप्त होगा। दशा के दूसरे अर्धभाग में आप उदर विकार, गले, नाक, आँख के रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। शत्रु आपको हानि पहुंचाने का प्रयास कर सकते हैं। धोखा धड़ी के द्वारा आपको धन हानि हो सकती है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (29:11:2027 से 19:01:2028)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। आपकी आय व्यय से अधिक होगी। आपको महिलाओं से मदद मिलेगी। आपका विवाह तय हो जायेगा। वैवाहिक समारोहों में कुछ समस्यायें आ सकती हैं। अतः आपको विवाह स्थगित कर देना चाहिए। यदि आप विवाहित हैं, तो आपको एक पुत्री प्राप्त हो सकती है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (19:01:2028 से 24:02:2028)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप दवाओं, सोने, तांबे और आभूषणों का व्यापार करेंगे। हालाँकि, बेहतर परिणाम के लिए आपको अगली प्रत्यंतर्दशा तक प्रतीक्षा करनी होगी। आपको भूमि प्राप्त हो सकती है या आप उसको बेच कर उत्तम मात्रा में लाभ कमा सकते हैं। जिन स्त्रियों के साथ आपको अतिरिक्त लगाव होगा, उनके साथ आपको कुछ गलतफहमी हो सकती है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (24:02:2028 से 25:05:2028)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अपनी खोई हुई सम्पत्ति वापस पाने का अवसर मिलेगा। आपकी संतानों की पढ़ाई में सफलता आपको प्रसन्नता प्रदान करेगी। अब तक अनसुलझे सम्पत्ति विवाद इस दशा के दौरान सुलझ जायेंगे। आपके शरीर में चोट लग सकती है, आग से आपको भय हो सकता है। चोर भी आपको नुकसान पहुंचा सकते हैं।

बृहस्पति प्रत्यंतर्दशा (25:05:2028 से 14:08:2028)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। आपका विवाह हो सकता है या आपको पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। आपको भूमि और संपत्ति की प्राप्ति होगी। आप अन्य भौतिक सम्पत्तियों में निवेश करेंगे। सरकार से आपको सम्मान मिलेगा। आप विभिन्न प्रकार के धार्मिक कार्य करेंगे। आप तीर्थयात्रा पर जा सकते हैं और सन्तों का आशीर्वाद प्राप्त करेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (14:08:2028 से 19:11:2028)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप समाज के महत्वपूर्ण व्यक्तियों के सम्पर्क में रहेंगे। उनकी मदद से आप बहुत अधिक धन कमाने में सक्षम होंगे। हालाँकि, आप धन की प्राप्ति के लिए सभी दूसरे दर्जे के तरीके अपनायेंगे, जैसे घूस देना आदि। दशा के मध्य में आप अपने सभी कामों में सफल होंगे। दशा के अन्त में आपको भारी नुकसान और विभिन्न रोग हो सके हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (19:11:2028 से 13:02:2029)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपकी अधिकतर कामनायें पूरी होंगी। आप सौन्दर्य प्रसाधनों, पेड़ों, फलों, जानवरों और परिवहन से आय प्राप्त कर सकते हैं। आपके शत्रु परास्त होंगे। भूमि के विक्रय से आपको धन प्राप्त होगा।

केतु प्रत्यंतर्दशा (13:02:2029 से 21:03:2029)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक सामान्य दशा होगी। आपकी दैनिक गतिविधियों में प्रायः बदलाव होंगे। सुबह में आपको लगेगा कि समय आपके अनुकूल हो रहा है, और आप कई योजनायें बनायेंगे, लेकिन शाम होने तक आपके सारे सपने और योजनायें ध्वस्त हो सकती हैं। रोग आपसे आँख मिचौली खेल सकते हैं।

सूर्य अन्तर्दशा (21:03:2029 से 19:09:2029)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा चल रही है। आप सरकारी अधिकारियों से समर्थन प्राप्त करने की आशा कर सकते हैं। आप अत्यधिक साहस और वीरता का प्रदर्शन करेंगे। समाज में आपको सम्मान मिलेगा। रोगों से मुक्ति मिलेगी। हालांकि, कभी-कभी आपको पित्त रस और वायु विकार हो सकते हैं। आपको दुर्घटना के कारण चोट लग सकती है। एक तरफ आपको उत्तम मात्रा में धन मिलेगा, लेकिन आप चोरी आदि के कारण उसको खो भी सकते हैं।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन-सम्पत्ति, पिता, जन्मस्थान, आँख आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1- जल में चीनी एवं लाल फूल डालकर सूर्य को अर्घ्य दें।
2- भगवान शिव की पूजा करें।
3- आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ करें।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (21:03:2029 से 30:03:2029)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अधिकार और शक्ति प्राप्त लोगों से लाभ मिलेगा। हालाँकि, आपको भूमि की हानि हो सकती है और आपके खर्चे बहुत बढ़ सकते हैं। आपका सहोदरों के साथ सम्पत्ति मामलों में विवाद हो सकते हैं। आप निराशा के कारण घर छोड़ सकते हैं। आप बुखार से पीड़ित हो सकते हैं। दशा के अन्त में आपको कुछ हद तक उत्तम परिणाम प्राप्त हो सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (30:03:2029 से 14:04:2029)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपका विवाह हो सकता है। आपके धन में बढ़ोत्तरी होगी, आप भूमि और भवन खरीदेंगे, ससुराल से आपको विरासत में भूमि मिल सकती है और आपकी पैतृक सम्पत्ति नष्ट हो सकती है। आप नेत्र या जलीय रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। आपके सम्मान में बढ़ोत्तरी होगी। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको पदोन्नति मिलेगी और यदि व्यापार कर रहे हैं, तो आपको उसमें भारी लाभ होगा।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (14:04:2029 से 25:04:2029)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। धन और संपत्ति के मामले में यह एक उत्तम दशा होगी। आपके सगे भाई-बहन आपका सहयोग करेंगे। आपको अपने जीवनसाथी और संतान से आराम एवं खुशियां प्राप्त होंगी। आपके पिता के साथ आपके संबंध आत्मीय नहीं हो सकते हैं। आपको एक पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। आप तीर्थयात्राओं पर जायेंगे।

राहु प्रत्यंतर्दशा (25:04:2029 से 22:05:2029)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली दशाओं में आपको जो लाभ प्राप्त हुए थे, वे इस दशा में लुप्त हो सकते हैं। आप अनैतिक कार्यों से धन कमा सकते हैं। आपका सरकारी अधिकारियों से विवाद हो सकता है। आपके कई शत्रु पैदा हो सकते हैं, जो आपको किसी भी समय फंसा सकते हैं। आपका विवाह हो सकता है।

बृहस्पति प्रत्यंतर्दशा (22:05:2029 से 15:06:2029)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके सम्मान में बढ़ोत्तरी होगी, संतान की प्राप्ति होगी, सरकार और संतानों से आपको धन मिलेगा। आपको कान और फेफड़ों के रोग हो सकते हैं। आप अपने पद को खो सकते हैं। आप ईश्वर की आराधना और धार्मिक कार्य करेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (15:06:2029 से 14:07:2029)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक बहुत उत्तम दशा होगी। आप विभिन्न सौदों में भारी लाभ की आशा कर सकते हैं। आप भूमि और संपत्ति खरीद सकते हैं और विभिन्न तरीकों से आनन्द प्राप्त कर सकते हैं। आप बाहर घूमने जा सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (14:07:2029 से 09:08:2029)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा अति शुभ और अति अशुभ परिणामों का मिश्रण होगी। यदि प्रथम अर्द्धावस्था बहुत शुभ है, तो बाद की दूसरी अवस्था अशुभ हो सकती है या इसका उलटा हो सकता है। यदि अन्य अनुकूल युतियां भी विद्यमान हैं, तो आप एक राजा या उसके समान बन सकते हैं।

केतु प्रत्यंतर्दशा (09:08:2029 से 20:08:2029)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक उत्तम दशा नहीं हो सकती है। विभिन्न कारणों से आपको भारी दुखों का सामना करना पड़ सकता है। आपको अपने पद और धन की हानि हो सकती है। आपमें आत्महत्या करने की प्रवृत्ति आ सकती है। आप विदेश यात्रा पर जा सकते हैं, जहाँ आपको दुखों का सामना करना पड़ सकता है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (20:08:2029 से 19:09:2029)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। दशा के प्रथम 10 दिनों के दौरान आप वाहन खरीद सकते हैं या वाहनों की मुफ्त में सवारी करेंगे। अगले 10 दिनों के दौरान आप अपने परिवार के साथ आनन्द प्राप्त करेंगे, आपके पास अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त धन होगा। आखिरी 10 दिनों के दौरान आपको दुर्भाग्य का सामना करना पड़ सकता है। आप परिश्रम से अर्जित किया हुआ धन, नाम और सम्मान गवाँ सकते हैं। आपको गले के रोग, लकवा और शरीर में दर्द की शिकायत हो सकती है।

अष्टोत्तरी दशा से भविष्यफल

Ashtottari Dasha, based on a 108-year cycle, is especially useful for readings of charts where the Moon is placed in an even sign. This Dasha system emphasizes the transformative periods in an individual's life, revealing the potential unfolding of karmic events. With its unique time frame and calculation, Ashtottari provides astrologers with an alternative perspective, complementing other Dasha systems, to enhance the accuracy and depth of predictions.

शुक्र (उत्तरभाद) दशा : (10:08:1941 से 05:11:1949)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट चौथे भाव में स्थित है जो कि आपके लग्न से एक त्रिकोण–भाव है। अतः इस दशा के दौरान आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे– विशेषकर वित्तिय और विदेश मामलों के संबंध में। आप अपने गुणों, अर्जित योग्यताओं और प्रशंसनीय उपलब्धियों के कारण उचित पहचान प्राप्त करेंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में अच्छा कार्य करेंगे और कुछ लाभदायक परिवर्तन भी हो सकते हैं। यदि आप नौकरी में हैं तो आप एक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं, किन्तु यदि आप व्यापारी हैं तो आप नए संभावित क्षेत्र में विविधता ला सकते हैं अथवा साझेदारी या सहयोग से लाभान्वित भी हो सकते हैं। आप लाभ और आनन्द के लिए लम्बी यात्राएं भी कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट ऐसी राशि में है जो कि आठवीं पद राशि के समान है, किन्तु राशि का स्वामी अच्छी स्थिति में नहीं है, अतः यह दशा–अवधि आपके लिए काफी समस्यापूर्ण साबित होगी। आपके रिश्तेदार व मित्र आपके प्रति मददगार नहीं हो सकते है एवं आपके शत्रु आपके लिए परेशानियां उत्पन्न करने का प्रयास कर सकते हैं। आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं हो सकता है। यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो आप एक सुनहरा अवसर खो सकते हैं। यदि आप पहले से ही रोजगार में हैं तो आप अपने कार्य स्थल पर अनेक परेशानियों का सामना कर सकते हैं। आपको बहुत सावधान व सतर्क रहना चाहिए क्योंकि आपको किसी दुर्घटना का सामना करना पड़ सकता है अथवा व्यवसाय में आघात लगने का भय है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो नैसर्गिक अशुभ ग्रहों के साथ प्रतिकूल दृष्टि में शामिल है। अतः यह दशा आपके लिए अत्यंत समस्याप्रद साबित हो सकती है। आप कई बार गंभीर प्रकार की समस्याओं का सामना कर सकते हैं– पहली बार लगभग दशा के प्रारम्भ में, उसके बाद दशा के मध्यावधि के आस–पास और उसके बाद दशा के अन्त के समय। आपको अपने पेशे में आघात लग सकता है या भारी नुकसान अथवा इस प्रकार का कुछ हो सकता है। ऐसी घटनाएं पूर्णतः आकस्मिक और अप्रत्याशित रूप से घटित हो सकती हैं। अतः आपको धैर्यपूर्वक और विवेकपूर्ण ढंग से कार्य करना चाहिए। आपको सट्टा, शेयर आदि जैसे काल्पनिक निवेशों से पूर्णतः दूर रहना चाहिए और विवादों व झगड़ों में फंसनें की संभावनाओं से भी बचना चाहिए।

शुक्र (रेवती) दशा : (05:11:1949 से 04:02:1955)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट सातवें भाव में स्थित है, जो कि आपके लग्न से केन्द्र–भाव है। अतः इस दशा के दौरान आप अत्यंत उर्जावान व सक्रिय होंगे और अनेक मामलों में आधारभूत सुधार होगा। यदि आप एक नए रोजगार का अवसर तलाश रहे हैं अथवा अपना खुद का व्यवसाय शुरू करना चाह रहे हैं तो यह समय आपके लिए बहुत अनुकूल है। आपकी विश्वसनीयता और सम्मान नई उंचाईयों को छुएगा। यदि आप अविवाहित हैं तो आप विवाह कर सकते हैं। या फिर आप साझेदारी या सहयोग से लाभान्वित हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट की शनि के साथ 150 डिग्री की दृष्टि में है, अतः इस दशा के दौरान आपको अत्यधिक सावधान व सचेत रहना चाहिए– विशेषकर किसी व्यस्त गली से वाहन चलाकर गुजरते समय अथवा पार करते समय। अन्यथा असामान्य/विचलित मनोस्थिति में वाहन चलाने के कारण किसी छोटी दुर्घटना का शिकार होने की संभावना है।

शुक्र (अश्विनी) दशा : (04:02:1955 से 06:05:1960)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दूसरे भाव (धन) में स्थित है, जो कि धन व परिवार का भाव होने के कारण अनुकूल भाव है। इस दशा के दौरान आप अपने पारिवारिक सदस्यों के लिए धन अर्जित करने में अत्यधिक संलग्न रहेंगे। आप उत्तम भोजन व जीवंत चर्चाओं का आनन्द प्राप्त करेंगे। आप अपने जीवनशैली को उंचा उठाने के लिए कुछ मूल्यवान वस्तुएं जैसे विलासिता व आराम की वस्तुएं प्राप्त करेंगे, आप कुछ आभूषण भी खरीद सकते हैं। आप अपने घर की आंतरिक और/या बाह्य सजावट पर भी काफी धन खर्च कर सकते हैं। इस दशा के दौरान आप एक नया घर प्राप्त कर सकते हैं या नए घर में स्थानान्तरित हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट पांचवीं पद–राशि में है। अतः इस दशा के दौरान आप बहुत महात्वाकांक्षी, उर्जावान व सक्रिय होंगे। आप अपने प्रयत्नों और अथक प्रयासों के द्वारा अपने उद्देश्यों की पूर्ति करेंगे। यदि आप रोजगार की तलाश में हैं तो आपको एक प्रतिष्ठित पद प्राप्त होगा। आपके सभी प्रयत्न पूर्णतः सफल होंगे। आपकी विश्वसनीयता और सम्मान में सदैव वृद्धि होगी। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आपका पारिवारिक जीवन सुखमय व शांतिपूर्ण व्यतीत होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट के नक्षत्र का स्वामी दसवें भाव में स्थित है। अतः इस दशा के दौरान आपके व्यावसायिक संभावनाओं में काफी सुधार होगा। आप कोई नया रोजगार अथवा अधिक जिम्मेदारी वाला पद प्राप्त कर सकते हैं। आपकी विश्वसनीयता, सम्मान और प्रतिष्ठा सभी में वृद्धि होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो नैसर्गिक अशुभ ग्रहों के साथ प्रतिकूल दृष्टि में शामिल है। अतः यह दशा आपके लिए अत्यंत समस्याप्रद साबित हो सकती है। आप कई बार गंभीर प्रकार की समस्याओं का सामना कर सकते हैं– पहली बार लगभग दशा के प्रारम्भ में, उसके बाद दशा के मध्यावधि के आस–पास और उसके बाद दशा के अन्त के समय। आपको अपने पेशे में आघात लग सकता है या भारी नुकसान अथवा इस प्रकार का कुछ हो सकता है। ऐसी घटनाएं पूर्णतः आकस्मिक और अप्रत्याशित रूप से घटित हो सकती हैं। अतः आपको धैर्यपूर्वक और विवेकपूर्ण ढंग से कार्य करना चाहिए। आपको सट्टा, शेयर आदि जैसे काल्पनिक निवेशों से पूर्णतः दूर रहना चाहिए और विवादों व झगड़ों में फंसनें की संभावनाओं से भी बचना चाहिए।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह की अनुकूल दृष्टि में तथा एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह की प्रतिकूल दृष्टि में शामिल है। अतः इस दशा के दौरान आपको मिश्रित फल प्राप्त होगा। आपका स्वास्थ्य कुछ हद तक प्रभावित हो सकता है, क्योंकि प्रतिकूल घटनाओं के कारण परिस्थितियों में आए परिवर्तन से आप निरंतर तनाव में रह सकते हैं– जो कि आपके नियंत्रण से बाहर हो सकता है। फिर भी आप इस दशा के दौरान उत्तम अवस्था में रहेंगे। इस दशा के दौरान भाग्य आप पर किसी समय मेहरबान हो सकता है। आपका घरेलु जीवन सुखमय व शांतिपूर्ण व्यतीत होगा।

शुक्र (भरणी) दशा : (06:05:1960 से 06:08:1965)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट आठवें भाव में स्थित है जो कि प्रतिकूल त्रिक–भाव है। अतः इस दशा के दौरान आपको कुछ अगोचर कारणों अथवा अप्रत्याशित स्रोतों से कुछ गंभीर प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आपको अपने कार्यस्थल पर भी कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है तथा आप अपने वरिष्ठों या सरकारी अधिकारियों के कारण कठिनाई में पड़ सकते हैं। आपको धैर्यपूर्वक व सावधानी से कार्य करना चाहिए एवं मुश्किलों के काले बादल छंट जाने देना चाहिए। आपको दशा के प्रारम्भ में और दशा के अन्त में अत्यधिक सावधान रहना चाहिए।

आपकी जन्मकुण्डली में, इस दशा में, एक ही ग्रह ग्रह–स्वामी और नक्षत्र–स्वामी दोनों है। अतः दशा अवधि निश्चित रूप से घटनाओं से पूर्ण होगी। लगभग दशा के प्रारम्भ में, दशा की मध्यावधि में एवं दशा के अन्त में भी कुछ महत्वपूर्ण अनुकूल परिवर्तन हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में यह एक विशेष दशा है, जब पंचमेश दशा का स्वामी है। इस दशा के दौरान आप बहुत भाग्यशाली होंगे और अपने मित्रों व यहां तक कि अप्रत्याशित क्षेत्रों से भी सहयोग प्राप्त करेंगे। आपके व्यवसाय के क्षेत्र में पर्याप्त सुधार होगा। आप कोई नया रोजगार अथवा पदोन्नति प्राप्त कर सकते हैं तथा उदार परिलब्धियों/अतिरिक्त सुविधाओं के साथ बेहतर वेतन का आनन्द प्राप्त कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में यह एक विशेष दशा है, जब द्वादशेश दशा का स्वामी है। अतः इस दशा के दौरान आप कुछ क्षेत्रों में छोटी–मोटी परेशानियों का सामना कर सकते हैं। आपका स्वास्थ्य अधिक अच्छा नहीं हो सकता है एवं आपको कुछ समय तक बिस्तर पर रहना पड़ सकता है। कुछ ईर्ष्यालु व्यक्ति आपके विरूद्ध गुप्त रूप से या तो कुछ परेशानियां उत्पन्न कर सकते है या आपकी छवि धूमिल करने का प्रयास कर सकते हैं। आपका स्थानान्तरण अथवा रोजगार में परिवर्तन हो सकता है, आपको दूरस्थ स्थान पर जाना पड़ सकता है तथा वहां लम्बे समय तक असुविधाजनक परिस्थितियों में रहना भी पड़ सकता है। आपको अपने व्यवसाय के संबंध कुछ निरर्थक यात्राएं भी करनी पड़ सकती हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रतिकारी योग उपस्थित नहीं हैं तो आपको कुछ धन हानि हो सकती है अथवा धन अवरूद्ध होने के कारण आपको मंदी/गतिहीन स्थिति का सामना करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में यह एक विशेष दशा है, जब एक नैसर्गिक शुभ ग्रह शुक्र दशा का स्वामी है। अतः इस दशा के दौरान आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे। आप बहुत प्रसन्नचित्त मुद्रा में रहेंगे एवं आरामदायक व आधुनिकता पूर्ण जीवन जीने के शौकीन होंगे। यदि आप अभी तक अविवाहित हैं तो आपका विपरीत लिंग के किसी व्यक्ति के साथ अंतरंग संबंध स्थापित हो सकते हैं एवं यहां तक कि विवाह भी कर सकते हैं। किन्तु यदि आप पहले से विवाहित हैं तो आपके परिवार की महिला सदस्य आपके लिए गौरव व आनन्द का स्रोत बन सकती है।

सूर्य (कृतिका) दशा : (06:08:1965 से 06:08:1967)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट छठवें भाव में स्थित है जो कि प्रतिकूल त्रिक–भाव है। अतः इस दशा के दौरान परिस्थितिजन्य घटनाओं के कारण आपको कुछ गंभीर प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है, जो कि आपके नियंत्रण से बाहर होगा। आपको अपने कार्यस्थल पर भी कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है तथा आप अपने वरिष्ठों या सरकारी अधिकारियों के कारण कठिनाई में पड़ सकते हैं। आपके शत्रु आपके लिए परेशानियां पैदा कर सकते हैं और आप निरंतर तनाव झेल सकते हैं। आपका व्यय आपकी आय से अधिक हो सकता है एवं आपको समय–समय पर अपनी जरूरतें पूरा करने के लिए ऋण लेना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट बारहवीं पद राशि में है, अतः इस दशा के दौरान व्यवसाय से प्राप्त होने वाली आपकी आय में गिरावट आ सकती है और आपके दायरे के कुछ ईर्ष्यालु व्यक्ति आपकी छवि धूमिल करने के लिए गुप्त रूप से आपके विरूद्ध कार्य कर सकते हैं एवं आपकी प्रतिष्ठा व सम्मान को ध्वस्त करने का प्रयत्न कर सकते हैं। आपका व्यय आपकी आय से अधिक हो सकता है तथा आपके धन के अवरूद्ध होने अथवा हानि होने की भी संभावना है। अतः आपको सट्टा, शेयर आदि जैसे काल्पनिक निवेशों एवं कर्ज देने से पूर्णतः बचना चाहिए। अपने व्यवसाय के संबंध में आपको कुछ यात्राएं करनी पड़ सकती हैं, जो कि अधिक फलदायक नहीं हो सकता है। आपको अपने स्वास्थ्य का उचित ध्यान रखना चाहिए। आपको पर्याप्त नींद और आराम की भी आवश्यकता होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, इस दशा में, एक ही ग्रह ग्रह–स्वामी और नक्षत्र–स्वामी दोनों है। अतः दशा अवधि निश्चित रूप से घटनाओं से पूर्ण होगी। लगभग दशा के प्रारम्भ में, दशा की मध्यावधि में एवं दशा के अन्त में भी कुछ महत्वपूर्ण अनुकूल परिवर्तन हो सकते हैं।

सूर्य (रोहिणी) दशा : (06:08:1967 से 06:08:1969)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट आपके लग्न में स्थित है। अतः इस दशा के दौरान आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे– विशेषकर परिवार और वित्तिय मामलों के संबंध में। आप बहुत उर्जावान और सक्रिय होंगे तथा अपनी अर्जित योग्यताओं और प्रशंसनीय उपलब्धियों के लिए सुविख्यात होंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में अच्छा कार्य करेंगे

और कुछ लाभदायक परिवर्तन भी हो सकते हैं। यदि आपकी रूचि है तो आप नए संभावित क्षेत्र में विविधीकरण का कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं और/या साझेदारी या सहयोग से लाभान्वित भी हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट तीसरी पद राशि में है, अतः इस दशा के दौरान आप अपने व्यवसाय के सबंध में किसी यात्रा पर जा सकते हैं। या तो आपका किसी निकट स्थान पर तबादला हो सकता है या आप ऐसे किसी स्थान पर नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप अपना कोई नया उपक्रम प्रारम्भ करने की सोच रहे हैं तो यह समय आपके लिए अनुकूल है। आपके सगे और चचेरे अनुज, पड़ोसी एवं सहकर्मी तक आपके लिए सहयोगी व मददगार होंगे। किन्तु आपकी माता का स्वास्थ्य आपको चिन्तित अवस्था में रख सकता है।

सूर्य (मृगशिर) दशा : (06:08:1969 से 06:08:1971)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दूसरे भाव (धन) में स्थित है, जो कि धन व परिवार का भाव होने के कारण अनुकूल भाव है। इस दशा के दौरान आप अपने पारिवारिक सदस्यों के लिए धन अर्जित करने में अत्यधिक संलग्न रहेंगे। आप उत्तम भोजन व जीवंत चर्चाओं का आनन्द प्राप्त करेंगे। आप अपने जीवनशैली को उंचा उठाने के लिए कुछ मूल्यवान वस्तुएं जैसे विलासिता व आराम की वस्तुएं प्राप्त करेंगे, आप कुछ आभूषण भी खरीद सकते हैं। आप अपने घर की आंतरिक और/या बाह्य सजावट पर भी काफी धन खर्च कर सकते हैं। इस दशा के दौरान आप एक नया घर प्राप्त कर सकते हैं या नए घर में स्थानान्तरित हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट पांचवीं पद–राशि में है। अतः इस दशा के दौरान आप बहुत महात्वाकांक्षी, उर्जावान व सक्रिय होंगे। आप अपने प्रयत्नों और अथक प्रयासों के द्वारा अपने उद्देश्यों की पूर्ति करेंगे। यदि आप रोजगार की तलाश में हैं तो आपको एक प्रतिष्ठित पद प्राप्त होगा। आपके सभी प्रयत्न पूर्णतः सफल होंगे। आपकी विश्वसनीयता और सम्मान में सदैव वृद्धि होगी। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आपका पारिवारिक जीवन सुखमय व शांतिपूर्ण व्यतीत होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट के नक्षत्र का स्वामी दसवें भाव में स्थित है। अतः इस दशा के दौरान आपके व्यावसायिक संभावनाओं में काफी सुधार होगा। आप कोई नया रोजगार अथवा अधिक जिम्मेदारी वाला पद प्राप्त कर सकते हैं। आपकी विश्वसनीयता, सम्मान और प्रतिष्ठा सभी में वृद्धि होगी।

चन्द्रमा (अरिद्रा) दशा : (06:08:1971 से 07:05:1975)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दूसरे भाव (धन) में स्थित है, जो कि धन व परिवार का भाव होने के कारण अनुकूल भाव है। इस दशा के दौरान आप अपने पारिवारिक सदस्यों के लिए धन अर्जित करने में अत्यधिक संलग्न रहेंगे। आप उत्तम भोजन व जीवंत चर्चाओं का आनन्द प्राप्त करेंगे। आप अपने जीवनशैली को उंचा उठाने के लिए कुछ मूल्यवान वस्तुएं जैसे विलासिता व आराम की वस्तुएं प्राप्त करेंगे, आप कुछ आभूषण भी खरीद सकते हैं। आप अपने घर की आंतरिक और/या बाह्य सजावट पर भी काफी धन खर्च कर सकते हैं। इस दशा के दौरान आप एक नया घर प्राप्त कर सकते हैं या नए घर में स्थानान्तरित हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट पांचवीं पद–राशि में है। अतः इस दशा के दौरान आप बहुत महात्वाकांक्षी, उर्जावान व सक्रिय होंगे। आप अपने प्रयत्नों और अथक प्रयासों के द्वारा अपने उद्देश्यों की पूर्ति करेंगे। यदि आप रोजगार की तलाश में हैं तो आपको एक प्रतिष्ठित पद प्राप्त होगा। आपके सभी प्रयत्न पूर्णतः सफल होंगे। आपकी विश्वसनीयता और सम्मान में सदैव वृद्धि होगी। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आपका पारिवारिक जीवन सुखमय व शांतिपूर्ण व्यतीत होगा।

चन्द्रमा (पुनर्वसु) दशा : (07:05:1975 से 04:02:1979)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट ग्यारहवें भाव (लाभ) में है, जो कि बहुत अनुकूल है क्योंकि यह आय और लाभ का भाव है, इसलिए आपके व्यवसाय से प्राप्त होने वाली

आपकी आय में और अन्य स्रोतों से प्राप्त होने वाले लाभ में निरंतर वृद्धि होती रहेगी और आप अपने मित्रों व शुभ चिन्तकों से प्रत्यक्ष लाभ व अप्रत्यक्ष सहयोग प्राप्त करेंगे। आपकी विश्वसनीयता, सम्मान आप प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। आपकी कुछ महात्वाकांक्षाएं फलीभूत होंगी एवं आपकी कुछ हार्दिक इच्छाएं पूरी होंगी। आप मनोरंजन एवं लाभ के लिए लम्बी यात्राएं भी कर सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में ग्यारहवें भाव का स्वामी अच्छी स्थिति में है तो आप किसी सांस्कृतिक या शैक्षिक उद्देश्य से किसी दूरस्थ स्थान अथवा विदेश तक की यात्रा कर सकते हैं। हालांकि आपकी माता का स्वास्थ्य व सुख आपको चिन्तित कर सकता है।

चन्द्रमा (पुष्य) दशा : (04:02:1979 से 05:11:1982)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दसवें भाव में स्थित है, जो कि आपके लग्न से केन्द्र–भाव है। अतः इस दशा के दौरान आप अत्यंत उर्जावान व सक्रिय होंगे और अनेक मामलों में आधारभूत सुधार होगा। यदि आप औपचारिक रूप से अध्ययनरत हैं तो आप अत्यंत अधिक उन्नति करेंगे, परीक्षाओं में सफलता अर्जित करेंगे और गौरवपूर्ण योग्यता प्राप्त करेंगे। आप अपने गुणों, अर्जित योग्यताओं और प्रशंसनीय उपलब्धियों के कारण उचित पहचान प्राप्त करेंगे। आप अपने व्यवसाय में काफी सुधार करेंगे और कुछ लाभदायक परिवर्तन हो सकते हैं। आपकी विश्वसनीयता और सम्मान नई उचांईयों को छुएगा। किन्तु जैसाकि आप अपना अत्यधिक ध्यान अपने व्यवसाय की ओर लगाएंगे तो आपका घरेलु जीवन कुछ–कुछ उपेक्षित हो सकता है।

चन्द्रमा (अश्लेषा) दशा : (05:11:1982 से 06:08:1986)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट आपके लग्न में स्थित है। अतः इस दशा के दौरान आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे– विशेषकर परिवार और वित्तिय मामलों के संबंध में। आप बहुत उर्जावान और सक्रिय होंगे तथा अपनी अर्जित योग्यताओं और प्रशंसनीय उपलब्धियों के लिए सुविख्यात होंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में अच्छा कार्य करेंगे और कुछ लाभदायक परिवर्तन भी हो सकते हैं। यदि आपकी रूचि है तो आप नए संभावित क्षेत्र में विविधीकरण का कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं और/या साझेदारी या सहयोग से लाभान्वित भी हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट तीसरी पद राशि में है, अतः इस दशा के दौरान आप अपने व्यवसाय के सबंध में किसी यात्रा पर जा सकते हैं। या तो आपका किसी निकट स्थान पर तबादला हो सकता है या आप ऐसे किसी स्थान पर नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप अपना कोई नया उपक्रम प्रारम्भ करने की सोच रहे हैं तो यह समय आपके लिए अनुकूल है। आपके सगे और चचेरे अनुज, पड़ोसी एवं सहकर्मी तक आपके लिए सहयोगी व मददगार होंगे। किन्तु आपकी माता का स्वास्थ्य आपको चिन्तित अवस्था में रख सकता है।

मंगल (मघा) दशा : (06:08:1986 से 06:04:1989)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट नौवें भाव में स्थित है जो कि आपके लग्न से एक त्रिकोण–भाव है। अतः इस दशा के दौरान आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे– विशेषकर वित्तिय और विदेश मामलों के संबंध में। आप अपने गुणों, अर्जित योग्यताओं और प्रशंसनीय उपलब्धियों के कारण उचित पहचान प्राप्त करेंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में अच्छा कार्य करेंगे और कुछ लाभदायक परिवर्तन भी हो सकते हैं। यदि आप नौकरी में हैं तो आप एक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं, किन्तु यदि आप व्यापारी हैं तो आप नए संभावित क्षेत्र में विविधता ला सकते हैं अथवा साझेदारी या सहयोग से लाभान्वित भी हो सकते हैं। आप लाभ और आनन्द के लिए लम्बी यात्राएं भी कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट की सूर्य के साथ 150 डिग्री की दृष्टि में है, अतः इस दशा के दौरान आपको अत्यधिक सावधान व सचेत रहना चाहिए– विशेषकर किसी व्यस्त गली से वाहन चलाकर गुजरते समय अथवा पार करते समय। अन्यथा यातायात नियमों का ध्यान दिए बिना वाहन चलाने के कारण किसी छोटी दुर्घटना का शिकार होने की संभावना है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट ग्यारहवीं पद राशि में है, अतः इस दशा के दौरान व्यवसाय से प्राप्त होने वाली आपकी आय, अन्य स्रोतो से प्राप्त होने वाले लाभ तथा मित्रों के दायरे सभी में वृद्धि होगी। आप आनन्दपूर्ण मुद्रा में रहेंगे तथा अपने रिश्तेदारों व मित्रों के साथ अपने जीवन का सुखपूर्वक आनन्द प्राप्त करेंगे। आपकी कुछ महात्वाकांक्षाएं फलीभूत होंगी एवं आपकी कुछ हार्दिक इच्छाएं पूरी होंगी। आप मनोरंजन एवं लाभ के लिए लम्बी यात्रा भी कर सकते हैं और आपके परिवार में कोई शुभ समारोह आयोजित हो सकता है। किन्तु आपकी माता का स्वास्थ्य आपको चिन्तित अवस्था में रख सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट के नक्षत्र का स्वामी दसवें भाव में स्थित है। अतः इस दशा के दौरान आपके व्यावसायिक संभावनाओं में काफी सुधार होगा। आप कोई नया रोजगार अथवा अधिक जिम्मेदारी वाला पद प्राप्त कर सकते हैं। आपकी विश्वसनीयता, सम्मान और प्रतिष्ठा सभी में वृद्धि होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो नैसर्गिक अशुभ ग्रहों के साथ प्रतिकूल दृष्टि में शामिल है। अतः यह दशा आपके लिए अत्यंत समस्याप्रद साबित हो सकती है। आप कई बार गंभीर प्रकार की समस्याओं का सामना कर सकते हैं– पहली बार लगभग दशा के प्रारम्भ में, उसके बाद दशा के मध्यावधि के आस–पास और उसके बाद दशा के अन्त के समय। आपको अपने पेशे में आघात लग सकता है या भारी नुकसान अथवा इस प्रकार का कुछ हो सकता है। ऐसी घटनाएं पूर्णतः आकस्मिक और अप्रत्याशित रूप से घटित हो सकती हैं। अतः आपको धैर्यपूर्वक और विवेकपूर्ण ढंग से कार्य करना चाहिए। आपको सट्टा, शेयर आदि जैसे काल्पनिक निवेशों से पूर्णतः दूर रहना चाहिए और विवादों व झगड़ों में फंसनें की संभावनाओं से भी बचना चाहिए।

मंगल (पुर्वफाल्गुनी) दशा : (06:04:1989 से 05:12:1991)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट तीसरे भाव में है जो कि कई मामलों में अनुकूल है। इस दशा के दौरान आप अपने व्यवसाय के सिलसिले में कुछ छोटी यात्राएं कर सकते हैं। यदि आप रोजगार में परिवर्तन अथवा स्थानान्तरण अथवा नए घर में स्थानान्तरित होते के बारे में सोच रहे हैं तो यह अवधि आपके लिए अनुकूल है। यदि आप नौकरी में हैं तो आप बहुत अच्छा कार्य करेंगे तथा इससे भी अधिक जिम्मेदारी वाले किसी पद पर आसीन हो सकते हैं। यदि आप लेखक, सम्पादक या अनुवादक हैं तो आप सर्वाधिक प्रगति करेंगे। किन्तु यदि आप मुद्रण, प्रकाशन, विज्ञापन आदि से संबंधित व्यवसाय में हैं तो आप बहुत सम्पन्न होंगे। फिर भी, आपकी माता का स्वास्थ्य और सुख आपको चिन्तित कर सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट नौवें पद राशि में है, अतः इस दशा के दौरान आप अपने व्यवसाय के सबंध में एक लम्बी यात्रा पर जा सकते हैं। या तो आपका किसी दूरस्थ स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है या आप ऐसे किसी स्थान पर नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप अपना कोई नया उपक्रम प्रारम्भ करने की सोच रहे हैं तो यह समय आपके लिए अनुकूल है। आप किसी धनी और प्रभावशाली व्यक्ति से बिल्कुल अप्रत्याशित रूप से कुछ समर्थन और लाभ प्राप्त करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट प्रथम पद–राशि में है। अतः आप बहुत भाग्यशाली होंगे। आप बहुत उर्जावान व सक्रिय होंगे। इस दशा के दौरान आप अपने प्रयत्नों और अथक प्रयासों के द्वारा अपने उद्देश्यों की पूर्ति करेंगे। आप अपनी विशेष उपलब्धियों के कारण अपने परिवार के लिए गौरव और आनन्द का स्रोत होंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आपका पारिवारिक जीवन सुखमय व शांतिपूर्ण व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त आपके परिवार में कोई शुभ समारोह आयोजित हो सकता है।

मंगल (उत्तरफाल्गुनी) दशा : (05:12:1991 से 06:08:1994)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दूसरे भाव (धन) में स्थित है, जो कि धन व परिवार का भाव होने के कारण अनुकूल भाव है। इस दशा के दौरान आप अपने पारिवारिक

सदस्यों के लिए धन अर्जित करने में अत्यधिक संलग्न रहेंगे। आप उत्तम भोजन व जीवंत चर्चाओं का आनन्द प्राप्त करेंगे। आप अपने जीवनशैली को उंचा उठाने के लिए कुछ मूल्यवान वस्तुएं जैसे विलासिता व आराम की वस्तुएं प्राप्त करेंगे, आप कुछ आभूषण भी खरीद सकते हैं। आप अपने घर की आंतरिक और/या बाह्य सजावट पर भी काफी धन खर्च कर सकते हैं। इस दशा के दौरान आप एक नया घर प्राप्त कर सकते हैं या नए घर में स्थानान्तरित हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट पांचवीं पद–राशि में है। अतः इस दशा के दौरान आप बहुत महात्वाकांक्षी, उर्जावान व सक्रिय होंगे। आप अपने प्रयत्नों और अथक प्रयासों के द्वारा अपने उद्देश्यों की पूर्ति करेंगे। यदि आप रोजगार की तलाश में हैं तो आपको एक प्रतिष्ठित पद प्राप्त होगा। आपके सभी प्रयत्न पूर्णतः सफल होंगे। आपकी विश्वसनीयता और सम्मान में सदैव वृद्धि होगी। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आपका पारिवारिक जीवन सुखमय व शांतिपूर्ण व्यतीत होगा।

बुध (हस्ता) दशा : (06:08:1994 से 05:11:1998)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट आपके लग्न में स्थित है। अतः इस दशा के दौरान आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे– विशेषकर परिवार और वित्तिय मामलों के संबंध में। आप बहुत उर्जावान और सक्रिय होंगे तथा अपनी अर्जित योग्यताओं और प्रशंसनीय उपलब्धियों के लिए सुविख्यात होंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में अच्छा कार्य करेंगे और कुछ लाभदायक परिवर्तन भी हो सकते हैं। यदि आपकी रूचि है तो आप नए संभावित क्षेत्र में विविधीकरण का कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं और/या साझेदारी या सहयोग से लाभान्वित भी हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट तीसरी पद राशि में है, अतः इस दशा के दौरान आप अपने व्यवसाय के सबंध में किसी यात्रा पर जा सकते हैं। या तो आपका किसी निकट स्थान पर तबादला हो सकता है या आप ऐसे किसी स्थान पर नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप अपना कोई नया उपक्रम प्रारम्भ करने की सोच रहे हैं तो यह समय आपके लिए अनुकूल है। आपके सगे और चचेरे अनुज, पड़ोसी एवं सहकर्मी तक आपके लिए सहयोगी व मददगार होंगे। किन्तु आपकी माता का स्वास्थ्य आपको चिन्तित अवस्था में रख सकता है।

बुध (चित्रा) दशा : (05:11:1998 से 04:02:2003)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दूसरे भाव (धन) में स्थित है, जो कि धन व परिवार का भाव होने के कारण अनुकूल भाव है। इस दशा के दौरान आप अपने पारिवारिक सदस्यों के लिए धन अर्जित करने में अत्यधिक संलग्न रहेंगे। आप उत्तम भोजन व जीवंत चर्चाओं का आनन्द प्राप्त करेंगे। आप अपने जीवनशैली को उंचा उठाने के लिए कुछ मूल्यवान वस्तुएं जैसे विलासिता व आराम की वस्तुएं प्राप्त करेंगे, आप कुछ आभूषण भी खरीद सकते हैं। आप अपने घर की आंतरिक और/या बाह्य सजावट पर भी काफी धन खर्च कर सकते हैं। इस दशा के दौरान आप एक नया घर प्राप्त कर सकते हैं या नए घर में स्थानान्तरित हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट पांचवीं पद–राशि में है। अतः इस दशा के दौरान आप बहुत महात्वाकांक्षी, उर्जावान व सक्रिय होंगे। आप अपने प्रयत्नों और अथक प्रयासों के द्वारा अपने उद्देश्यों की पूर्ति करेंगे। यदि आप रोजगार की तलाश में हैं तो आपको एक प्रतिष्ठित पद प्राप्त होगा। आपके सभी प्रयत्न पूर्णतः सफल होंगे। आपकी विश्वसनीयता और सम्मान में सदैव वृद्धि होगी। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आपका पारिवारिक जीवन सुखमय व शांतिपूर्ण व्यतीत होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट के नक्षत्र का स्वामी दसवें भाव में स्थित है। अतः इस दशा के दौरान आपके व्यावसायिक संभावनाओं में काफी सुधार होगा। आप कोई नया रोजगार अथवा अधिक जिम्मेदारी वाला पद प्राप्त कर सकते हैं। आपकी विश्वसनीयता, सम्मान और प्रतिष्ठा सभी में वृद्धि होगी।

बुध (स्वाति) दशा : (04:02:2003 से 07:05:2007)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट सातवें भाव में स्थित है, जो कि आपके लग्न से केन्द्र–भाव है। अतः इस दशा के दौरान आप अत्यंत उर्जावान व सक्रिय होंगे और अनेक मामलों में आधारभूत सुधार होगा। यदि आप एक नए रोजगार का अवसर तलाश रहे हैं अथवा अपना खुद का व्यवसाय शुरू करना चाह रहे हैं तो यह समय आपके लिए बहुत अनुकूल है। आपकी विश्वसनीयता और सम्मान नई उंचाईयों को छुएगा। यदि आप अविवाहित हैं तो आप विवाह कर सकते हैं। या फिर आप साझेदारी या सहयोग से लाभान्वित हो सकते हैं।

बुध (विशाखा) दशा : (07:05:2007 से 06:08:2011)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट चौथे भाव में स्थित है जो कि आपके लग्न से एक त्रिकोण–भाव है। अतः इस दशा के दौरान आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे– विशेषकर वित्तिय और विदेश मामलों के संबंध में। आप अपने गुणों, अर्जित योग्यताओं और प्रशंसनीय उपलब्धियों के कारण उचित पहचान प्राप्त करेंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में अच्छा कार्य करेंगे और कुछ लाभदायक परिवर्तन भी हो सकते हैं। यदि आप नौकरी में हैं तो आप एक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं, किन्तु यदि आप व्यापारी हैं तो आप नए संभावित क्षेत्र में विविधता ला सकते हैं अथवा साझेदारी या सहयोग से लाभान्वित भी हो सकते हैं। आप लाभ और आनन्द के लिए लम्बी यात्राएं भी कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट ऐसी राशि में है जो कि आठवीं पद राशि के समान है, किन्तु राशि का स्वामी अच्छी स्थिति में नहीं है, अतः यह दशा–अवधि आपके लिए काफी समस्यापूर्ण साबित होगी। आपके रिश्तेदार व मित्र आपके प्रति मददगार नहीं हो सकते है एवं आपके शत्रु आपके लिए परेशानियां उत्पन्न करने का प्रयास कर सकते हैं। आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं हो सकता है। यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो आप एक सुनहरा अवसर खो सकते हैं। यदि आप पहले से ही रोजगार में हैं तो आप अपने कार्य स्थल पर अनेक परेशानियों का सामना कर सकते हैं। आपको बहुत सावधान व सतर्क रहना चाहिए क्योंकि आपको किसी दुर्घटना का सामना करना पड़ सकता है अथवा व्यवसाय में आघात लगने का भय है।

शनि (अनुराधा) दशा : (06:08:2011 से 05:12:2014)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट आपके लग्न में स्थित है। अतः इस दशा के दौरान आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे– विशेषकर परिवार और वित्तिय मामलों के संबंध में। आप बहुत उर्जावान और सक्रिय होंगे तथा अपनी अर्जित योग्यताओं और प्रशंसनीय उपलब्धियों के लिए सुविख्यात होंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में अच्छा कार्य करेंगे और कुछ लाभदायक परिवर्तन भी हो सकते हैं। यदि आपकी रूचि है तो आप नए संभावित क्षेत्र में विविधीकरण का कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं और/या साझेदारी या सहयोग से लाभान्वित भी हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट तीसरी पद राशि में है, अतः इस दशा के दौरान आप अपने व्यवसाय के सबंध में किसी यात्रा पर जा सकते हैं। या तो आपका किसी निकट स्थान पर तबादला हो सकता है या आप ऐसे किसी स्थान पर नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप अपना कोई नया उपक्रम प्रारम्भ करने की सोच रहे हैं तो यह समय आपके लिए अनुकूल है। आपके सगे और चचेरे अनुज, पड़ोसी एवं सहकर्मी तक आपके लिए सहयोगी व मददगार होंगे। किन्तु आपकी माता का स्वास्थ्य आपको चिन्तित अवस्था में रख सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, इस दशा में, एक ही ग्रह ग्रह–स्वामी और नक्षत्र–स्वामी दोनों है। अतः दशा अवधि निश्चित रूप से घटनाओं से पूर्ण होगी। लगभग दशा के प्रारम्भ में, दशा की मध्यावधि में एवं दशा के अन्त में भी कुछ महत्वपूर्ण अनुकूल परिवर्तन हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में यह एक विशेष दशा है, जब अष्टमेश दशा का स्वामी है। अतः दशा के दौरान आपको कुछ प्रतिकूल घटनाओं का सामना करना पड़ सकता है। ऐसी संभावना है कि आप किसी छोटी दुर्घटना का शिकार, किसी आपदा से परेशान, किसी गंभीर विवाद या झगड़े में फंसने से परेशान हो सकते हैं। यदि आप नौकरी में हैं तो आपको अपना पद बनाए रखने के लिए कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आपके स्थानान्तरण या रोजगार में परिवर्तन की भी संभावना है। इसके अतिरिक्त आपके पिता का स्वास्थ्य व सुख आपको चिन्तित कर सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में यह एक विशेष दशा है, जब एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह शनि दशा का स्वामी है, जो कि शक्तिशाली नहीं है क्योंकि यह ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपने भाव में है। अतः यह दशा आपके लिए काफी कष्टप्रद साबित हो सकता है। आप अनेक मामलों में विलम्ब और निराशाओं के कारण दुखी हो सकते हैं। आपकी सामान्य प्रगति बाधित हो सकती है और आपको अनेक अवरोधों का सामना करने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। आपकी विश्वसनीयता और सम्मान धीरे–धीरे मंद पड़ सकती है।

शनि (ज्येष्ठा) दशा : (05:12:2014 से 06:04:2018)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट तीसरे भाव में है जो कि कई मामलों में अनुकूल है। इस दशा के दौरान आप अपने व्यवसाय के सिलसिले में कुछ छोटी यात्राएं कर सकते हैं। यदि आप रोजगार में परिवर्तन अथवा स्थानान्तरण अथवा नए घर में स्थानान्तरित होते के बारे में सोच रहे हैं तो यह अवधि आपके लिए अनुकूल है। यदि आप नौकरी में हैं तो आप बहुत अच्छा कार्य करेंगे तथा इससे भी अधिक जिम्मेदारी वाले किसी पद पर आसीन हो सकते हैं। यदि आप लेखक, सम्पादक या अनुवादक हैं तो आप सर्वाधिक प्रगति करेंगे। किन्तु यदि आप मुद्रण, प्रकाशन, विज्ञापन आदि से संबंधित व्यवसाय में हैं तो आप बहुत सम्पन्न होंगे। फिर भी, आपकी माता का स्वास्थ्य और सुख आपको चिन्तित कर सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट नौवें पद राशि में है, अतः इस दशा के दौरान आप अपने व्यवसाय के सबंध में एक लम्बी यात्रा पर जा सकते हैं। या तो आपका किसी दूरस्थ स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है या आप ऐसे किसी स्थान पर नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप अपना कोई नया उपक्रम प्रारम्भ करने की सोच रहे हैं तो यह समय आपके लिए अनुकूल है। आप किसी धनी और प्रभावशाली व्यक्ति से बिल्कुल अप्रत्याशित रूप से कुछ समर्थन और लाभ प्राप्त करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट प्रथम पद–राशि में है। अतः आप बहुत भाग्यशाली होंगे। आप बहुत उर्जावान व सक्रिय होंगे। इस दशा के दौरान आप अपने प्रयत्नों और अथक प्रयासों के द्वारा अपने उद्देश्यों की पूर्ति करेंगे। आप अपनी विशेष उपलब्धियों के कारण अपने परिवार के लिए गौरव और आनन्द का स्रोत होंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आपका पारिवारिक जीवन सुखमय व शांतिपूर्ण व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त आपके परिवार में कोई शुभ समारोह आयोजित हो सकता है।

शनि (मूला) दशा : (06:04:2018 से 06:08:2021)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट ग्यारहवें भाव (लाभ) में है, जो कि बहुत अनुकूल है क्योंकि यह आय और लाभ का भाव है, इसलिए आपके व्यवसाय से प्राप्त होने वाली आपकी आय में और अन्य स्रोतों से प्राप्त होने वाले लाभ में निरंतर वृद्धि होती रहेगी और आप अपने मित्रों व शुभ चिन्तकों से प्रत्यक्ष लाभ व अप्रत्यक्ष सहयोग प्राप्त करेंगे। आपकी विश्वसनीयता, सम्मान आप प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। आपकी कुछ महात्वाकांक्षाएं फलीभूत होंगी एवं आपकी कुछ हार्दिक इच्छाएं पूरी होंगी। आप मनोरंजन एवं लाभ के लिए लम्बी यात्राएं भी कर सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में ग्यारहवें भाव का स्वामी अच्छी स्थिति में है तो आप किसी सांस्कृतिक या शैक्षिक उद्देश्य से किसी दूरस्थ स्थान अथवा विदेश तक की यात्रा कर सकते हैं। हालांकि आपकी माता का स्वास्थ्य व सुख आपको चिन्तित कर सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट के नक्षत्र का स्वामी दसवें भाव में स्थित है। अतः इस दशा के दौरान आपके व्यावसायिक संभावनाओं में काफी सुधार होगा। आप कोई नया रोजगार अथवा अधिक जिम्मेदारी वाला पद प्राप्त कर सकते हैं। आपकी विश्वसनीयता, सम्मान और प्रतिष्ठा सभी में वृद्धि होगी।

बृहस्पति (पूर्वाषाढ़) दशा : (06:08:2021 से 07:05:2026)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट पांचवें भाव में स्थित है जो कि आपके लग्न से एक त्रिकोण–भाव है। अतः इस दशा के दौरान आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे– विशेषकर संतान और वित्तिय मामलों के संबंध में। आप अपनी अर्जित योग्यताओं और प्रशंसनीय उपलब्धियों के कारण उचित पहचान प्राप्त करेंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में अच्छा कार्य करेंगे और कुछ लाभदायक परिवर्तन भी हो सकते हैं। यदि आप नौकरी में हैं तो आप एक लाभप्रद पदोन्नति प्राप्त कर सकते हैं, किन्तु यदि आप व्यापारी हैं तो आप नए संभावित क्षेत्र में विविधता ला सकते हैं अथवा साझेदारी या सहयोग से लाभान्वित भी हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट सातवीं पद–राशि में है। अतः इस दशा के दौरान आप बहुत सक्रिय होंगे। आप अपने प्रयत्नों और अथक प्रयासों के द्वारा अपने उद्देश्यों की पूर्ति करेंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो शादी के बन्धन में बंध सकते हैं। यदि आप साझेदारी या सहभागिता करना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए अनुकूल है। आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा एवं आपका पारिवारिक जीवन सुखमय व शांतिपूर्ण व्यतीत होगा। यदि आपके व्यवसाय का कोई संबंध विदेशी व्यापार या विदेशों से संबंध रखने वाली कम्पनियों से है तो आप ऐसे स्रोतों से भारी लाभ प्राप्त कर सकते हैं एवं धन एकत्र कर सकते हैं।

बृहस्पति (उत्तराषाढ़) दशा : (07:05:2026 से 04:02:2031)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट चौथे भाव में स्थित है जो कि आपके लग्न से एक त्रिकोण–भाव है। अतः इस दशा के दौरान आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे– विशेषकर वित्तिय और विदेश मामलों के संबंध में। आप अपने गुणों, अर्जित योग्यताओं और प्रशंसनीय उपलब्धियों के कारण उचित पहचान प्राप्त करेंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में अच्छा कार्य करेंगे और कुछ लाभदायक परिवर्तन भी हो सकते हैं। यदि आप नौकरी में हैं तो आप एक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं, किन्तु यदि आप व्यापारी हैं तो आप नए संभावित क्षेत्र में विविधता ला सकते हैं अथवा साझेदारी या सहयोग से लाभान्वित भी हो सकते हैं। आप लाभ और आनन्द के लिए लम्बी यात्राएं भी कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट ऐसी राशि में है जो कि आठवीं पद राशि के समान है, किन्तु राशि का स्वामी अच्छी स्थिति में नहीं है, अतः यह दशा–अवधि आपके लिए काफी समस्यापूर्ण साबित होगी। आपके रिश्तेदार व मित्र आपके प्रति मददगार नहीं हो सकते है एवं आपके शत्रु आपके लिए परेशानियां उत्पन्न करने का प्रयास कर सकते हैं। आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं हो सकता है। यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो आप एक सुनहरा अवसर खो सकते हैं। यदि आप पहले से ही रोजगार में हैं तो आप अपने कार्य स्थल पर अनेक परेशानियों का सामना कर सकते हैं। आपको बहुत सावधान व सतर्क रहना चाहिए क्योंकि आपको किसी दुर्घटना का सामना करना पड़ सकता है अथवा व्यवसाय में आघात लगने का भय है।

बृहस्पति (अभिजीत) दशा : (04:02:2031 से 05:11:2035)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट चौथे भाव में स्थित है जो कि आपके लग्न से एक त्रिकोण–भाव है। अतः इस दशा के दौरान आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे– विशेषकर वित्तिय और विदेश मामलों के संबंध में। आप अपने गुणों, अर्जित योग्यताओं और प्रशंसनीय उपलब्धियों के कारण उचित पहचान प्राप्त करेंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में अच्छा कार्य करेंगे और कुछ लाभदायक परिवर्तन भी हो सकते हैं। यदि आप नौकरी में हैं तो आप एक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं, किन्तु यदि आप व्यापारी हैं तो आप नए संभावित क्षेत्र में विविधता ला सकते हैं अथवा साझेदारी या सहयोग से लाभान्वित भी हो सकते हैं। आप लाभ और आनन्द के लिए लम्बी यात्राएं भी कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट ऐसी राशि में है जो कि आठवीं पद राशि के समान है, किन्तु राशि का स्वामी अच्छी स्थिति में नहीं है, अतः यह दशा–अवधि आपके लिए काफी समस्यापूर्ण साबित होगी। आपके रिश्तेदार व मित्र आपके प्रति मददगार नहीं हो सकते है एवं आपके शत्रु आपके लिए परेशानियां उत्पन्न करने का प्रयास कर सकते हैं। आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं हो सकता है। यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो आप एक सुनहरा अवसर खो सकते हैं। यदि आप पहले से ही रोजगार में हैं तो आप अपने कार्य स्थल पर अनेक परेशानियों का सामना कर सकते हैं। आपको बहुत सावधान व सतर्क रहना चाहिए क्योंकि आपको किसी दुर्घटना का सामना करना पड़ सकता है अथवा व्यवसाय में आघात लगने का भय है।

बृहस्पति (श्रवण) दशा : (05:11:2035 से 05:08:2040)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट ग्यारहवें भाव (लाभ) में है, जो कि बहुत अनुकूल है क्योंकि यह आय और लाभ का भाव है, इसलिए आपके व्यवसाय से प्राप्त होने वाली आपकी आय में और अन्य स्रोतों से प्राप्त होने वाले लाभ में निरंतर वृद्धि होती रहेगी और आप अपने मित्रों व शुभ चिन्तकों से प्रत्यक्ष लाभ व अप्रत्यक्ष सहयोग प्राप्त करेंगे। आपकी विश्वसनीयता, सम्मान आप प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। आपकी कुछ महात्वाकांक्षाएं फलीभूत होंगी एवं आपकी कुछ हार्दिक इच्छाएं पूरी होंगी। आप मनोरंजन एवं लाभ के लिए लम्बी यात्राएं भी कर सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में ग्यारहवें भाव का स्वामी अच्छी स्थिति में है तो आप किसी सांस्कृतिक या शैक्षिक उद्देश्य से किसी दूरस्थ स्थान अथवा विदेश तक की यात्रा कर सकते हैं। हालांकि आपकी माता का स्वास्थ्य व सुख आपको चिन्तित कर सकता है।

राहु (धनिष्ठा) दशा : (05:08:2040 से 05:08:2044)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट तीसरे भाव में है जो कि कई मामलों में अनुकूल है। इस दशा के दौरान आप अपने व्यवसाय के सिलसिले में कुछ छोटी यात्राएं कर सकते हैं। यदि आप रोजगार में परिवर्तन अथवा स्थानान्तरण अथवा नए घर में स्थानान्तरित होते के बारे में सोच रहे हैं तो यह अवधि आपके लिए अनुकूल है। यदि आप नौकरी में हैं तो आप बहुत अच्छा कार्य करेंगे तथा इससे भी अधिक जिम्मेदारी वाले किसी पद पर आसीन हो सकते हैं। यदि आप लेखक, सम्पादक या अनुवादक हैं तो आप सर्वाधिक प्रगति करेंगे। किन्तु यदि आप मुद्रण, प्रकाशन, विज्ञापन आदि से संबंधित व्यवसाय में हैं तो आप बहुत सम्पन्न होंगे। फिर भी, आपकी माता का स्वास्थ्य और सुख आपको चिन्तित कर सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट की मंगल के साथ 150 डिग्री की दृष्टि में है, अतः इस दशा के दौरान आपको अत्यधिक सावधान व सचेत रहना चाहिए– विशेषकर किसी व्यस्त गली से वाहन चलाकर गुजरते समय अथवा पार करते समय। अन्यथा लापरवाही व असावधानी से वाहन चलाने के कारण किसी छोटी दुर्घटना का शिकार होने की संभावना है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट नौवें पद राशि में है, अतः इस दशा के दौरान आप अपने व्यवसाय के सबंध में एक लम्बी यात्रा पर जा सकते हैं। या तो आपका किसी दूरस्थ स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है या आप ऐसे किसी स्थान पर नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप अपना कोई नया उपक्रम प्रारम्भ करने की सोच रहे हैं तो यह समय आपके लिए अनुकूल है। आप किसी धनी और प्रभावशाली व्यक्ति से बिल्कुल अप्रत्याशित रूप से कुछ समर्थन और लाभ प्राप्त करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट प्रथम पद–राशि में है। अतः आप बहुत भाग्यशाली होंगे। आप बहुत उर्जावान व सक्रिय होंगे। इस दशा के दौरान आप अपने प्रयत्नों और अथक प्रयासों के द्वारा अपने उद्देश्यों की पूर्ति करेंगे। आप अपनी विशेष उपलब्धियों के कारण अपने परिवार के लिए गौरव और आनन्द का स्रोत होंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आपका पारिवारिक जीवन सुखमय व शांतिपूर्ण व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त आपके परिवार में कोई शुभ समारोह आयोजित हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट के नक्षत्र का स्वामी दसवें भाव में स्थित है। अतः इस दशा के दौरान आपके व्यावसायिक संभावनाओं में काफी सुधार होगा। आप कोई नया रोजगार अथवा अधिक जिम्मेदारी वाला पद प्राप्त कर सकते हैं। आपकी विश्वसनीयता, सम्मान और प्रतिष्ठा सभी में वृद्धि होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो नैसर्गिक अशुभ ग्रहों के साथ प्रतिकूल दृष्टि में शामिल है। अतः यह दशा आपके लिए अत्यंत समस्याप्रद साबित हो सकती है। आप कई बार गंभीर प्रकार की समस्याओं का सामना कर सकते हैं– पहली बार लगभग दशा के प्रारम्भ में, उसके बाद दशा के मध्यावधि के आस–पास और उसके बाद दशा के अन्त के समय। आपको अपने पेशे में आघात लग सकता है या भारी नुकसान अथवा इस प्रकार का कुछ हो सकता है। ऐसी घटनाएं पूर्णतः आकस्मिक और अप्रत्याशित रूप से घटित हो सकती हैं। अतः आपको धैर्यपूर्वक और विवेकपूर्ण ढंग से कार्य करना चाहिए। आपको सट्टा, शेयर आदि जैसे काल्पनिक निवेशों से पूर्णतः दूर रहना चाहिए और विवादों व झगड़ों में फंसनें की संभावनाओं से भी बचना चाहिए।

राहु (शतभिषा) दशा : (05:08:2044 से 05:08:2048)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट नौवें भाव में स्थित है जो कि आपके लग्न से एक त्रिकोण–भाव है। अतः इस दशा के दौरान आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे– विशेषकर वित्तिय और विदेश मामलों के संबंध में। आप अपने गुणों, अर्जित योग्यताओं और प्रशंसनीय उपलब्धियों के कारण उचित पहचान प्राप्त करेंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में अच्छा कार्य करेंगे और कुछ लाभदायक परिवर्तन भी हो सकते हैं। यदि आप नौकरी में हैं तो आप एक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं, किन्तु यदि आप व्यापारी हैं तो आप नए संभावित क्षेत्र में विविधता ला सकते हैं अथवा साझेदारी या सहयोग से लाभान्वित भी हो सकते हैं। आप लाभ और आनन्द के लिए लम्बी यात्राएं भी कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट की शनि के साथ 90 डिग्री की दृष्टि में है, अतः इस दशा के दौरान आपको अत्यधिक सावधान व सचेत रहना चाहिए– विशेषकर लोगों से व्यवहार करते समय। अन्यथा आप विवादों और झगड़े में फंस सकते हैं और निचले स्तर के सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि वाले कुछ हठी व क्रूर लोगों के साथ आपका टकराव होने के कारण आपके शारीरिक रूप से हिंसा का शिकार होने का भी भय है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट ग्यारहवीं पद राशि में है, अतः इस दशा के दौरान व्यवसाय से प्राप्त होने वाली आपकी आय, अन्य स्रोतो से प्राप्त होने वाले लाभ तथा मित्रों के दायरे सभी में वृद्धि होगी। आप आनन्दपूर्ण मुद्रा में रहेंगे तथा अपने रिश्तेदारों व मित्रों के साथ अपने जीवन का सुखपूर्वक आनन्द प्राप्त करेंगे। आपकी कुछ महात्वाकांक्षाएं फलीभूत होंगी एवं आपकी कुछ हार्दिक इच्छाएं पूरी होंगी। आप मनोरंजन एवं लाभ के लिए लम्बी यात्रा भी कर सकते हैं और आपके परिवार में कोई शुभ समारोह आयोजित हो सकता है। किन्तु आपकी माता का स्वास्थ्य आपको चिन्तित अवस्था में रख सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, इस दशा में, एक ही ग्रह ग्रह–स्वामी और नक्षत्र–स्वामी दोनों है। अतः दशा अवधि निश्चित रूप से घटनाओं से पूर्ण होगी। लगभग दशा के प्रारम्भ में, दशा की मध्यावधि में एवं दशा के अन्त में भी कुछ महत्वपूर्ण अनुकूल परिवर्तन हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो नैसर्गिक अशुभ ग्रहों के साथ प्रतिकूल दृष्टि में शामिल है। अतः यह दशा आपके लिए अत्यंत समस्याप्रद साबित हो सकती है। आप कई बार गंभीर प्रकार की समस्याओं का सामना कर सकते हैं– पहली बार लगभग दशा के प्रारम्भ में, उसके बाद दशा के मध्यावधि के आस–पास और उसके बाद दशा के अन्त के समय। आपको अपने पेशे में आघात लग सकता है या भारी नुकसान अथवा इस प्रकार का कुछ हो सकता है। ऐसी घटनाएं पूर्णतः आकस्मिक और अप्रत्याशित रूप से घटित हो सकती हैं। अतः आपको धैर्यपूर्वक और विवेकपूर्ण ढंग से कार्य करना चाहिए। आपको सट्टा, शेयर आदि जैसे काल्पनिक निवेशों से पूर्णतः दूर रहना चाहिए और विवादों व झगड़ों में फंसनें की संभावनाओं से भी बचना चाहिए।

योगिनी दशा से भविष्यफल

Yogini Dasha, with its 36-year cycle, offers a concise and swift system, making it efficient for astrologers to predict significant life events. It focuses on the Nakshatras and the ruling Yoginis, revealing an individual's life path in relation to feminine cosmic energies. This Dasha system, when combined with other methods, provides a multi-dimensional view, assisting astrologers in pinpointing transformative periods and events in one's life.

भ्रमरी (मंगल). (पूर्वाभाद्र) दशा(10:08:1941 से 19:11:1943)

आपकी जन्मकुण्डली में, मंगल दसवें भाव में उपस्थित है। अतः इस दशा के दौरान आप अपने पेशे के क्षेत्र में एक नए शिखर को छुएंगे और एक अधिकारपूर्ण पद प्राप्त करेंगे। आपकी विश्वसनीयता और सम्मान में वृद्धि होगी तथा लोग आपके साथ सम्मानजनक व्यवहार करेंगे। आप स्वयं के बारे में भी बहुत उच्च विचार विकसित कर सकते हैं। आपका वरिष्ठ सरकारी अधिकारियों से संबंध बनेगा और अधिकारियों से सहयोग प्राप्त होगा तथा आपके वरिष्ठ लोगों के साथ आपका बहुत सौहार्दपूण रिश्ता कायम होगा। संभवतः आपको अपने पेशे के संबंध में कुछ दूरस्थ स्थानों पर जाना पड़ सकता है, उच्च अधिकारियों से मिल सकते हैं और आपके प्रयत्न सफल हो सकते हैं। हालांकि आपको अपना घर या पैतृक निवास स्थान छोड़ना पड़ सकता है और आपका अपने छोटे भाई–बहनों के साथ संबंध लम्बे समय तक सौहार्दपूर्ण नहीं रह सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक शुभ ग्रहों की अनुकूल दृष्टि में शामिल है। अतः योगिनी मंगल दशा की अवधि आपके लिए बहुत आनन्ददायक होगी। इस दशा के दौरान सामान्यतः आप अधिक प्रगति करेंगे एवं आपके परिवार मे एक शुभ समारोह का आयोजन हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की प्रतिकूल दृष्टि में शामिल हैं। अतः योगिनी मंगल दशा की अवधि संभवतः आपके लिए बहुत समस्याप्रद हो सकती है। इस अवधि के दौरान आपको बहुत सारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है एवं यहां तक कि कुछ अवांछित घटनाओं और/या अशुभ अवसरों का भी सामना करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल दृष्टि में भी शामिल है। अतः योगिनी मंगल दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणामों (शुभ व अशुभ दोनों) की अनुभूति होगी। यदि आपके व्यवसाय का संबंध आम लोगों के साथ है तो आप कभी–कभी चिड़चिड़े हो सकते हैं, किन्तु जैसाकि एक नैसर्गिक शुभ ग्रह भी अपने सौम्य प्रभावो से इसे प्रभावित कर रहा है, इसलिए चीजें ना तो बहुत बिगड़ेंगी और ना ही बहुत लम्बे समय तक चलेंगी।

भभद्रिका (बुध). (उत्तरभाद्र) दशा(10:08:1941 से 10:08:1946)

आपकी जन्मकुण्डली में, बुध दूसरे भाव में उपस्थित है, अतः योगिनी बुध दशा की अवधि आपके लिए आनन्ददायक साबित होगा। आपकी आय में वृद्धि होगी और आपका घरेलू जीवन शांतिपूर्ण व सुखमय होगा। यदि आप किसी शैक्षिक या बौद्धिक व्यवसाय से जुड़े हुए हैं तो आप अत्यंत उत्तम प्रगति करेंगे। यदि आप नौकरी में हैं तो आपकी आय में वास्तविक वृद्धि होगी, किन्तु यदि आप व्यापार करते हैं तो उसमें बहुत तेजी रहेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक शुभ ग्रहों की अनुकूल दृष्टि में शामिल है। अतः योगिनी बुध दशा की अवधि आपके लिए बहुत आनन्ददायक होगी। इस दशा के दौरान सामान्यतः आप अधिक प्रगति करेंगे एवं आपके परिवार मे एक शुभ समारोह का आयोजन हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की प्रतिकूल दृष्टि में शामिल हैं। अतः योगिनी बुध दशा की अवधि संभवतः आपके लिए बहुत समस्याप्रद हो सकती है। इस अवधि के दौरान आपको बहुत सारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है एवं यहां तक कि कुछ अवांछित घटनाओं या अशुभ अवसरों का भी सामना करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल दृष्टि में भी शामिल है। अतः योगिनी बुध दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणामों (शुभ व अन्यथा दोनों) की अनुभूति होगी। यदि आपके व्यवसाय का संबंध आम लोगों के साथ है तो आप कभी–कभी चिड़चिड़े हो सकते हैं, किन्तु जैसाकि एक नैसर्गिक शुभ ग्रह भी अपने सौम्य प्रभावो से इसे प्रभावित कर रहा है, इसलिए चीजें ना तो बहुत बिगड़ेंगी और ना ही बहुत लम्बे समय तक चलेंगी।

उल्का (शनि). (रेवति) दशा(10:08:1941 से 10:08:1947)

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि बारहवें भाव में उपस्थित है, अतः आपको आर्थिक सौदों में अधिक सावधान रहना चाहिए तथा अपने अति आशावादी दृष्टिकोण को कम करना चाहिए। संभवतः आप धन के अवरूद्ध हो जाने के कारण समस्यओं का सामना कर सकते हैं और अपनी प्रतिबद्धताओं को पूरा करने में आपको काफी कठिनाई हो सकती है। आपके व्यय अत्यधिक हो सकते हैं तथा हानियां भी हो सकती हैं। आपकी पहली संतान का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रह सकता है तथा आपकी चिन्ता बढ़ सकती है। आपको छोटी चीजों को तथा अन्जाने मे करने वाली गलतियों को नजरअन्दाज करने की प्रवृति से भी बचना चाहिए, अन्यथा आपको भारी जुर्माना या दंड देना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक शुभ ग्रहों की अनुकूल दृष्टि में शामिल है। अतः योगिनी शनि दशा की अवधि आपके लिए बहुत आनन्ददायक होगी। इस दशा के दौरान सामान्यतः आप अधिक प्रगति करेंगे एवं आपके परिवार मे एक या एक से अधिक शुभ समारोहों का आयोजन हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की प्रतिकूल दृष्टि में शामिल हैं। अतः योगिनी शनि दशा की अवधि वास्तव में आपके लिए बहुत समस्याप्रद हो सकती है। आपको बहुत सावधान व सजग रहना चाहिए एवं सदैव सतर्कता बरतनी चाहिए। इस अवधि के दौरान आपको बहुत सारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है– कुछ अवांछित घटनाओं या अशुभ अवसरों के कारण।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल दृष्टि में भी शामिल है। अतः योगिनी शनि दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणामों (शुभ व अशुभ दोनों) की अनुभूति होगी। यदि आपके व्यवसाय का संबंध आम लोगों के साथ है तो आप कभी–कभी चिड़चिड़े हो सकते हैं, किन्तु जैसाकि एक नैसर्गिक शुभ ग्रह भी अपने सौम्य प्रभावो से इसे प्रभावित कर रहा है, इसलिए चीजें ना तो बहुत बिगड़ेंगी और ना ही बहुत लम्बे समय तक चलेंगी।

सिद्धा (शुक्र). (अश्विनी) दशा(10:08:1941 से 09:08:1948)

आपकी जन्मकुण्डली में, शुक्र तीसरे भाव में उपस्थित है। अतः आपका समय सहजताओं से पूर्ण होगा व चिन्ता व व्याकुलता से मुक्त होगा। सामान्यतः लोग आपकी तरफ आकर्षित होंगे, आपकी आवश्यकतानुसार हर जरूरी सहायता देने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके सगे और चचेरे भाई–बहन आपके लिए विशेष रूप से मददगार होंगे और आपकी पत्नी आपके लिए सुख का एक स्रोत होंगी। पत्र आपके लिए शुभ समाचार लाएंगे और अपने मित्रों व रिश्तेदारों से कुछ आकर्षक उपहार प्राप्त कर सकते हैं। आप निकट स्थानों की अनेक सुखद यात्राएं कर सकते हैं और जीवन में सभी प्रकार की सुख–सुविधाओं का आनन्द प्राप्त कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक शुभ ग्रहों की अनुकूल दृष्टि में शामिल है। अतः योगिनी शुक्र दशा की अवधि आपके लिए बहुत आनन्ददायक होगी। इस दशा के दौरान सामान्यतः आप अधिक प्रगति करेंगे एवं आपके परिवार मे एक शुभ समारोह का आयोजन हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल 150 डिग्री दृष्टि में शामिल है और यह दृष्टि पास की है। अतः योगिनी शुक्र दशा की अवधि आपके लिए अधिक कष्टकारी हो सकती है और इस दशा के दौरान आपको अपने व्यावसायिक जीवन में एक बुरे दौर से गुजरना पड़ सकता है। आपके घर–परिवार में कुछ विचलित करने वाली घटनाएं हो सकती हैं और आप संघर्ष व लड़ाइ–झगड़े कर सकते हैं। आपको सावधान रहना चाहिए और अपने वरिष्ठों/अधिकारियों से मतभेद उत्पन्न करने से बचना चाहिए तथा अन्य लोगों के साथ भी किसी प्रकार के विवाद में उलझने से बचना चाहिए। इस दशा के आठवें माह के आस–पास से चीजें स्वतः ही साफ नजर आने लगेंगी और आपको स्वयं को प्रभावशाली रूप में व्यक्त करने के लिए और अच्छे अवसर मिलने प्रारम्भ हो जाएंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल दृष्टि में भी शामिल है। अतः योगिनी शुक्र दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणामों (शुभ व अशुभ दोनों) की अनुभूति होगी। यदि आपके व्यवसाय का संबंध आम लोगों के साथ है तो आप कभी–कभी चिड़चिड़े हो सकते हैं, किन्तु जैसाकि एक नैसर्गिक शुभ ग्रह भी अपने सौम्य प्रभावो से इसे प्रभावित कर रहा है, इसलिए चीजें ना तो बहुत बिगड़ेंगी और ना ही बहुत लम्बे समय तक चलेंगी।

संकटा (राहु). (भरणी) दशा(10:08:1941 से 10:08:1949)

योगिनी दशा चक्र की अन्तिम समयावधि प्रायः प्रतिकूल प्रतिफल उत्पन्न करती है। दशा चक्र के अन्त की पहली, दूसरी व तीसरी तिथि क्रमशः 19रू11रू1969ए 19रू11रू2005 और 19रू11रू2041 हैं। अतः इन तीनों तिथियों से तीन महीने आगे–पीछे तक की अवधि में आपको सावधान रहना चाहिए। इन तिथियों के पूर्वगामी कुछ महीनों के दौरान मिलने वाले परिणाम आपकी कुण्डली में स्थित राहु की अवस्था/स्थिति पर निर्भर करेगा एवं इन तिथियों के ठिक बाद के कुछ महीनों के आरम्भ के दौरान मिलने वाले परिणाम आपकी कुण्डली में स्थित चंद्रमा की अवस्था/स्थिति पर निर्भर करेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, राहु चौथे भाव में उपस्थित है और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह की इसके साथ युति है अथवा इस पर दृष्टि है, जबकि किसी नैसर्गिक शुभ ग्रह की ना तो इसके साथ युति है और ना ही इस पर दृष्टि है। यह एक प्रतिकूल योग है। अतः आपको अत्यधिक सावधान व सचेत रहना चाहिए। आपकी फसलों या उत्पादों को हानि हो सकती है और आपकी आय में गिरावट शुरू हो सकती है। आपके पिता का स्वास्थ्य आपको चिन्तित अवस्था में रख सकता है। यदि आप एक पुरुष हैं, विवाहित है और एक संतान है तो आपको अपनी संतान पर चिकित्सीय उपचार के रूप में एक बड़ी रकम खर्च करनी पड़ सकती है।

मंगला (चन्द्रमा). (कृतिका) दशा(10:08:1941 से 10:08:1942)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की प्रतिकूल दृष्टि में शामिल हैं। अतः योगिनी चंद्र दशा की अवधि संभवतः आपके लिए बहुत समस्याप्रद हो सकती है। इस अवधि के दौरान आपको बहुत सारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है एवं यहां तक कि कुछ अवांछित घटनाओं व अशुभ अवसरों का भी सामना करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल दृष्टि में भी शामिल है। अतः योगिनी चंद्र दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणामों (शुभ व अशुभ दोनों) की अनुभूति होगी। यदि आपके व्यवसाय का संबंध आम लोगों के साथ है तो आप कभी–कभी चिड़चिड़े हो सकते हैं, किन्तु जैसाकि एक नैसर्गिक शुभ ग्रह भी अपने सौम्य प्रभावो से इसे प्रभावित कर रहा है, इसलिए चीजें ना तो बहुत बिगड़ेंगी और ना ही बहुत लम्बे समय तक चलेंगी।

पिंगला (सुर्य). (रोहिणी) दशा(10:08:1941 से 10:08:1943)

आपकी जन्मकुण्डली में, सूर्य दूसरे भाव में उपस्थित है और यह ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपने भाव में स्थित है। अतः यागिनी सूर्य दशा की अवधि के दौरान आप कई मामलों में अधिक भाग्यशाली नहीं होंगे। इस अवधि के दौरान आप अपने परिवार और वित्तिय मामलों में अधिक भाग्यशाली नहीं होंगे। अपने आय के संदर्भ में आपको व्यापक उतार–चढ़ाव का अनुभव हो सकता है और आपके धन व अधिकार का ह्रास होना प्रारम्भ हो सकता है। आपके परिवार में कुछ झगड़े व मतभेद हो सकते हैं, जिससे आपका घरेलु जीवन आपको कुछ बोझ जैसा लग सकता है। आपके प्रति आपके संबंधियों की सहानुभूति की भावना समाप्त हो सकती है और उनके प्रभाव व सलाह से वे आपके लिए आगे कठिनाई पैदा कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की प्रतिकूल दृष्टि में शामिल हैं। अतः योगिनी सूर्य दशा की अवधि संभवतः आपके लिए बहुत समस्याप्रद हो सकती है। इस अवधि के दौरान आपको बहुत सारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है एवं यहां तक कि कुछ अवांछित घटनाओं व अशुभ अवसरों का भी सामना करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल दृष्टि में भी शामिल है। अतः योगिनी सूर्य दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणामों (शुभ व अशुभ दोनों) की अनुभूति होगी। यदि आपके व्यवसाय का संबंध आम लोगों के साथ है तो आप कभी–कभी चिड़चिड़े हो सकते हैं, किन्तु जैसाकि एक नैसर्गिक शुभ ग्रह भी अपने सौम्य प्रभावो से इसे प्रभावित कर रहा है, इसलिए चीजें ना तो बहुत बिगड़ेंगी और ना ही बहुत लम्बे समय तक चलेंगी।

धन्या (बृहस्पति). (मृगशिरा) दशा(10:08:1941 से 09:08:1944)

आपकी जन्मकुण्डली में, गुरु सप्तमेश और दशमेश है एवं यह बारहवें भाव में उपस्थित है। अतः इस दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणाम की प्राप्ति होगी। इस अवधि के पूर्वाद्ध में आपकी पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रह सकता है और आपको उपचार में अत्यधिक धन व्यय करना पड़ सकता है। आपको अपने कार्यस्थल पर कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है और इस दशा के उत्तरार्द्ध में किसी निकट स्थान पर आपका स्थानान्तरण या रोजगार में परिवर्तन हो सकता है। यदि आप साझेदारी के व्यापार में हैं तो आपका साझीदार आपके प्रति गुप्त रूप से शत्रुता का भाव रख सकते हैं और आपके लिए कुछ परेशानियां भी खड़ी कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक शुभ ग्रहों की अनुकूल दृष्टि में शामिल है। अतः योगिनी वृहस्पति दशा की अवधि आपके लिए बहुत आनन्ददायक होगी। इस दशा के दौरान सामान्यतः आप अधिक प्रगति करेंगे एवं आपके परिवार मे एक शुभ समारोह का आयोजन हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की प्रतिकूल दृष्टि में शामिल हैं। अतः योगिनी वृहस्पति दशा की अवधि संभवतः आपके लिए बहुत समस्याप्रद हो सकती है। इस अवधि के दौरान आपको बहुत सारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है एवं यहां तक कि कुछ अवांछित घटनाओं और/या अशुभ अवसरों का भी सामना करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल दृष्टि में भी शामिल है। अतः योगिनी बृहस्पति दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणामों (शुभ व अशुभ दोनों) की अनुभूति होगी। यदि आपके व्यवसाय का संबंध आम लोगों के साथ है तो आप कभी–कभी चिड़चिड़े हो सकते हैं, किन्तु जैसाकि एक नैसर्गिक शुभ ग्रह भी अपने सौम्य प्रभावो से इसे प्रभावित कर रहा है, इसलिए चीजें ना तो बहुत बिगड़ेंगी और ना ही बहुत लम्बे समय तक चलेंगी।

भ्रमरी (मंगल). (अरिद्रा) दशा(10:08:1941 से 10:08:1945)

आपकी जन्मकुण्डली में, मंगल दसवें भाव में उपस्थित है। अतः इस दशा के दौरान आप अपने पेशे के क्षेत्र में एक नए शिखर को छुएंगे और एक अधिकारपूर्ण पद प्राप्त करेंगे।

आपकी विश्वसनीयता और सम्मान में वृद्धि होगी तथा लोग आपके साथ सम्मानजनक व्यवहार करेंगे। आप स्वयं के बारे में भी बहुत उच्च विचार विकसित कर सकते हैं। आपका वरिष्ठ सरकारी अधिकारियों से संबंध बनेगा और अधिकारियों से सहयोग प्राप्त होगा तथा आपके वरिष्ठ लोगों के साथ आपका बहुत सौहार्दपूण रिश्ता कायम होगा। संभवतः आपको अपने पेशे के संबंध में कुछ दूरस्थ स्थानों पर जाना पड़ सकता है, उच्च अधिकारियों से मिल सकते हैं और आपके प्रयत्न सफल हो सकते हैं। हालांकि आपको अपना घर या पैतृक निवास स्थान छोड़ना पड़ सकता है और आपका अपने छोटे भाई–बहनों के साथ संबंध लम्बे समय तक सौहार्दपूर्ण नहीं रह सकता है।

आपकी योगिनी मंगल दशा चल रही है और इसके योग–स्फूट नक्षत्र का स्वामी राहु है। जैसाकि मंगल और राहु दोनों घोर नैसर्गिक अशुभ ग्रह हैं और परस्पर एक दूसरे के विरोधी हैं। अतः इस योगिनी दशा के दौरान आप काफी अप्रसन्न हो सकते हैं– विशेषकर इसके अन्तिम वर्ष के दौरान। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आप सक्रियता से कुछ विनाशकरी क्रियाओं में भाग ले सकते हैं और कुछ दुष्टतापूर्ण या क्रूरता पूर्ण कार्य कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट पंचमेश के निकट है एवं इससे काफी आगे है (इससे अलग है)। अतः आपका स्थानान्तरण किसी असुविधाजनक स्थान पर हो सकता है अथवा आप अपना रोजगार तक खो सकते हैं। रोजगार के परिवर्तन की स्थिति में आपको बहुत सावधान रहना चाहिए और अपनी अपेक्षाओं में उदार भी होना चाहिए, अन्यथा योगिनी मंगल दशा के प्रारम्भ में किसी समय आप हाथ आए सुनहरे अवसर को खो सकते हैं– जिसके लिए आपको बाद में पछतावा हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक शुभ ग्रहों की अनुकूल दृष्टि में शामिल है। अतः योगिनी मंगल दशा की अवधि आपके लिए बहुत आनन्ददायक होगी। इस दशा के दौरान सामान्यतः आप अधिक प्रगति करेंगे एवं आपके परिवार मे एक शुभ समारोह का आयोजन हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की प्रतिकूल दृष्टि में शामिल हैं। अतः योगिनी मंगल दशा की अवधि संभवतः आपके लिए बहुत समस्याप्रद हो सकती है। इस अवधि के दौरान आपको बहुत सारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है एवं यहां तक कि कुछ अवांछित घटनाओं और/या अशुभ अवसरों का भी सामना करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल 150 डिग्री दृष्टि में शामिल है और यह दृष्टि पास की है। अतः योगिनी मंगल दशा की अवधि आपके लिए अधिक कष्टकारी हो सकती है और इस दशा के दौरान आपको अपने व्यावसायिक जीवन में एक बुरे दौर से गुजरना पड़ सकता है। आपके घर–परिवार में कुछ विचलित करने वाली घटनाएं हो सकती हैं और आप संघर्ष व लड़ाइ–झगड़े कर सकते हैं। आपको सावधान रहना चाहिए और अपने वरिष्ठों/अधिकारियों से मतभेद उत्पन्न करने से बचना चाहिए तथा अन्य लोगों के साथ भी किसी प्रकार के विवाद में उलझने से बचना चाहिए। इस दशा के आठवें माह के आस–पास से चीजें स्वतः ही साफ नजर आने लगेंगी और आपको स्वयं को प्रभावशाली रूप में व्यक्त करने के लिए और अच्छे अवसर मिलने प्रारम्भ हो जाएंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल दृष्टि में भी शामिल है। अतः योगिनी मंगल दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणामों (शुभ व अशुभ दोनों) की अनुभूति होगी। यदि आपके व्यवसाय का संबंध आम लोगों के साथ है तो आप कभी–कभी चिड़चिड़े हो सकते हैं, किन्तु जैसाकि एक नैसर्गिक शुभ ग्रह भी अपने सौम्य प्रभावो से इसे प्रभावित कर रहा है, इसलिए चीजें ना तो बहुत बिगड़ेंगी और ना ही बहुत लम्बे समय तक चलेंगी।

भभद्रिका (बुध). (पुनर्वसु) दशा(10:08:1941 से 10:08:1946)

आपकी जन्मकुण्डली में, बुध दूसरे भाव में उपस्थित है, अतः योगिनी बुध दशा की अवधि आपके लिए आनन्ददायक साबित होगा। आपकी आय में वृद्धि होगी और आपका घरेलू जीवन शांतिपूर्ण व सुखमय होगा। यदि आप किसी शैक्षिक या बौद्धिक व्यवसाय से जुड़े हुए हैं तो आप अत्यंत उत्तम प्रगति करेंगे। यदि आप नौकरी में हैं तो आपकी आय में वास्तविक वृद्धि होगी, किन्तु यदि आप व्यापार करते हैं तो उसमें बहुत तेजी रहेगा।

उल्का (शनि). (पुष्य) दशा(10:08:1941 से 10:08:1947)

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि बारहवें भाव में उपस्थित है, अतः आपको आर्थिक सौदों में अधिक सावधान रहना चाहिए तथा अपने अति आशावादी दृष्टिकोण को कम करना चाहिए। संभवतः आप धन के अवरूद्ध हो जाने के कारण समस्यओं का सामना कर सकते हैं और अपनी प्रतिबद्धताओं को पूरा करने में आपको काफी कठिनाई हो सकती है। आपके व्यय अत्यधिक हो सकते हैं तथा हानियां भी हो सकती हैं। आपकी पहली संतान का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रह सकता है तथा आपकी चिन्ता बढ़ सकती है। आपको छोटी चीजों को तथा अन्जाने मे करने वाली गलतियों को नजरअन्दाज करने की प्रवृति से भी बचना चाहिए, अन्यथा आपको भारी जुर्माना या दंड देना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि के योग–स्फूट नक्षत्र के स्वामी की एक ग्रह के साथ युति है, जो कि दशमेश है। यदि आप नौकरी में हैं तो आपको संभवतः एक नए रोजगार अथवा पदोन्नति की प्राप्ति हो सकती है। यदि आप व्यापार में हैं तो आप उल्लेखनीय प्रगति की करेंगे। आपकी विश्वसनीयता और सम्मान में काफी वृद्धि होगी और आपका नाम व यश दूर–दूर तक फैलेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि के योग–स्फूट नक्षत्र के स्वामी की एक ग्रह के साथ युति है, जो कि अष्टमेश है। यदि आप नौकरी में हैं तो संभवतः आपको अपना पद बनाए रखने के लिए काफी कठिनाई का सामना करना पड़ सकता है और दबाव में आने के कारण आप स्वयं उसे छोड़ सकते हैं। यदि आप व्यापार में हैं तो आपका आगामी समय कठिन हो सकता है। आपकी विश्वसनीयता और सम्मान में धीरे–धीरे कमी आ सकती है। हालांकि यदि आप ज्योतिष जैसे गूढ़ विषयों का अध्ययन कर रहे हैं तो आप उत्तम उन्नति की आशा कर सकते हैं।

सिद्धा (शुक्र). (अश्लेशा) दशा(10:08:1941 से 09:08:1948)

आपकी जन्मकुण्डली में, शुक्र तीसरे भाव में उपस्थित है। अतः आपका समय सहजताओं से पूर्ण होगा व चिन्ता व व्याकुलता से मुक्त होगा। सामान्यतः लोग आपकी तरफ आकर्षित होंगे, आपकी आवश्यकतानुसार हर जरूरी सहायता देने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके सगे और चचेरे भाई–बहन आपके लिए विशेष रूप से मददगार होंगे और आपकी पत्नी आपके लिए सुख का एक स्रोत होंगी। पत्र आपके लिए शुभ समाचार लाएंगे और अपने मित्रों व रिश्तेदारों से कुछ आकर्षक उपहार प्राप्त कर सकते हैं। आप निकट स्थानों की अनेक सुखद यात्राएं कर सकते हैं और जीवन में सभी प्रकार की सुख–सुविधाओं का आनन्द प्राप्त कर सकते हैं।

संकटा (राहु). (मघा) दशा(10:08:1941 से 10:08:1949)

योगिनी दशा चक्र की अन्तिम समयावधि प्रायः प्रतिकूल प्रतिफल उत्पन्न करती है। दशा चक्र के अन्त की पहली, दूसरी व तीसरी तिथि क्रमशः 19रू11रू1969ए 19रू11रू2005 और 19रू11रू2041 हैं। अतः इन तीनों तिथियों से तीन महीने आगे–पीछे तक की अवधि में आपको सावधान रहना चाहिए। इन तिथियों के पूर्वगामी कुछ महीनों के दौरान मिलने वाले परिणाम आपकी कुण्डली में स्थित राहु की अवस्था/स्थिति पर निर्भर करेगा एवं इन तिथियों के ठिक बाद के कुछ महीनों के आरम्भ के दौरान मिलने वाले परिणाम आपकी कुण्डली में स्थित चंद्रमा की अवस्था/स्थिति पर निर्भर करेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, राहु चौथे भाव में उपस्थित है और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह की इसके साथ युति है अथवा इस पर दृष्टि है, जबकि किसी नैसर्गिक शुभ ग्रह की ना तो इसके साथ युति है और ना ही इस पर दृष्टि है। यह एक प्रतिकूल योग है। अतः आपको अत्यधिक सावधान व सचेत रहना चाहिए। आपकी फसलों या उत्पादों को हानि हो सकती है और आपकी आय में गिरावट शुरू हो सकती है। आपके पिता का स्वास्थ्य आपको चिन्तित अवस्था में रख सकता है। यदि आप एक पुरुष हैं, विवाहित है और एक संतान है तो आपको अपनी संतान पर चिकित्सीय उपचार के रूप में एक बड़ी रकम खर्च करनी पड़ सकती है।

मंगला (चन्द्रमा). (पुर्वफाल्गुनी) दशा(10:08:1941 से 10:08:1942)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक शुभ ग्रहों की अनुकूल दृष्टि में शामिल है। अतः योगिनी चंद्र दशा की अवधि बहुत आनन्ददायक होगी। इस दशा के दौरान आप अत्यंत उन्नति करेंगे एवं आपके परिवार मे एक या एक से अधिक शुभ समारोहों का आयोजन हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल दृष्टि में भी शामिल है। अतः योगिनी चंद्र दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणामों (शुभ व अशुभ दोनों) की अनुभूति होगी। यदि आपके व्यवसाय का संबंध आम लोगों के साथ है तो आप कभी–कभी चिड़चिड़े हो सकते हैं, किन्तु जैसाकि एक नैसर्गिक शुभ ग्रह भी अपने सौम्य प्रभावो से इसे प्रभावित कर रहा है, इसलिए चीजें ना तो बहुत बिगड़ेंगी और ना ही बहुत लम्बे समय तक चलेंगी।

पिंगला (सुर्य). (उत्तरफाल्गुनी) दशा(10:08:1941 से 10:08:1943)

आपकी जन्मकुण्डली में, सूर्य दूसरे भाव में उपस्थित है और यह ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपने भाव में स्थित है। अतः यागिनी सूर्य दशा की अवधि के दौरान आप कई मामलों में अधिक भाग्यशाली नहीं होंगे। इस अवधि के दौरान आप अपने परिवार और वित्तिय मामलों में अधिक भाग्यशाली नहीं होंगे। अपने आय के संदर्भ में आपको व्यापक उतार–चढ़ाव का अनुभव हो सकता है और आपके धन व अधिकार का ह्रास होना प्रारम्भ हो सकता है। आपके परिवार में कुछ झगड़े व मतभेद हो सकते हैं, जिससे आपका घरेलु जीवन आपको कुछ बोझ जैसा लग सकता है। आपके प्रति आपके संबंधियों की सहानुभूति की भावना समाप्त हो सकती है और उनके प्रभाव व सलाह से वे आपके लिए आगे कठिनाई पैदा कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक शुभ ग्रहों की अनुकूल दृष्टि में शामिल है। अतः योगिनी सूर्य दशा की अवधि आपके लिए बहुत आनन्ददायक होगी। इस दशा के दौरान सामान्यतः आप अपने सभी मामलों में अत्यंत उन्नति करेंगे एवं आपके परिवार मे एक या एक से अधिक शुभ समारोहों का आयोजन हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की प्रतिकूल दृष्टि में शामिल हैं। अतः योगिनी सूर्य दशा की अवधि संभवतः आपके लिए बहुत समस्याप्रद हो सकती है। इस अवधि के दौरान आपको बहुत सारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है एवं यहां तक कि कुछ अवांछित घटनाओं व अशुभ अवसरों का भी सामना करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल दृष्टि में भी शामिल है। अतः योगिनी सूर्य दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणामों (शुभ व अशुभ दोनों) की अनुभूति होगी। यदि आपके व्यवसाय का संबंध आम लोगों के साथ है तो आप कभी–कभी चिड़चिड़े हो सकते हैं, किन्तु जैसाकि एक नैसर्गिक शुभ ग्रह भी अपने सौम्य प्रभावो से इसे प्रभावित कर रहा है, इसलिए चीजें ना तो बहुत बिगड़ेंगी और ना ही बहुत लम्बे समय तक चलेंगी।

धन्या (बृहस्पति). (हस्ता) दशा(10:08:1941 से 09:08:1944)

आपकी जन्मकुण्डली में, गुरु सप्तमेश और दशमेश है एवं यह बारहवें भाव में उपस्थित है। अतः इस दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणाम की प्राप्ति होगी। इस अवधि के पूर्वाद्ध में आपकी पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रह सकता है और आपको उपचार में अत्यधिक धन व्यय करना पड़ सकता है। आपको अपने कार्यस्थल पर कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है और इस दशा के उत्तरार्द्ध में किसी निकट स्थान पर आपका स्थानान्तरण या रोजगार में परिवर्तन हो सकता है। यदि आप साझेदारी के व्यापार में हैं तो आपका साझीदार आपके प्रति गुप्त रूप से शत्रुता का भाव रख सकते हैं और आपके लिए कुछ परेशानियां भी खड़ी कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, वृहस्पति के योग–स्फूट नक्षत्र का स्वामी नौवें भाव में उपस्थित है। अतः आपका स्थानान्तरण या रोजगार में परिवर्तन हो सकता है। आपको किसी दूरस्थ स्थान पर या विदेश जाना पड़ सकता है और वहां काफी लम्बे समय तक रहना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक शुभ ग्रहों की अनुकूल दृष्टि में शामिल है। अतः योगिनी वृहस्पति दशा की अवधि आपके लिए बहुत आनन्ददायक होगी। इस दशा के दौरान सामान्यतः आप अधिक प्रगति करेंगे एवं आपके परिवार मे एक शुभ समारोह का आयोजन हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल दृष्टि में भी शामिल है। अतः योगिनी बृहस्पति दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणामों (शुभ व अशुभ दोनों) की अनुभूति होगी। यदि आपके व्यवसाय का संबंध आम लोगों के साथ है तो आप कभी–कभी चिड़चिड़े हो सकते हैं, किन्तु जैसाकि एक नैसर्गिक शुभ ग्रह भी अपने सौम्य प्रभावो से इसे प्रभावित कर रहा है, इसलिए चीजें ना तो बहुत बिगड़ेंगी और ना ही बहुत लम्बे समय तक चलेंगी।

भ्रमरी (मंगल). (चित्रा) दशा(10:08:1941 से 10:08:1945)

आपकी जन्मकुण्डली में, मंगल दसवें भाव में उपस्थित है। अतः इस दशा के दौरान आप अपने पेशे के क्षेत्र में एक नए शिखर को छुएंगे और एक अधिकारपूर्ण पद प्राप्त करेंगे। आपकी विश्वसनीयता और सम्मान में वृद्धि होगी तथा लोग आपके साथ सम्मानजनक व्यवहार करेंगे। आप स्वयं के बारे में भी बहुत उच्च विचार विकसित कर सकते हैं। आपका वरिष्ठ सरकारी अधिकारियों से संबंध बनेगा और अधिकारियों से सहयोग प्राप्त होगा तथा आपके वरिष्ठ लोगों के साथ आपका बहुत सौहार्दपूण रिश्ता कायम होगा। संभवतः आपको अपने पेशे के संबंध में कुछ दूरस्थ स्थानों पर जाना पड़ सकता है, उच्च अधिकारियों से मिल सकते हैं और आपके प्रयत्न सफल हो सकते हैं। हालांकि आपको अपना घर या पैतृक निवास स्थान छोड़ना पड़ सकता है और आपका अपने छोटे भाई–बहनों के साथ संबंध लम्बे समय तक सौहार्दपूर्ण नहीं रह सकता है।

आपकी योगिनी मंगल दशा चल रही है और इसके योग–स्फूट नक्षत्र का स्वामी भी मंगल है, किन्तु यह ना ही उच्चस्थ है और ना ही अपने भाव में स्थित है। जैसाकि यह एक विशेष प्रकार की दशा है, अतः यह बहुत घटनापूर्ण हो सकती है। इस दशा के प्रारम्भ में, मध्यावधि में किसी समय तथा इस अवधि के अन्त में भी कुछ अनुकूल परिवर्तन हो सकते हैं। इस अवधि के दौरान, सामान्यतः आप अपने सभी मामलों में सुधार ही उम्मीद कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक शुभ ग्रहों की अनुकूल दृष्टि में शामिल है। अतः योगिनी मंगल दशा की अवधि आपके लिए बहुत आनन्ददायक होगी। इस दशा के दौरान सामान्यतः आप अधिक प्रगति करेंगे एवं आपके परिवार मे एक शुभ समारोह का आयोजन हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की प्रतिकूल दृष्टि में शामिल हैं। अतः योगिनी मंगल दशा की अवधि संभवतः आपके लिए बहुत समस्याप्रद हो सकती है। इस अवधि के दौरान आपको बहुत सारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है एवं यहां तक कि कुछ अवांछित घटनाओं और/या अशुभ अवसरों का भी सामना करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल दृष्टि में भी शामिल है। अतः योगिनी मंगल दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणामों (शुभ व अशुभ दोनों) की अनुभूति होगी। यदि आपके व्यवसाय का संबंध आम लोगों के साथ है तो आप कभी–कभी चिड़चिड़े हो सकते हैं, किन्तु जैसाकि एक नैसर्गिक शुभ ग्रह भी अपने सौम्य प्रभावो से इसे प्रभावित कर रहा है, इसलिए चीजें ना तो बहुत बिगड़ेंगी और ना ही बहुत लम्बे समय तक चलेंगी।

भभद्रिका (बुध). (स्वाति) दशा(10:08:1941 से 10:08:1946)

आपकी जन्मकुण्डली में, बुध दूसरे भाव में उपस्थित है, अतः योगिनी बुध दशा की अवधि आपके लिए आनन्ददायक साबित होगा। आपकी आय में वृद्धि होगी और आपका घरेलू जीवन शांतिपूर्ण व सुखमय होगा। यदि आप किसी शैक्षिक या बौद्धिक व्यवसाय से जुड़े हुए हैं तो आप अत्यंत उत्तम प्रगति करेंगे। यदि आप नौकरी में हैं तो आपकी आय में वास्तविक वृद्धि होगी, किन्तु यदि आप व्यापार करते हैं तो उसमें बहुत तेजी रहेगा।

उल्का (शनि). (विशाखा) दशा(10:08:1941 से 10:08:1947)

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि बारहवें भाव में उपस्थित है, अतः आपको आर्थिक सौदों में अधिक सावधान रहना चाहिए तथा अपने अति आशावादी दृष्टिकोण को कम करना चाहिए। संभवतः आप धन के अवरूद्ध हो जाने के कारण समस्याओं का सामना कर सकते हैं और अपनी प्रतिबद्धताओं को पूरा करने में आपको काफी कठिनाई हो सकती है। आपके व्यय अत्यधिक हो सकते हैं तथा हानियां भी हो सकती हैं। आपकी पहली संतान का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रह सकता है तथा आपकी चिन्ता बढ़ सकती है। आपको छोटी चीजों को तथा अन्जाने मे करने वाली गलतियों को नजरअन्दाज करने की प्रवृति से भी बचना चाहिए, अन्यथा आपको भारी जुर्माना या दंड देना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि के योग–स्फूट नक्षत्र के स्वामी की एक ग्रह के साथ युति है, जो कि दशमेश है। यदि आप नौकरी में हैं तो आपको संभवतः एक नए रोजगार अथवा पदोन्नति की प्राप्ति हो सकती है। यदि आप व्यापार में हैं तो आप उल्लेखनीय प्रगति की करेंगे। आपकी विश्वसनीयता और सम्मान में काफी वृद्धि होगी और आपका नाम व यश दूर–दूर तक फैलेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि के योग–स्फूट नक्षत्र के स्वामी की एक ग्रह के साथ युति है, जो कि अष्टमेश है। यदि आप नौकरी में हैं तो संभवतः आपको अपना पद बनाए रखने के लिए काफी कठिनाई का सामना करना पड़ सकता है और दबाव में आने के कारण आप स्वयं उसे छोड़ सकते हैं। यदि आप व्यापार में हैं तो आपका आगामी समय कठिन हो सकता है। आपकी विश्वसनीयता और सम्मान में धीरे–धीरे कमी आ सकती है। हालांकि यदि आप ज्योतिष जैसे गूढ़ विषयों का अध्ययन कर रहे हैं तो आप उत्तम उन्नति की आशा कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की प्रतिकूल दृष्टि में शामिल हैं। अतः योगिनी शनि दशा की अवधि वास्तव में आपके लिए बहुत समस्याप्रद हो सकती है। आपको बहुत सावधान व सजग रहना चाहिए एवं सदैव सतर्कता बरतनी चाहिए। इस अवधि के दौरान आपको बहुत सारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है– कुछ अवांछित घटनाओं या अशुभ अवसरों के कारण।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल दृष्टि में भी शामिल है। अतः योगिनी शनि दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणामों (शुभ व अशुभ दोनों) की अनुभूति होगी। यदि आपके व्यवसाय का संबंध आम लोगों के साथ है तो आप कभी–कभी चिड़चिड़े हो सकते हैं, किन्तु जैसाकि एक नैसर्गिक शुभ ग्रह भी अपने सौम्य प्रभावो से इसे प्रभावित कर रहा है, इसलिए चीजें ना तो बहुत बिगड़ेंगी और ना ही बहुत लम्बे समय तक चलेंगी।

सिद्धा (शुक्र). (अनुराधा) दशा(10:08:1941 से 09:08:1948)

आपकी जन्मकुण्डली में, शुक्र तीसरे भाव में उपस्थित है। अतः आपका समय सहजताओं से पूर्ण होगा व चिन्ता व व्याकुलता से मुक्त होगा। सामान्यतः लोग आपकी तरफ आकर्षित होंगे, आपकी आवश्यकतानुसार हर जरूरी सहायता देने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके सगे और चचेरे भाई–बहन आपके लिए विशेष रूप से मददगार होंगे और आपकी पत्नी आपके लिए सुख का एक स्रोत होंगी। पत्र आपके लिए शुभ समाचार लाएंगे और अपने मित्रों व रिश्तेदारों से कुछ आकर्षक उपहार प्राप्त कर सकते हैं। आप निकट स्थानों की अनेक सुखद यात्राएं कर सकते हैं और जीवन में सभी प्रकार की सुख–सुविधाओं का आनन्द प्राप्त कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक शुभ ग्रहों की अनुकूल दृष्टि में शामिल है। अतः योगिनी शुक्र दशा की अवधि आपके लिए बहुत आनन्ददायक होगी। इस दशा के दौरान सामान्यतः आप अधिक प्रगति करेंगे एवं आपके परिवार मे एक शुभ समारोह का आयोजन हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की प्रतिकूल दृष्टि में शामिल हैं। अतः योगिनी शुक्र दशा की अवधि संभवतः आपके लिए बहुत समस्याप्रद हो सकती है। इस अवधि के दौरान आपको बहुत सारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है एवं यहां तक कि कुछ अवांछित घटनाओं या अशुभ अवसरों का भी सामना करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल दृष्टि में भी शामिल है। अतः योगिनी शुक्र दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणामों (शुभ व अशुभ दोनों) की अनुभूति होगी। यदि आपके व्यवसाय का संबंध आम लोगों के साथ है तो आप कभी–कभी चिड़चिड़े हो सकते हैं, किन्तु जैसाकि एक नैसर्गिक शुभ ग्रह भी अपने सौम्य प्रभावो से इसे प्रभावित कर रहा है, इसलिए चीजें ना तो बहुत बिगड़ेंगी और ना ही बहुत लम्बे समय तक चलेंगी।

संकटा (राहु). (ज्येष्ठा) दशा(10:08:1941 से 10:08:1949)

योगिनी दशा चक्र की अन्तिम समयावधि प्रायः प्रतिकूल प्रतिफल उत्पन्न करती है। दशा चक्र के अन्त की पहली, दूसरी व तीसरी तिथि क्रमशः 19रू11रू1969ए 19रू11रू2005 और 19रू11रू2041 हैं। अतः इन तीनों तिथियों से तीन महीने आगे–पीछे तक की अवधि में आपको सावधान रहना चाहिए। इन तिथियों के पूर्वगामी कुछ महीनों के दौरान मिलने वाले परिणाम आपकी कुण्डली में स्थित राहु की अवस्था/स्थिति पर निर्भर करेगा एवं इन तिथियों के ठिक बाद के कुछ महीनों के आरम्भ के दौरान मिलने वाले परिणाम आपकी कुण्डली में स्थित चंद्रमा की अवस्था/स्थिति पर निर्भर करेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, राहु चौथे भाव में उपस्थित है और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह की इसके साथ युति है अथवा इस पर दृष्टि है, जबकि किसी नैसर्गिक शुभ ग्रह की ना तो इसके साथ युति है और ना ही इस पर दृष्टि है। यह एक प्रतिकूल योग है। अतः आपको अत्यधिक सावधान व सचेत रहना चाहिए। आपकी फसलों या उत्पादों को हानि हो सकती है और आपकी आय में गिरावट शुरू हो सकती है। आपके पिता का स्वास्थ्य आपको चिन्तित अवस्था में रख सकता है। यदि आप एक पुरुष हैं, विवाहित है और एक संतान है तो आपको अपनी संतान पर चिकित्सीय उपचार के रूप में एक बड़ी रकम खर्च करनी पड़ सकती है।

मंगला (चन्द्रमा). (मूला) दशा(10:08:1941 से 10:08:1942)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक शुभ ग्रहों की अनुकूल दृष्टि में शामिल है। अतः योगिनी चंद्र दशा की अवधि बहुत आनन्ददायक होगी। इस दशा के दौरान आप अत्यंत उन्नति करेंगे एवं आपके परिवार मे एक या एक से अधिक शुभ समारोहों का आयोजन हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की प्रतिकूल दृष्टि में शामिल हैं। अतः योगिनी चंद्र दशा की अवधि संभवतः आपके लिए बहुत समस्याप्रद हो सकती है। इस अवधि के दौरान आपको बहुत सारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है एवं यहां तक कि कुछ अवांछित घटनाओं व अशुभ अवसरों का भी सामना करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल दृष्टि में भी शामिल है। अतः योगिनी चंद्र दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणामों (शुभ व अशुभ दोनों) की अनुभूति होगी। यदि आपके व्यवसाय का संबंध आम लोगों के साथ है तो आप कभी–कभी चिड़चिड़े हो सकते हैं, किन्तु जैसाकि एक नैसर्गिक शुभ ग्रह भी अपने सौम्य प्रभावो से इसे प्रभावित कर रहा है, इसलिए चीजें ना तो बहुत बिगड़ेंगी और ना ही बहुत लम्बे समय तक चलेंगी।

पिंगला (सुर्य). (पूर्वाशाढ़) दशा(10:08:1941 से 10:08:1943)

आपकी जन्मकुण्डली में, सूर्य दूसरे भाव में उपस्थित है और यह ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपने भाव में स्थित है। अतः यागिनी सूर्य दशा की अवधि के दौरान आप कई मामलों में अधिक भाग्यशाली नहीं होंगे। इस अवधि के दौरान आप अपने परिवार और वित्तिय मामलों में अधिक भाग्यशाली नहीं होंगे। अपने आय के संदर्भ में आपको व्यापक उतार–चढ़ाव का अनुभव हो सकता है और आपके धन व अधिकार का ह्रास होना प्रारम्भ हो सकता है। आपके परिवार में कुछ झगड़े व मतभेद हो सकते हैं, जिससे आपका घरेलु जीवन आपको कुछ बोझ जैसा लग सकता है। आपके प्रति आपके संबंधियों की सहानुभूति की भावना समाप्त हो सकती है और उनके प्रभाव व सलाह से वे आपके लिए आगे कठिनाई पैदा कर सकते हैं।

धन्या (बृहस्पति). (उत्तराशाढ) दशा(10:08:1941 से 09:08:1944)

आपकी जन्मकुण्डली में, गुरु सप्तमेश और दशमेश है एवं यह बारहवें भाव में उपस्थित है। अतः इस दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणाम की प्राप्ति होगी। इस अवधि के पूर्वाद्ध में आपकी पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रह सकता है और आपको उपचार में अत्यधिक धन व्यय करना पड़ सकता है। आपको अपने कार्यस्थल पर कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है और इस दशा के उत्तरार्द्ध में किसी निकट स्थान पर आपका स्थानान्तरण या रोजगार में परिवर्तन हो सकता है। यदि आप साझेदारी के व्यापार में हैं तो आपका साझीदार आपके प्रति गुप्त रूप से शत्रुता का भाव रख सकते हैं और आपके लिए कुछ परेशानियां भी खड़ी कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल 150 डिग्री दृष्टि में शामिल है और यह दृष्टि पास की है। अतः योगिनी बृहस्पति दशा की अवधि आपके लिए अधिक कष्टकारी हो सकती है और इस दशा के दौरान आपको अपने व्यावसायिक जीवन में एक बुरे दौर से गुजरना पड़ सकता है। आपके घर–परिवार में कुछ विचलित करने वाली घटनाएं हो सकती हैं और आप संघर्ष व लड़ाइ–झगड़े कर सकते हैं। आपको सावधान रहना चाहिए और अपने वरिष्ठों/अधिकारियों से मतभेद उत्पन्न करने से बचना चाहिए तथा अन्य लोगों के साथ भी किसी प्रकार के विवाद में उलझने से बचना चाहिए। इस दशा के आठवें माह के आस–पास से चीजें स्वतः ही साफ नजर आने लगेंगी और आपको स्वयं को प्रभावशाली रूप में व्यक्त करने के लिए और अच्छे अवसर मिलने प्रारम्भ हो जाएंगे।

जैमिनी चर दशा का भविष्यफल

Jaimini Chara Dasha, as explained by Iranagati Rangacharya, is an esteemed progression system in Vedic astrology that provides a framework for predicting significant life events. It emphasizes the movable karakas and is dependent on the placement of signs rather than planetary positions, making it unique. Rangacharya's interpretation brings out nuanced subtleties, enhancing the system's effectiveness in delivering precise and contextually relevant predictions.

(वि.प्रा. – इस दशा में हम सामान्य किशोरावस्था एवं युवावस्था की घटनाओं पर ध्याान दे रहे हैं, भविष्यफल देखते समय, बाल्यावस्था (16 वर्ष से पहले) और वृद्धावस्था (64 वर्ष के बाद) काल के भविष्यफल पर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है।)

मिथुन दशा (10:08:1941 से 10:08:1943)

वर्तमान में उस राशि की चर--दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर एकादशेश की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। जैसाकि एकादशेश अभिलाषाओं की पूर्ति और महात्वाकांक्षाओं के कार्यान्वयन का कारक है, यह एक बहुत अनुकूल योग है। आप कुछ लाभदायक परिणाम प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं। इस दशा के दौरान शिक्षा ग्रहण करने की आपकी संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रख सकते हैं।

वर्तमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, जिससे दसवें भाव में अमात्य--कारक ग्रह (सप्त--कारक योजना के अनुसार) स्थित है। अमात्य--कारक ग्रह और दसवां भाव, दोनों ही पेशे के संचालक हैं। इस दशा के दौरान, आप पेशे के क्षेत्र में अधिक उन्नति करेंगे। आप एक नया रोजगार, पदोन्नति या स्थानान्तरण प्राप्त कर सकते हैं। आपका नाम व यश दूर दूर तक फैलेगा तथा लोग आपके साथ अधिक सम्मान का व्यवहार करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, तो आपकी परिस्थितियां निरन्तर लाभदायक होती जायेंगी और आपकी आय में काफी सुधार होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, वर्तमान में आप जिस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, उस राशि से गणना करने पर पंचमेश और दशमेश की एक साथ युति है। यह युति आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। जैसाकि दसवां भाव पेशे का सूचक है और पाँचवां भाव पद का प्रतीक है। अतः यह एक अनुकूल योग है। इस दशा के दौरान, रोजगार/व्यापार से संबंधित मामलों में, आपकी स्थिति में सुधार हो सकता है। आपके रोजगार में परिवर्तन, स्थानान्तरण या पदोन्नति हो सकती है। आपका निवास स्थान भी परिवर्तित हो सकता है और आपको एक बेहतर आवास प्राप्त हो सकता है। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, तो आप कोई नया व्यवसाय प्रारम्भ कर सकते हैं अथवा किसी और अधिक लाभदायक स्थान पर जा सकते हैं।

कर्क भुक्ति (10:08:1941 से 10:08:1942)

वर्तमान में, आप मिथुन दशा में, कर्क भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, दशा–राशि से गणना करने पर दशमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपकी भुक्ति–राशि से भी गणना करने पर दशमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। यह समग्र योग अत्यंत अनुकूल है। इस अवधि के दौरान (जो कि केवल एक वर्ष तक चलेगा), आपको एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया रोजगार प्राप्त होने की संभावना अत्यधिक है। आपके रहन–सहन के स्तर में सुधार होगा और आपकी संतुष्टि में वृद्धि होगी।

मिथुन भुक्ति (10:08:1942 से 10:08:1943)

वर्तमान में आप मिथुन राशि की दशा से गुजर रहे हैं, इसी राशि की भुक्ति भी एक साल के लिए चल रही है। इस दशा के दौरान, दशा का फल और सुदृढ़ होगा।

तुला दशा (10:08:1943 से 10:08:1946)

वर्तमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर मैत्री--कारक ग्रह अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह कारक कुछ हद तक शिक्षा का कारक भी है। यह एक बढ़िया योग है। आप लाभदायक परिणाम प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं। इस दशा के दौरान शिक्षा ग्रहण करने की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रख सकते हैं।

वर्तमान में उस राशि की चर--दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर नवमेश की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। जैसाकि नवमेश उच्च शिक्षा का कारक है, यह एक बहुत अनुकूल योग है। आप कुछ लाभदायक परिणाम प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं। इस दशा के दौरान शिक्षा ग्रहण करने की आपकी संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रख सकते हैं।

वर्तमान समय में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, जो कि आपके लग्न से पाँचवें भाव की राशि के अनुकूल है। अन्य चीजों के साथ, पाँचवां भाव ओहदा, पद आदि का भाव है। इस दशा के दौरान, आपको नयी नौकरी प्राप्त हो सकती है, आपका स्थानान्तरण हो सकता है अथवा आपकी पदोन्नति हो सकती है। जैसाकि ना तो कोई शुभ ग्रह और ना ही कोई अशुभ ग्रह इस राशि में बैठा है, किसी भी मामले में कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन होने की संभावना नहीं है। आप ना तो लाभान्वित होंगे और ना ही किसी बुरे प्रभाव से प्रभावित होंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं तो परिस्थितियां सामान्य हो सकती हैं और आप आगे बढ़ेंगे।

बुध बौद्धिक धन्धों और व्यापारिक सौदों का भी नैसर्गिक कारक है। वर्तमान में आप जिस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, उससे दसवें भाव में बुध स्थित है। दसवां भाव पेशे का संचालक है। इस दशा के दौरान, आप पेशे के क्षेत्र में अधिक उन्नति करेंगे। आप एक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा एक प्रतिष्ठित पद तक पहुंच सकते हैं। आपका नाम व यश दूर दूर तक फैलेगा तथा लोग आपके साथ अधिक सम्मान का व्यवहार करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, तो आपकी परिस्थितियां निरन्तर लाभदायक होती जायेंगी और आपकी आय में काफी सुधार होगा।

वर्तमान में आप जिस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, आपकी जन्मकुण्डली में, एक या एक से अधिक अशुभ ग्रह उस राशि से छठवें भाव में स्थित हैं। उस राशि में कोई भी शुभ ग्रह स्थित नहीं है। जैसाकि छठवां भाव नौकरी और प्रतियोगिता का सूचक है, अतः यह अनेक मामलों में बहुत अनुकूल योग है। इस दशा अवधि के दौरान आप पेशे के क्षेत्र में अत्यंत प्रगति की आशा कर सकते हैं। संभवतः आप किसी प्रतियोगी परीक्षा में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आप एक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा स्थानान्तरण हो सकता है अथवा पदोन्नति हो सकती है। आपका पद और पारिश्रमिक बहुत बढ़िया हो सकता है। जैसाकि छठवां भाव शत्रु व रोग का भी सूचक है, आपके शत्रु पूर्णतः परास्त होंगे, किन्तु आपका स्वास्थ्य कुछ हद तक नाजुक हो सकता है। यदि आप व्यापार में हैं, तो आपके लिए नये मार्ग खुल सकते हैं और आप काफी तेजी से आगे बढ़ सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, वर्तमान में आप जिस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, उस राशि से गणना करने पर पंचमेश और दशमेश की एक साथ युति है। यह युति आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। जैसाकि दसवां भाव पेशे का सूचक है और पाँचवां भाव पद का प्रतीक है। अतः यह एक अनुकूल योग है। इस दशा के दौरान, रोजगार/व्यापार से संबंधित मामलों में, आपकी स्थिति में सुधार हो सकता है। आपके रोजगार में परिवर्तन, स्थानान्तरण या पदोन्नति हो सकती है। आपका निवास स्थान भी परिवर्तित हो सकता है और आपको एक बेहतर आवास प्राप्त हो सकता है। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, तो आप कोई नया व्यवसाय प्रारम्भ कर सकते हैं अथवा किसी और अधिक लाभदायक स्थान पर जा सकते हैं।

आपकी कुण्डली में वृष राशि में दारा--कारक ग्रह स्थित है, तुला राशि दारा--पद राशि है, सिहं राशि में विवाह का नैसर्गिक कारक ग्रह स्थित है तथा वृश्चिक राशि उप--पद राशि है। इनमें से किसी भी राशि की दशा, इनमें से किसी भी राशि की भुक्ति और इनमें से किसी भी राशि के अंतर के दौरान आपका विवाह होने की संभावना है। (स्पष्टतः उपयुक्त आयु के अन्तर्गत होगा। इन दशा--भुक्ति--अंतर संयोजन के समय के लिए जैमिनी चर दशा और त्रिकोण दशा को निर्देशित की जा सकती है-- राघव भट्ट और नृसिंह सूरी की विभाजन (भुक्ति) और उपविभाजन (अंतर) के अनुसार। एक अंतर--अवधि केवल एक महीने के लिए होती है। इसलिए मुहूर्त और गोचर आदि के निर्णय लेते समय अन्य पक्षों के कारण कुछ दिनों के अन्तर को भी माना जा सकता है)।

सिहं भुक्ति (10:08:1943 से 10:08:1944)

वर्तमान में, आप तुला दशा में, सिहं भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, दशा–राशि से गणना करने पर दशमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपकी भुक्ति–राशि से भी गणना करने पर दशमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। यह समग्र योग अत्यंत अनुकूल है। इस अवधि के दौरान (जो कि केवल एक वर्ष तक चलेगा), आपको एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया रोजगार प्राप्त होने की संभावना अत्यधिक है। आपके रहन–सहन के स्तर में सुधार होगा और आपकी संतुष्टि में वृद्धि होगी।

वर्तमान में, आप तुला दशा में, सिहं भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, आपके लग्न से गणना करने पर दशमेश आपकी दशा–राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपके लग्न से गणना करने पर दशमेश आपकी भुक्ति–राशि से भी दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। यह समग्र योग अत्यंत अनुकूल है। इस अवधि के दौरान (जो कि केवल एक वर्ष तक चलेगा), आपको एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया रोजगार प्राप्त होने की संभावना अत्यधिक है। आपके रहन–सहन के स्तर में सुधार होगा और आपकी संतुष्टि में वृद्धि होगी। संभावना है कि ये बदलाव तुला अथवा सिहं के अन्तर–अवधि के दौरान हो सकते हैं।(जिनमें से प्रत्येक केवल एक माह के लिए चलता है)।

कन्या भुक्ति (10:08:1944 से 10:08:1945)

वर्तमान में, आप तुला दशा में, कन्या भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, आपके लग्न से गणना करने पर दशमेश आपकी दशा–राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपके लग्न से गणना करने पर दशमेश आपकी भुक्ति–राशि से भी दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। यह समग्र योग अत्यंत अनुकूल है। इस अवधि के दौरान (जो कि केवल एक वर्ष तक चलेगा), आपको एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया रोजगार प्राप्त होने की संभावना अत्यधिक है। आपके रहन–सहन के स्तर में सुधार होगा और आपकी संतुष्टि में वृद्धि होगी। संभावना है कि ये बदलाव तुला अथवा कन्या के अन्तर–अवधि के दौरान हो सकते हैं।(जिनमें से प्रत्येक केवल एक माह के लिए चलता है)।

वर्तमान में आप कन्या दशा में तुला भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में आपके लग्न से गणना करने पर सप्तमेश दशा–राशि में स्थित है (या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। आपके लग्न से गणना करने पर द्वितीयेश भी दशा–राशि में स्थित है (या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। इसके अतिरिक्त आपकी दशा–राशि से गणना करने पर भी सप्तमेश भुक्ति राशि में स्थित है (या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), दशा–राशि से गणना करने द्वितीयेश भी भुक्ति–राशि में स्थित है (या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। इससे आगे, आपकी भुक्ति–राशि से गणना करने पर सप्तमेश दशा–राशि में स्थित है (या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), आपकी भुक्ति–राशि से गणना करने पर द्वितीयेश भी दशा–राशि में स्थित है (या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। यह समग्र योग अत्यंत शुभ है। यदि अभी तक आपका विवाह नहीं हुआ है, तो इस अवधि के दौरान (जो कि एक साल तक चलेगा) आपका विवाह होने की बहुत अधिक संभावना है। इसकी भी काफी संभावना है कि यह विवाह समारोह सिहं अन्तर (जो कि केवल एक माह तक चलती है) या इसके आस–पास किसी समय हो सकता है।

तुला भुक्ति (10:08:1945 से 10:08:1946)

वर्तमान में आप तुला राशि की दशा से गुजर रहे हैं, इसी राशि की भुक्ति भी एक साल के लिए चल रही है। इस दशा के दौरान, दशा का फल और सुदृढ़ होगा।

कुम्भ दशा (10:08:1946 से 10:08:1950)

वर्तमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर बुध की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। जैसाकि बुध सामान्य एवं तकनीकी शिक्षा तथा सभी प्रकार के बौद्धिक क्षेत्रों का नैसर्गिक कारक है, इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक अध्ययन भी जारी रख सकते हैं। यदि आप किसी अन्य बौद्धिक कार्यों में संलग्न हैं, तो आप उत्तम उन्नति की आशा कर सकते हैं।

वर्तमान में उस राशि की चर––दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर चतुर्थेश की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। जैसाकि चतुर्थेश शिक्षा का मुख्य कारक है, यह एक अनुकूल योग है। आप कुछ लाभदायक परिणाम प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं। इस दशा के दौरान शिक्षा ग्रहण करने की आपकी संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रख सकते हैं।

वर्तमान में उस राशि की चर––दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर पंचमेश की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। जैसाकि पंचमेश स्मृति, प्रतिभा आदि का कारक है, यह एक अनुकूल योग है। आप कुछ लाभदायक परिणाम प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं। इस दशा के दौरान शिक्षा ग्रहण करने की आपकी संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रख सकते हैं।

वर्तमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर बुध की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। बुध सामान्य एवं तकनीकी शिक्षा तथा सभी प्रकार के बौद्धिक क्षेत्रों का नैसर्गिक कारक है। अतः यह एक बहुत अनुकूल योग है। इस दशा के दौरान आप कुछ लाभदायक परिणाम प्राप्त करने की आशा कर सकते हैं। आपकी शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक अध्ययन भी जारी रख सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, वर्तमान में आप जिस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, उसका स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अतिरिक्त, उसी दशा राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है। जैसाकि दसवां भाव पेशे का संचालक है, जबकि पाँचवां भाव पद का सूचक है, अतः यह एक अत्यंत अनुकूल योग का निर्माण कर रहा है। इस दशा अवधि के दौरान, आप पेशे के क्षेत्र में अत्यंत उत्तम प्रगति की आशा कर सकते हैं। आप एक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा एक प्रतिष्ठित पद तक पहुंच सकते हैं। आप निरन्तर अत्यधिक लोकप्रिय हो सकते हैं और सामान्य लोग आपके साथ अधिक सम्मान का व्यवहार करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, तो आपकी परिस्थितियां अधिक लाभदायक होंगी, इसमें बहुत तेजी आयेगी तथा आपकी आय में भी काफी सुधार होगा।

वृष भुक्ति (10:08:1946 से 10:08:1947)

वर्तमान में, आप कुम्भ दशा में, वृष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, दशा–राशि से गणना करने पर दशमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपकी भुक्ति–राशि से भी गणना करने पर दशमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। यह समग्र योग अत्यंत अनुकूल है। इस अवधि के दौरान (जो कि केवल एक वर्ष तक चलेगा), आपको एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया रोजगार प्राप्त होने की संभावना अत्यधिक है। आपके रहन–सहन के स्तर में सुधार होगा और आपकी संतुष्टि में वृद्धि होगी।

वर्तमान में आप कुम्भ दशा (जो कि एक साल तक चलेगा) में वृष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में आपके लग्न से गणना करने पर चतुर्थेश या अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अतिरिक्त, आपकी दशा–राशि से गणना करने पर चतुर्थेश या अष्टमेश भुक्ति–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और भुक्ति–राशि से गणना करने पर चतुर्थेश या अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह प्रतिकूल आंतरिक संबंध बन रहा है। जैसाकि आठवां भाव नौवें भाव से बारहवां है और चौथा भाव नौवें भाव से आठवां है। अतः आपके पिता का स्वास्थ्य व सुख आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। या फिर अथवा साथ ही, आप किसी दुर्घटना का सामना कर सकते हैं।

वर्तमान में आप वृष दशा में (जो कि एक वर्ष तक चलेगी) कुम्भ भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गणना करने पर षष्ठेश या द्वितीयेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अतिरिक्त, आपकी दशा–राशि से गणना करने पर षष्ठेश या द्वितीयेश भुक्ति–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और भुक्ति–राशि से गणना करने पर षष्ठेश या द्वितीयेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह प्रतिकूल आंतरिक संबंध बन रहा है। जैसाकि छठा भाव सातवें भाव से बारहवां है और दूसरा भाव सातवें भाव से आठवां है। अतः आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य व सुख आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। उनको किसी दुर्घटना का सामना करना पड़ सकता है और/या किसी शल्य प्रक्रिया से गुजरना पड़ सकता है।

मेष भुक्ति (10:08:1947 से 10:08:1948)

वर्तमान में आप कुम्भ दशा (जो कि एक साल तक चलेगा) में मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में आपके लग्न से गणना करने पर चतुर्थेश या अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अतिरिक्त, आपकी दशा–राशि से गणना करने पर चतुर्थेश या अष्टमेश भुक्ति–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और भुक्ति–राशि से गणना करने पर चतुर्थेश या अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह प्रतिकूल आंतरिक संबंध बन रहा है। जैसाकि आठवां भाव नौवें भाव से बारहवां है और चौथा भाव नौवें भाव से आठवां है। अतः आपके पिता का स्वास्थ्य व सुख आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। या फिर अथवा

साथ ही, आप किसी दुर्घटना का सामना कर सकते हैं।

वर्तमान में आप मेष दशा में (जो कि एक वर्ष तक चलेगी) कुम्भ भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गणना करने पर षष्ठेश या द्वितीयेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अतिरिक्त, आपकी दशा–राशि से गणना करने पर षष्ठेश या द्वितीयेश भुक्ति–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और भुक्ति–राशि से गणना करने पर षष्ठेश या द्वितीयेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह प्रतिकूल आंतरिक संबंध बन रहा है। जैसाकि छठा भाव सातवें भाव से बारहवां है और दूसरा भाव सातवें भाव से आठवां है। अतः आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य व सुख आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। उनको किसी दुर्घटना का सामना करना पड़ सकता है और/या किसी शल्य प्रक्रिया से गुजरना पड़ सकता है।

मीन भुक्ति (10:08:1948 से 10:08:1949)

वर्तमान में, आप कुम्भ दशा में, मीन भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, दशा–राशि से गणना करने पर दशमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपकी भुक्ति–राशि से भी गणना करने पर दशमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। यह समग्र योग अत्यंत अनुकूल है। इस अवधि के दौरान (जो कि केवल एक वर्ष तक चलेगा), आपको एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया रोजगार प्राप्त होने की संभावना अत्यधिक है। आपके रहन–सहन के स्तर में सुधार होगा और आपकी संतुष्टि में वृद्धि होगी।

कुम्भ भुक्ति (10:08:1949 से 10:08:1950)

वर्तमान में आप कुम्भ राशि की दशा से गुजर रहे हैं, इसी राशि की भुक्ति भी एक साल के लिए चल रही है। इस दशा के दौरान, दशा का फल और सुदृढ़ होगा।

कर्क दशा (10:08:1950 से 09:08:1956)

वर्तमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, जिसमें बुध स्थित है, लेकिन यह ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपनी राशि में स्थित है। जैसाकि बुध सामान्य एवं तकनीकी शिक्षा तथा सभी प्रकार के बौद्धिक क्षेत्रों का नैसर्गिक कारक है, इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक अध्ययन भी जारी रख सकते हैं। यदि आप किसी अन्य बौद्धिक कार्यों में संलग्न हैं, तो आप उत्तम उन्नति की आशा कर सकते हैं।

वर्तमान में आप उस राशि की चर––दशा से गुजर रहे हैं, जिसमें चतुर्थेश स्थित है। यद्यपि चतुर्थेश आपकी जन्मकुण्डली में शक्तिशाली रूप से व्यवस्थित नहीं है–– जैसाकि यह ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपनी राशि में स्थित है, जैसाकि यह शिक्षा का मुख्य कारक है, इसलिए यह अब भी एक बहुत लाभदायक योग है। आप लाभदायक परिणाम प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं। इस दशा के दौरान शिक्षा ग्रहण करने की आपकी संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रख सकते हैं।

वर्तमान में उस राशि की चर––दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर नवमेश की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। जैसाकि नवमेश उच्च शिक्षा का कारक है, यह एक बहुत अनुकूल योग है। आप कुछ लाभदायक परिणाम प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं। इस दशा के दौरान शिक्षा ग्रहण करने की आपकी संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रख सकते हैं।

वर्तमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, जिसे बृहस्पति और बुध, दोनों ग्रह प्रभावित कर रहे हैं। बुध इसमें स्थित है और बृहस्पति इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह एक बहुत अनुकूल योग है। इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक अध्ययन भी जारी रख सकते हैं। इन सभी मामलों में बहुत उत्तम करने की आशा कर सकते हैं।

बुध बौद्धिक धन्धों और व्यापारिक सौदों का भी नैसर्गिक कारक है। वर्तमान में आप जिस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, उसमें बुध स्थित है। इस दशा के दौरान, आप पेशे के क्षेत्र में पर्याप्त उन्नति करने की आशा कर सकते हैं। आप एक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा एक प्रतिष्ठित पद तक पहुंच सकते हैं। आपका नाम व यश दूर दूर तक फैलेगा तथा लोग आपके साथ अधिक सम्मान का व्यवहार करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, तो आपकी परिस्थितियां निरन्तर लाभदायक होती जायेंगी और आपकी आय में भी काफी सुधार होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, वर्तमान में आप जिस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, उसका स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अतिरिक्त, उसी दशा राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है। जैसाकि दसवां भाव पेशे का संचालक है, जबकि पाँचवां भाव पद का सूचक है, अतः यह एक अत्यंत अनुकूल योग का निर्माण कर रहा है। इस दशा अवधि के दौरान, आप पेशे के क्षेत्र में अत्यंत उत्तम प्रगति की आशा कर सकते हैं। आप एक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा एक प्रतिष्ठित पद तक पहुंच सकते हैं। आप निरन्तर अत्यधिक लोकप्रिय हो सकते हैं और सामान्य लोग आपके साथ अधिक सम्मान का व्यवहार करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, तो आपकी परिस्थितियां अधिक लाभदायक होंगी, इसमें बहुत तेजी आयेगी तथा आपकी आय में भी काफी सुधार होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, वर्तमान में आप जिस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, उस राशि से गणना करने पर पंचमेश और दशमेश एक ही ग्रह है। यह आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। जैसाकि दसवां भाव पेशे का सूचक है और पाँचवां भाव पद का प्रतीक है। अतः यह एक अनुकूल योग है। इस दशा के दौरान, रोजगार/व्यापार से संबंधित मामलों में, आपकी स्थिति में सुधार हो सकता है। आपके रोजगार में परिवर्तन, स्थानान्तरण या पदोन्नति हो सकती है। आपका निवास स्थान भी परिवर्तित हो सकता है और आपको एक बेहतर आवास प्राप्त हो सकता है। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, तो आप कोई नया व्यवसाय प्रारम्भ कर सकते हैं अथवा किसी और अधिक लाभदायक स्थान पर जा सकते हैं।

कुम्भ भुक्ति (10:08:1950 से 10:08:1951)

वर्तमान में, आप कर्क दशा में, कुम्भ भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, दशा–राशि से गणना करने पर दशमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपकी भुक्ति–राशि से भी गणना करने पर दशमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। यह समग्र योग अत्यंत अनुकूल है। इस अवधि के दौरान (जो कि केवल एक वर्ष तक चलेगा), आपको एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया रोजगार प्राप्त होने की संभावना अत्यधिक है। आपके रहन–सहन के स्तर में सुधार होगा और आपकी संतुष्टि में वृद्धि होगी।

वर्तमान में आप कुम्भ दशा में (जो कि एक वर्ष तक चलेगी) कर्क भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गणना करने पर षष्ठेश या द्वितीयेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अतिरिक्त, आपकी दशा–राशि से गणना करने पर षष्ठेश या द्वितीयेश भुक्ति–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और भुक्ति–राशि से गणना करने पर षष्ठेश या द्वितीयेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह प्रतिकूल आंतरिक संबंध बन रहा है। जैसाकि छठा भाव सातवें भाव से बारहवां है और दूसरा भाव सातवें भाव से आठवां है। अतः आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य व सुख आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। उनको किसी दुर्घटना का सामना करना पड़ सकता है और/या किसी शल्य प्रक्रिया से गुजरना पड़ सकता है।

वर्तमान में आप कर्क दशा में (जो कि एक वर्ष तक चलेगी) कुम्भ भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गणना करने पर द्वादशेश या अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अतिरिक्त, आपकी दशा–राशि से गणना करने पर द्वादशेश या अष्टमेश भुक्ति–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और भुक्ति–राशि से गणना करने पर द्वादशेश या अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह प्रतिकूल आंतरिक संबंध बन रहा है। अतः आपका स्वास्थ्य व सुख आपके परिवार के सदस्यों के लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। आपको किसी दुर्घटना का सामना करना पड़ सकता है और/या किसी शल्य प्रक्रिया से गुजरना पड़ सकता है।

मीन भुक्ति (10:08:1951 से 10:08:1952)

वर्तमान में, आप कर्क दशा में, मीन भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, दशा–राशि से गणना करने पर दशमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपकी भुक्ति–राशि से भी गणना करने पर दशमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। यह समग्र योग अत्यंत अनुकूल है। इस अवधि के दौरान (जो कि केवल एक वर्ष तक चलेगा), आपको एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया रोजगार प्राप्त होने की संभावना अत्यधिक है। आपके रहन–सहन के स्तर में सुधार होगा और आपकी संतुष्टि में वृद्धि होगी।

मेष भुक्ति (10:08:1952 से 10:08:1953)

वर्तमान में आप कर्क दशा (जो कि एक साल तक चलेगा) में मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में आपके लग्न से गणना करने पर चतुर्थेश या अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अतिरिक्त, आपकी दशा–राशि से गणना करने पर चतुर्थेश या अष्टमेश भुक्ति–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और भुक्ति–राशि से गणना करने पर चतुर्थेश या अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह प्रतिकूल आंतरिक संबंध बन रहा है। जैसाकि आठवां भाव नौवें भाव से बारहवां है और चौथा भाव नौवें भाव से आठवां है। अतः आपके पिता का स्वास्थ्य व सुख आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। या फिर अथवा साथ ही, आप किसी दुर्घटना का सामना कर सकते हैं।

वृष भुक्ति (10:08:1953 से 10:08:1954)

वर्तमान में आप कर्क राशि की दशा में वृष राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। दशा–राशि से, दशा–राशि का स्वामी आठवें भाव में स्थित है (अथवा दशा–राशि से अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है), भुक्ति–राशि से भी, भुक्ति–राशि का स्वामी आठवें भाव में स्थित है (अथवा भुक्ति–राशि से अष्टमेश भुक्ति–राशि में स्थित है) और इनमें से कोई भी स्वामी शक्तिशाली नहीं है अर्थात ना तो उच्चस्थ है या ना ही अपनी राशि में स्थित है। यह समग्र संकेत काफी प्रतिकूल है और आपको बहुत सावधान एवं सतर्क रहना चाहिए। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो प्रबल संभावना है कि इस अवधि के दौरान (जो कि एक साल तक चलेगी) आप किसी दुर्घटना का सामना कर सकते हैं अथवा किसी शल्य प्रक्रिया से गुजर सकते हैं या कोई अशुभ घटना हो सकती है।

वर्तमान में, आप कर्क दशा में, वृष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, दशा–राशि से गणना करने पर अष्टमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपकी भुक्ति–राशि से भी गणना करने पर अष्टमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। यह समग्र योग काफी प्रतिकूल है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो इस अवधि के दौरान (जो कि केवल एक वर्ष तक चलेगा), आपको अपने पेशे के क्षेत्र में गंभीर आघात का सामना करना पड़ सकता है। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको नौकरी छोड़ने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। यदि आप व्यापार में हैं, तो आपको भारी हानियां हो सकती हैं। आपको अपना निवास स्थान भी छोड़ना पड़ सकता है अथवा किसी असुविधाजनक स्थान पर जाना पड़ सकता है।

वर्तमान में, आप कर्क दशा में, वृष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, दशा–राशि से गणना करने पर दशमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपकी भुक्ति–राशि से भी गणना करने पर दशमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। यह समग्र योग अत्यंत अनुकूल है। इस अवधि के दौरान (जो कि केवल एक वर्ष तक चलेगा), आपको एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया रोजगार प्राप्त होने की संभावना अत्यधिक है। आपके रहन–सहन के स्तर में सुधार होगा और आपकी संतुष्टि में वृद्धि होगी।

वर्तमान में आप वृष दशा में (जो कि एक वर्ष तक चलेगी) कर्क भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गणना करने पर एकादशेश या तृतीयेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अतिरिक्त, आपकी दशा–राशि से गणना करने पर एकादशेश या तृतीयेश भुक्ति–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और भुक्ति–राशि से गणना करने पर एकादशेश या तृतीयेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह प्रतिकूल आंतरिक संबंध बन रहा है। जैसाकि तीसरा भाव चौथे भाव से बारहवां है और ग्यारहवां भाव चौथे भाव से आठवां है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य व सुख आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। या फिर अथवा साथ ही, आपकी संपत्ति की हानि हो सकती है।

वर्तमान में आप कर्क दशा (जो कि एक साल तक चलेगा) में वृष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में आपके लग्न से गणना करने पर चतुर्थेश या अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अतिरिक्त, आपकी दशा–राशि से गणना करने पर चतुर्थेश या अष्टमेश भुक्ति–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और भुक्ति–राशि से गणना करने पर चतुर्थेश या अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह प्रतिकूल आंतरिक संबंध बन रहा है। जैसाकि आठवां भाव नौवें भाव से बारहवां है और चौथा भाव नौवें भाव से आठवां है। अतः आपके पिता का स्वास्थ्य व सुख आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। या फिर अथवा साथ ही, आप किसी दुर्घटना का सामना कर सकते हैं।

मिथुन भुक्ति (10:08:1954 से 10:08:1955)

वर्तमान में, आप कर्क दशा में, मिथुन भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, दशा–राशि से गणना करने पर दशमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपकी भुक्ति–राशि से भी गणना करने पर दशमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। यह समग्र योग अत्यंत अनुकूल है। इस अवधि के दौरान (जो कि केवल एक वर्ष तक चलेगा), आपको एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया रोजगार प्राप्त होने की संभावना अत्यधिक है। आपके रहन–सहन के स्तर में सुधार होगा और आपकी संतुष्टि में वृद्धि होगी।

कर्क भुक्ति (10:08:1955 से 10:08:1956)

वर्तमान में आप कर्क राशि की दशा से गुजर रहे हैं, इसी राशि की भुक्ति भी एक साल के लिए चल रही है। इस दशा के दौरान, दशा का फल और सुदृढ़ होगा।

वर्तमान में आप कर्क राशि की दशा में कर्क राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। दशा–राशि से, दशा–राशि का स्वामी आठवें भाव में स्थित है (अथवा दशा–राशि से अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है), भुक्ति–राशि से भी, भुक्ति–राशि का स्वामी आठवें भाव में स्थित है (अथवा भुक्ति–राशि से अष्टमेश भुक्ति–राशि में स्थित है) और इनमें से कोई भी स्वामी शक्तिशाली नहीं है अर्थात ना तो उच्चस्थ है या ना ही अपनी राशि में स्थित है। यह समग्र संकेत काफी प्रतिकूल है और आपको बहुत सावधान एवं सतर्क रहना चाहिए। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो प्रबल संभावना है कि इस अवधि के दौरान (जो कि एक साल तक चलेगी) आप किसी दुर्घटना का सामना कर सकते हैं अथवा किसी शल्य प्रक्रिया से गुजर सकते हैं या कोई अशुभ घटना हो सकती है।

वर्तमान में आप कर्क राशि की दशा में कर्क राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। भुक्ति–राशि से, दशा–राशि का स्वामी आठवें भाव में स्थित है (अथवा दशा–राशि से अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है), दशा–राशि से भी, भुक्ति–राशि का स्वामी आठवें भाव में स्थित है (अथवा भुक्ति–राशि से अष्टमेश भुक्ति–राशि में स्थित है) और इनमें से कोई भी स्वामी शक्तिशाली नहीं है अर्थात ना तो उच्चस्थ है या ना ही अपनी राशि में स्थित है। यह समग्र संकेत काफी प्रतिकूल है और आपको बहुत सावधान एवं सतर्क रहना चाहिए। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो प्रबल संभावना है कि इस अवधि के दौरान (जो कि एक साल तक चलेगी) आप किसी दुर्घटना का सामना कर सकते हैं अथवा किसी शल्य प्रक्रिया से गुजर सकते हैं या कोई अशुभ घटना हो सकती है।

वृश्चिक दशा (09:08:1956 से 10:08:1961)

वर्तमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर बुध की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। जैसाकि बुध सामान्य एवं तकनीकी शिक्षा तथा सभी प्रकार के बौद्धिक क्षेत्रों का नैसर्गिक कारक है, इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक अध्ययन भी जारी रख सकते हैं। यदि आप किसी अन्य बौद्धिक कार्यों में संलग्न हैं, तो आप उत्तम उन्नति की आशा कर सकते हैं।

वर्तमान में उस राशि की चर––दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर चतुर्थेश की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। जैसाकि चतुर्थेश शिक्षा का मुख्य कारक है, यह एक अनुकूल योग है। आप कुछ लाभदायक परिणाम प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं। इस दशा के दौरान शिक्षा ग्रहण करने की आपकी संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रख सकते हैं।

वर्तमान में उस राशि की चर––दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर पंचमेश की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। जैसाकि पंचमेश स्मृति, प्रतिभा आदि का कारक है, यह एक अनुकूल योग है। आप कुछ लाभदायक परिणाम प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं। इस दशा के दौरान शिक्षा ग्रहण करने की आपकी संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रख सकते हैं।

वर्तमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर बुध की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। बुध सामान्य एवं तकनीकी शिक्षा तथा सभी प्रकार के बौद्धिक क्षेत्रों का नैसर्गिक कारक है। अतः यह एक बहुत अनुकूल योग है। इस दशा के दौरान आप कुछ लाभदायक परिणाम प्राप्त करने की आशा कर सकते हैं। आपकी शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक अध्ययन भी जारी रख सकते हैं।

वर्तमान में आप उस राशि की चर––दशा से गुजर रहे हैं, जिसका स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है। दसवां भाव पेशे से संबंधित मामलों का शासक है। इस दशा के दौरान, आप पेशे के क्षेत्र में अधिक उन्नति करेंगे। आप एक आकर्षक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा एक प्रतिष्ठित पद तक पहुंच सकते हैं। आपका नाम व यश दूर दूर तक फैलेगा तथा लोग आपके साथ अधिक सम्मान का व्यवहार करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, तो परिस्थितियां निरन्तर लाभदायक होती जायेंगी और आपकी आय में काफी सुधार होगा।

वर्तमान में आप जिस राशि की चर--दशा से गुजर रहे हैं, उससे दसवें भाव में आपके लग्न से पंचमेश स्थित है। दशमेश पेशे का शासक है, जबकि पंचमेश पद, प्रतिष्ठा आदि का प्रतीक है। इस दशा के दौरान, आप पेशे के क्षेत्र में अधिक उन्नति करेंगे। आप एक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा एक प्रतिष्ठित पद तक पहुंच सकते हैं। आपका नाम व यश दूर दूर तक फैलेगा तथा लोग आपके साथ अधिक सम्मान का व्यवहार करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, तो आपकी परिस्थितियां निरन्तर लाभदायक होती जायेंगी और आपकी आय में काफी सुधार होगा।

वर्तमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, जिससे पाँचवें भाव में अमात्य--कारक ग्रह (सप्त--कारक योजना के अनुसार) स्थित है। अमात्य--कारक ग्रह पेशे का संचालक है और पाँचवां भाव पद का सूचक है। इस दशा के दौरान, आप पेशे के क्षेत्र में अधिक उन्नति करेंगे। आप एक नया रोजगार, पदोन्नति या स्थानान्तरण प्राप्त कर सकते हैं। आपका नाम व यश दूर दूर तक फैलेगा तथा लोग आपके साथ अधिक सम्मान का व्यवहार करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, तो आपकी परिस्थितियां निरन्तर लाभदायक होती जायेंगी और आपकी आय में काफी सुधार होगा।

आपकी कुण्डली में वृष राशि में दारा--कारक ग्रह स्थित है, तुला राशि दारा--पद राशि है, सिहं राशि में विवाह का नैसर्गिक कारक ग्रह स्थित है तथा वृश्चिक राशि उप--पद राशि है। इनमें से किसी भी राशि की दशा, इनमें से किसी भी राशि की भुक्ति और इनमें से किसी भी राशि के अंतर के दौरान आपका विवाह होने की संभावना है। (स्पष्टतः उपयुक्त आयु के अन्तर्गत होगा। इन दशा--भुक्ति--अंतर संयोजन के समय के लिए जैमिनी चर दशा और त्रिकोण दशा को निर्देशित की जा सकती है-- राघव भट्ट और नृसिंह सूरी की विभाजन (भुक्ति) और उपविभाजन (अंतर) के अनुसार। एक अंतर--अवधि केवल एक महीने के लिए होती है। इसलिए मुहूर्त और गोचर आदि के निर्णय लेते समय अन्य पक्षों के कारण कुछ दिनों के अन्तर को भी माना जा सकता है)।

मीन भुक्ति (10:08:1956 से 10:08:1957)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

कुम्भ भुक्ति (10:08:1957 से 10:08:1958)

वर्तमान में आप वृश्चिक राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं और कुम्भ राशि की भुक्ति (एक वर्ष के लिए) चल रही है। दशा–राशि उप–पद राशि या दारा–पद राशि (पारम्परिक पद्धति के अनुसार) के साथ मिलान कर रहा है – जिसमें से प्रत्येक किसी ना किसी प्रकार से विवाह का कारक है– दशा–राशि में स्थित है। इसके अतिरिक्त, दशा–राशि से सप्तमेश भुक्ति–राशि से सातवें भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जबकि भुक्ति–राशि से सप्तमेश दशा–राशि से सातवें भाव में स्थित है अथवा इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा हैं। यह एक अत्यंत अनुकूल योग है। यदि आपकी आयु विवाह योग्य है और अविवाहित हैं तो इस दशा के दौरान आपका विवाह हो सकता है। या फिर अथवा साथ ही, आप एक साझेदारी या सहभागिता में संलग्न हो सकते हैं– जो कि लम्बे समय तक चलेगा और आपके लिए अनेक प्रकार के लाभों का अग्रदूत होगा। इस भुक्ति–अवधि के दौरान, वृश्चिक और कुम्भ राशि में प्रत्येक की अंतर–अवधि एक महीने के लिए चलेगी– इन दोनों अवधियों में से किसी अवधि के दौरान घटनायें होने की संभावना अत्यधिक है।

वर्तमान में आप वृश्चिक दशा (जो कि एक साल तक चलेगा) में कुम्भ भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में आपके लग्न से गणना करने पर चतुर्थेश या अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अतिरिक्त, आपकी दशा–राशि से गणना करने पर चतुर्थेश या अष्टमेश भुक्ति–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और भुक्ति–राशि से गणना करने पर चतुर्थेश या अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह प्रतिकूल आंतरिक संबंध बन रहा है। जैसाकि आठवां भाव नौवें भाव से बारहवां है और चौथा भाव नौवें भाव से आठवां है। अतः आपके पिता का स्वास्थ्य व सुख आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। या फिर अथवा साथ ही, आप किसी दुर्घटना का सामना कर सकते हैं।

मकर भुक्ति (10:08:1958 से 10:08:1959)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

धनु भुक्ति (10:08:1959 से 10:08:1960)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

वृश्चिक भुक्ति (10:08:1960 से 10:08:1961)

वर्तमान में आप वृश्चिक राशि की दशा से गुजर रहे हैं, इसी राशि की भुक्ति भी एक साल के लिए चल रही है। इस दशा के दौरान, दशा का फल और सुदृढ़ होगा।

मीन दशा (10:08:1961 से 09:08:1964)

वर्तमान में आप उस राशि की चर--दशा से गुजर रहे हैं, जिसमें एकादशेश स्थित है। यद्यपि एकादशेश आपकी जन्मकुण्डली में शक्तिशाली रूप से व्यवस्थित नहीं है-- जैसाकि यह ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपनी राशि में स्थित है, जैसाकि एकादशेश अभिलाषाओं की पूर्ति और महात्वाकांक्षाओं के कार्यान्वयन का कारक है, इसलिए यह अब भी एक बहुत लाभदायक योग है। आप लाभदायक परिणाम प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं। इस दशा के दौरान शिक्षा ग्रहण करने की आपकी संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रख सकते हैं।

वर्तमान में आप जिस राशि की चर--दशा से गुजर रहे हैं, उसमें लग्न से गणना करने पर चतुर्थेश दशा--राशि से पाँचवें भाव में स्थित है। यद्यपि यह ग्रह आपकी कुण्डली में शक्तिशाली रूप से व्यवस्थित नहीं है-- जैसाकि यह उच्चस्थ या अपने भाव में स्थित नहीं है। तब भी यह एक काफी अनुकूल योग है। इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक अध्ययन भी जारी रख सकते हैं। इन सभी मामलों में बहुत उत्तम करने की आशा कर सकते हैं।

वर्तमान में आप उस राशि की चर--दशा से गुजर रहे हैं, जो कि आपके लग्न से दसवें भाव की राशि के अनुकूल है। दसवां भाव पेशा, विश्वसनीयता, सम्मान आदि का भाव है। इस दशा के दौरान, आप पेशे के क्षेत्र में निश्चित रूप से अधिक उन्नति करेंगे। आप एक आकर्षक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा एक प्रतिष्ठित पद तक पहुंच सकते हैं। आपकी विश्वसनीयता और सम्मान में वृद्धि होगी तथा लोग आपके साथ अधिक सम्मान का व्यवहार करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, परिस्थितियां निरन्तर लाभदायक होती जायेंगी और आपकी आय में काफी सुधार होगा।

वर्तमान में आप उस राशि की चर--दशा से गुजर रहे हैं, जिसमें आपका अमात्य--कारक ग्रह (सप्त--कारक योजना के अनुसार) स्थित है। अमात्य--कारक ग्रह पेशे के क्षेत्र में प्रगति का संचालक है। इस दशा के दौरान, आप पेशे के क्षेत्र में अधिक उन्नति करेंगे। आप एक आकर्षक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा एक प्रतिष्ठित पद तक पहुंच सकते हैं। आपका नाम व यश दूर दूर तक फैलेगा तथा लोग आपके साथ अधिक सम्मान का व्यवहार करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, परिस्थितियां निरन्तर लाभदायक होती जायेंगी और आपकी आय में काफी सुधार होगा।

बुध बौद्धिक धन्धों और व्यापारिक सौदों का भी नैसर्गिक कारक है। वर्तमान में आप जिस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, उससे पाँचवें भाव में बुध स्थित है। पाँचवां भाव पद का संचालक है। इस दशा के दौरान, आप पेशे के क्षेत्र में अधिक उन्नति करेंगे। आप एक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा एक प्रतिष्ठित पद तक पहुंच सकते हैं। आपका नाम व यश दूर दूर तक फैलेगा तथा लोग आपके साथ अधिक सम्मान का व्यवहार करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, तो आपकी परिस्थितियां निरन्तर लाभदायक होती जायेंगी और आपकी आय में काफी सुधार होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, वर्तमान में आप जिस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, उस राशि से गणना करने पर पंचमेश और दशमेश की एक साथ युति है। यह युति आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। जैसाकि दसवां भाव पेशे का सूचक है और पाँचवां भाव पद का प्रतीक है। अतः यह एक अनुकूल योग है। इस दशा के दौरान, रोजगार/व्यापार से संबंधित मामलों में, आपकी स्थिति में सुधार हो सकता है। आपके रोजगार में परिवर्तन, स्थानान्तरण या पदोन्नति हो सकती है। आपका निवास स्थान भी परिवर्तित हो सकता है और आपको एक बेहतर आवास प्राप्त हो सकता है। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, तो आप कोई नया व्यवसाय प्रारम्भ कर सकते हैं अथवा किसी और अधिक लाभदायक स्थान पर जा सकते हैं।

वर्तमान में आप मीन राशि की दशा--अवधि से गुजर रहे हैं, जिसमें केतु बैठा हुआ है। इस राशि से पाँचवें भाव में एक या एक से अधिक अशुभ ग्रह स्थित हैं। इसके अतिरिक्त, दशा राशि से गणना करने पर पंचमेश दशा--राशि से बारहवें भाव में स्थित है, जबकि आपके लग्न से अष्टमेश की बृहस्पति के साथ युति है-- जो कि संतान का नैसर्गिक कारक है। समग्र रूप से ये संकेत बिल्कुल भी अनुकूल नहीं हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो ऐसी संभावना है कि इस दशा--अवधि के दौरान आपकी कोई एक संतान दुर्घटनाग्रस्त हो सकती है और/या उसे किसी शल्य चिकित्सा से गुजरना पड़ सकता है।

वृष भुक्ति (10:08:1961 से 10:08:1962)

वर्तमान में, आप मीन दशा में, वृष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, दशा–राशि से गणना करने पर दशमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपकी भुक्ति–राशि से भी गणना करने पर दशमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। यह समग्र योग अत्यंत अनुकूल है। इस अवधि के दौरान (जो कि केवल एक वर्ष तक चलेगा), आपको एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया रोजगार प्राप्त होने की संभावना अत्यधिक है। आपके रहन–सहन के स्तर में सुधार होगा और आपकी संतुष्टि में वृद्धि होगी।

वर्तमान में आप वृष राशि की जैमिनी चर दशा में मीन राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। केतु दशा–राशि में स्थित है और यह उच्चस्थ नहीं है। शनि भुक्ति–राशि में स्थित है और यह ना तो उच्चस्थ है व ना ही अपनी राशि में स्थित है। समग्र योग बहुत अनुकूल नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो इस दशा–भुक्ति के प्रारम्भ के आस–पास और/या इस दशा–भुक्ति के समाप्ति के आस–पास किसी अप्रत्याशि स्रोत और/या कुछ अनदेखे कारणों से आकस्मिक रूप से उत्पन्न कुछ गंभीर मुसीबतों का सामना कर सकते हैं। अतः आपको इस निर्देशित समय के आस–पास बहुत सावधान और सतर्क रहना चाहिए।

मेष भुक्ति (10:08:1962 से 10:08:1963)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

मीन भुक्ति (10:08:1963 से 10:08:1964)

वर्तमान में आप मीन राशि की दशा से गुजर रहे हैं, इसी राशि की भुक्ति भी एक साल के लिए चल रही है। इस दशा के दौरान, दशा का फल और सुदृढ़ होगा।

सिहं दशा (09:08:1964 से 09:08:1976)

वर्तमान समय में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, जिसमें मैत्री--कारक ग्रह स्थित है। यह कारक कुछ हद तक शिक्षा का कारक भी है, लेकिन जैसाकि यह ना तो उच्चस्थ है अथवा ना ही अपने भाव में स्थित है। आपकी कुण्डली में यह मात्र एक

सामान्य रूप से अच्छा योग है। आप लाभदायक परिणाम प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं। इस दशा के दौरान शिक्षा ग्रहण करने की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रख सकते हैं।

वर्तमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर मैत्री––कारक ग्रह अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह कारक कुछ हद तक शिक्षा का कारक भी है। यह एक बढ़िया योग है। आप लाभदायक परिणाम प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं। इस दशा के दौरान शिक्षा ग्रहण करने की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रख सकते हैं।

वर्तमान में आप उस राशि की चर––दशा से गुजर रहे हैं, जिसमें पंचमेश स्थित है। यद्यपि पंचमेश आपकी जन्मकुण्डली में शक्तिशाली रूप से व्यवस्थित नहीं है–– जैसाकि यह ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपनी राशि में स्थित है, जैसाकि पंचमेश स्मृति, प्रतिभा आदि का कारक है, इसलिए यह अब भी एक बहुत लाभदायक योग है। आप लाभदायक परिणाम प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं। इस दशा के दौरान शिक्षा ग्रहण करने की आपकी संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रख सकते हैं।

वर्तमान में आप उस राशि की चर––दशा से गुजर रहे हैं, जिसमें आपका पंचमेश स्थित है। पंचमेश पद, स्थिति आदि का संचालक है। इस दशा के दौरान, आप पेशे के क्षेत्र में अधिक उन्नति करेंगे। आप एक आकर्षक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा एक प्रतिष्ठित पद तक पहुंच सकते हैं। आपका नाम व यश दूर दूर तक फैलेगा तथा लोग आपके साथ अधिक सम्मान का व्यवहार करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, परिस्थितियां निरन्तर लाभदायक होती जायेंगी और आपकी आय में काफी सुधार होगा।

वर्तमान में आप जिस राशि की चर––दशा से गुजर रहे हैं, उससे दसवें भाव में आपके लग्न से दशमेश स्थित है। दशमेश पेशा, विश्वसनीयता, प्रतिष्ठा आदि का शासक है। इस दशा के दौरान, आप पेशे के क्षेत्र में अधिक उन्नति करेंगे। आप एक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा एक प्रतिष्ठित पद तक पहुंच सकते हैं। आपका नाम व यश दूर दूर तक फैलेगा तथा लोग आपके साथ अधिक सम्मान का व्यवहार करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, तो आपकी परिस्थितियां निरन्तर लाभदायक होती जायेंगी और आपकी आय में काफी सुधार होगा।

शनि सेवा क्षेत्र और औद्योगिक धन्धों का नैसर्गिक कारक है। वर्तमान में आप जिस राशि की चर––दशा से गुजर रहे हैं, उससे दसवें भाव में शनि स्थित है। आपकी जन्मकुण्डली में शनि वक्री नहीं है। दसवां भाव पेशे का संचालक है। इस दशा के दौरान, आप पेशे के क्षेत्र में अधिक उन्नति करेंगे। आप एक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा एक प्रतिष्ठित पद तक पहुंच सकते हैं। आपका नाम व यश दूर दूर तक फैलेगा तथा लोग आपके साथ अधिक सम्मान का व्यवहार करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, तो आपकी परिस्थितियां निरन्तर लाभदायक होती जायेंगी और आपकी आय में काफी सुधार होगा।

वर्तमान में आप जिस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, उस राशि से आठवें भाव में दो या अधिक अशुभ ग्रह स्थित हैं। उस राशि में कोई भी शुभ ग्रह स्थित नहीं है। जैसाकि आठवां भाव गंभीर समस्याओं और कठिनाइयों का सूचक है। अतः यह बिल्कुल भी अनुकूल योग नहीं है। इस दशा अवधि के दौरान, आप पेशे के क्षेत्र में कठिन स्थिति का सामना कर सकते हैं, आपकी आय आपके प्रयासों अथवा अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं हो सकता है। आप अपने वरिष्ठों या अधिकारियां के कोप का भाजन बन सकते हैं तथा भयानक परिणामों का सामना करने का खतरा हो सकता है। जो कुछ भी हो रहा है, वह सुचारू ढंग से नहीं हो सकता है तथा आपको अपनी स्थिति बनाये रखने में कठिनाई हो सकती है। लेकिन, तब भी आप कुछ लोगों का समर्थन प्राप्त कर सकते हैं, जो कि निम्न सामाजिक––आर्थिक स्तर के हो सकते हैं। यदि आप व्यापार में हैं, तो आपकी परिस्थितियां काफी नुकसानदायक होंगी, और यह काफी मंदा हो सकता है। धन की कमी के कारण आप अपने वादों को निभाने में सक्षम नहीं हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, वर्तमान में आप जिस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, उस राशि से गणना करने पर पंचमेश और दशमेश की एक साथ युति है। यह युति आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। जैसाकि दसवां भाव पेशे का सूचक है और पाँचवां भाव पद का प्रतीक है। अतः यह एक अनुकूल योग है। इस दशा के दौरान, रोजगार/व्यापार से संबंधित मामलों में, आपकी स्थिति में सुधार हो सकता है। आपके रोजगार में परिवर्तन, स्थानान्तरण या पदोन्नति हो सकती है। आपका निवास स्थान भी परिवर्तित हो सकता है और आपको एक बेहतर आवास प्राप्त हो सकता है। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, तो आप कोई नया व्यवसाय प्रारम्भ कर सकते हैं अथवा किसी और अधिक लाभदायक स्थान पर जा सकते हैं।

आपकी कुण्डली में वृष राशि में दारा--कारक ग्रह स्थित है, तुला राशि दारा--पद राशि है, सिहं राशि में विवाह का नैसर्गिक कारक ग्रह स्थित है तथा वृश्चिक राशि उप--पद राशि है। इनमें से किसी भी राशि की दशा, इनमें से किसी भी राशि की भुक्ति और इनमें से किसी भी राशि के अंतर के दौरान आपका विवाह होने की संभावना है। (स्पष्टतः उपयुक्त आयु के अन्तर्गत होगा। इन दशा--भुक्ति--अंतर संयोजन के समय के लिए जैमिनी चर दशा और त्रिकोण दशा को निर्देशित की जा सकती है-- राघव भट्ट और नृसिंह सूरी की विभाजन (भुक्ति) और उपविभाजन (अंतर) के अनुसार। एक अंतर--अवधि केवल एक महीने के लिए होती है। इसलिए मुहूर्त और गोचर आदि के निर्णय लेते समय अन्य पक्षों के कारण कुछ दिनों के अन्तर को भी माना जा सकता है)।

कर्क भुक्ति (10:08:1964 से 10:08:1965)

वर्तमान में, आप सिहं दशा में, कर्क भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, दशा-राशि से गणना करने पर अष्टमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपकी भुक्ति-राशि से भी गणना करने पर अष्टमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। यह समग्र योग काफी प्रतिकूल है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो इस अवधि के दौरान (जो कि केवल एक वर्ष तक चलेगा), आपको अपने पेशे के क्षेत्र में गंभीर आघात का सामना करना पड़ सकता है। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको नौकरी छोड़ने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। यदि आप व्यापार में हैं, तो आपको भारी हानियां हो सकती हैं। आपको अपना निवास स्थान भी छोड़ना पड़ सकता है अथवा किसी असुविधाजनक स्थान पर जाना पड़ सकता है।

वर्तमान में, आप सिहं दशा में, कर्क भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, दशा-राशि से गणना करने पर दशमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपकी भुक्ति-राशि से भी गणना करने पर दशमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। यह समग्र योग अत्यंत अनुकूल है। इस अवधि के दौरान (जो कि केवल एक वर्ष तक चलेगा), आपको एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया रोजगार प्राप्त होने की संभावना अत्यधिक है। आपके रहन-सहन के स्तर में सुधार होगा और आपकी संतुष्टि में वृद्धि होगी।

मिथुन भुक्ति (10:08:1965 से 10:08:1966)

वर्तमान में, आप सिहं दशा में, मिथुन भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, दशा-राशि से गणना करने पर अष्टमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपकी भुक्ति-राशि से भी गणना करने पर अष्टमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। यह समग्र योग काफी प्रतिकूल है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो इस अवधि के दौरान (जो कि केवल एक वर्ष तक चलेगा), आपको अपने पेशे के क्षेत्र में गंभीर आघात का सामना करना पड़ सकता है। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको नौकरी छोड़ने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। यदि आप व्यापार में हैं, तो आपको भारी हानियां हो सकती हैं। आपको अपना निवास स्थान भी छोड़ना पड़ सकता है अथवा किसी असुविधाजनक स्थान पर जाना पड़ सकता है।

वर्तमान में, आप सिहं दशा में, मिथुन भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, दशा–राशि से गणना करने पर दशमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपकी भुक्ति–राशि से भी गणना करने पर दशमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। यह समग्र योग अत्यंत अनुकूल है। इस अवधि के दौरान (जो कि केवल एक वर्ष तक चलेगा), आपको एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया रोजगार प्राप्त होने की संभावना अत्यधिक है। आपके रहन–सहन के स्तर में सुधार होगा और आपकी संतुष्टि में वृद्धि होगी।

वृष भुक्ति (10:08:1966 से 10:08:1967)

वर्तमान में, आप सिहं दशा में, वृष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, दशा–राशि से गणना करने पर दशमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपकी भुक्ति–राशि से भी गणना करने पर दशमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। यह समग्र योग अत्यंत अनुकूल है। इस अवधि के दौरान (जो कि केवल एक वर्ष तक चलेगा), आपको एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया रोजगार प्राप्त होने की संभावना अत्यधिक है। आपके रहन–सहन के स्तर में सुधार होगा और आपकी संतुष्टि में वृद्धि होगी।

वर्तमान में, आप सिहं दशा में, वृष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, आपके लग्न से गणना करने पर दशमेश आपकी दशा–राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपके लग्न से गणना करने पर दशमेश आपकी भुक्ति–राशि से भी दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। यह समग्र योग अत्यंत अनुकूल है। इस अवधि के दौरान (जो कि केवल एक वर्ष तक चलेगा), आपको एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया रोजगार प्राप्त होने की संभावना अत्यधिक है। आपके रहन–सहन के स्तर में सुधार होगा और आपकी संतुष्टि में वृद्धि होगी। संभावना है कि ये बदलाव सिहं अथवा वृष के अन्तर–अवधि के दौरान हो सकते हैं।(जिनमें से प्रत्येक केवल एक माह के लिए चलता है)।

मेष भुक्ति (10:08:1967 से 10:08:1968)

वर्तमान में आप सिहं राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं और मेष राशि की भुक्ति (एक वर्ष के लिए) चल रही है। शुक्र या लग्न से सप्तमेश या दारा–कारक ग्रह (सप्तकारक योजना के अनुसार) – जिसमें से प्रत्येक किसी ना किसी प्रकार से विवाह का कारक है– दशा–राशि में स्थित है। इसके अतिरिक्त, दशा–राशि से सप्तमेश और भुक्ति–राशि से सप्तमेश की युति है। यह युति आपके लग्न से सातवें भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह एक अत्यंत अनुकूल योग है। यदि आपकी आयु विवाह योग्य है और अविवाहित हैं तो इस दशा के दौरान आपका विवाह हो सकता है। या फिर अथवा साथ ही, आप एक साझेदारी या सहभागिता में संलग्न हो सकते हैं– जो कि लम्बे समय तक चलेगा और आपके लिए अनेक प्रकार के लाभों का अग्रदूत होगा। इस भुक्ति–अवधि के दौरान, सिहं और मेष राशि में प्रत्येक की अंतर–अवधि एक महीने के लिए चलेगी– इन दोनों अवधियों में से किसी अवधि के दौरान घटनायें होने की संभावना अत्यधिक है।

मीन भुक्ति (10:08:1968 से 10:08:1969)

वर्तमान में, आप सिहं दशा में, मीन भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, दशा–राशि से गणना करने पर दशमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपकी भुक्ति–राशि से भी गणना करने पर दशमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा

है)। यह समग्र योग अत्यंत अनुकूल है। इस अवधि के दौरान (जो कि केवल एक वर्ष तक चलेगा), आपको एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया रोजगार प्राप्त होने की संभावना अत्यधिक है। आपके रहन–सहन के स्तर में सुधार होगा और आपकी संतुष्टि में वृद्धि होगी।

कुम्भ भुक्ति (10:08:1969 से 10:08:1970)

वर्तमान में, आप सिहं दशा में, कुम्भ भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, दशा–राशि से गणना करने पर दशमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपकी भुक्ति–राशि से भी गणना करने पर दशमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। यह समग्र योग अत्यंत अनुकूल है। इस अवधि के दौरान (जो कि केवल एक वर्ष तक चलेगा), आपको एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया रोजगार प्राप्त होने की संभावना अत्यधिक है। आपके रहन–सहन के स्तर में सुधार होगा और आपकी संतुष्टि में वृद्धि होगी।

मकर भुक्ति (10:08:1970 से 10:08:1971)

वर्तमान में आप सिहं राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं और मकर राशि की भुक्ति (एक वर्ष के लिए) चल रही है। शुक्र या लग्न से सप्तमेश या दारा–कारक ग्रह (सप्तकारक योजना के अनुसार) – जिसमें से प्रत्येक किसी ना किसी प्रकार से विवाह का कारक है– दशा–राशि में स्थित है। इसके अतिरिक्त, दशा–राशि से सप्तमेश और भुक्ति–राशि से सप्तमेश की युति है। यह युति आपके लग्न से सातवें भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह एक अत्यंत अनुकूल योग है। यदि आपकी आयु विवाह योग्य है और अविवाहित हैं तो इस दशा के दौरान आपका विवाह हो सकता है। या फिर अथवा साथ ही, आप एक साझेदारी या सहभागिता में संलग्न हो सकते हैं– जो कि लम्बे समय तक चलेगा और आपके लिए अनेक प्रकार के लाभों का अग्रदूत होगा। इस भुक्ति–अवधि के दौरान, सिहं और मकर राशि में प्रत्येक की अंतर–अवधि एक महीने के लिए चलेगी– इन दोनों अवधियों में से किसी अवधि के दौरान घटनायें होने की संभावना अत्यधिक है।

वर्तमान में आप सिहं राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं और मकर राशि की भुक्ति (एक वर्ष के लिए) चल रही है। शुक्र या लग्न से सप्तमेश या दारा–कारक ग्रह (सप्तकारक योजना के अनुसार) – जिसमें से प्रत्येक किसी ना किसी प्रकार से विवाह का कारक है– दशा–राशि में स्थित है। इसके अतिरिक्त, दशा–राशि से सप्तमेश और भुक्ति–राशि से सप्तमेश की युति है। यह युति आपके लग्न से सातवें भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह एक अत्यंत अनुकूल योग है। यदि आपकी आयु विवाह योग्य है और अविवाहित हैं तो इस दशा के दौरान आपका विवाह हो सकता है। या फिर अथवा साथ ही, आप एक साझेदारी या सहभागिता में संलग्न हो सकते हैं– जो कि लम्बे समय तक चलेगा और आपके लिए अनेक प्रकार के लाभों का अग्रदूत होगा। इस भुक्ति–अवधि के दौरान, सिहं और मकर राशि में प्रत्येक की अंतर–अवधि एक महीने के लिए चलेगी– इन दोनों अवधियों में से किसी अवधि के दौरान घटनायें होने की संभावना अत्यधिक है।

वर्तमान में आप सिहं राशि की दशा से गुजर रहे हैं और इसमें मकर राशि की भुक्ति चल रही है, जो कि एक साल तक चलेगी। आपकी कुण्डली में दशा–राशि का स्वामी आपके लग्न से सातवें भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है (अथवा आपके लग्न से सप्तमेश के साथ इसकी युति है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। इसके अतिरिक्त, दशा–राशि का स्वामी दशा–राशि से सातवें भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। विवाह का अवसर सातवें भाव के अन्तर्गत आता है और सातवें भाव का प्रभाव प्रबल है। यदि आप अविवाहित हैं, तो इस दशा–अवधि के दौरान आपका विवाह होने की प्रबल संभावना है। भुक्ति–राशि का स्वामी दशा–राशि से सातवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है (अथवा इसकी दशा–राशि से सप्तमेश के साथ युति है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। इसके अतिरिक्त, भुक्ति–राशि का सप्तमेश भुक्ति राशि से सातवें भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है– जबकि भुक्ति–राशि से सप्तमेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है (अथवा दशा–राशि से सप्तमेश भुक्ति–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। सातवें भाव की प्रबलता और लग्न, दशा–राशि एवं भुक्ति–राशि के मध्य मधुर आंतरिक–संबंध स्थापित होने के कारण, यह संभावना प्रबल प्रतीत होती है कि आप इस भुक्ति–अवधि के दौरान विवाह कर सकते हैं।

धनु भुक्ति (10:08:1971 से 10:08:1972)

वर्तमान में, आप सिहं दशा में, धनु भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, दशा–राशि से गणना करने पर अष्टमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपकी भुक्ति–राशि से भी गणना करने पर अष्टमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। यह समग्र योग काफी प्रतिकूल है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो इस अवधि के दौरान (जो कि केवल एक वर्ष तक चलेगा), आपको अपने पेशे के क्षेत्र में गंभीर आघात का सामना करना पड़ सकता है। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको नौकरी छोड़ने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। यदि आप व्यापार में हैं, तो आपको भारी हानियां हो सकती हैं। आपको अपना निवास स्थान भी छोड़ना पड़ सकता है अथवा किसी असुविधाजनक स्थान पर जाना पड़ सकता है।

वृश्चिक भुक्ति (10:08:1972 से 10:08:1973)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

तुला भुक्ति (10:08:1973 से 10:08:1974)

वर्तमान में, आप सिहं दशा में, तुला भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, दशा–राशि से गणना करने पर दशमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपकी भुक्ति–राशि से भी गणना करने पर दशमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। यह समग्र योग अत्यंत अनुकूल है। इस अवधि के दौरान (जो कि केवल एक वर्ष तक चलेगा), आपको एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया रोजगार प्राप्त होने की संभावना अत्यधिक है। आपके रहन–सहन के स्तर में सुधार होगा और आपकी संतुष्टि में वृद्धि होगी।

वर्तमान में, आप सिहं दशा में, तुला भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, आपके लग्न से गणना करने पर दशमेश आपकी दशा–राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपके लग्न से गणना करने पर दशमेश आपकी भुक्ति–राशि से भी दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। यह समग्र योग अत्यंत अनुकूल है। इस अवधि के दौरान (जो कि केवल एक वर्ष तक चलेगा), आपको एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया रोजगार प्राप्त होने की संभावना अत्यधिक है। आपके रहन–सहन के स्तर में सुधार होगा और आपकी संतुष्टि में वृद्धि होगी। संभावना है कि ये बदलाव सिहं अथवा तुला के अन्तर–अवधि के दौरान हो सकते हैं।(जिनमें से प्रत्येक केवल एक माह के लिए चलता है)।

कन्या भुक्ति (10:08:1974 से 10:08:1975)

वर्तमान में, आप सिहं दशा में, कन्या भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, दशा–राशि से गणना करने पर अष्टमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपकी भुक्ति–राशि से भी गणना करने पर अष्टमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। यह समग्र योग काफी प्रतिकूल है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो इस अवधि के दौरान (जो कि केवल एक वर्ष तक चलेगा), आपको अपने पेशे के क्षेत्र में गंभीर आघात का सामना करना पड़ सकता है। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको नौकरी छोड़ने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। यदि आप व्यापार में हैं, तो आपको भारी हानियां हो सकती हैं। आपको अपना निवास स्थान भी छोड़ना पड़ सकता है अथवा किसी असुविधाजनक स्थान पर जाना पड़ सकता है।

सिहं भुक्ति (10:08:1975 से 10:08:1976)

वर्तमान में आप सिहं राशि की दशा से गुजर रहे हैं, इसी राशि की भुक्ति भी एक साल के लिए चल रही है। इस दशा के दौरान, दशा का फल और सुदृढ़ होगा।

धनु दशा (09:08:1976 से 10:08:1982)

वर्तमान में उस राशि की चर––दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर एकादशेश की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। जैसाकि एकादशेश अभिलाषाओं की पूर्ति और महात्वाकांक्षाओं के कार्यान्वयन का कारक है, यह एक बहुत अनुकूल योग है। आप कुछ लाभदायक परिणाम प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं। इस दशा के दौरान शिक्षा ग्रहण करने की आपकी संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रख सकते हैं।

वर्तमान में आप जिस राशि की चर––दशा से गुजर रहे हैं, उसमें लग्न से गणना करने पर एकादशेश दशा––राशि से चौथे भाव में स्थित है। यद्यपि यह ग्रह आपकी कुण्डली में शक्तिशाली रूप से व्यवस्थित नहीं है–– जैसाकि यह उच्चस्थ या अपने भाव में स्थित नहीं है। तब भी यह एक काफी अनुकूल योग है। इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक अध्ययन भी जारी रख सकते हैं। इन सभी मामलों में बहुत उत्तम करने की आशा कर सकते हैं।

वृष भुक्ति (10:08:1976 से 10:08:1977)

वर्तमान में, आप धनु दशा में, वृष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, दशा–राशि से गणना करने पर अष्टमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपकी भुक्ति–राशि से भी गणना करने पर अष्टमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। यह समग्र योग काफी प्रतिकूल है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव

उपस्थित नहीं हैं, तो इस अवधि के दौरान (जो कि केवल एक वर्ष तक चलेगा), आपको अपने पेशे के क्षेत्र में गंभीर आघात का सामना करना पड़ सकता है। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको नौकरी छोड़ने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। यदि आप व्यापार में हैं, तो आपको भारी हानियां हो सकती हैं। आपको अपना निवास स्थान भी छोड़ना पड़ सकता है अथवा किसी असुविधाजनक स्थान पर जाना पड़ सकता है।

मेष भुक्ति (10:08:1977 से 10:08:1978)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

मीन भुक्ति (10:08:1978 से 10:08:1979)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

कुम्भ भुक्ति (10:08:1979 से 10:08:1980)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

मकर भुक्ति (10:08:1980 से 10:08:1981)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

धनु भुक्ति (10:08:1981 से 10:08:1982)

वर्तमान में आप धनु राशि की दशा से गुजर रहे हैं, इसी राशि की भुक्ति भी एक साल के लिए चल रही है। इस दशा के दौरान, दशा का फल और सुदृढ़ होगा।

मेष दशा (10:08:1982 से 10:08:1994)

वर्तमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर मैत्री--कारक ग्रह अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह कारक कुछ हद तक शिक्षा का कारक भी है। यह एक बढ़िया योग है। आप लाभदायक परिणाम प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं। इस दशा के दौरान शिक्षा ग्रहण करने की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रख सकते हैं।

वर्तमान में आप जिस राशि की चर--दशा से गुजर रहे हैं, उसमें लग्न से गणना करने पर चतुर्थेश दशा--राशि से चौथे भाव में स्थित है। यद्यपि यह ग्रह आपकी कुण्डली में शक्तिशाली रूप से व्यवस्थित नहीं है-- जैसाकि यह उच्चस्थ या अपने भाव में स्थित नहीं है। तब भी यह एक काफी अनुकूल योग है। इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक अध्ययन भी जारी रख सकते हैं। इन सभी मामलों में बहुत उत्तम करने की आशा कर सकते हैं।

वर्तमान में आप जिस राशि की चर--दशा से गुजर रहे हैं, उसमें लग्न से गणना करने पर पंचमेश दशा--राशि से पाँचवें भाव में स्थित है। यद्यपि यह ग्रह आपकी कुण्डली में शक्तिशाली रूप से व्यवस्थित नहीं है-- जैसाकि यह उच्चस्थ या अपने भाव में स्थित नहीं है। तब भी यह एक काफी अनुकूल योग है। इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक अध्ययन भी जारी रख सकते हैं। इन सभी मामलों में बहुत उत्तम करने की आशा कर सकते हैं।

वर्तमान में आप उस राशि की चर--दशा से गुजर रहे हैं, जिसका स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है। दसवां भाव पेशे से संबंधित मामलों का शासक है। इस दशा के दौरान, आप पेशे के क्षेत्र में अधिक उन्नति करेंगे। आप एक आकर्षक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा एक प्रतिष्ठित पद तक पहुंच सकते हैं। आपका नाम व यश दूर दूर तक फैलेगा तथा लोग आपके साथ अधिक सम्मान का व्यवहार करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, तो परिस्थितियां निरन्तर लाभदायक होती जायेंगी और आपकी आय में काफी सुधार होगा।

वर्तमान में आप जिस राशि की चर--दशा से गुजर रहे हैं, उससे पाँचवें भाव में आपके लग्न से पंचमेश स्थित है। पंचमेश पद का प्रतीक है। इस दशा के दौरान, आप पेशे के क्षेत्र में अधिक उन्नति करेंगे। आप एक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा एक प्रतिष्ठित पद तक पहुंच सकते हैं। आपका नाम व यश दूर दूर तक फैलेगा तथा लोग आपके साथ अधिक सम्मान का व्यवहार करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, तो आपकी परिस्थितियां निरन्तर लाभदायक होती जायेंगी और आपकी आय में काफी सुधार होगा।

वर्तमान में आप जिस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, उस राशि से केन्द्र भाव में सूर्य स्थित है, जबकि शुक्र एक त्रिकोण भाव में स्थित है। यह एक अत्यंत शुभ योग है। इस दशा अवधि के दौरान आप पेशे के क्षेत्र में अत्यंत उत्तम उन्नति करने की आशा कर सकते हैं। आप एक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा एक प्रतिष्ठित पद तक पहुंच सकते हैं। आपका नाम व यश दूर दूर तक फैलेगा तथा लोग आपके साथ अधिक सम्मान का व्यवहार करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, तो आपकी परिस्थितियां अधिक लाभदायक होंगी और आपकी आय में भी काफी सुधार होगा।

वर्तमान में आप जिस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, आपकी जन्मकुण्डली में, एक या एक से अधिक अशुभ ग्रह उस राशि से छठवें भाव में स्थित हैं। उस राशि में कोई भी शुभ ग्रह स्थित नहीं है। जैसाकि छठवां भाव नौकरी और प्रतियोगिता का सूचक है, अतः यह अनेक मामलों में बहुत अनुकूल योग है। इस दशा अवधि के दौरान आप पेशे के क्षेत्र में अत्यंत प्रगति की आशा कर सकते हैं। संभवतः आप किसी प्रतियोगी परीक्षा में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आप एक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा स्थानान्तरण हो सकता है अथवा पदोन्नति हो सकती है। आपका पद और पारिश्रमिक बहुत बढ़िया हो सकता है। जैसाकि छठवां भाव शत्रु व रोग का भी सूचक है, आपके शत्रु पूर्णतः परास्त होंगे, किन्तु आपका स्वास्थ्य कुछ हद तक नाजुक हो सकता है। यदि आप व्यापार में हैं, तो आपके लिए नये मार्ग खुल सकते हैं और आप काफी तेजी से आगे बढ़ सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, वर्तमान में आप जिस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, उसका स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अतिरिक्त, उसी दशा राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है। जैसाकि दसवां भाव पेशे का संचालक है, जबकि पाँचवां भाव पद का सूचक है, अतः यह एक अत्यंत अनुकूल योग का निर्माण कर रहा है। इस दशा अवधि के दौरान, आप पेशे के क्षेत्र में अत्यंत उत्तम प्रगति की आशा कर सकते हैं। आप एक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा एक प्रतिष्ठित पद तक पहुंच सकते हैं। आप निरन्तर अत्यधिक लोकप्रिय हो सकते हैं और सामान्य लोग आपके साथ अधिक सम्मान का व्यवहार करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, तो आपकी परिस्थितियां अधिक लाभदायक होंगी, इसमें बहुत तेजी आयेगी तथा आपकी आय में भी काफी सुधार होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, वर्तमान में आप जिस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, उसके स्वामी की उसी राशि से गणना करने पर आठवें भाव के स्वामी के साथ युति है। ये युति आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है अथवा इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहे हैं। जैसाकि दसवां भाव पेशे का संचालक है और आठवां भाव अत्यधिक कठिनाइयों का सूचक है। अतः यह एक बहुत प्रतिकूल योग है। इस दशा के प्रारम्भ में या इसी दशा के दौरान किसी समय, आपको अपने पेशे में अस्थाई आघात का सामना करना पड़ सकता है। आपको पूर्णतया अप्रत्याशित स्रोतों या अनदेखे कारणों से उत्पन्न गंभीर कठिनाइयों का सामना करने का खतरा हो सकता है। आपका अपने वरिष्ठों या अधिकारियों से कुछ बड़े मतभेद हो सकते हैं। परिस्थितियों से विवश होकर, आपको बिना किसी पर्याप्त तैयारी के नौकरी छोड़नी पड़ सकती है तथा दूसरे नियोक्ता के अधीन कार्य करना पड़ सकता है। आपकी आय में भी कुछ हद तक कमी हो सकती है और आपका पद या रोजगार आपकी योग्यता के अनुरूप नहीं सकता है। आपका निवास भी परिवर्तित हो सकता है तथा आपको किसी असुविधाजनक वातावरण में रहना पड़ सकता है। यदि आप व्यापार में हैं, तो यह एक कठिन समय हो सकता है, कुछ हानियां हो सकती हैं, अथवा धन के अभाव या अवरोध के कारण आपको अपने वादों को पूरा करने में कठिनाई हो सकती है।

मीन भुक्ति (10:08:1982 से 10:08:1983)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

कुम्भ भुक्ति (10:08:1983 से 10:08:1984)

वर्तमान में आप कुम्भ दशा में (जो कि एक वर्ष तक चलेगी) मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गणना करने पर षष्ठेश या द्वितीयेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अतिरिक्त, आपकी दशा–राशि से गणना करने पर षष्ठेश या द्वितीयेश भुक्ति–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और भुक्ति–राशि से गणना करने पर षष्ठेश या द्वितीयेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह प्रतिकूल आंतरिक संबंध बन रहा है। जैसाकि छठा भाव सातवें भाव से बारहवां है और दूसरा भाव सातवें भाव से आठवां है। अतः आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य व सुख आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। उनको किसी दुर्घटना का सामना करना पड़ सकता है और/या किसी शल्य प्रक्रिया से गुजरना पड़ सकता है।

मकर भुक्ति (10:08:1984 से 10:08:1985)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

धनु भुक्ति (10:08:1985 से 10:08:1986)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

वृश्चिक भुक्ति (10:08:1986 से 10:08:1987)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

तुला भुक्ति (10:08:1987 से 10:08:1988)

वर्तमान में, आप मेष दशा में, तुला भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, आपके लग्न से गणना करने पर दशमेश आपकी दशा–राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और

आपके लग्न से गणना करने पर दशमेश आपकी भुक्ति–राशि से भी दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। यह समग्र योग अत्यंत अनुकूल है। इस अवधि के दौरान (जो कि केवल एक वर्ष तक चलेगा), आपको एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया रोजगार प्राप्त होने की संभावना अत्यधिक है। आपके रहन–सहन के स्तर में सुधार होगा और आपकी संतुष्टि में वृद्धि होगी। संभावना है कि ये बदलाव मेष अथवा तुला के अन्तर–अवधि के दौरान हो सकते हैं।(जिनमें से प्रत्येक केवल एक माह के लिए चलता है)।

कन्या भुक्ति (10:08:1988 से 10:08:1989)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

सिहं भुक्ति (10:08:1989 से 10:08:1990)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

कर्क भुक्ति (10:08:1990 से 10:08:1991)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

मिथुन भुक्ति (10:08:1991 से 10:08:1992)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

वृष भुक्ति (10:08:1992 से 10:08:1993)

वर्तमान में, आप मेष दशा में, वृष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, आपके लग्न से गणना करने पर दशमेश आपकी दशा–राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपके लग्न से गणना करने पर दशमेश आपकी भुक्ति–राशि से भी दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। यह समग्र योग अत्यंत अनुकूल है। इस अवधि के दौरान (जो कि केवल एक वर्ष तक चलेगा), आपको एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया रोजगार प्राप्त होने की संभावना अत्यधिक है। आपके रहन–सहन के स्तर में सुधार होगा और आपकी संतुष्टि में वृद्धि होगी। संभावना है कि ये बदलाव मेष अथवा वृष के अन्तर–अवधि के दौरान हो सकते हैं।(जिनमें से प्रत्येक केवल एक माह के लिए चलता है)।

मेष भुक्ति (10:08:1993 से 10:08:1994)

वर्तमान में आप मेष राशि की दशा से गुजर रहे हैं, इसी राशि की भुक्ति भी एक साल के लिए चल रही है। इस दशा के दौरान, दशा का फल और सुदृढ़ होगा।

कन्या दशा (10:08:1994 से 10:08:2005)

वर्तमान में उस राशि की चर––दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर एकादशेश की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। जैसाकि एकादशेश अभिलाषाओं की पूर्ति और महात्वाकांक्षाओं के कार्यान्वयन का कारक है, यह एक बहुत अनुकूल योग है। आप कुछ लाभदायक परिणाम प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं। इस दशा के दौरान शिक्षा ग्रहण करने की आपकी संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रख सकते

हैं।

वर्तमान में आप जिस राशि की चर--दशा से गुजर रहे हैं, उसमें लग्न से गणना करने पर चतुर्थेश दशा--राशि से ग्यारहवें भाव में स्थित है। यद्यपि यह ग्रह आपकी कुण्डली में शक्तिशाली रूप से व्यवस्थित नहीं है-- जैसाकि यह उच्चस्थ या अपने भाव में स्थित नहीं है। तब भी यह एक काफी अनुकूल योग है। इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक अध्ययन भी जारी रख सकते हैं। इन सभी मामलों में बहुत उत्तम करने की आशा कर सकते हैं।

वर्तमान में आप जिस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, आपकी जन्मकुण्डली में, एक या एक से अधिक अशुभ ग्रह उस राशि से छठवें भाव में स्थित हैं। उस राशि में कोई भी शुभ ग्रह स्थित नहीं है। जैसाकि छठवां भाव नौकरी और प्रतियोगिता का सूचक है, अतः यह अनेक मामलों में बहुत अनुकूल योग है। इस दशा अवधि के दौरान आप पेशे के क्षेत्र में अत्यंत प्रगति की आशा कर सकते हैं। संभवतः आप किसी प्रतियोगी परीक्षा में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आप एक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा स्थानान्तरण हो सकता है अथवा पदोन्नति हो सकती है। आपका पद और पारिश्रमिक बहुत बढ़िया हो सकता है। जैसाकि छठवां भाव शत्रु व रोग का भी सूचक है, आपके शत्रु पूर्णतः परास्त होंगे, किन्तु आपका स्वास्थ्य कुछ हद तक नाजुक हो सकता है। यदि आप व्यापार में हैं, तो आपके लिए नये मार्ग खुल सकते हैं और आप काफी तेजी से आगे बढ़ सकते हैं।

कर्क भुक्ति (10:08:1994 से 10:08:1995)

वर्तमान में, आप कन्या दशा में, कर्क भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, दशा–राशि से गणना करने पर अष्टमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपकी भुक्ति–राशि से भी गणना करने पर अष्टमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। यह समग्र योग काफी प्रतिकूल है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो इस अवधि के दौरान (जो कि केवल एक वर्ष तक चलेगा), आपको अपने पेशे के क्षेत्र में गंभीर आघात का सामना करना पड़ सकता है। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको नौकरी छोड़ने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। यदि आप व्यापार में हैं, तो आपको भारी हानियां हो सकती हैं। आपको अपना निवास स्थान भी छोड़ना पड़ सकता है अथवा किसी असुविधाजनक स्थान पर जाना पड़ सकता है।

मिथुन भुक्ति (10:08:1995 से 10:08:1996)

वर्तमान में, आप कन्या दशा में, मिथुन भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, दशा–राशि से गणना करने पर अष्टमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपकी भुक्ति–राशि से भी गणना करने पर अष्टमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। यह समग्र योग काफी प्रतिकूल है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो इस अवधि के दौरान (जो कि केवल एक वर्ष तक चलेगा), आपको अपने पेशे के क्षेत्र में गंभीर आघात का सामना करना पड़ सकता है। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको नौकरी छोड़ने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। यदि आप व्यापार में हैं, तो आपको भारी हानियां हो सकती हैं। आपको अपना निवास स्थान भी छोड़ना पड़ सकता है अथवा किसी असुविधाजनक स्थान पर जाना पड़ सकता है।

वर्तमान में आप मिथुन दशा में (जो कि एक वर्ष तक चलेगी) कन्या भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गणना करने पर एकादशेश या तृतीयेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अतिरिक्त, आपकी दशा–राशि से गणना करने पर एकादशेश या तृतीयेश भुक्ति–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और भुक्ति–राशि से गणना करने पर एकादशेश या तृतीयेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह प्रतिकूल आंतरिक संबंध बन रहा है। जैसाकि तीसरा भाव चौथे भाव से बारहवां है और ग्यारहवां भाव चौथे भाव से आठवां है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य व सुख आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। या फिर अथवा साथ ही, आपकी संपत्ति की हानि हो सकती है।

वृष भुक्ति (10:08:1996 से 10:08:1997)

वर्तमान में, आप कन्या दशा में, वृष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, दशा–राशि से गणना करने पर अष्टमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपकी भुक्ति–राशि से भी गणना करने पर अष्टमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। यह समग्र योग काफी प्रतिकूल है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो इस अवधि के दौरान (जो कि केवल एक वर्ष तक चलेगा), आपको अपने पेशे के क्षेत्र में गंभीर आघात का सामना करना पड़ सकता है। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको नौकरी छोड़ने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। यदि आप व्यापार में हैं, तो आपको भारी हानियां हो सकती हैं। आपको अपना निवास स्थान भी छोड़ना पड़ सकता है अथवा किसी असुविधाजनक स्थान पर जाना पड़ सकता है।

मेष भुक्ति (10:08:1997 से 10:08:1998)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

मीन भुक्ति (10:08:1998 से 10:08:1999)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

कुम्भ भुक्ति (10:08:1999 से 10:08:2000)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

मकर भुक्ति (10:08:2000 से 10:08:2001)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

धनु भुक्ति (10:08:2001 से 10:08:2002)

वर्तमान में, आप कन्या दशा में, धनु भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, दशा–राशि से गणना करने पर अष्टमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपकी भुक्ति–राशि से भी गणना करने पर अष्टमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। यह समग्र योग काफी प्रतिकूल है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो इस अवधि के दौरान (जो कि केवल एक वर्ष तक चलेगा), आपको अपने पेशे के क्षेत्र में गंभीर आघात का सामना करना पड़ सकता है। यदि आप

नौकरी में हैं, तो आपको नौकरी छोड़ने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। यदि आप व्यापार में हैं, तो आपको भारी हानियां हो सकती हैं। आपको अपना निवास स्थान भी छोड़ना पड़ सकता है अथवा किसी असुविधाजनक स्थान पर जाना पड़ सकता है।

वृश्चिक भुक्ति (10:08:2002 से 10:08:2003)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

तुला भुक्ति (10:08:2003 से 10:08:2004)

वर्तमान में, आप कन्या दशा में, तुला भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, आपके लग्न से गणना करने पर दशमेश आपकी दशा–राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपके लग्न से गणना करने पर दशमेश आपकी भुक्ति–राशि से भी दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। यह समग्र योग अत्यंत अनुकूल है। इस अवधि के दौरान (जो कि केवल एक वर्ष तक चलेगा), आपको एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया रोजगार प्राप्त होने की संभावना अत्यधिक है। आपके रहन–सहन के स्तर में सुधार होगा और आपकी संतुष्टि में वृद्धि होगी। संभावना है कि ये बदलाव कन्या अथवा तुला के अन्तर–अवधि के दौरान हो सकते हैं।(जिनमें से प्रत्येक केवल एक माह के लिए चलता है)।

कन्या भुक्ति (10:08:2004 से 10:08:2005)

वर्तमान में आप कन्या राशि की दशा से गुजर रहे हैं, इसी राशि की भुक्ति भी एक साल के लिए चल रही है। इस दशा के दौरान, दशा का फल और सुदृढ़ होगा।

मकर दशा (10:08:2005 से 10:08:2010)

वर्तमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर मैत्री––कारक ग्रह अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह कारक कुछ हद तक शिक्षा का कारक भी है। यह एक बढ़िया योग है। आप लाभदायक परिणाम प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं। इस दशा के दौरान शिक्षा ग्रहण करने की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रख सकते हैं।

वर्तमान में उस राशि की चर––दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर नवमेश की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। जैसाकि नवमेश उच्च शिक्षा का कारक है, यह एक बहुत अनुकूल योग है। आप कुछ लाभदायक परिणाम प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं। इस दशा के दौरान शिक्षा ग्रहण करने की आपकी संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रख सकते हैं।

वर्तमान में आप जिस राशि की चर––दशा से गुजर रहे हैं, उससे पाँचवें भाव में आपके लग्न से दशमेश स्थित है। जहां दशमेश पेशे का शासक है, वहीं पंचमेश पद, प्रतिष्ठा आदि का प्रतीक है। इस दशा के दौरान, आप पेशे के क्षेत्र में अधिक उन्नति करेंगे। आप एक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा एक प्रतिष्ठित पद तक पहुंच सकते हैं। आपका नाम व यश दूर दूर तक फैलेगा तथा लोग आपके साथ अधिक सम्मान का व्यवहार करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, तो आपकी परिस्थितियां निरन्तर लाभदायक होती जायेंगी और आपकी आय में काफी सुधार होगा।

शनि सेवा क्षेत्र और औद्योगिक धन्धों का नैसर्गिक कारक है। वर्तमान में आप जिस राशि की चर––दशा से गुजर रहे हैं, उससे पांचवें भाव में शनि स्थित है। पाँचवां भाव पद का प्रतीक है। इस दशा के दौरान, आप पेशे के क्षेत्र में अधिक उन्नति करेंगे। आप एक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा एक प्रतिष्ठित पद तक पहुंच सकते हैं। आपका नाम व यश दूर दूर तक फैलेगा तथा लोग आपके साथ अधिक सम्मान का व्यवहार करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, तो आपकी परिस्थितियां अधिक लाभदायक होंगी और आपकी आय में भी काफी सुधार होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, वर्तमान में आप जिस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, उस राशि से गणना करने पर पंचमेश और दशमेश एक ही ग्रह है। यह आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। जैसाकि दसवां भाव पेशे का सूचक है और पाँचवां भाव पद का प्रतीक है। अतः यह एक अनुकूल योग है। इस दशा के दौरान, रोजगार/व्यापार से संबंधित मामलों में, आपकी स्थिति में सुधार हो सकता है। आपके रोजगार में परिवर्तन, स्थानान्तरण या पदोन्नति हो सकती है। आपका निवास स्थान भी परिवर्तित हो सकता है और आपको एक बेहतर आवास प्राप्त हो सकता है। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, तो आप कोई नया व्यवसाय प्रारम्भ कर सकते हैं अथवा किसी और अधिक लाभदायक स्थान पर जा सकते हैं।

वृष भुक्ति (10:08:2005 से 10:08:2006)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

मेष भुक्ति (10:08:2006 से 10:08:2007)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

मीन भुक्ति (10:08:2007 से 10:08:2008)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

कुम्भ भुक्ति (10:08:2008 से 10:08:2009)

वर्तमान में आप मकर दशा में (जो कि एक वर्ष तक चलेगी) कुम्भ भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गणना करने पर द्वादशेश या अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अतिरिक्त, आपकी दशा–राशि से गणना करने पर द्वादशेश या अष्टमेश भुक्ति–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और भुक्ति–राशि से गणना करने पर द्वादशेश या अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह प्रतिकूल आंतरिक संबंध बन रहा है। अतः आपका स्वास्थ्य व सुख आपके परिवार के सदस्यों के लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। आपको किसी दुर्घटना का सामना करना पड़ सकता है और/या किसी शल्य प्रक्रिया से गुजरना पड़ सकता है।

मकर भुक्ति (10:08:2009 से 10:08:2010)

वर्तमान में आप मकर राशि की दशा से गुजर रहे हैं, इसी राशि की भुक्ति भी एक साल के लिए चल रही है। इस दशा के दौरान, दशा का फल और सुदृढ़ होगा।

वर्तमान में आप मकर राशि की दशा में मकर राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। दशा–राशि से गणना करने पर सप्तमेश दशा–राशि से दूसरे भाव में स्थित है (अथवा दशा–राशि से गणना करने पर द्वितीयेश दशा–राशि से सातवें भाव में स्थित है), भुक्ति–राशि से भी, भुक्ति–राशि से गणना करने पर सप्तमेश भुक्ति–राशि से दूसरे भाव में स्थित है (अथवा भुक्ति–राशि से गणना करने पर द्वितीयेश भुक्ति–राशि से सातवें भाव में स्थित है) और इनमें से कोई भी स्वामी शक्तिशाली नहीं है अर्थात ना तो उच्चस्थ है या ना ही अपनी राशि में स्थित है। यह समग्र संकेत काफी प्रतिकूल है और आपको बहुत सावधान एवं सतर्क रहना चाहिए। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो प्रबल संभावना है कि इस अवधि के दौरान (जो कि एक साल तक चलेगी) आपकी पत्नी किसी दुर्घटना का सामना कर सकती हैं अथवा किसी शल्य प्रक्रिया से गुजर सकती हैं या कोई अशुभ घटना हो सकती है।

वर्तमान में आप मकर राशि की दशा में मकर राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। दशा–राशि से गणना करने पर सप्तमेश भुक्ति–राशि से दूसरे भाव में स्थित है (अथवा दशा–राशि से गणना करने पर द्वितीयेश भुक्ति–राशि से सातवें भाव में स्थित है), भुक्ति–राशि से भी, भुक्ति–राशि से गणना करने पर सप्तमेश दशा–राशि से दूसरे भाव में स्थित है (अथवा भुक्ति–राशि से गणना करने पर द्वितीयेश दशा–राशि से सातवें भाव में स्थित है) और इनमें से कोई भी स्वामी शक्तिशाली नहीं है अर्थात ना तो उच्चस्थ है या ना ही अपनी राशि में स्थित है। यह समग्र संकेत काफी प्रतिकूल है और आपको बहुत सावधान एवं सतर्क रहना चाहिए। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो प्रबल संभावना है कि इस अवधि के दौरान (जो कि एक साल तक चलेगी) आपकी पत्नी किसी दुर्घटना का सामना कर सकती हैं अथवा किसी शल्य प्रक्रिया से गुजर सकती हैं या कोई अशुभ घटना हो सकती है।

वृष दशा (10:08:2010 से 09:08:2020)

वर्तमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर बुध की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। जैसाकि बुध सामान्य एवं तकनीकी शिक्षा तथा सभी प्रकार के बौद्धिक क्षेत्रों का नैसर्गिक कारक है, इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक अध्ययन भी जारी रख सकते हैं। यदि आप किसी अन्य बौद्धिक कार्यों में संलग्न हैं, तो आप उत्तम उन्नति की आशा कर सकते हैं।

वर्तमान में उस राशि की चर––दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर चतुर्थेश की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। जैसाकि चतुर्थेश शिक्षा का मुख्य कारक है, यह एक अनुकूल योग है। आप कुछ लाभदायक परिणाम प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं। इस दशा के दौरान शिक्षा ग्रहण करने की आपकी संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रख सकते हैं।

वर्तमान में उस राशि की चर––दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर पंचमेश की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। जैसाकि पंचमेश स्मृति, प्रतिभा आदि का कारक है, यह एक अनुकूल योग है। आप कुछ लाभदायक परिणाम प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं। इस दशा के दौरान शिक्षा ग्रहण करने की आपकी संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रख सकते हैं।

वर्तमान में आप उस राशि की चर––दशा से गुजर रहे हैं, जिसमें नवमेश स्थित है। यद्यपि नवमेश आपकी जन्मकुण्डली में शक्तिशाली रूप से व्यवस्थित नहीं है–– जैसाकि यह ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपनी राशि में स्थित है, जैसाकि नवमेश उच्च शिक्षा का कारक है, इसलिए यह अब भी एक बहुत लाभदायक योग है। आप लाभदायक परिणाम प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं। इस दशा के दौरान शिक्षा ग्रहण करने की आपकी संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रख सकते हैं।

वर्तमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर बुध की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। बुध सामान्य एवं तकनीकी शिक्षा तथा सभी प्रकार के बौद्धिक क्षेत्रों का नैसर्गिक कारक है। अतः यह एक बहुत अनुकूल योग है। इस दशा के दौरान आप कुछ लाभदायक परिणाम प्राप्त करने की आशा कर सकते हैं। आपकी शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक अध्ययन भी जारी रख सकते हैं।

वर्तमान में आप जिस राशि की चर––दशा से गुजर रहे हैं, उसमें लग्न से गणना करने पर पंचमेश दशा––राशि से चौथे भाव में स्थित है। यद्यपि यह ग्रह आपकी कुण्डली में शक्तिशाली रूप से व्यवस्थित नहीं है–– जैसाकि यह उच्चस्थ या अपने भाव में स्थित नहीं है। तब भी यह एक काफी अनुकूल योग है। इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक अध्ययन भी जारी रख सकते हैं। इन सभी मामलों में बहुत उत्तम करने की आशा कर सकते हैं।

वर्तमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, जिसे बृहस्पति और बुध, दोनों ग्रह प्रभावित कर रहे हैं। बृहस्पति इसमें स्थित है और बुध इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह एक बहुत अनुकूल योग है। इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक अध्ययन भी जारी रख सकते हैं। इन सभी मामलों में बहुत उत्तम करने की आशा कर सकते हैं।

वर्तमान में आप उस राशि की चर––दशा से गुजर रहे हैं, जिसमें आपका दशमेश स्थित है। दशमेश पेशा, विश्वसनीयता, सम्मान आदि का संचालक है। इस दशा के दौरान, आप पेशे के क्षेत्र में अधिक उन्नति करेंगे। आप एक आकर्षक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा एक प्रतिष्ठित पद तक पहुंच सकते हैं। आपका नाम व यश दूर दूर तक फैलेगा तथा लोग आपके साथ अधिक सम्मान का व्यवहार करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, परिस्थितियां निरन्तर लाभदायक होती जायेंगी और आपकी आय में काफी सुधार होगा।

शनि सेवा क्षेत्र और औद्योगिक धन्धों का नैसर्गिक कारक है। वर्तमान में आप जिस राशि की चर––दशा से गुजर रहे हैं, उसमें शनि स्थित है। इस दशा के दौरान, आप पेशे के क्षेत्र में पर्याप्त उन्नति करने की आशा कर सकते हैं। आप एक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा एक प्रतिष्ठित पद तक पहुंच सकते हैं। आपका नाम व यश दूर दूर तक फैलेगा तथा लोग आपके साथ अधिक सम्मान का व्यवहार करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, तो आपकी परिस्थितियां अधिक लाभदायक होंगी और आपकी आय में भी काफी सुधार होगा।

वर्तमान में आप जिस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, आपकी जन्मकुण्डली में, दो या दो से अधिक अशुभ ग्रह उस राशि से ग्यारहवें भाव में स्थित हैं। उस राशि में कोई भी शुभ ग्रह स्थित नहीं है। जैसाकि ग्यारहवां भाव आय और लाभ का कारक है, अतः यह एक बहुत अनुकूल योग नहीं है। इस दशा अवधि के दौरान, आप अपने पेशे के क्षेत्र में कुछ प्रगति की आशा कर सकते हैं, लेकिन आपकी आय आपके प्रयासों अथवा आपकी अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं हो सकती है। आप एक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं, या स्थानान्तरण हो सकता है या पदोन्नति हो सकती है। लेकिन आपका पद व स्थान केवल संतोषप्रद ही हो सकता है। आपके मित्रों व परिचितों का दायरा बढ़ सकता है, किन्तु वे लोग निम्न सामाजिक––आर्थिक स्तर के हो सकते हैं। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, तो आपकी परिस्थितियां कम लाभदायक हो सकती हैं तथा थोड़ा मंदा हो सकता है। या फिर, आपको बड़े उतार––चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है।

आपकी कुण्डली में वृष राशि में दारा––कारक ग्रह स्थित है, तुला राशि दारा––पद राशि है, सिहं राशि में विवाह का नैसर्गिक कारक ग्रह स्थित है तथा वृश्चिक राशि उप––पद राशि है। इनमें से किसी भी राशि की दशा, इनमें से किसी भी राशि की भुक्ति और इनमें से किसी भी राशि के अंतर के दौरान आपका विवाह होने की संभावना है। (स्पष्टतः उपयुक्त आयु के अन्तर्गत होगा। इन दशा––भुक्ति––अंतर संयोजन के समय के लिए जैमिनी चर दशा और त्रिकोण दशा को निर्देशित की जा सकती है–– राघव भट्ट और नृसिंह सूरी की विभाजन (भुक्ति) और उपविभाजन (अंतर) के अनुसार। एक अंतर––अवधि केवल एक महीने के लिए होती है। इसलिए मुहूर्त और गोचर आदि के निर्णय लेते समय अन्य पक्षों के कारण कुछ दिनों के अन्तर को भी माना जा सकता है)।

सिहं भुक्ति (10:08:2010 से 10:08:2011)

वर्तमान में, आप वृष दशा में, सिहं भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, दशा–राशि से गणना करने पर दशमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपकी भुक्ति–राशि से भी गणना करने पर दशमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। यह समग्र योग अत्यंत अनुकूल है। इस अवधि के दौरान (जो कि केवल एक वर्ष तक चलेगा), आपको एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया रोजगार प्राप्त होने की संभावना अत्यधिक है। आपके रहन–सहन के स्तर में सुधार होगा और आपकी संतुष्टि में वृद्धि होगी।

वर्तमान में, आप वृष दशा में, सिहं भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, आपके लग्न से गणना करने पर दशमेश आपकी दशा–राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपके लग्न से गणना करने पर दशमेश आपकी भुक्ति–राशि से भी दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। यह समग्र योग अत्यंत अनुकूल है। इस अवधि के दौरान (जो कि केवल एक वर्ष तक चलेगा), आपको एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया रोजगार प्राप्त होने की संभावना अत्यधिक है। आपके रहन–सहन के स्तर में सुधार होगा और आपकी संतुष्टि में वृद्धि होगी। संभावना है कि ये बदलाव वृष अथवा सिहं के अन्तर–अवधि के दौरान हो सकते हैं।(जिनमें से प्रत्येक केवल एक माह के लिए चलता है)।

कन्या भुक्ति (10:08:2011 से 10:08:2012)

वर्तमान में आप वृष राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं और कन्या राशि की भुक्ति (एक वर्ष के लिए) चल रही है। शुक्र या लग्न से सप्तमेश या दारा–कारक ग्रह (सप्तकारक योजना के अनुसार) – जिसमें से प्रत्येक किसी ना किसी प्रकार से विवाह का कारक है– दशा–राशि में स्थित है। इसके अतिरिक्त, दशा–राशि से सप्तमेश और भुक्ति–राशि से सप्तमेश की युति है। यह युति आपके लग्न से सातवें भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह एक अत्यंत अनुकूल योग है। यदि आपकी आयु विवाह योग्य है और अविवाहित हैं तो इस दशा के दौरान आपका विवाह हो सकता है। या फिर अथवा साथ ही, आप एक साझेदारी या सहभागिता में संलग्न हो सकते हैं– जो कि लम्बे समय तक चलेगा और आपके लिए अनेक प्रकार के लाभों का अग्रदूत होगा। इस भुक्ति–अवधि के दौरान, वृष और कन्या राशि में प्रत्येक की अंतर–अवधि एक महीने के लिए चलेगी– इन दोनों अवधियों में से किसी अवधि के दौरान घटनायें होने की संभावना अत्यधिक है।

वर्तमान में, आप वृष दशा में, कन्या भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, दशा–राशि से गणना करने पर अष्टमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपकी भुक्ति–राशि से भी गणना करने पर अष्टमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। यह समग्र योग काफी प्रतिकूल है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो इस अवधि के दौरान (जो कि केवल एक वर्ष तक चलेगा), आपको अपने पेशे के क्षेत्र में गंभीर आघात का सामना करना पड़ सकता है। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको नौकरी छोड़ने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। यदि आप व्यापार में हैं, तो आपको भारी हानियां हो सकती हैं। आपको अपना निवास स्थान भी छोड़ना पड़ सकता है अथवा किसी असुविधाजनक स्थान पर जाना पड़ सकता है।

तुला भुक्ति (10:08:2012 से 10:08:2013)

वर्तमान में, आप वृष दशा में, तुला भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, दशा–राशि से गणना करने पर दशमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपकी भुक्ति–राशि से भी गणना करने पर दशमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। यह समग्र योग अत्यंत अनुकूल है। इस अवधि के दौरान (जो कि केवल एक वर्ष तक चलेगा), आपको एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया रोजगार प्राप्त होने की संभावना अत्यधिक है। आपके रहन–सहन के स्तर में सुधार होगा और आपकी संतुष्टि में वृद्धि होगी।

वर्तमान में, आप वृष दशा में, तुला भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, आपके लग्न से गणना करने पर दशमेश आपकी दशा–राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपके लग्न से गणना करने पर दशमेश आपकी भुक्ति–राशि से भी दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। यह समग्र योग अत्यंत अनुकूल है। इस अवधि के दौरान (जो कि केवल एक वर्ष तक चलेगा), आपको एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया रोजगार प्राप्त होने की संभावना अत्यधिक है। आपके रहन–सहन के स्तर में सुधार होगा और आपकी संतुष्टि में वृद्धि होगी। संभावना है कि ये बदलाव वृष अथवा तुला के अन्तर–अवधि के दौरान हो सकते हैं।(जिनमें से प्रत्येक केवल एक माह के लिए चलता है)।

वर्तमान में आप तुला दशा में (जो कि एक वर्ष तक चलेगी) वृष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गणना करने पर एकादशेश या तृतीयेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अतिरिक्त, आपकी दशा–राशि से गणना करने पर एकादशेश या तृतीयेश भुक्ति–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और भुक्ति–राशि से गणना करने पर एकादशेश या तृतीयेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह प्रतिकूल आंतरिक संबंध बन रहा है। जैसाकि तीसरा भाव चौथे भाव से बारहवां है और ग्यारहवां भाव चौथे भाव से आठवां है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य व सुख आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। या फिर अथवा साथ ही, आपकी संपत्ति की हानि हो सकती है।

वर्तमान में आप वृष दशा (जो कि एक साल तक चलेगा) में तुला भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में आपके लग्न से गणना करने पर चतुर्थेश या अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अतिरिक्त, आपकी दशा–राशि से गणना करने पर चतुर्थेश या अष्टमेश भुक्ति–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और भुक्ति–राशि से गणना करने पर चतुर्थेश या अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह प्रतिकूल आंतरिक संबंध बन रहा है। जैसाकि आठवां भाव नौवें भाव से बारहवां है और चौथा भाव नौवें भाव से आठवां है। अतः आपके पिता का स्वास्थ्य व सुख आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। या फिर अथवा साथ ही, आप किसी दुर्घटना का सामना कर सकते हैं।

वृश्चिक भुक्ति (10:08:2013 से 10:08:2014)

वर्तमान में आप वृष दशा (जो कि एक साल तक चलेगा) में वृश्चिक भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में आपके लग्न से गणना करने पर चतुर्थेश या अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अतिरिक्त, आपकी दशा–राशि से गणना करने पर चतुर्थेश या अष्टमेश भुक्ति–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और भुक्ति–राशि से गणना करने पर चतुर्थेश या अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह प्रतिकूल आंतरिक संबंध बन रहा है। जैसाकि आठवां भाव नौवें भाव से बारहवां है और चौथा भाव नौवें भाव से आठवां है। अतः आपके पिता का स्वास्थ्य व सुख आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। या फिर अथवा साथ ही, आप किसी दुर्घटना का सामना कर सकते हैं।

धनु भुक्ति (10:08:2014 से 10:08:2015)

वर्तमान में आप वृष राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं और धनु राशि की भुक्ति (एक वर्ष के लिए) चल रही है। शुक्र या लग्न से सप्तमेश या दारा–कारक ग्रह (सप्तकारक योजना के अनुसार) – जिसमें से प्रत्येक किसी ना किसी प्रकार से विवाह का कारक है– दशा–राशि में स्थित है। इसके अतिरिक्त, दशा–राशि से सप्तमेश और भुक्ति–राशि से सप्तमेश की युति है। यह युति आपके लग्न से सातवें भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह एक अत्यंत अनुकूल योग है। यदि आपकी आयु विवाह योग्य है और अविवाहित हैं तो इस दशा के दौरान आपका विवाह हो सकता है। या फिर अथवा साथ ही, आप एक साझेदारी या सहभागिता में संलग्न हो सकते हैं– जो कि लम्बे समय तक चलेगा और आपके लिए अनेक प्रकार के लाभों का अग्रदूत होगा।

इस भुक्ति–अवधि के दौरान, वृष और धनु राशि में प्रत्येक की अंतर–अवधि एक महीने के लिए चलेगी– इन दोनों अवधियों में से किसी अवधि के दौरान घटनायें होने की संभावना अत्यधिक है।

वर्तमान में आप वृष राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं और धनु राशि की भुक्ति (एक वर्ष के लिए) चल रही है। शुक्र या लग्न से सप्तमेश या दारा–कारक ग्रह (सप्तकारक योजना के अनुसार) – जिसमें से प्रत्येक किसी ना किसी प्रकार से विवाह का कारक है– दशा–राशि में स्थित है। इसके अतिरिक्त, दशा–राशि से सप्तमेश और भुक्ति–राशि से सप्तमेश की युति है। यह युति आपके लग्न से सातवें भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह एक अत्यंत अनुकूल योग है। यदि आपकी आयु विवाह योग्य है और अविवाहित हैं तो इस दशा के दौरान आपका विवाह हो सकता है। या फिर अथवा साथ ही, आप एक साझेदारी या सहभागिता में संलग्न हो सकते हैं– जो कि लम्बे समय तक चलेगा और आपके लिए अनेक प्रकार के लाभों का अग्रदूत होगा। इस भुक्ति–अवधि के दौरान, वृष और धनु राशि में प्रत्येक की अंतर–अवधि एक महीने के लिए चलेगी– इन दोनों अवधियों में से किसी अवधि के दौरान घटनायें होने की संभावना अत्यधिक है।

वर्तमान में, आप वृष दशा में, धनु भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, दशा–राशि से गणना करने पर अष्टमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपकी भुक्ति–राशि से भी गणना करने पर अष्टमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। यह समग्र योग काफी प्रतिकूल है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो इस अवधि के दौरान (जो कि केवल एक वर्ष तक चलेगा), आपको अपने पेशे के क्षेत्र में गंभीर आघात का सामना करना पड़ सकता है। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको नौकरी छोड़ने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। यदि आप व्यापार में हैं, तो आपको भारी हानियां हो सकती हैं। आपको अपना निवास स्थान भी छोड़ना पड़ सकता है अथवा किसी असुविधाजनक स्थान पर जाना पड़ सकता है।

मकर भुक्ति (10:08:2015 से 10:08:2016)

वर्तमान में आप मकर दशा में (जो कि एक वर्ष तक चलेगी) वृष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गणना करने पर एकादशेश या तृतीयेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अतिरिक्त, आपकी दशा–राशि से गणना करने पर एकादशेश या तृतीयेश भुक्ति–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और भुक्ति–राशि से गणना करने पर एकादशेश या तृतीयेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह प्रतिकूल आंतरिक संबंध बन रहा है। जैसाकि तीसरा भाव चौथे भाव से बारहवां है और ग्यारहवां भाव चौथे भाव से आठवां है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य व सुख आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। या फिर अथवा साथ ही, आपकी संपत्ति की हानि हो सकती है।

कुम्भ भुक्ति (10:08:2016 से 10:08:2017)

वर्तमान में, आप वृष दशा में, कुम्भ भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, दशा–राशि से गणना करने पर दशमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपकी भुक्ति–राशि से भी गणना करने पर दशमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। यह समग्र योग अत्यंत अनुकूल है। इस अवधि के दौरान (जो कि केवल एक वर्ष तक चलेगा), आपको एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया रोजगार प्राप्त होने की संभावना अत्यधिक है। आपके रहन–सहन के स्तर में सुधार होगा और आपकी संतुष्टि में वृद्धि होगी।

वर्तमान में आप वृष दशा (जो कि एक साल तक चलेगा) में कुम्भ भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में आपके लग्न से गणना करने पर चतुर्थेश या अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अतिरिक्त, आपकी दशा–राशि से गणना करने पर चतुर्थेश या अष्टमेश भुक्ति–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और भुक्ति–राशि से गणना करने पर चतुर्थेश या अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह प्रतिकूल आंतरिक संबंध बन रहा है। जैसाकि आठवां भाव नौवें भाव से बारहवां है और चौथा भाव नौवें भाव से आठवां है। अतः आपके पिता का स्वास्थ्य व सुख आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। या फिर अथवा साथ ही, आप किसी दुर्घटना का सामना कर सकते हैं।

मीन भुक्ति (10:08:2017 से 10:08:2018)

वर्तमान में आप वृष राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं और मीन राशि की भुक्ति (एक वर्ष के लिए) चल रही है। शुक्र या लग्न से सप्तमेश या दारा–कारक ग्रह (सप्तकारक योजना के अनुसार) – जिसमें से प्रत्येक किसी ना किसी प्रकार से विवाह का कारक है– दशा–राशि में स्थित है। इसके अतिरिक्त, दशा–राशि से सप्तमेश और भुक्ति–राशि से सप्तमेश की युति है। यह युति आपके लग्न से सातवें भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह एक अत्यंत अनुकूल योग है। यदि आपकी आयु विवाह योग्य है और अविवाहित हैं तो इस दशा के दौरान आपका विवाह हो सकता है। या फिर अथवा साथ ही, आप एक साझेदारी या सहभागिता में संलग्न हो सकते हैं– जो कि लम्बे समय तक चलेगा और आपके लिए अनेक प्रकार के लाभों का अग्रदूत होगा। इस भुक्ति–अवधि के दौरान, वृष और मीन राशि में प्रत्येक की अंतर–अवधि एक महीने के लिए चलेगी– इन दोनों अवधियों में से किसी अवधि के दौरान घटनायें होने की संभावना अत्यधिक है।

वर्तमान में आप वृष राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं और मीन राशि की भुक्ति (एक वर्ष के लिए) चल रही है। शुक्र या लग्न से सप्तमेश या दारा–कारक ग्रह (सप्तकारक योजना के अनुसार) – जिसमें से प्रत्येक किसी ना किसी प्रकार से विवाह का कारक है– दशा–राशि में स्थित है। इसके अतिरिक्त, दशा–राशि से सप्तमेश और भुक्ति–राशि से सप्तमेश की युति है। यह युति आपके लग्न से सातवें भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह एक अत्यंत अनुकूल योग है। यदि आपकी आयु विवाह योग्य है और अविवाहित हैं तो इस दशा के दौरान आपका विवाह हो सकता है। या फिर अथवा साथ ही, आप एक साझेदारी या सहभागिता में संलग्न हो सकते हैं– जो कि लम्बे समय तक चलेगा और आपके लिए अनेक प्रकार के लाभों का अग्रदूत होगा। इस भुक्ति–अवधि के दौरान, वृष और मीन राशि में प्रत्येक की अंतर–अवधि एक महीने के लिए चलेगी– इन दोनों अवधियों में से किसी अवधि के दौरान घटनायें होने की संभावना अत्यधिक है।

वर्तमान में, आप वृष दशा में, मीन भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, दशा–राशि से गणना करने पर दशमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपकी भुक्ति–राशि से भी गणना करने पर दशमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। यह समग्र योग अत्यंत अनुकूल है। इस अवधि के दौरान (जो कि केवल एक वर्ष तक चलेगा), आपको एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया रोजगार प्राप्त होने की संभावना अत्यधिक है। आपके रहन–सहन के स्तर में सुधार होगा और आपकी संतुष्टि में वृद्धि होगी।

वर्तमान में आप मीन राशि की जैमिनी चर दशा में वृष राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। शनि दशा–राशि में स्थित है और यह ना तो उच्चस्थ है व ना ही अपनी राशि में स्थित है। केतु भुक्ति–राशि में स्थित है और यह उच्चस्थ नहीं है। समग्र योग बहुत अनुकूल नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो इस दशा–भुक्ति के प्रारम्भ के आस–पास और/या इस दशा–भुक्ति के समाप्ति के आस–पास किसी अप्रत्याशि स्रोत और/या कुछ अनदेखे कारणों से आकस्मिक रूप से उत्पन्न कुछ गंभीर मुसीबतों का सामना कर सकते हैं। अतः आपको इस निर्देशित समय के आस–पास बहुत सावधान और सतर्क रहना चाहिए।

मेष भुक्ति (10:08:2018 से 10:08:2019)

वर्तमान में, आप वृष दशा में, मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, आपके लग्न से गणना करने पर दशमेश आपकी दशा–राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपके लग्न से गणना करने पर दशमेश आपकी भुक्ति–राशि से भी दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। यह समग्र योग अत्यंत अनुकूल है। इस अवधि के दौरान (जो कि केवल एक वर्ष तक चलेगा), आपको एक लाभप्रद पदोन्नति अथवा एक नया रोजगार प्राप्त होने की संभावना अत्यधिक है। आपके रहन–सहन के स्तर में सुधार होगा और आपकी संतुष्टि में वृद्धि होगी। संभावना है कि ये बदलाव वृष अथवा मेष के अन्तर–अवधि के दौरान हो सकते हैं।(जिनमें से प्रत्येक केवल एक माह के लिए चलता है)।

वृष भुक्ति (10:08:2019 से 10:08:2020)

वर्तमान में आप वृष राशि की दशा से गुजर रहे हैं, इसी राशि की भुक्ति भी एक साल के लिए चल रही है। इस दशा के दौरान, दशा का फल और सुदृढ़ होगा।

वर्तमान में आप वृष राशि की दशा में वृष राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। दशा–राशि से, दशा–राशि का स्वामी आठवें भाव में स्थित है (अथवा दशा–राशि से अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है), भुक्ति–राशि से भी, भुक्ति–राशि का स्वामी आठवें भाव में स्थित है (अथवा भुक्ति–राशि से अष्टमेश भुक्ति–राशि में स्थित है) और इनमें से कोई भी स्वामी शक्तिशाली नहीं है अर्थात ना तो उच्चस्थ है या ना ही अपनी राशि में स्थित है। यह समग्र संकेत काफी प्रतिकूल है और आपको बहुत सावधान एवं सतर्क रहना चाहिए। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो प्रबल संभावना है कि इस अवधि के दौरान (जो कि एक साल तक चलेगी) आप किसी दुर्घटना का सामना कर सकते हैं अथवा किसी शल्य प्रक्रिया से गुजर सकते हैं या कोई अशुभ घटना हो सकती है।

वर्तमान में आप वृष राशि की दशा में वृष राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। भुक्ति–राशि से, दशा–राशि का स्वामी आठवें भाव में स्थित है (अथवा दशा–राशि से अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है), दशा–राशि से भी, भुक्ति–राशि का स्वामी आठवें भाव में स्थित है (अथवा भुक्ति–राशि से अष्टमेश भुक्ति–राशि में स्थित है) और इनमें से कोई भी स्वामी शक्तिशाली नहीं है अर्थात ना तो उच्चस्थ है या ना ही अपनी राशि में स्थित है। यह समग्र संकेत काफी प्रतिकूल है और आपको बहुत सावधान एवं सतर्क रहना चाहिए। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो प्रबल संभावना है कि इस अवधि के दौरान (जो कि एक साल तक चलेगी) आप किसी दुर्घटना का सामना कर सकते हैं अथवा किसी शल्य प्रक्रिया से गुजर सकते हैं या कोई अशुभ घटना हो सकती है।

भृगु जन्म पत्रिका

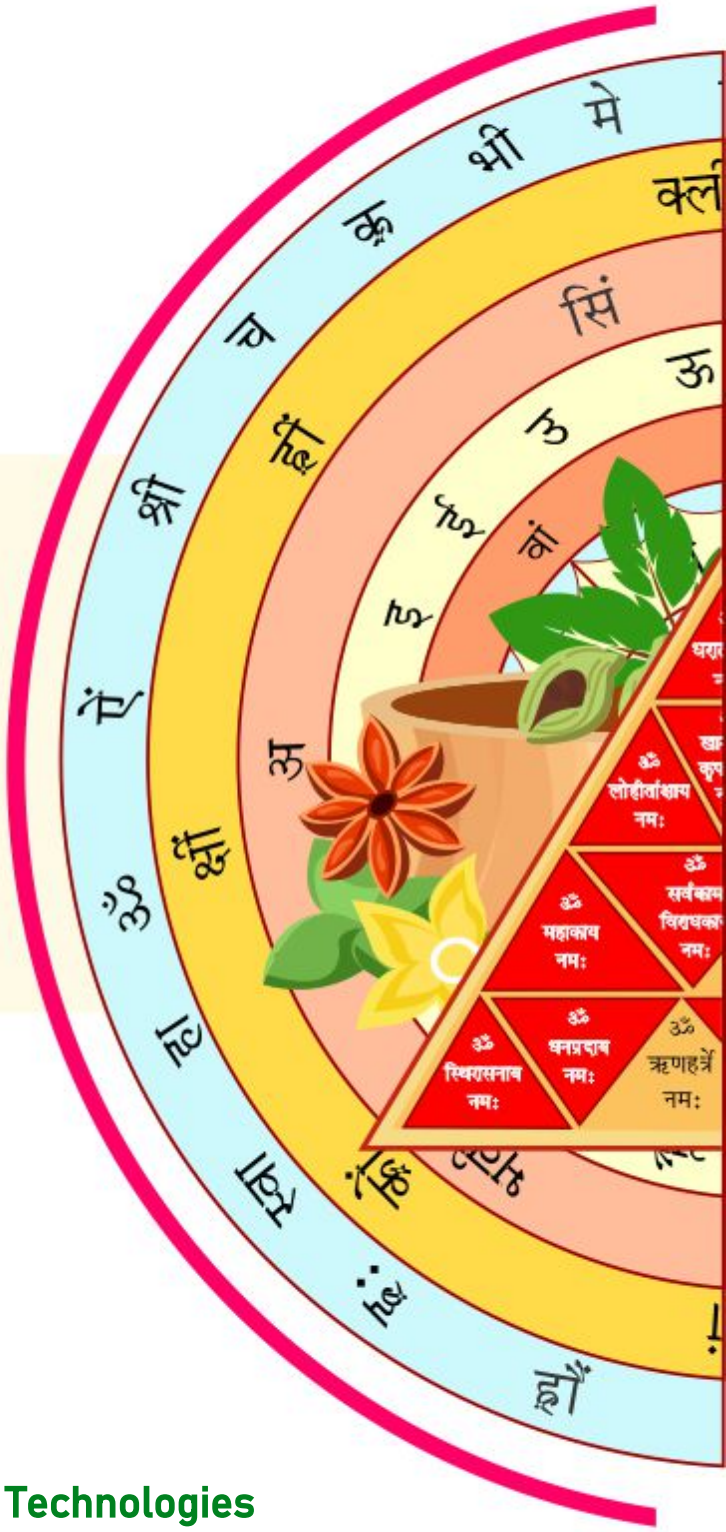

Name - Sample
Date - 10/08/1941
Time - 02:15:00
POB - New delhi (Delhi) India
Longitude - 077:12:00 E
Latitude - 028:36:00 N

Mindsutra Software Technologies
A-16, Ground Floor Uttam Nagar New Delhi - 110059
Phone: 011-49043166, 91 9818193410

© lalkitabnadi.com

क्या है कालसर्प योग ?

जब कुण्डली में सारे ग्रह राहु और केतु के अंशो के बीच में आ जाते हैं, तो कुण्डली को कालसर्प योग से ग्रसित माना जाता है। यदि एक भी ग्रह राहु और केतु के अंशो के बाहर रह जाता है, तो पूर्ण कालसर्प योग नहीं माना जाएगा। हालांकि, सारे ग्रह केतू और राहु के अंशों के बीच में आ जायें, तो भी आंशिक कालसर्प योग माना जाएगा।

कालसर्प योग का सामान्य प्रभाव–

1– किसी भी शुभ और महत्वपूर्ण कार्य को करते समय परेशानियों का सामना करना।
2– मानसिक तनाव।
3– आत्मविश्वास में कमी।
4– स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां।
5– गरीबी और धन की कमी।
6– व्यापार में घाटा और नौकरी में परेशानी।
7– उत्तेजना और बेकार की चिंताएं।
8– मित्रों और शुभचिन्तकों से मनमुटाव।
9– मित्रों और शुभचिन्तकों की तरफ से विश्वासघात।
10– मित्रों, शुभचिन्तकों और रिश्तेदारों की ओर से किसी भी तरह का सहयोग नहीं प्राप्त होना।

आपकी कुण्डली में कालसर्प योग मौजूद नहीं है।

मांगलिक दोष (कुज दोष)

मांगलिक दोष (कुज दोष) निर्धारण के नियम

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजः।
मन्गलिक दोषवान्नारी पुंसां स्त्रीविनाशिनी।।

यदि कुण्डली में मंगल लग्न से पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तो मंगल दोष या कुज दोष का निर्माण होता है।

यदि कुण्डली में मंगल चंद्रमा से पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तो मंगल दोष या कुज दोष का निर्माण होता है।

यदि कुण्डली में मंगल शुक्र से पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तो मंगल दोष या कुज दोष का निर्माण होता है।

आपकी कुण्डली में मांगलिक दोष (कुज दोष)

आपकी कुण्डली में, मंगल शुक्र राशि से आठवीं राशि में स्थित है। आपकी कुण्डली में कुज दोष (या मांगलिक दोष) उपस्थित है।
आपकी जन्मकुण्डली में, मंगल शुक्र–राशि से आठवें भाव में स्थित है। यह आभासी रूप से कुज दोष (या मांगलिक दोष) का निर्माण करता है। लेकिन, चूंकि मंगल बृहस्पति की राशि में स्थित है, अतः यह एक अपवाद है– जैसाकि यह दोष स्वतः समाप्त हो जाता है। आपकी कुण्डली में कुज दोष तकनीकि रूप से अनुपस्थित माना जाएगा।

मांगलिक दोष (कुज दोष) का प्रभाव

मंगल दोष के प्रभाव से विवाह में देरी हो सकती है या विवाह होने में कई बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। विवाह होने के बाद वर या वधू या दोनों को शारीरिक,

मानसिक या आर्थिक रूप से कई परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। इसके प्रभाव से आपसी मतभेद/विवाद हो सकते हैं, एक–दूसरे पर दोषारोपण कर सकती हैं तथा तलाक की भी नौबत आ सकती है। दोष का प्रभाव अधिक होने की स्थिति में विवाहित दम्पत्ति में से किसी की या दोनों की सेहत अक्सर खराब रह सकती है या अकाल मृत्यु के भी शिकार हो सकते हैं।

मांगलिक दोष (कुज दोष) का उपाय

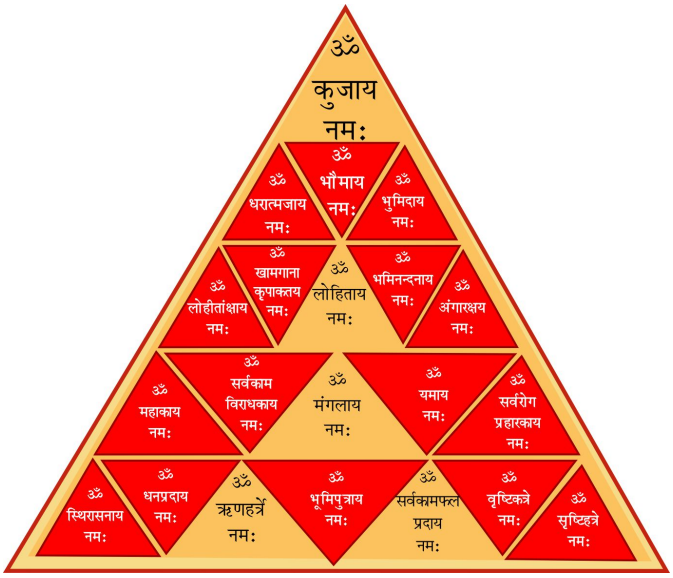

मंगल दोष को दूर करने के लिए वैदिक ज्योतिष से निम्न उपाय करें :–

मंगलवार (सूर्योदय से अगले दिन सूर्योदय तक) को उपवास करें। दिन के दौरान नमक का सेवन ना करें और यदि संभव हो, तो केवल तरल पदार्थों जैसे, चाय, कॉफी, दूध फलों का रस एवं दही आदि का ही सेवन करें। शाम के समय रोली से किसी थाली में एक त्रिकोण बनायें एवं पंचोपचार (लाल चंदन, लाल फल, धूप, दीपक एवं भोज्य पदार्थ) से पूजा करें। उसके बाद सूर्यास्त से पहले गेहूं के आटे की रोटी, घी एवं गुड़ का सेवन करें।

मंगल दोष का प्रभाव अधिक होने की स्थिति में लगातार 108 दिनों तक रोज 21 बार मंगल चंडिका स्त्रोत का पाठ करें। सुबह में पूर्वाभिमुख बैठकर पंचमुखी दीपक जलायें एवं अपने इष्ट देव तथा मंगल की पंचोपचार से पूजा करें और निम्नलिखित मंत्र का जाप करें।

रक्ष रक्ष जगन्मातर्देवि मंगलचंडिके । हारिके विपदां राशे हर्षमंगलकारिके ।।
हर्षमंगलदक्षे च हर्षमंगलदायिके । शुभे मंगलदक्षे च शुभे मंगलचंडिके ।।
मंगले मंगलार्हे च सर्वमंगलमंगले । सदा मंगलदे देवि सर्वेषां मंगलालये ।।

केमुद्रुम योग

ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः सोमाय नमः। (11000 बार)

दधिशंखतुशाराभं क्षीरोदोर्णवसभवम् नवम्।
भाशिनं भवत्या भाम्भोर्मुकुटभुशणम्।।

क्या है केमुद्रुम योग ?

आपकी कुण्डली में केमुद्रम योग प्रभावी नहीं है। आपको इस योग से संबंधित कोई उपाय की आवश्यकता नहीं है।

उपाय क्या करें ?

(1) रुद्राष्टक का निरन्तर जप करें।
(2) सुबह केसर और दूध का सेवन करें।
(3) पंचामृत से भगवान शिव का अभिषेक करें।
(4) चांद की रौशनी में सफेद वस्त्र पहन कर गायत्री मंत्र का जाप करें।
(5) रात को सोते समय सफेद चंदन का लेप करें।
(6) अपनी मां से और सभी मां जैसी व्यक्ति से आर्शीवाद लेते रहे।
(7) विधवा औरतो की यथासंभव सहायता करते रहे।
(8) गरीब लोगों को दूध का दान करें।

सूर्य ग्रह का उपाय

ज्योतिष शास्त्र में सूर्य ग्रह को ग्रहों का राजा माना जाता है। जीवन में मान-सम्मान, नौकरी और समृद्धिशाली जीवन जीने के लिए सूर्य देव की कृपा जरूरी होती है और उनका आशीर्वाद पाने के लिए सूर्य ग्रह के बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ॐ सूर्याय नमः

Every morning, one should offer water to the Sun and chant this mantra.

तान्त्रिक मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः

Om hraam hreem hroum sah suryaya namah.

बीज मंत्र 2

ॐ घृणिः सूर्याय नमः

Om Ghrinih Suryaya Namah.

गायत्री मंत्र

ॐ भास्कराय विद्महे महातेजाय धीमहि ।
तन्नोः सूर्यः प्रचोदयात ।।

Om Bhaskaraya Vidmahe Mahatejaya Dhimahi,
Tanno Suryah Prachodayat.

व्रत और उपवास

सूर्य के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए सूर्य के गोचर, महादशा या अंतर्दशा के दौरान रविवार का व्रत (उपवास) रखना चाहिए। व्रत (उपवास) की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले रविवार से करना चाहिए। यह व्रत (उपवास) कम से कम 12 और अधिकतम 30 रविवार को रखना चाहिए। व्रत (उपवास) के दौरान खाने में गेहूँ के आटे की चपाती, गुड़, हलवा, घी का उपयोग करना चाहिए। नमक का प्रयोग बिल्कुल ना करें। खाना सूर्यास्त से पहले खाना चाहिए। यदि आप लाल कपड़ा पहन कर एवं अपने ललाट पर लाल चंदन का लेप लगाकर सूर्य के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 5 माला (540) जप करें तो व्रत (उपवास) का फल अधिक लाभदायक होगा। अंत में हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं ब्राह्मणों को यथाशक्ति अन्न, धन एवं भोजन का दान करें।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

सूर्य के लिए बेल की जड़ या बेंत की जड़ गुलाबी रंग के कपड़े में सिलकर रविवार या कृतिका, उत्तराफाल्गुनी अथवा उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में सूर्योदय के समय अपने गले, भुजा, जेब या कमर में सुविधानुसार धारण करें।

स्नान और दान

आप रविवार के दिन सुबह में गेहूँ, साबुत मसूर, गुड़, तांबे की कोई वस्तु एवं लाल फूल का दान करें। आप अपने स्नान के जल में केसर या इलायची पीसकर या इसका इत्र डालें।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री- खस, मधु, नागरमोथा, अमलतास, छोटी इलायची।
जड़ी- बेल मूल एवं कमल बेंत की जड़।

चन्द्रमा ग्रह का उपाय

कुंडली में चंद्र दोष होने से कलह, मानसिक विकार, माता-पिता की बीमारी, दुर्बलता, धन की कमी जैसी समस्याएं सामने आती हैं। चंद्रमा मन का कारक ग्रह होता है। कुंडली में चंद्र को मजबूत बनाने के लिए चंद्र ग्रह के बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ॐ सोमाय नमः

This mantra should be chanted every Monday while sitting in front of a Shivalinga.

तान्त्रिक मंत्र

ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः सोमाय नमः

Om shraam shreem shraum sah chandramase namah.

बीज मंत्र 2

ॐ सों सोमाय नमः

Om Som Somaya Namah.

गायत्री मंत्र

ॐ क्षीरपुत्राय विद्‌महे मृतात्वाय धीमहि ।
तन्नोः चंद्रः प्रचोदयात ।।

Om Ksheeraputraya Vidmahe Mritatvaya Dhimahi,
Tannam Chandrah Prachodayat.

व्रत और उपवास

चंद्रमा के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए सोमवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले सोमवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 10 और अधिकतम 54 सोमवार को रखनी चाहिए। व्रत तोड़ने से पहले आपको सफेद कपड़े पहनना चाहिए एवं अपने ललाट पर सफेद चंदन का लेप लगाना चाहिए। चंद्रमा को सफेद फूल अर्पित करें और चंद्राम के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 11 माला का जप करें। अपने खाने में नमक, दही, चावल, घी एवं गुड़ का प्रयोग ना करें। अंतिम सोमवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं गरीबों के बीच खाना वितरित करें।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

चंद्रमा के लिए खिरनी की जड़ को सफेद रंग के कपड़े में सिलकर सोमवार या रोहिणी, हस्त या श्रवण नक्षत्र में पूर्णिमा की रात में गले, जेब, भुजा या कमर में सुविधानुसार धारण करें।

स्नान और दान

चंद्रमा के लिए शुद्ध देशी घी से भरकर नया बर्तन, सफेद वस्त्र, गन्ना, दूध, चावल, चांदी, शंख, कपूर, छोटी इलायची, चीनी, चंदन, कांसे का बर्तन इत्यादि का दान करना चाहिए। नहाते समय नहाने के पानी में थोड़ा सा दूध या दही डालकर नहाने से चंद्रमा प्रसन्न होते हैं।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री- लाल चंदन, कपूर, अगर, तगर, केसर, गोरोचन।
जड़ी - खिरनी की जड़।

मंगल ग्रह का उपाय

मंगल साहस और पराक्रम का कारक ग्रह है। कुंडली में मंगल के कमजोर होने पर उसके साहस और ऊर्जा में निरंतर कमी रहती है। मंगल को मजबूत करने के लिए मंगल ग्रह के बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1 **ऊँ भौमाय नमः** This mantra is chanted for the planet Mars. It should be chanted on Tuesdays.	**तान्त्रिक मंत्र** **ऊँ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः** Om kraam kreem kraum sah bhaumaaya namah.
बीज मंत्र 2 **ऊँ अंगारकाय नमः** Om Om Angarakaya Namah.	**गायत्री मंत्र** **ऊँ अंगारकाय विद्महे वाणेशाय धीमहि ।** **तन्नोः भौम प्रचोदयात ।।** Om Angarakaya Vidmahe Vaneshaya Dhimahi, Tanno Bhaumah Prachodayat.

व्रत और उपवास

मंगल के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए मंगलवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले मंगलवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 और अधिकतम 45 मंगलवार रखनी चाहिए। अगर संभव हो तो आप पूरी जीन्दगी भी इस व्रत को रख सकते हैं। व्रत के दिन केवल गुड़ का हलवा खाना बेहतर होगा। आप अपनी शक्ति के अनुसार गरीबों के बीच भी हलवा वितरित कर सकते हैं। व्रत तोड़ने से पहले आपको लाल कपड़ा पहनना चाहिए और मंगल के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का अपने उपलब्ध समयानुसार 1, 5 या 7 माला का जप करना चाहिए। सांड को गुड़ खिलाना चाहिए। इस व्रत को रखने से आप ऋणमुक्त होंगे, संतान की प्राप्ति होगी एवं अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी। अंतिम मंगलवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं लाल कपड़ा, तांबा, गुड़ एवं नारियल गरीबों के बीच दान करें।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

मंगल के लिए अनन्त मूल या नागफनी (गो जिव्हा संगमुसी नाग जिव्हा) की जड़ को लाल रंग के कपड़े में सिलकर मंगलवार या मृगशिरा, चित्रा या घनिष्ठा नक्षत्र में सूर्योदय के समय गले, जेब, भुजा या कमर में सुविधानुसार धारण करें।

स्नान और दान

लाल फूल, लाल चंदन, घी, गेहूँ, मसूर, या ताम्बे के बर्तन में सुपारी भरकर दान करने से मंगल प्रसन्न होते हैं। मंगल की प्रसन्नता के लिए स्नान करते समय जल में बेलपत्र या लाल चंदन डालकर स्नान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री- सोंठ, चमेली का तेल, कुमकुम।
जड़ी- सौंफ की जड़, नाग जिव्हा, अनन्त मूल।

बुध ग्रह का उपाय

जीवन में तरक्की और प्रसिद्धि पाने के लिए कुंडली में बुध का मजबूत होना आवश्यक है। बौद्धिक नजरिए से सबसे प्रबल ग्रह होता है। कुंडली में बुध ग्रह को मजबूत करने के लिए बुध ग्रह के बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ॐ बुधाय नमः

This mantra should be chanted every Wednesday. You can chant it in Lord Ganesha's temple.

तान्त्रिक मंत्र

ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः

Om braam breem braum sah budhaaya namah.

बीज मंत्र 2

ॐ बुं बुधाय नमः

Om Bum Budhaya Namah.

गायत्री मंत्र

ॐ सौम्यरुपाय विद्महे वाणेशाय धीमहि ।
तन्नोः बुधः प्रचोदयात ।।

Om Saumyarupaya Vidmahe Vaneshaya Dhimahi,
Tanno Budhah Prachodayat.

व्रत और उपवास

बुध के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए बुधवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरुआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले बुधवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 और अधिकतम 45 बुधवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको हरे रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और बुध के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 17 माला का जप करना चाहिए। इसके बाद मूंग दाल के आटे का हलवा या लड्डू या गुड़ से बनी कोई चीज गरीबों में बांटें और खुद भी खायें। व्रत के अंतिम बुधवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें। इस व्रत से आप शैक्षणिक क्षेत्र या व्यावसायिक मामलों में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। ऐसा माना जाता है कि अमावस्या के दिन व्रत रखने से बुध ग्रह अनुकूल हो जाता है।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

बुध के लिए विधारा की जड़ या भारंगी की जड़ (बिदायरे जड़ या वर धारा जड़) को हरे वस्त्र में सिलकर बुधवार या आश्लेषा, ज्येष्ठा या रेवती नक्षत्र में सुबह के समय अपने गले, जेब, भुजा या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

आपको स्नान के जल में साबुत चावल या सोने का कोई आभूषण डालकर स्नान करना चाहिए। बुध की प्रसन्नता के लिए चांदी या हाथी दांत से बनी कोई वस्तु, नीला कपड़ा, घी या मूंग दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री- विधारा मूल, देवदार की जड़, सफेद सरसों।
जड़ी- भारंगी की जड़।

बृहस्पति ग्रह का उपाय

वैवाहिक जीवन से जुड़ी समस्याओं के लिए इस मंत्र का जप करना चाहिए। कुंडली में बृहस्पति के शुभ प्रभाव से धन लाभ, सुख-सुविधा, सौभाग्य, लंबी आयु आदि मिलता है। कुंडली में देवगुरु बृहस्पति की मजबूती के लिए जातकों को गुरु बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ॐ बृहस्पतये नमः

This mantra should be chanted while sitting in front of a Shivalinga. It should be chanted every Thursday.

तान्त्रिक मंत्र

ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः

Om graam greem graum sah gurave namah.

बीज मंत्र 2

ॐ ब्रं बृहस्पतये नमः

Om Bram Brihaspataye Namah.

गायत्री मंत्र

ॐ गुरुदेवाय विद्महे वाणेशाय धीमहि ।
तन्नोः गुरुः प्रचोदयात ।।

Om Gurudevaya Vidmahe Vaneshaya Dhimahi,
Tanno Guru Prachodayat.

व्रत और उपवास

बृहस्पति के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए गुरुवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले गुरुवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 गुरुवार और अधिकतम 3 साल तक प्रत्येक गुरुवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको पीले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और बृहस्पति के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 11 माला का जप करना चाहिए। बृहस्पति को पीले फूल अर्पित करना चाहिए। इस दिन केवल बेसन के लड्डू (गुड़ से बना) या केसरिया या पीला रंग लिए मीठा चावल गरीबों के बीच बांटना चाहिए एवं खुद भी खाना चाहिए। व्रत के अंतिम गुरुवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं गरीब ब्राह्मणों के बीच भोजन (पीला रंग लिए खाना) बांटें। इस व्रत को करने से आप बुद्धिमान, विद्वान एवं धनवान होंगे। अगर कोई अविवाहित कन्या इस व्रत को करे तो जल्द शादी की संभावना होती है।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

बृहस्पति के लिए हल्दी की गांठ या केले की जड़ को पीले कपड़े में सिलकर बृहस्पतिवार या पुनर्वसु, विशाखा या पूर्व भाद्रपद नक्षत्र में शाम के समय अपने गले, जेब, भुजा या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

स्नान करते समय जल में बड़ी इलायची, पीली सरसों के दाने डालकर स्नान करने से बृहस्पति जनित दोषों का निवारण होता है। बृहस्पति की प्रसन्नता के लिए हल्दी, पीला कपड़ा, पीला अन्न, नमक, मेंहदी या नींबू का दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री- हल्दी, सूखा गुलाब।
जड़ी- केले की जड़।

शुक्र ग्रह का उपाय

कुंडली में शुक्र ग्रह के मजबूत होने पर सभी तरह के ऐशो–आराम की सुविधा मिलती है और इसे मजबूत करने के लिए जातकों को शुक्र बीज मंत्र का जाप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ॐ शुक्राय नमः

This mantra should be chanted every Friday while sitting in front of a Shivalinga.

तान्त्रिक मंत्र

ॐ द्रां द्रीं द्रौम सः शुक्राय नमः

Om draam dreem draum sah shukraaya namah.

बीज मंत्र 2

ॐ शुं शुक्राय नमः

Om Shum Shukraya Namah.

गायत्री मंत्र

ॐ भृगुसुताय विद्‌महे दिव्यदेहाय धीमहि ।
तन्नोः शुक्रः प्रचोदयात ।।

Om Bhargusutaya Vidmahe Divyadehaya Dhimahi,
Tanno Shukrah Prachodayat.

व्रत और उपवास

शु क्र के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शुक्रवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शुक्रवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 गुरुवार और अधिकतम 31 शुक्रवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको सफेद रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शुक्र के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 21 माला का जप करना चाहिए। व्रत के दिन मीठा चावल या दूध से बना पदार्थ खुद खाना चाहिए एवं एक आंख वाले आदमी या सफेद गाय को खिलाना चाहिए। व्रत के अंतिम शुक्रवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें। इसके बाद चांदी, सफेद कपड़े, खीर आदि गरीबों के बीच दान करना चाहिए। इस व्रत को करने से शुक्र अनुकूल होगा और आपको आर्थिक लाभ हो सकता है तथा आपका वैवाहिक जीवन खुशहाल होगा।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

शुक्र ग्रह के लिए अनार, सरपोंखा या अरण्ड मूल की जड़ को सफेद कपड़े में सिलकर शुक्रवार या भरणी, पूर्व फाल्गुनी या उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में दोपहर के समय अपने गले, भुजा, जेब या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

स्नान करते समय जल में छोटी इलायची, नींबू का रस अथवा इत्र मिलाकर स्नान करने से शुक्र प्रसन्न होते हैं। शुक्र के लिए बासमती चावल, घी, चांदी, सफेद वस्त्र, सफेद चंदन, कपूर, धूप और अगरबत्ती, इत्र और रेशमी वस्त्र का यथाशक्ति दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– सरपोखों, अनार की जड़, सूखे आंवले।
जड़ी– अरंडे की जड़।

शनि ग्रह का उपाय

ज्योतिष में शनि देव को कर्म फलदाता के नाम से जाना जाता है। यदि कुंडली में शनि ग्रह भारी होता है तो जिंदगी में परेशानियां बनी रहती हैं। इन परेशानियों को दूर करने के लिए शनि बीज मंत्र का जाप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ॐ शनैश्चराय नमः

Every Saturday, sit in front of Lord Shani and chant this mantra.

तान्त्रिक मंत्र

ॐ प्रां प्रीं प्रोम सः शनै नमः

Om praam preem praum sah shanaishcharaaya namah.

बीज मंत्र 2

ॐ शं शनैश्चराय नमः

Om Sham Shanaischaraya Namah.

गायत्री मंत्र

ॐ शिरोरुपाय विद्‌महे मृत्युरुपाय धीमहि ।
तन्नोः सौरिः प्रचोदयात ।।

Om Shirorupaya Vidmahe Mrityurupaya Dhimahi,
Tanno Saurih Prachodayat.

व्रत और उपवास

शनि के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शनिवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शनिवार से करनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको काले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शनि के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 19 माला का जप करना चाहिए। उसके बाद साफ पानी, काले तिल का बीज, काला या नीला फूल, लौंग, गंगाजल, चीनी एवं दूध एक बर्तन में लेकर पूर्वाभिमुख होकर पीपल की जड़ में डालें। इस दिन केवल उड़द दाल एव तेल से बनी कोई भोज्य सामग्री खानी चाहिए एवं दान करनी चाहिए। व्रत के अंतिम दिन हवन के साथ पूर्णाहूति करें और तेल से बनी कोई चीज, काला कपड़ा, चमड़े का जूता आदि दान करना चाहिए। इस व्रत को करने से आपको झगड़े एवं वाद-विवाद में सफलता प्राप्त होगी। फैक्ट्री मालिक एवं लोहे या स्टील का कारोबार करने वालों को काफी सफलता प्राप्त होगी।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

शनि के लिए बिछुआ की जड़ नीले कपड़े में सिलकर शनिवार या पुष्य, अनुराधा या उत्तर भाद्रपद नक्षत्र में दोपहर के समय अपने गले, जेब, भुजा या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

स्नान करते समय जल में धान का छिलका, जड़ सहित दूब अथवा काला तिल डालकर स्नान करने से शनि जनित दोषों का नाश होता है। शनि की प्रसन्नता के लिए बड़ी ईलायची, जायफल, लौंग, काला या नीला कपड़ा, मोटे अनाज, काली तिल, लोहे का सामान, गूगल और साबूत उड़द का अपनी शक्ति अनुसार दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री- काला तिल, काला उड़द, बिछुआ की जड़।
जड़ी- धतुरे की जड़।

राहु ग्रह का उपाय

राहु एक छाया ग्रह है। तनाव को कम करने के लिए राहु मंत्र का जप करना चाहिए। कुंडली में यदि राहु अशुभ स्थिति में है, तो व्यक्ति को आसानी से सफलता नहीं मिलती है। राहु को मजबूत करने के लिए राहु बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ॐ राहवे नमः

Every Saturday, chant the mantras for these planets. Chant the mantras while sitting in front of Lord Shani's idol.

तान्त्रिक मंत्र

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः

Om bhraam bhreem bhraum sah rahave namah.

बीज मंत्र 2

ॐ रां राहुवे नमः

Om Ram Rahuve Namah.

गायत्री मंत्र

ॐ शिरोरुपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि ।
तन्नोः राहुः प्रचोदयात ।।

Om Shirorupaya Vidmahe Amriteshaya Dhimahi,
Tanno Rahu Prachodayat.

व्रत और उपवास

राहु के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शनिवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शनिवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 18 शनिवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको काले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शनि के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 18 माला का जप करना चाहिए। इसके बाद जल, हरी घास एवं कुश एक बर्तन में लेकर पीपल की जड़ में डालना चाहिए। इस दिन केवल मीठी चपाती खुद भी खानी चाहिए एवं दान भी करनी चाहिए। रात में पीपल की जड़ में दीपक जलाना चाहिए। इस व्रत को करने से शत्रुओं पर विजय, सरकार से सहयोग एवं राहु-केतु जनित रोगों से मुक्ति प्राप्त होती है।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

राहु के लिए मलय चंदन की जड़ की माला बुधवार या शनिवार या आर्द्रा, स्वाति या शतभिषा नक्षत्र में शाम 4 बजे के आस-पास अपने गले, भुजा, जेब या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

स्नान करते समय जल में कुश या सरकण्डा, नीम के पत्ते या फल, नागरमोथा आदि डालकर स्नान करने से राहु जनित दोषों का निवारण होता है। राहु की प्रसन्नता के लिए ऊन का कपड़ा, जटादार पानी वाला नारियल, कम्बल एवं पेठा बांस की टोकरी में धातु का बना सर्प रखकर दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री- चंदन की लकड़ी।
जड़ी- अष्टगन्ध मूल।

केतु ग्रह का उपाय

केतु एक छाया ग्रह ग्रह है, जिसका अपना कोई वास्तविक रूप नहीं है। यदि कुंडली में केतु की स्थिति कमजोर होती है तो यह जिंदगी को बदतर बना देता है। जीवन में कलह बना रहता है। ऐसे में कलह से बचने के लिए इस केतु बीज मंत्र का जाप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ॐ केतवे नमः

Every Saturday, chant the mantras for these planets. Chant the mantras while sitting in front of Lord Shani's idol.

तान्त्रिक मंत्र

ॐ सां सीं सौं सः केतवे नमः

Om sraam sreem sraum sah ketave namah.

बीज मंत्र 2

ॐ के केतवे नमः

Om Ke Ketave Namah.

गायत्री मंत्र

ॐ गदाहस्ताय विद्महे अमृतेशाय धीमहि ।
तन्नोः केतुः प्रचोदयात ।।

Om Gadahastaya Vidmahe Amriteshaya Dhimahi,
Tanno Ketu Prachodayat.

व्रत और उपवास

केतु के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शनिवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शनिवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 18 शनिवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको काले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शनि के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 18 माला का जप करना चाहिए। इसके बाद जल, हरी घास एवं कुश एक बर्तन में लेकर पीपल की जड़ में डालना चाहिए। इस दिन केवल मीठी चपाती खुद भी खानी चाहिए एवं दान भी करनी चाहिए। रात में पीपल की जड़ में दीपक जलाना चाहिए। इस व्रत को करने से शत्रुओं पर विजय, सरकार से सहयोग एवं राहु-केतु जनित रोगों से मुक्ति प्राप्त होती है।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

केतु के लिए असगन्ध की जड़ को काले या पीले कपड़े में सिलकर बृहस्पतिवार या अश्विनी, मघा या मूल नक्षत्र में अपने गले, भुजा, जेब या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

स्नान करते समय जल में कुश या सरकण्डा, नीम के पत्ते या फल, नागरमोथा एवं खुशबुदार इत्र आदि डालकर स्नान करें। केतु की प्रसन्नता के लिए रंग-बिरंगे कम्बल, कस्तूरी, बिस्तर, मुँह देखने का शीशा, साबुत उड़द, लाल अनार आदि को बांस की टोकरी में रखकर दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री- सात अनाज (उड़द, मूंग, गेहूँ चना, जौ, चावल, कंगनी)।
जड़ी- वट वृक्ष की जड़।

आपको किस देवता की पूजा करना चाहिए ?

लग्न देवता
लग्नेश पर आधारित
गणेश जी
ऊँ गं गणपतये नमः

इष्ट देवता
पंचमेश पर आधारित
लक्ष्मी जी
ऊँ लक्ष्मी नमः

यदि आप लग्न देवता और इष्ट देवता के बीज मंत्रों का जाप करते हैं और उनके संबंधित दिन पर व्रत रखते हैं, तो आपके जीवन की हर समस्या का समाधान स्वतः ही आपके समक्ष आ जाएगा और जीवन में सफलता के द्वार खुलते जाएंगे।

आपको किस ग्रह के मंत्र का जाप करना चाहिए ?

लग्नाधिपति	पंचमेश	दशाधिपति	भुक्ति अधिपति
बुध	शुक्र	चन्द्रमा	शनि
ऊँ बुं बुधाय नमः	ऊँ शुं शुक्राय नमः	ऊँ सों सोमाय नमः	ऊँ शं शनैश्चराय नमः

यदि आप लग्नेश के बीज मंत्र का जाप करते हैं तो आपका स्वास्थ्य सदैव उत्तम रहेगा क्योंकि लग्नेश को स्वास्थ्य का कारक माना जाता है। 5वें घर के अधिपति को इष्ट ग्रह कहा जाता है, यदि आप इष्ट ग्रह के बीज मंत्र का जाप करते हैं तो आपका बुद्धि और बल बढ़ेगा, अपने बुद्धि और बल के माध्यम से आप अपने सारे कार्य सम्पन्न कर सकते हैं। जिस ग्रह की महादशा चल रही है, उसके मंत्र से सकारात्मक परिणाम मिलेंगे। जिस ग्रह की अंतर्दशा चल रही है, उसके मंत्र से वर्तमान समय की घटनाएं सकारात्मक होंगी।

आपको किस ग्रह का दान करना चाहिए ?

ग्रह का दान	
मंगल	मंगल छठे और एकादश भाव का स्वामी होकर प्रबल अशुभ ग्रह बन जाता है।

सप्ताह के उस दिन उस ग्रह से संबंधित दान करें, जैसे मंगलवार को मंगल, शनिवार को शनि और गुरुवार को बृहस्पति। दान की सूची से, आप प्रति सप्ताह 50 रुपये तक कोई भी एक वस्तु दान कर सकते हैं। किसी गरीब या जरूरतमंद व्यक्ति को दान दें।

अशुभ ग्रहों से संबंधित दान करने से हमारे ऊपर पड़ने वाले उनके नकारात्मक प्रभाव समाप्त हो जाते हैं। परिणामस्वरूप अशुभ ग्रह अपनी दशा या अन्तर्दशा में हमें बुरा फल नहीं देते, और यदि हम दान करने के साथ-साथ उन ग्रहों के बीज मंत्रों का जाप भी कर रहे हैं तो उस अशुभ ग्रह के परिणाम भी सकारात्मक ही आएंगे।

यदि आप किसी दिन बीज मंत्र का जाप करना भूल जाते हैं तो आप अगले दिन उसकी पूर्ति कर सकते हैं, उदाहरण के लिए अगले दिन 2 माला जाप करें। यदि अंतर अधिक हो तो एक माला अतिरिक्त जप कर बीज मंत्रों को पूरा करें।

आप किसी भी मंत्र में महारत हासिल कर सकते हैं। इसके बाद आपको सप्ताह के उस दिन संबंधित ग्रह के बीज मंत्र का जाप करना चाहिए, उदाहरण के लिए, यदि आपने बुध के बीज मंत्र में महारत हासिल कर ली है, तो आपको इसमें महारत हासिल करने के बाद हर बुधवार को मंत्र की एक माला का जाप करना चाहिए। इससे इसकी ऊर्जा बनी रहेगी।

वैदिक उपाय

वैदिक ज्योतिष, लाल किताब और कार्मिक प्रथाओं से नक्षत्र स्वामी पर आधारित उपचार हमें ब्रह्मांडीय ऊर्जाओं के साथ संरेखित करने में मदद करते हैं, जिससे हमारे जीवन के प्रति दृष्टिकोण में सुधार होता है। ये अनुरूप उपाय नकारात्मक प्रभावों को कम करते हैं, सकारात्मकता को बढ़ाते हैं और हमें ग्रहों की ऊर्जा को संतुलित करने के लिए सशक्त बनाते हैं। अंततः, वे व्यक्तियों को अपने भाग्य को संचालित करने की अनुमति देकर आत्म--जागरूकता, सद्भाव और संतुष्टि को बढ़ावा देते हैं।

आपका नक्षत्र

पूर्वाभाद (2)

नक्षत्राधिपति

बृहस्पति

इन वैदिक उपायों को अपनायें

(1). पीला पुखराज बृहस्पति से सम्बंधित रत्न है। इसे गुरुवार के दिन अपनी तर्जनी उंगली में सोने की अंगूठी में पहनने से आपको उत्तम स्वास्थ्य और समग्र कल्याण मिल सकता है। सुनिश्चित करें कि रत्न अच्छी गुणवत्ता का हो और प्रमाणित रत्नविज्ञानी द्वारा प्रमाणित हो।

(2). बृहस्पति का बीज मंत्र है 'ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः' इस मंत्र का प्रतिदिन 108 बार जाप करना, विशेषकर सुबह स्नान करने के बाद, आपके स्वास्थ्य को लाभ पहुंचा सकता है।

(3). गुरुवार को बृहस्पति का दिन माना जाता है। गुरुवार का व्रत करना या इस दिन केवल एक बार भोजन करना आपके स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद हो सकता है।

(4). बृहस्पति का संबंध पीले रंग से है। किसी मंदिर में या घर में किसी देवता की मूर्ति या तस्वीर पर पीले फूल चढ़ाने से आपको अच्छा स्वास्थ्य मिल सकता है।

(5). गुरुवार के दिन पीले रंग की वस्तुएं जैसे कपड़े, भोजन या पीला पुखराज दान करने से आपको अपने स्वास्थ्य में सुधार करने में मदद मिल सकती है।

(6). विशेष रूप से गुरुवार को पीले कपड़े पहनने से बृहस्पति के लाभकारी प्रभाव में वृद्धि हो सकती है।

(7). बृहस्पति यंत्र ग्रह के सकारात्मक स्पंदनों को अवशोषित करता है। इस यंत्र को अपने घर या कार्यक्षेत्र में रखना और इसकी नियमित पूजा करना लाभकारी हो सकता है।

(8). किसी विद्वान पुरोहित की सहायता से बृहस्पति होम का आयोजन करें। यह बृहस्पति को समर्पित एक अग्नि अनुष्ठान है, और यह महत्वपूर्ण स्वास्थ्य लाभ प्रदान कर सकता है।

लाल किताब के उपाय

वैदिक ज्योतिष, लाल किताब और कार्मिक प्रथाओं से नक्षत्र स्वामी पर आधारित उपचार हमें ब्रह्मांडीय ऊर्जाओं के साथ संरेखित करने में मदद करते हैं, जिससे हमारे जीवन के प्रति दृष्टिकोण में सुधार होता है। ये अनुरूप उपाय नकारात्मक प्रभावों को कम करते हैं, सकारात्मकता को बढ़ाते हैं और हमें ग्रहों की ऊर्जा को संतुलित करने के लिए सशक्त बनाते हैं। अंततः, वे व्यक्तियों को अपने भाग्य को संचालित करने की अनुमति देकर आत्म--जागरूकता, सद्भाव और संतुष्टि को बढ़ावा देते हैं।

आपका नक्षत्र

पूर्वाभाद (2)

नक्षत्राधिपति

बृहस्पति

इन लाल किताब के उपायों को अपनायें

(1). विशेष रूप से गुरुवार के दिन पीले कपड़े पहनें, क्योंकि इस रंग का संबंध बृहस्पति से है।

(2). गाय को चने की दाल या गुड़ खिलाने से बृहस्पति का सकारात्मक प्रभाव बढ़ सकता है।

(3). विशेष रूप से गुरुवार के दिन पीली वस्तुओं का दान करने से आपको समृद्धि और सौभाग्य मिल सकता है।

(4). बृहस्पति को प्रसन्न रखने के लिए विशेष रूप से गुरुवार के दिन मांसाहारी भोजन का सेवन करने से बचें।

(5). अपने शिक्षकों, गुरुओं और बड़ों के प्रति सम्मान दिखाएं। बृहस्पति ज्ञान और बुद्धि का कारक है, इसलिए यह इस ग्रह को प्रसन्न करने में मदद कर सकता है।

(6). गुरुवार के दिन पीपल के पेड़ पर जल चढ़ाएं और शाम के समय पेड़ के पास घी का दीपक भी जलाएं।

(7). गुरुवार के दिन चने की दाल का दान करें। इससे आपको समृद्धि और सौभाग्य मिल सकता है।

(8). घोड़े को चने की दाल खिलाने से भी आपके जीवन में सकारात्मकता आ सकती है।

(9). विशेष रूप से अपनी तर्जनी में सोना पहनने से बृहस्पति के सकारात्मक प्रभाव बढ़ सकते हैं।

कार्मिक उपाय

वैदिक ज्योतिष, लाल किताब और कार्मिक प्रथाओं से नक्षत्र स्वामी पर आधारित उपचार हमें ब्रह्मांडीय ऊर्जाओं के साथ संरेखित करने में मदद करते हैं, जिससे हमारे जीवन के प्रति दृष्टिकोण में सुधार होता है। ये अनुरूप उपाय नकारात्मक प्रभावों को कम करते हैं, सकारात्मकता को बढ़ाते हैं और हमें ग्रहों की ऊर्जा को संतुलित करने के लिए सशक्त बनाते हैं। अंततः, वे व्यक्तियों को अपने भाग्य को संचालित करने की अनुमति देकर आत्म--जागरूकता, सद्भाव और संतुष्टि को बढ़ावा देते हैं।

आपका नक्षत्र

पूर्वाभाद (2)

नक्षत्राधिपति

बृहस्पति

इन कार्मिक के उपायों को अपनायें

(1). ज्योतिष में बृहस्पति को गुरु या शिक्षक के रूप में जाना जाता है। नई चीजें सीखने और अपना ज्ञान दूसरों के साथ साझा करने के लिए लगातार प्रयास करें।

(2). बृहस्पति आशावाद और सकारात्मकता से जुड़ा है। स्थितियों का उजला पक्ष देखने का प्रयास करें और जहाँ भी जाएँ सकारात्मकता फैलाएँ।

(3). बृहस्पति उच्च शिक्षा और आध्यात्मिक विकास से जुड़ा है। उन संस्थानों को दान करें जो इन्हें बढ़ावा देते हैं, या स्वयंसेवक के रूप में अपना समय प्रदान करते हैं।

(4). बृहस्पति उदारता और प्रचुरता का ग्रह भी है। उदारता के कार्य नियमित रूप से करें, भले ही वे छोटे ही क्यों न हों।

(5). 'मैं ज्ञान और आशावाद से भरपूर हूं', 'मैं अपनी प्रचुरता दूसरों के साथ साझा करता हूं', या 'मैं हमेशा सीख रहा हूं और बढ़ रहा हूं' जैसे दृढ़कथन का उपयोग करें।

(6). अपने सभी कार्यों में उच्च मूल्यों और नैतिक मानकों को बनाए रखें, क्योंकि बृहस्पति नैतिकता और सदाचार का ग्रह है।

(7). बृहस्पति का संबंध अध्यात्म से है। विकास, ज्ञान और प्रचुरता पर ध्यान केंद्रित करते हुए ध्यान को अपनी दैनिक दिनचर्या में शामिल करें।

(8). बृहस्पति का संबंध पोषण से भी है। संतुलित आहार खाना और अपने शारीरिक स्वास्थ्य का ख्याल रखना इस ग्रह का सम्मान करने का एक तरीका हो सकता है।

(9). बृहस्पति प्रचुरता और आशीर्वाद का ग्रह है। अपने जीवन में अच्छाइयों को पहचानने और स्वीकार करने की आदत डालें। एक .तज्ञता पत्रिका रखें या हर दिन कुछ क्षण निकालकर मानसिक रूप से उन चीजों की सूची बनाएं जिनके लिए आप आभारी हैं।

Disclaimer

The calculations, future predictions, and remedies given in this Astrological Report are all based on the principles of either on Vedic Astrology, KP System, Jaimini or Lal Kitab, Numerology which are the result of consulting and engaging highly learned astrologers and astrology practitioners. This Report will prove to be highly useful for astrologers and practitioners of Astrology. We earnestly request the common users of this Report that they should not follow the Lal Kitab and or other prediction/remedies given in this Report without consulting a learned astrologer or an expert on this subject. Failing to do so might lead you to unexpected results which may or may not be favorable towards your well-being.

www.lalkitabnadi.com/MindSutra Software Technologies makes no warranty about the accuracy of any data contained herein, and the native is advised to not to take as conclusive any prediction generated for him. If you follow the advice given in this report you do so at your own risk, www.lalkitabnadi.com/ MindSutra Software Technologies or any of its associates are not responsible for the consequence of any event or action.

www.lalkitabnadi.com/MindSutra Software Technologies shall not stand liable for any damages or harm done.

All disputes are subject to New Delhi Jurisdiction only.

Wishing the very best – prosperity and happiness.